दैनिक जागरण
प्रत्येक अनुभव में कोई सीख निहित होती है

बिना शिक्षकों के शिक्षा

यह एक विडंबना ही है कि सुप्रीम कोर्ट को उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों के रिक्त पदों को चार माह के अंदर भर्ती करने के आदेश देने पड़े। इसके प्रति तो सरकारों को सजग रहना चाहिए था। चूंकि वे इसे लेकर तत्पर नहीं कि शिक्षकों के रिक्त पद प्राथमिकता के आधार पर भरे जाएं, इसलिए सरकारी और साथ ही निजी क्षेत्र के उच्च शिक्षा संस्थानों में बड़ी संख्या में शिक्षकों के पद रिक्त हैं। यह ठीक नहीं कि जो काम सरकार को करना चाहिए, वह सुप्रीम कोर्ट को करना पड़ा। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कई बार शिक्षकों के पद वर्षों तक खाली पड़े रहते हैं। स्थिति कितनी खराब है, इसका पता इससे चलता है कि शिक्षकों के रिक्त पदों की समस्या से केंद्रीय विश्वविद्यालय भी जूझ रहे हैं। इसका मतलब है कि शिक्षा मंत्रालय भी इसके प्रति सजग नहीं कि शिक्षकों के पद लंबे समय तक रिक्त न रहें। सजगता के इस अभाव के चलते कई विश्वविद्यालयों में तो कुलपति के पद भी रिक्त बने रहते हैं। समझना कठिन है कि ऐसा क्यों है? निःसंदेह यह नहीं कहा जा सकता कि शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने के लिए योग्य अभ्यर्थियों का अभाव है।

शिक्षकों के पद रिक्त रहने से शिक्षा संस्थानों में कई तरह की समस्याएं घर कर जाती हैं। इसके चलते पठन-पाठन तो प्रभावित होता ही है, छात्रों की परेशानियां भी बढ़ जाती हैं। इन्हीं परेशानियों पर विचार करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने पाया कि देश के उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों और गैर शिक्षकों के पद बड़ी संख्या में खाली पड़े हुए हैं। इसे इससे समझा जा सकता है कि बिहार के विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के चार हजार पद रिक्त हैं। हरियाणा में किसी विश्वविद्यालय में छह साल से तो किसी में आठ साल से प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और असिस्टेंट प्रोफेसर की भर्ती नहीं हुई है। नतीजा यह है कि करीब 60 प्रतिशत पद रिक्त हैं। इसी तरह मध्य प्रदेश के 19 सरकारी विश्वविद्यालयों में से 15 में शिक्षकों के 70 प्रतिशत से ज्यादा पद खाली पड़े हैं। यही स्थिति अन्य राज्यों में भी है। इसका अर्थ है कि उच्च शिक्षा भगवान भरोसे चल रही है। यह दयनीय दशा तब है, जब नई शिक्षा नीति लागू हुए पांच वर्ष बीत गए हैं और उसमें छात्र-शिक्षक अनुपात पर विशेष बल दिया गया है। समस्या केवल यह नहीं कि शिक्षकों के ही पद बड़ी संख्या में रिक्त हैं। शिक्षकों के साथ-साथ गैर शिक्षकों के भी पद रिक्त हैं। यह और कुछ नहीं उच्च शिक्षा के ढांचे को कमजोर करने वाली स्थिति ही है। यह समझने में देर नहीं करनी चाहिए कि उच्च शिक्षा के स्तर में बहुत सुधार की आवश्यकता है और इसकी पूर्ति शिक्षकों के पद रिक्त रहते हुए संभव नहीं।

सतर्कता आवश्यक

पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आइएसआइ की ओर से पंजाब का माहौल खराब करने की लगातार हो रही कोशिश को देखते हुए सुरक्षा एजेंसियों को ज्यादा सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। सीमा पार से ड्रोन के माध्यम से हथियार एवं हेरोइन गिराए जाने के मामले बार-बार सामने आ रहे हैं। सीमा सुरक्षा बल के जवान ज्यादातर ड्रोन फायर कर गिरा देते हैं, लेकिन कुछ ड्रोन नजरों से बच जाते हैं। पैसों का लालच देकर आइएसआइ के एजेंट राज्य के कुछ युवाओं को अपने जाल में फंसाने की कोशिश कर रहे हैं। चिंताजनक यह भी है कि बीते कुछ समय में हथियार एवं हैंड ग्रेनेड के साथ गिरफ्तार किए गए लोगों में नाबालिग भी शामिल थे। सीमा पर चौकसी बढ़ाने के साथ ही युवाओं को गलत राह पर जाने से रोकने के लिए भी गंभीरता से प्रयास करना होगा। खास करके सीमावर्ती क्षेत्रों में युवाओं पर विशेष ध्यान देना होगा। अमृतसर के घरिंडा क्षेत्र में पाकिस्तानी तस्करों द्वारा चालीस किलो हेरोइन की खेप को लेकर जा रहे युवकों में मोगा के कोट इसेखान गांव का युवक भी शामिल था। पुलिस को इस मामले की गहन जांच कर गिरोह में शामिल अन्य लोगों के बारे में भी पता करना होगा। मामले की तह तक जाना जरूरी है। सीमा पर हेरोइन की खेप को किसने उठाया और उसके बाद किस किस ने सहयोग किया, सब कुछ सामने आना चाहिए। आइएसआइ की साजिश को नाकाम करने के लिए तस्करों, गैंगस्टरों एवं आतंकियों के गठजोड़ को खत्म करना भी आवश्यक है।

सीमा पार से रची जा रही पाक की खुफिया एजेंसी आइएसआइ की साजिश को हर हाल में नाकाम करना ही होगा

विश्व को अस्थिर करता अमेरिका

संजय गुप्त

डोनाल्ड ट्रंप केवल ग्रीनलैंड में ही कब्जा करने के लिए उतावले नहीं दिख रहे हैं। वे ईरान में भी सैन्य हस्तक्षेप करने के संकेत दे रहे हैं

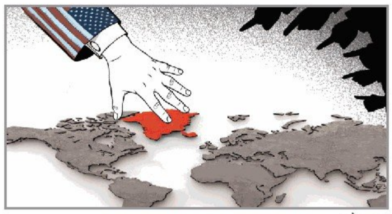

अवधेश राजपूत

अंतरराष्ट्रीय नियम-कानून को धता बताकर वेनेजुएला पर अमेरिका के हमले और वहां के राष्ट्रपति के अपहरण की चर्चा अभी समाप्त भी नहीं हुई थी कि डोनाल्ड ट्रंप ने ग्रीनलैंड पर कब्जा करने का एलान कर दिया। हालांकि ग्रीनलैंड को हासिल करने की बातें उन्होंने पहले भी की थीं, लेकिन तब अंतरराष्ट्रीय समुदाय और विशेष रूप से यूरोप ने उनकी बातों को हल्के में लिया था, लेकिन अब उनकी चिंता बढ़ रही है, क्योंकि ट्रंप डेनमार्क के इस स्वायत्तशासी क्षेत्र पर हर हाल में कब्जे के इरादे जता रहे हैं। इस कारण सैन्य संगठन नाटो में शामिल कुछ यूरोपीय देश अपने सैनिकों को ग्रीनलैंड भेज रहे हैं। ग्रीनलैंड के साथ डेनमार्क के नेताओं ने स्पष्ट कर दिया है कि वे ट्रंप के इरादों को पूरा नहीं होने देंगे, लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति किसी की नही सुन रहे हैं। वे नाटो का अंत होने की डेनमार्क की चेतावनी का उपहास उड़ाकर कह रहे हैं कि यदि आज से पांच सौ साल पहले डेनमार्क की कोई नौका ग्रीनलैंड पहुंची तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह उसका हो गया।

ग्रीनलैंड का क्षेत्रफल भारत के क्षेत्रफल का लगभग 70 प्रतिशत है। यह विश्व का सबसे बड़ा द्वीप है। यहां तेल, गैस और दुर्लभ खनिज के भंडार हैं। यहां की बर्फ पिघलने के कारण इन संसाधनों के दोहन की संभावनाएं बढ़ रही हैं। जाहिर है कि इन पर ट्रंप की भी निगाह है। इसके अलावा इस द्वीप का सामरिक महत्व भी है। चूंकि ग्रीनलैंड के साथ उसके आसपास की भी बर्फ पिघल रही है, इसलिए समुद्री रास्तों से वहां तक रूस और चीन की पहुंच आसान हो रही है। इसी कारण ट्रंप कह रहे हैं कि ग्रीनलैंड पर रूस और चीन की निगाह है।

हालांकि अतीत में भी अमेरिका के राष्ट्रपतियों ने ग्रीनलैंड को अपना हिस्सा बनाने की बातें की थीं, पर वे कभी इस दिशा में आगे नहीं बढ़े। हां, एक समझौते के तहत 1951 में अमेरिका ने ग्रीनलैंड में अपना सैन्य अड्डा कायम कर लिया। यह अभी भी है। ट्रंप का तर्क है कि रूस और चीन का ग्रीनलैंड पर वर्चस्व कायम हो, इसके पहले अमेरिका को उसे अपना हिस्सा बना लेना चाहिए। रूस का कहना है कि ट्रंप अकारण यह कह रहे हैं कि वह ग्रीनलैंड पर कब्जा करना चाहता है। जो भी हो, आज यह नहीं कहा जा सकता कि रूस या फिर चीन अमेरिका को ग्रीनलैंड पर कब्जा करने से रोक सकेंगे। इसका कारण यह है कि यूरोपीय देश रूस की मदद लेने को तो बिल्कुल भी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि वह पहले से ही उनकी सुरक्षा के लिए खतरा बना हुआ है। यूक्रेन के खिलाफ रूस के युद्ध ने यूरोपीय देशों को सशंकित कर रखा है। ऐसे में यदि ट्रंप ग्रीनलैंड पर कब्जा करने की दिशा में आगे बढ़ें तो हैरानी नहीं। डेनमार्क और यूरोपीय देशों के विरोध के बावजूद एक चिंताजनक तथ्य यह है कि अमेरिका में कई सांसद ट्रंप के इस विचार से सहमत हैं कि ग्रीनलैंड को वैसे ही अमेरिका का हिस्सा बनाना चाहिए, जैसे अलास्का को बनाया गया था। कहना कठिन है कि आगे क्या स्थितियां बनेंगी, पर इसमें संदेह नहीं कि ग्रीनलैंड को लेकर ट्रंप के रवैये से यूरोप सहित शेष विश्व भी चिंतित है।

ट्रंप केवल ग्रीनलैंड में ही कब्जा करने के लिए उतावले नहीं दिख रहे हैं। वे ईरान में भी सैन्य हस्तक्षेप करने के संकेत दे रहे हैं। हालांकि पिछले दिनों उन्होंने यह कहा कि फिलहाल ईरान में दखल देने की जरूरत नहीं, लेकिन उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह किसी से छिपा नहीं की ईरान की कट्टरपंथी इस्लामी सत्ता उन्हें स्वीकार नहीं। वास्तव में अमेरिका को वह कोई भी देश रास नहीं आता, जो उसके इशारे पर न चले। अमेरिका ने इस आधार पर ईरान पर तमाम प्रतिबंध लगा रखे हैं कि वह परमाणु हथियार बनाने की कोशिश कर रहा है। इन प्रतिबंधों के कारण ही ईरान आर्थिक संकट से घिरा और उसके चलते वहां लोग सड़कों पर उतर आए। ईरानी सत्ता अपने लोगों की बात सुनने के बजाय उनकी आवाज सख्ती से दबा रही है। इसके चलते वहां सैकड़ों लोग मारे गए हैं। ट्रंप ईरान की उथल-पुथल का लाभ उठाने की कोशिश में दिखते हैं। वे कह रहे हैं कि ईरान के लोग अपना विरोध जारी रखें। ईरान के प्रति ट्रंप के आक्रामक रवैये पर रूस और चीन तो आपत्ति जता रहे हैं, लेकिन यूरोपीय देश ढुलमुल रवैया अपनाए हुए हैं। ट्रंप की ईरान के तेल भंडारों पर भी निगाह है और वे यह नहीं चाहते कि वह अपना तेल व्यापार डालर के अलावा अन्य मुद्राओं में करे और इस तरह डालर के प्रभुत्व को चुनौती दे। इसके चलते आशंका यही है कि ट्रंप मौका देखकर ईरान में लोकतंत्र बहाली की आड़ में वहां तख्तापलट की कोशिश कर सकते हैं। इसमें ईरान के आखिरी शाह के बेटे रजा पहलवी मददगार हो सकते हैं, जो निर्वासित होकर अमेरिका में रह रहे हैं। उनका कहना है कि वे ईरान लौटेंगे। यदि ट्रंप ने ईरान में हस्तक्षेप किया तो यह देश वैसी ही अस्थिरता से घिर सकता है, जैसे इराक घिर गया था। ध्यान रहे इराक को भी अमेरिका ने मूलतः उसके तेल भंडारों के कारण ही निशाना बनाया था।

ट्रंप ईरान के साथ उसके सहयोगियों का भी संकट बढ़ा ही रहे हैं। उन्होंने कहा है कि जो भी देश उससे व्यापार करेंगे, उस पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाया जाएगा। ईरान से व्यापार करने वाले प्रमुख देशों में चीन, रूस, संयुक्त अरब अमीरात और भारत हैं। साफ है कि ट्रंप के रवैये से भारत की समस्या भी बढ़ने वाली है। चूंकि ईरान में सामाजिक असंतोष के कारण अस्थिरता व्याप्त है, इसलिए ट्रंप प्रत्यक्ष न सही, परोक्ष हस्तक्षेप कर सकते हैं-ठीक वैसे ही जैसे बांग्लादेश में शेख हसीना के खिलाफ जो आंदोलन चला, उसके पीछे पश्चिमी ताकतों का हाथ था। ईरान के मामले में तो यह खुलकर सामने आ रहा है कि अमेरिका वहां अशांति बढ़ा रहा है। पता नहीं ट्रंप के मन में क्या हैं, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि अमेरका ने जिस भी देश में छल-बल से सत्ता परिवर्तन कराया, वे अस्थिरता से ग्रस्त हुए। ट्रंप की मनमानी इसलिए बढ़ती जा रही है, क्योंकि विश्व के प्रमुख देश अमेरिका को सीधी चुनौती दे सकने में सक्षम नहीं और संयुक्त राष्ट्र बिल्कुल असहाय है। ऐसे में आने वाले समय में ट्रंप के चलते विश्व में अस्थिरता फैले तो आश्चर्य नहीं।

response@jagran.com

मित्रता की बदलती परिभाषा

हास्य-व्यंग्य

संतोष त्रिवेदी

डिजिटल दुनिया की मित्रता और शत्रुता मात्र एक 'क्लिक' दूर है। यहां 'अमित्र' होने का बदला 'ब्लाक' करके लिया जाता है

मित्रता ऐसा रिश्ता है, जो सबसे ज्यादा अबूझ रहा है। यह देशकाल, परिस्थिति और सुविधा के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। मित्रता की जहां हजारों मिसालें मिलती हैं, वहीं इसके आघात से पीड़ित होने वाले भी कम नहीं। अगर मित्रता न होती तो शायद विश्वासघात या धोखा जैसे शब्द अस्तित्व में ही नहीं आते। आजकल इस शब्द ने और विस्तार कर लिया है। यदि कोई आपको बार-बार अपना मित्र बताए तो उससे सावधान हो जाएं। सीधे-साधे और सच्चे मित्र की बात करें तो ये हमारे आसपास ही पाए जाते हैं। इनकी मित्रता जितनी सहज होती है, धोखा भी उसी सहजता से होता है। यही मित्र हैं जो आपको 'आत्मनिर्भर' बनाते हैं। सामान्य मित्र कुछ अधिक योगदान नहीं कर पाते। ये स्वभावतः भीरु किस्म के होते हैं। ऐसे दोस्त या तो दस-बीस हजार की चपत लगा पाते हैं या आपकी जरूरत में आपसे ज्यादा तकलीफ में होते हैं।

मित्रों में सबसे कम खतरनाक साहित्यिक मित्र होते हैं। इनकी अपेक्षाएं बहुत बड़ी नहीं होतीं। अपनी नई किताब आने पर बेचारे आपसे न्यूनतम बलिदान चाहते हैं। इससे बचने का एकाध उपाय तो है, पर ज्यादा कारगर नहीं है। जब कोई पुराना मित्र आपको लगातार दो दिन 'सुप्रभात' के संदेश देने लगे, समझिए उसकी नई किताब का कवर और आपका बटुआ फटने वाला है। तीसरी बार में पक्का किताब की सूचना आएगी। आप लप्प-से बधाई भेजेंगे। बस यही मौका होगा, जब आप 'डिजिटल-अरेस्ट' हो जाएंगे। किताब का लिंक खोले बिना आपकी जान नहीं छूटने वाली। आप यदि समझदार हुए तो दो-ढाई सौ रुपये में छूट जाएंगे। यदि अतिरिक्त समझदारी दिखाई तो आपकी कुंडली खुलने में देर नहीं लगेगी। आपके दूसरे मित्रों में आपके विस्मरणीय योगदानों को पल भर में अविस्मरणीय बना दिया जाएगा।

सबसे अच्छे दोस्त चिरकुट-टाइप के होते हैं। ये चाय-पानी तक में संतोष कर लेते हैं। भूल कर भी कभी इनसे भुगतान मत करवा देना। इतने कम इन्वेस्टमेंट में तो दुश्मन भी नहीं मिलते, दोस्त कहां से मिलेंगे। इनकी एक बड़ी अच्छाई है। ये वफादार होते हैं। जब तक आप उनका ख्याल रखते हैं, वे आपका ढोल बजाते रहेंगे। इनकी मित्रता को शत्रुता में 'कन्वर्ट' करने के बारे में सोचना भी मत। हां, आभासी मीडिया में दोस्ती बड़े हिसाब-किताब से निभाई जाती है। यहां बने मित्रों को सामान्य मित्र समझना बड़ी भूल है। बड़े से बड़ा लेखक, अफसर या पत्रकार आपका मित्र होते हुए भी वैसा नहीं होता, जैसा वास्तविक मित्र होता है। उनके लिखे पर नियमित टीप न करने पर आप 'अमित्र' हो सकते हैं। इस दुनिया की मित्रता और शत्रुता केवल एक 'क्लिक' दूर रहती है। यहां 'अमित्र' होने का बदला 'ब्लाक' करके लिया जाता है। लोग अच्छे या बुरे लेखन के बजाय 'लाइक' और 'कमेंट' से परखे जाते हैं। कहने भर को यह आभासी मीडिया है, पर यहां दोस्ती से ज्यादा दुश्मनियां निभाई जाती हैं। इसलिए ज्यादा समझदार लोग दूसरों के लिखे पर कुछ नहीं बोलते।

ऐसे मित्र जो आपके ही रचना-क्षेत्र में सक्रिय हैं, वे अक्सर इनबाक्स में ही 'बेहतरीन' लिखना पसंद करते हैं। ज्यादा हुआ तो आपको फोन करके शाबाशी देंगे, पर सार्वजनिक रूप से कभी टिप्पणी नहीं करते। उनको भ्रम होता है कि एक-दो पंक्तियां खुलेआम लिख देने से कहीं उनका 'मित्र' अमर न हो जाए। कई बार खतरा यह भी होता है कि उनकी प्रतिक्रिया से उनके गैंग के दूसरे सदस्य न बिदक जाएं। इसलिए ऐसे मित्र 'स्लीपर सेल' की तरह काम करते हैं और ऐसे ही लोग साहस, सरोकार और सच्चाई पर लगातार लिखते रहते हैं। मित्रता का पूरी ईमानदारी से निर्वाह यही प्राणी करते हैं।

response@jagran.com

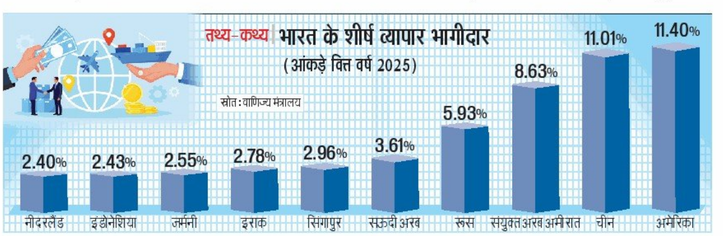

ऊर्जा

मौन साधना

सनातन धर्म में मौन व्रत का अत्यंत महत्व बताया गया है। मौन रहकर सभी कार्य सिद्ध किए जा सकते हैं या उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है, 'मौनं सर्वार्थ साधनम्।' मौन को सभी साधनाओं का आधार माना गया है। इससे प्राणी में आध्यात्मिक ऊर्जा प्रवाहित होने लगती है। जब गणेशजी ने महाभारत को लिपिबद्ध किया तो उन्होंने एक बार भी मौन भंग नहीं किया। वे एकाग्रचित्त होकर लेखन में संलग्न रहे। कार्य पूर्ण होने पर महर्षि वेदव्यास ने उनकी एकाग्रता का रहस्य पूछा तो गणेश जी ने उत्तर दिया कि किसी भी सिद्धि को प्राप्त करने का मूल आधार प्राण शक्ति को संचित किए रखना है। वाणी का संयम ही मन-मस्तिष्क को एकाग्रचित्त रखने का अचूक साधन है। साधारणतः मौन का अर्थ चुप रहने से लिया जाता है, लेकिन दार्शनिक दृष्टिकोण से इसका अर्थ अत्यंत गहरा और व्यापक है। वाणी पर विराम देकर मन के झंझावातों में उलझे रहना मौन नहीं है। वाणी और मन, दोनों का शांत होना मौन है। वाणी पर विराम देकर अंतर्मन के तमाम कोलाहल पर नियंत्रण और मन की वृत्तियों का शमन करना मौन है।

यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि अत्यधिक, अर्थहीन एवं अनर्गल वार्तालाप से हमारे शरीर की आंतरिक ऊर्जा का ह्रास होता है। इस ऊर्जा को मौन साधना से बचाया जा सकता है। मौन रहकर आंतरिक ऊर्जा एवं आध्यात्मिक ऊर्जा में वृद्धि की जा सकती है। मन, विचार एवं वाणी पर संयम रखकर जब हम 'मौन' रहते हैं तो आत्मा से सीधे जुड़ते हैं। मौन आत्मा के साथ संवाद का सबसे सशक्त माध्यम है। मौन, ध्यान की एक अनिवार्य शर्त है। मौन रह कर ही हम एकचित्त ध्यान कर पाते हैं। इस ध्यान से ही हम मन के सभी द्वंद्वों, विकारों, आवेशों एवं आवेगों पर विजय पाकर उस अवस्था में पहुंचते हैं जब हमें निःशब्द शांति के साथ अनंत की ऊर्जा एवं आनंद का अनुभव होता है। यही मौन की सार्थकता है।

योगेंद्र माथुर

पिघलते ग्लेशियरों में प्रतिरोधी जीन

मुकुल व्यास

नए अध्ययन से पता चलता है कि ग्लेशियर जीनों के भंडार भी हैं, जो एंटीबायोटिक प्रतिरोध को स्टोर करते हैं

दुनिया के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं और इनके नतीजे सिर्फ समुद्र के उच्च स्तर या गायब होते भू-दृश्यों तक ही सीमित नहीं हैं। विज्ञानियों ने चेतावनी दी है कि पिघले ग्लेशियरों का जल अपने साथ छिपी हुई आनुवंशिक सामग्री भी ले जा सकता है, जो बैक्टीरिया को एंटीबायोटिक दवाओं का प्रतिरोध करने में मदद करती है। यह सामग्री उन जगहों पर स्वास्थ्य के लिए जोखिम बढ़ा सकती है, जो ग्लेशियर से मिलने वाले पानी पर निर्भर हैं। चीन के लैंजो विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में दावा किया है कि ग्लेशियर एंटीबायोटिक प्रतिरोधी जीनों को लंबे समय तक स्टोर कर सकते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों के पिघलने से यह जमा हुआ भंडार नदियों और झीलों में प्रतिरोध के एक सक्रिय स्रोत में बदल सकता है।

ग्लेशियर की बर्फ सिर्फ जमा हुआ पानी नहीं है। यह जमा हुआ जीवविज्ञान भी है। नए अध्ययन से पता चलता है कि ग्लेशियर जीनों के भंडार भी हैं, जो एंटीबायोटिक प्रतिरोध को स्टोर करते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों के पिघलने से ये भंडार सक्रिय स्रोतों में बदल रहे हैं। इस अध्ययन का मुख्य संदेश यह नहीं है कि ग्लेशियर अचानक प्रदूषित हो गए हैं। बल्कि यह है कि वे लंबे समय तक आनुवंशिक सामग्री को संरक्षित रखते हैं। बर्फ पिघलने पर ये जीन जीवित पारिस्थितिकी तंत्र में फिर से प्रवेश कर सकते हैं।

कई प्रतिरोधी जीन प्राचीन हैं और प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं, क्योंकि जीवाणु बहुत लंबे समय से एंटीबायोटिक जैसे यौगिकों का उपयोग करके एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। ग्लेशियर हजारों वर्षों तक और कभी-कभी इससे भी ज्यादा समय तक ठंडी परिस्थितियों में जीवाणुओं और उनके डीएनए को बंद करके रख सकते हैं। जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है, पिघला हुआ पानी उस जीन सामग्री को स्वच्छ जल की प्रणाली में छोड़ सकता है, जो पहले इसके संपर्क में नहीं आई थी। शोधकर्ताओं का कहना है कि ग्लेशियर से निकलने वाली नदियां और झीलें लाखों लोगों के लिए पानी के जरूरी स्रोत हैं। एक बार जब प्रतिरोधी जीन ग्लेशियर जुड़े हुए सिस्टम में आ जाते हैं, तो वे आधुनिक बैक्टीरिया के साथ अंतर-क्रिया कर सकते हैं, जिससे जीवाणु समुदायों के जरिये उनके फैलने का खतरा बढ़ जाता है। ग्लेशियरों से निकलने वाले प्रतिरोधी जीनों पर नजर रखने के लिए बेहतर ट्रैकिंग आवश्यक है। विज्ञानियों इसके लिए एक समन्वित निगरानी कार्यक्रम शुरू करने का सुझाव दिया है, ताकि मेटाजेनोमिक सीक्वेंसिंग (विस्तृत आनुवंशिक सामग्री का विश्लेषण) जैसे टूल का इस्तेमाल करके ग्लेशियर से नदी और झील के रास्ते में प्रतिरोधी जीन को ट्रैक किया जा सके। यह पर्यावरण और इंसानी स्वास्थ्य की रक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

क्रिकेट होगा जापानी

इस साल आइसीसी अंडर-19 विश्व कप के लिए जापान ने क्वालीफाई किया, तो दुनिया भर के क्रिकेट प्रेमियों ने इस पर हर्ष मिश्रित आश्चर्य जताया। भारत के क्रिकेट प्रेमी विदेश मंत्री एस. जयशंकर को भी यह जानकर आश्चर्य हुआ होगा, लेकिन तब तक ही, जब तक उनकी मुलाकात जापान के विदेश मंत्री तोशीमित्सु मोतेगी से नहीं हुई। दरअसल मोतेगी अपने साथ जापानी टीम की जर्सी भी लेकर आए थे। जयशंकर ने भी उन्हें एक बल्ला भेंट किया, जिस पर भारतीय क्रिकेटरों के हस्ताक्षर थे। जयशंकर तब हक्के-बक्के रह गए, जब मोतेगी ने उनसे जापान में क्रिकेट की बढ़ती लोकप्रियता के साथ-साथ क्रिकेट से जुड़ी अपनी गहरी जानकारी साझा की। मोतेगी जापान में एक परिपक्व और अनुभवी राजनेता माने जाते हैं। जापान इस समय अनिश्चित वैश्विक माहौल का सामना तो कर ही रहा है, साथ ही वहां की आंतरिक राजनीतिक उठा-पटक भी काफी अधिक है। इसके बावजूद मोतेगी क्रिकेट की तमाम गतिविधियों की जानकारी रखते हैं और इस बात से जयशंकर खासे प्रभावित नजर आए।

राजरंग

रेंगती लुटियन की सड़कें

राजधानी दिल्ली में वायु-प्रदूषण और शीतलहर का दौर अभी थमा नहीं है। इसी बीच बीते एक सप्ताह से इंडिया गेट से लेकर संसद मार्ग तक लुटियन इलाके की सड़कें लगभग पूरे दिन जाम के झाम से रूबरू हो रही हैं। इसकी वजह गणतंत्र दिवस तथा बीटिंग रिट्रीट परेड की रिहर्सल बताई जा रही है। रेल भवन के निकट बोट क्लब के पास गणतंत्र दिवस परेड के लिए तैनात किए जाने वाले दिल्ली पुलिसकर्मियों की रोजाना सुरक्षा तैयारी संबंधी बैठकें होती हैं। इसके चलते वायुसेना भवन से संसद भवन तक रफी मार्ग के दोनों ओर पुलिसकर्मियों की सैकड़ों गाड़ियां घंटों तक खड़ी रहती हैं, जिससे जाम की स्थिति और अधिक विकट हो रही है। कई बार मंत्रियों और वीवीआइपी को भी जाम से निकालना ट्रैफिक पुलिस के लिए आसान नहीं होता। शुक्रवार को नेशनल म्यूजियम चौराहे पर जाम इतना गंभीर था कि राष्ट्रमंडल देशों के संसदीय अध्यक्षों के सम्मेलन में आए एक प्रमुख देश के स्पीकर का काफिला उसमें फंस गया। उनकी पायलट गाड़ी में तैनात सुरक्षाकर्मियों को दो-दो स्थानों पर गाड़ी से उतरकर काफी मशक्कत करनी पड़ी, तब जाकर उन्हें संसद भवन तक पहुंचाया जा सका। शनिवार को भी रेल भवन के पास जाम की स्थिति ऐसी ही रही। इसमें फंसने के कारण देश के एक मशहूर वकील और राज्यसभा सांसद की पत्नी अपने घर पर आयोजित लंच की मेजबानी के लिए समय पर नहीं पहुंच सकीं। जब लुटियन इलाके का हाल ऐसा हो, तो राजधानी की ट्रैफिक व्यवस्था की मौजूदा हालत सहज ही समझी जा सकती है।

एक सर्कुलर

किसी भी विषय की औपचारिक रूप से जानकारी देने के लिए अक्सर सर्कुलर जारी किया जाता है, ताकि आम और खास सभी तक सूचना पहुंच सके। पिछले दिनों अदालत में एक मामले की सुनवाई चल रही थी। बहस काफी लंबी खिंचने लगी, तो न्यायाधीश ने हाल में मुख्य न्यायाधीश की ओर से जारी उस सर्कुलर का उल्लेख किया, जिसमें वकीलों की बहस के लिए समय-सीमा निर्धारित करने की बात कही गई है। जब न्यायाधीश समय-सीमा की ओर इशारा करने वाले इस सर्कुलर का जिक्र कर रहे थे, तभी प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की ओर से पेश सालिसिटर जनरल ने टिप्पणी की कि ऐसा एक सर्कुलर उन मामलों में मीडिया को दिए जाने वाले इंटरव्यू पर रोक लगाने के लिए भी होना चाहिए। दूसरी ओर से बहस कर रहे वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल भला कब चूकने वाले थे। उन्होंने तुरंत पलटवार करते हुए कहा कि सीबीआइ और ईडी भी अपनी पसंद के पत्रकारों को सूचनाएं लीक करना बंद करें। दोनों पक्षों के इस वाद-प्रतिवाद से यह स्पष्ट हो गया कि मीडिया को जानकारी देना भी कई बार परेशानी का कारण बन जाता है और उसे नियंत्रित करने के लिए सर्कुलर की जरूरत महसूस की जा रही है।

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक- स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक- संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष: नई दिल्ली कार्यालय: 011-43166300, नोएडा कार्यालय: 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****

24 से अधिक हिंदी फिल्मों की पटकथा लिखी है जावेद अख्तर ने, जिसमें जंजीर (1973), दीवार (1975), शोले (1975), मिस्टर इंडिया (1987) और लगान जैसी सुपरहिट फिल्में शामिल हैं।

आजकल

अनंत विजय
anant@nda.jagran.com

जुमलों के बीच दबी प्रश्न की सार्थकता

हर वर्ष की भांति इस वर्ष के आरंभ में जयपुर में एक साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें प्रख्यात पटकथा लेखक-गीतकार जावेद अख्तर से बातचीत का भी एक सत्र रखा गया। इस दौरान जब उनसे यह पूछा गया कि क्या फिल्म लेखक द्वारा किए जाने वाले लेखन पर उसके संस्कार, पारिवारिक परिवेश और धार्मिक या मजहबी मान्यताओं का प्रभाव भी पड़ता है? उन्होंने स्पष्ट उत्तर नहीं दिया। वस्तुतः पिछली सदी के सातवें-आठवें दशक में ऐसी कई फिल्में बनीं जिनमें भगवान और हिंदू धर्म के प्रतीक चिह्नों का उपहास किया गया है

जयपुर में एक कार्यक्रम में जावेद अख्तर (बाएं) को सम्मानित करते लोकगायक अली और मोहम्मद गनी। आयोजक

जनवरी के दूसरे सप्ताह में प्रत्येक वर्ष जयपुर में एक आयोजन होता है- जनवरी आफ जयपुर। इस आयोजन में राजस्थान की संस्कृति का उत्सव मनाया जाता है। इस दौरान पहले सत्र में राजस्थान से जुड़े कलाकार प्रस्तुति देते हैं। दूसरे सत्र में या तो राष्ट्रीय स्तर का कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करता है या फिर किसी ख्यात व्यक्ति से बातचीत होती है। इस कार्यक्रम का आयोजन संस्कृतिकर्मी संदीप भूतोड़िया-मंजरी भूतोड़िया और सौरभ कक्कड़-विनी कक्कड़ करते हैं। 11 जनवरी को जय महल पैलेस में 'जनवरी आफ जयपुर' का आयोजन हुआ। सबसे पहले पद्मश्री लोकगायक अली और मोहम्मद गनी ने अपने गीतों से समां बांधा।

इसके बाद प्रख्यात पटकथा लेखक-गीतकार जावेद अख्तर से बातचीत का सत्र हुआ। जावेद अख्तर से बातचीत नृत्यांगना शिंजिनी कुलकर्णी ने की। संवाद के बाद प्रश्नोत्तर का सत्र था। प्रश्न करने के लिए तीन चार हाथ उठे जिसको जावेद साहब देख नहीं पाए। उन्होंने टिप्पणी कर दी कि पहले प्रश्न पूछने में लोग हिचकते हैं। एक-दो प्रश्नों के बाद सिलसिला चल निकलता है। मैंने पहले प्रश्न के लिए हाथ खड़ा किया था। जावेद अख्तर हमको देख नहीं पा रहे थे तो उन्होंने पूछा कि आप किधर हैं। मैंने खड़े होकर कहा कि मैं आपके राइट में हूं तो उन्होंने तपाक से टिप्पणी की, 'आप तो जानते ही हैं कि राइट वालों से मेरा जरा कम ही....।' वस्तुतः मैंने जावेद अख्तर से जानना चाहा था कि, 'क्या फिल्म लेखक के लेखन पर उसके संस्कार, उसके पारिवारिक परिवेश और उसके धार्मिक या मजहबी मान्यताओं का प्रभाव पड़ता है। जावेद अख्तर ने इस प्रश्न को और खोलने को कहा।'

फिल्म शोले और दीवार का उदाहरण देकर प्रश्न के धागे खोले गए। फिल्म शोले के एक दृष्य में हेमा मालिनी भगवान शंकर से अपने मन की बात करती है तो अभिनेता धर्मेंद्र शंकर भगवान की प्रतिमा के पीछे जाकर भोंपू से आवाज बदलकर उत्तर देता है। इस बीच अमिताभ बच्चन की एंट्री होती है और वह हेमा मालिनी को प्रतिमा के पीछे ले जाकर धर्मेंद्र की असलियत दिखाता है। फिल्म 'दीवार' में नायक जब मंदिर में जाता है तो भगवान से कहता है कि आज खुश तो तुम बहुत होगे। एक अन्य दृश्य में अमिताभ बच्चन पुलिस से बचकर भागते हैं और शशि कपूर उसका पीछा करते हैं। एक जगह वह ग्रिल से टकरा कर गिरते हैं और 786 का बिल्ला दूर छिटक जाता है। अमिताभ बच्चन बिल्ला उठाने का प्रयास करते हैं। पुलिस पीछा कर रही होती है, लिहाजा वह बिल्ला वहीं छोड़कर भागते हैं। शशि कपूर चेतावनी के बाद गोली चला देता है जो अमिताभ बच्चन की बांह पर लगता है। इसमें लेखक की धार्मिकता का प्रभाव दिखता है या नहीं। इतना सुनते ही जावेद साहब भड़क से गए और अपनी पुरानी दलीलें देने लगे कि आप क्या मुल्क को सीरिया जैसा बनाना चाहते हैं। आप भी क्या उनकी तरह होना चाहते हैं। उनकी बातों को सुनकर तालियां बजती थीं। मैंने कहा कि आपके जुमलों पर तालियां बज सकती हैं, लेकिन प्रश्न अनुत्तरित है।

वस्तुतः जावेद अख्तर को लगा कि मैं उनकी लोकप्रियता पर टिप्पणी कर रहा हूं, जबकि मैं तो बगैर लाउड हुए अपने प्रश्न का उत्तर चाहता था। जावेद साहब लंबी तकरीर करने लगे और दुनिया के तमाम कट्टरपंथी और मजहबी मुल्कों का उदाहरण देने लगे। प्रश्न के उत्तर पर अंत तक नहीं आए। जब मैंने उनको फिर से प्रश्न पर लाने की कोशिश की तो उन्होंने मुझे क्रास क्वेश्चनिंग नहीं करने की नसीहत देकर अपनी बात जारी रखी। गाजा पर बच्चों पर बम बरसाने की बात तक चले गए। अंत में कहा कि अगर आज उनको वो दृश्य लिखने होते तो नहीं लिखते। कहीं किसी प्रकार की बदतमीजी न हो जाए, इस कारण मैंने प्रश्न का उत्तर जानने की अपेक्षा नहीं की और बैठ गया। प्रश्नोत्तर के पूरे सत्र में जावेद साहब मेरे प्रश्न से परेशान से दिखे। मेरी मंशा उनको परेशान करने की नहीं, बल्कि एक वरिष्ठ लेखक से यह जानने की थी कि लेखक का लेखन किन बातों से प्रभावित होता है। सत्र की समाप्ति के बाद एक महिला बोलीं कि जावेद साहब को गाजा के बच्चों पर बमबारी की याद रही, लेकिन पहलगाम में धर्म पूछकर हत्या करने की वारदात उनके जेहन में नहीं थी।

जावेद अख्तर ने प्रश्न का उत्तर टाल तो दिया, लेकिन यह प्रश्न तो हिंदी सिनेमा के सामने अब भी है। क्या कारण रहा कि जब हिंदी फिल्में आरंभ हुईं तो दादा साहब फाल्के से लेकर उनके बाद के कई वर्षों तक भारतीय संस्कृति के अनुसार नायक होते रहे। हिंदू देवी-देवताओं और धार्मिक प्रतीक चिह्नों का उपहास नहीं उड़ाया गया। बाद में जब सलीम जावेद की जोड़ी आई तो भगवान और हिंदू धर्म के प्रतीक चिह्नों का उपहास आरंभ हुआ। उनके बाद के लेखकों ने भी ऐसा किया। तिलकधारी पुजारी को खलनायक के तौर पर चित्रित किया जाने लगा। शोले में तो अजान की आवाज सुनकर अपने बेटे की मृत्यु का गम छोड़कर पात्र उस ओर उन्मुख हो जाता है। हिंदू नायक भी मंदिरों में जाकर भगवान के सामने अपने मन की भड़ास निकालने लगा। नास्तिक टाइप के नायक गढ़े गए, जो मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़ने में हिचकते दिखे। फिल्म मिस्टर नटवरलाल में भी नायक भगवान कृष्ण की तस्वीर के सामने जिस तरह से संवाद बोलते हैं, उसे भी ध्यान में रखा जाना चहिए। इसको अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के तौर पर रेखांकित किया जाता रहा। प्रश्न यही है कि अभिव्यक्ति की वह कथित स्वतंत्रता केवल हिंदू देवी-देवताओं और हिंदू धर्म से जुड़े लोगों को लेकर ही क्यों दिखती है। किसी और मजहब को लेकर उस तरह से किसी संवाद लेखक ने मजाक किया हो, याद नहीं पड़ता। मेरी जिज्ञासा इतनी थी और जावेद अख्तर जैसे लेखक से अपेक्षा भी थी कि वह बेलौस अंदाज में अपनी बात रखते। पर ऐसा हो न सका।

समय का पहिया घूमता रहा और भगवान का उपहास उड़ाने की प्रवृत्ति बढ़ती चली गई। हद तो ये हुई कि उस समय से केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड ने भी इस तरह की प्रवृत्ति पर किसी तरह का रोक लगाने की कोशिश नहीं की। फिल्मों के बाद जब ओटीटी का युग आरंभ हुआ तो उसमें भी यही प्रवृत्ति दिखाई देने लगी। ओटीटी प्लेटफार्म पर चलनेवाले वेबसीरीज में तो मंदिरों के अंदर चुंबन दृश्य तक दिखाए जाने लगे। तर्क खजुराहो की मूर्तियों में भी इस तरह नायक नायिका को दिखाया गया है। धार्मिक ग्रंथों से कहानियां उद्धृत कर इस प्रवृत्ति का बचाव किया गया। तर्क गढ़े गए कि हिंदू धर्म और उसके अनुयायी बहुत उदार हैं, इस कारण वो अपने आराध्य को लेकर किसी तरह की उपहासजनक टिप्पणी से आहत नहीं होते हैं। देश में बौद्धिक जगत में ऐसी विचारधारा का दबदबा था जिसमें कहा जाता था कि धर्म तो अफीम है। हिंदू धर्म पर उपहासजनक टिप्पणी या संवाद करनेवालों को प्रगतिशील कहा जाने लगा। धर्म और आस्तिकता की बात करने और उसके चिह्नों का सार्वजनिक उपयोग करनेवालों को दकियानूसी कहा गया। प्रश्न वही कि ऐसा जानबूझकर किया गया या लेखक के सामाजिक और मजहबी परिवेश ने उससे ऐसा करवाया।

खरी खरी

निंदा-निरपेक्ष आंदोलन

ऋषभ जैन

अमेरिका ने रातोंरात वेनेजुएला के राष्ट्रपति को उठा लिया। चीन और रूस ने इसकी कड़ी निंदा की है। भारत ने निंदा सरीखी कुछ की तो, परंतु वह ज्यादा कड़ी नहीं थी। हालांकि बहुत सारे देश कम कड़ी निंदा करने के लिए भारत की निंदा कर रहे हैं। देश में भी कुछ लोगों द्वारा इस बारे में सरकार की निंदा की जा रही है। अजब संकट है। रूस यूक्रेन पर हमला करता है तो दुनिया भारत की तरफ ताकती है। इजरायल जब गाजा पर बमबारी करता है तो सभी निगाहें भारत पर थमी दिखती हैं। इन्होंने निंदा की या नहीं।

हमने देखा है कि जितनी निंदा हमला करने वालों की नहीं होती, उतनी उनकी निंदा न करने के लिए भारत की हो जाती है। वैसे तो अमेरिका की कार्रवाई की निंदा यूरोप वालों ने भी नहीं की। यूक्रेन पर आक्रमण हुआ तो चीन ने रूस की आलोचना नहीं की। वे चुप्पी साधे रहे। लेकिन उनसे कोई कुछ नहीं कह रहा। बद्री भाई कहते हैं कि वे गुटनिरपेक्ष नहीं हैं। हम हैं। गुटनिरपेक्ष संगठन समाप्त हो चुका। अब देखा जाए तो निंदा निरपेक्षता की अपेक्षा हमसे चिपक गई।

सरकार पर निंदा का बोझ देखकर मुझे बड़ा बुरा लगता है। कभी-कभी तो लगता है सरकार मुझसे भी ज्यादा बेबस है। मैं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की निंदा कर लेता हूं। सरकार ऐसा नहीं कर पाती। इस मामले में परस्पर स्थितियां विचित्र हैं। मैं ट्रंप पर व्यंग्य लिख देता हूं, परंतु सरकार पर नहीं लिख सकता। सरकार मुझ पर व्यंग्य करती रहती है, जैसे मुझे 30 प्रतिशत टैक्स देने योग्य मानना वगैरह। लेकिन वह डोनाल्ड ट्रंप पर व्यंग्य नहीं कर सकती। वहीं विडंबना देखिए कि ट्रंप अपनी सरकार पर व्यंग्य करते रहते हैं, पर वे मुझ पर नहीं करते। डोनाल्ड ट्रंप महान नेता हैं। (यह व्यंग्य नहीं है)। उन्हें खुश करने के लिए बस रूस या ईरान की निंदा की आवश्यकता नहीं है। वह प्रशंसा के भी प्रशंसक हैं। बस प्रशंसा उनकी होनी चाहिए। वे खफा होते हैं कि प्रधानमंत्री जी ने उन्हें फोन नहीं किया तो उनका आशय होता है कि फोन करके प्रशंसा नहीं की। उनके साथ हमारे संबंध इसलिए डांवाडोल हैं, क्योंकि सरकार निंदा ही नहीं, उनकी प्रशंसा में भी पीछे रह जाती है।

हमें यह समझना चाहिए कि इस दौर में अंतरराष्ट्रीय संबंधों में निंदा और प्रशंसा अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्व हो गए हैं। अपेक्षानुसार इन्हें न किए जाएं तो देश पर संकट आन पड़ता है। अमेरिका टैरिफ बढ़ा सकता है। यूरोप वाले व्यापार कम करने पर उतारू हो सकते हैं। सही समय पर सही निंदा और प्रशंसा बड़े देशों की सदाशयता हासिल करा सकती है। इससे देश के निर्यात में बूम आ सकता है। जीडीपी आसमान पर पहुंच सकती है। रुपये की गिरावट थम सकती है। अमेरिका का वीजा पाने में आसानी हो सकती है। फलस्वरूप हमारे देश की जनता का जीवन खुशहाल हो सकता है।

उपरोक्त तथ्यों से यह भलीभांति सिद्ध होता है कि देश में समृद्धि का रास्ता निजाम की प्रशंसा और निंदा प्रवीणता से होकर जाता है। आने वाले समय में चुनाव निंदा के मुद्दे पर लड़े जाएंगे। नेता स्वयं के निंदा कौशल की डींगें हांका करेंगे। समुचित निंदा और प्रशंसा के दम पर विश्वगुरु बनने की बात कही जाएगी। अच्छी निंदा न कर पाने के लिए विपक्षी की निंदा की जाएगी। नेहरू की निंदा विफलता के किस्से सुनाए जाएंगे। निरंतर सुनाए भी जा रहे हैं।

कैसा विचित्र समय आ गया है कि एक बड़ा देश दूसरे बड़े देश की निंदा से पुलकित होता है। अमेरिका के लिए निंदक नियरे राखिए का अर्थ यह है कि जो रूस और चीन की निंदा करे उसे निकट रखना चाहिए।

(लेखक व्यंग्यकार हैं)

पोस्ट

एआर रहमान कह रहे हैं कि बालीवुड में वक्त के साथ सत्ता समीकरण पूरी तरह बदल गए हैं और उनके मजहब की वजह से पिछले कुछ समय से उन्हें काम मिलना कम हो गया है। आखिर जिस फिल्म-उद्योग में खान सितारों का वर्चस्व हो, वहां ऐसे आरोप सही नहीं लगते।

पल्लवी घोष@_pallavighosh

महाराष्ट्र में भाजपा की जीत अपेक्षित थी, लेकिन पुणे-मुंबई (जहां कांग्रेस का जन्म हुआ) सहित महाराष्ट्र के अधिकांश हिस्सों में कांग्रेस का लगभग पूरी तरह सफाया हो जाना चौंकाने वाला है। महाराष्ट्र कांग्रेस की अब सर्जरी करनी होगी और थके हुए चेहरों को बाहर का रास्ता दिखाना होगा।

तहसीन पूनावाला@tehseenp

कांग्रेस और शरद पवार उद्धव ठाकरे को मुख्यमंत्री बनाने की राजनीतिक कीमत चुका रहे हैं। अब उद्धव ही महाराष्ट्र में विपक्ष का चेहरा बन गए हैं, लेकिन अगर वे अपना प्रभाव बढ़ाना चाहते हैं तो उन्हें मुंबई से बाहर निकलना पड़ेगा। बीएमसी के बाहर शिंदे का प्रदर्शन भी शानदार रहा। मुस्लिम मतदाता भी एआइएमआइएम की ओर रुख कर रहे हैं। म्यूजिक मानिया@girish2

मोबाइल नंबर के माध्यम से किसी की पहचान बताने वाले तमाम डेडिकेटेड एप्स की तुलना में यूपीआइ कहीं बेहतर है। यह किसी भी मोबाइल नंबर के पीछे की वास्तविक पहचान को पल भर में उजागर कर देता है।

डा. गौरव गर्ग@DrGauravGarg4

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या महाराष्ट्र निकाय चुनाव में उद्धव ठाकरे को राज ठाकरे से हाथ मिलाना भारी पड़ा?

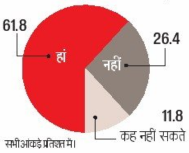

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या भारत ने ब्रिक्स देशों के नौसेना अभ्यास में शामिल न होकर सही किया?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

ममता जी करने लगीं महादेव का घोष,
उन्हें अचानक भक्ति का उमड़ पड़ा है जोश।
उमड़ पड़ा है जोश चुनावी हैं जो हिंदू,
आता जभी चुनाव तभी लहराता सिंधू।
शायद कुछ इस बार घट रही दिखती क्षमता,
तभी भक्ति का मार्ग चुन रहीं दीदी ममता।

- ओमप्रकाश तिवारी

रचनाकर्म

रोने वाला भी ना बचा कोई

मनीष त्रिपाठी

यह पुस्तक भारत में वामपंथ के क्षरण और इसके अनुयायियों के त्रासद मोहभंग के कारणों की व्यापक रूप से पड़ताल करने के साथ ही प्रमाण सहित इस विचारधारा के अवसान की कथा भी कहती है...

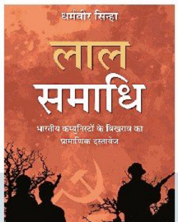

पुस्तक : लाल समाधि
लेखक : धर्मवीर सिन्हा
प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन
मूल्य : 350 रुपये

वक्त के सितम बेरहम होते हैं और भारत में इसे वामपंथियों से बेहतर भला कौन समझ सकता है। वर्ष 1925 में वर्ग संघर्ष की रूमानी बुनियाद पर खड़ी की गई भारत की कम्युनिस्ट पार्टी आज अपने पतन का शोक मना रही है, तो वहीं इसकी विचारधारा के एकदम विपरीत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जन-जन में पैठ बनाकर भारत ही नहीं, विश्व का सर्वाधिक विराट सेवा आंदोलन बन चुका है। एक शताब्दी की इस यात्रा में एक विचारधारा खाली हाथ है और पूरा देश दूसरी के साथ है, तो यह न तो अनायास है और न ही अकल्पनीय।

कभी छात्रों, युवाओं, बुद्धिजीवियों और मजदूर-किसानों की बड़ी उम्मीद बनी वामपंथी विचारधारा किस तरह आंतरिक सड़न का शिकार होकर इनके ही बीच तिरस्कृत और त्याज्य हुई, किस प्रकार परिवर्तन की बातें सत्ता पाने के एकमेव प्रलाप में परिवर्तित हुईं और आखिर क्यों लाल झंडे के नीचे घुटन इतनी बढ़ी कि इसके बहुचर्चित नेता फांसी लगाकर खुदकुशी करने लगे? धर्मवीर सिन्हा की सद्य प्रकाशित पुस्तक 'लाल समाधि' इन सभी प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम दस्तावेज के रूप में सामने आई है। विरोधाभासों से भरी इस आत्ममुग्ध और आयातित विचारधारा के भारत में अंतकाल में, यह जानना-समझना अपनी पाठकीय बुद्धि को वह विस्तार देने जैसा भी है कि देश-काल और परिस्थितियों में क्या आचरण करना चाहिए और किन बातों से दूर रहना चाहिए।

राजनीति और समाज को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर पैनी नजर-गहरी पकड़ रखने वाले पत्रकार के रूप में धर्मवीर सिन्हा ने इस पुस्तक को अपनी प्रतिष्ठा के अनुकूल ही एक शोध का स्वरूप दिया है, जो भारत में वामपंथ के क्षरण और इसके अनुयायियों के त्रासद मोहभंग की परत-दर-परत दास्तान है। माओ का मुंह देखकर 'बंदूक की नली से सत्ता पाने' का फार्मूला कैसे खून की तरह वामपंथियों के मुंह लग गया। किस प्रकार साम्यवाद का सुनहरा सपना दिखाकर सत्ता की सीढ़ियां चढ़ी गईं। मजदूर एकता के नाम पर फैक्ट्रियों में तालाबंदी करवाकर उद्योग-धंधे चौपट किए गए और दलाली के दलदल में गले तक धंसे नेता अपने घर भरते रहे। किसानों के हाथों से हल लेकर उन्हें किस तरह बंदूक उठाने को उकसाया गया। क्यों इस आंदोलन में खुदकुशी करने के बाद भी वामपंथी अपने ही 'कामरेड्स' की लानत-मलामत करते रहे, 'लाल समाधि' में भारत में वामपंथ की विडंबनाओं का सूक्ष्म मगर सटीक अध्ययन है।

पुस्तक के कुछ प्रमुख अध्याय इस प्रकार हैं- 'भारत में सशस्त्र वाम आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि', 'लाल झंडे का स्वर्णकाल और उथल-पुथल भरा दौर', 'प्रचंड लाल लहर के बाद घनघोर सन्नाटा', 'राष्ट्रवाद और भारतीय वामपंथी', 'आदिवासी समाज व्यवस्था और साम्यवाद में समानता।'

तेलंगाना सशस्त्र किसान आंदोलन, नक्सलबाड़ी आंदोलन, सर्वहारा वर्ग की सत्ता स्थापना का स्वप्न, आपसी सत्ता संघर्ष, दिल्ली के सुविधाभोगी वामपंथी बुद्धिजीवी, झारखंड के दुर्गम इलाकों में दरिद्र माओवादी लड़ाके, चारु मजूमदार की संदिग्ध मौत, कानू सान्याल की खुदकुशी, विनोद मिश्र का मोहभंग, कोंडापली सीतारमैया की बेदखली और फिर लगभग दुत्कार दी गई अवस्था में मौत, लेखक की कलम लगभग हर पहलू पर बखूबी और बेखौफ चली है। नक्सलबाड़ी आंदोलन शुरू होने पर पेइचिंग रेडियो ने जिसे 'वसंत का वज्रनाद' कहा था, भारत में वामपंथ के उस वसंत पर वज्रपात की यह कथा सभी को पढ़नी चाहिए, किसी सिगरेट की डब्बी पर छपी चेतावनी की तरह : कपटपूर्ण आचरण आदर्शवाद की धीमी और दर्दनाक मौत है!

विद्यालय व्यवस्था में सार्थक बदलाव

कन्हैया झा

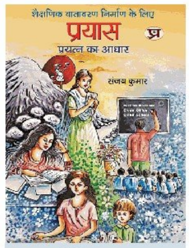

पुस्तक : शैक्षणिक वातावरण निर्माण के लिए प्रयास
लेखक : संजय कुमार
प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन
मूल्य : 600 रुपये

शिक्षक और छात्र को आपस में जोड़ने का सबसे बड़ा कार्य पाठ्यक्रम का है। सुयोग्य शिक्षकों के लिए पुस्तकें माध्यम भर होती हैं। उसी माध्यम के द्वारा वे छात्रों में जीवन रस, नैतिकता, मानवता और आदर्शों की प्राण-प्रतिष्ठा करते हैं। इसी क्रम में बिहार में जिला शिक्षा पदाधिकारी के रूप में कार्यरत संजय कुमार ने राज्य की शिक्षा व्यवस्था के अनेक छुए-अनछुए तथ्यों का गंभीर अध्ययन, विश्लेषण, मूल्यांकन, मनन और चिंतन किया है, जिसके पश्चात पुस्तक 'प्रयास' का सृजन संभव हो सका है।

पुस्तक में शिक्षकों से की गई अपील और संदेश ने कई शिक्षकों द्वारा विद्यालय में सार्थक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दिशा में सार्थक प्रयास करनेवाले शिक्षकों के नाम अपील, संदेश की शुरुआत ने सैकड़ों शिक्षकों को नवाचार के लिए प्रोत्साहित किया। गिरते मूल्य और घटती संवेदना के बीच शिक्षक और शिक्षा पदाधिकारी के रूप में अपनी लेखनी और कार्य-शैली से शिक्षण कार्य से जुड़े शिक्षकों के आत्मबल और आत्म-सम्मान को जगाया। शिक्षा और शिक्षण की राह में आने वाली चुनौतियों को समझते हुए लेखक ने उनका पुस्तक में उल्लेख किया है। वस्तुतः यह पुस्तक एक पदाधिकारी द्वारा शिक्षकों के नाम प्रतिदिन लिखे जाने वाले अपील व संदेशों का संकलन है। इस पहल से प्रदेश में शिक्षा व्यवस्था में हो रहे बदलाव को स्पष्टता से महसूस किया जा सकता है।

विषयवस्तु की दृष्टि से इस पुस्तक में हिंदी, गणित, भूगोल, अर्थशास्त्र, व्याकरण आदि पाठ्यपुस्तकों की विषयगत चर्चा के अतिरिक्त चेतना-सत्र, धरती और पर्यावरण के महत्व की चर्चा की गई है। इस पुस्तक का अध्ययन करना लेखक की विविध अनुभूतियों से होकर गुजरना है और अनुभूतियां हमें समृद्ध करती हैं। शिक्षकों के लिए यह पुस्तक विशेष रूप से उपयोगी है।

ऐसे थे वीर महाबली राणा वो

यतीन्द्र मिश्र

स्वाभिमान, स्वतंत्रता और सांस्कृतिक अस्मिता के उज्ज्वल प्रतीक के रूप में 'हिंदूपति महाराणा संग्राम सिंह प्रथम : स्वतंत्रता के ध्वजधारक' मेवाड़ के 50वें श्री एकलिंग दीवान, सिसोदिया राजपूत राजवंश के महान योद्धा महाराणा संग्राम सिंह प्रथम (राणा सांगा : 1482-1528) के जीवन और व्यक्तित्व का समग्र, शोधपरक और प्रेरक दस्तावेज है। भारतीय इतिहास में राणा सांगा का नाम वीरता, साहस और मातृभूमि के प्रति अविचल निष्ठा का पर्याय है, जिनके शासनकाल (1509-1528) में मेवाड़ ने शक्ति, गौरव और समृद्धि के शिखर को स्पर्श किया। यह कृति उनके अद्वितीय रणकौशल, सुदृढ़ प्रशासनिक और आर्थिक दूरदर्शिता, सूक्ष्म सांस्कृतिक संवेदनाओं तथा धर्म और राष्ट्र के प्रति अटूट समर्पण को प्रभावी ढंग से रेखांकित करती है।

पुस्तक : हिंदूपति महाराणा संग्राम सिंह प्रथम : स्वतंत्रता के ध्वजधारक
संपादक : डा. स्वाति जैन
प्रकाशक : महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट, उदयपुर
मूल्य : 500 रुपये

पुस्तक में मेवाड़ की व्यापारिक गतिविधियों, कर-व्यवस्था और आर्थिक नीतियों का अध्ययन प्रस्तुत है, जिनसे राज्य का प्रशासन, स्थायित्व और निरंतर संघर्ष संभव हो सका। राणा सांगा ने संस्कृति, धर्म और भक्ति के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समकालीन स्वदेशी स्रोतों के अभाव और विदेशी या प्रतिद्वंद्वी राजसत्ताओं द्वारा संरक्षित विवरणों में निहित असंवेदनशीलता और राजनीतिक पूर्वाग्रह के कारण महाराणा संग्राम सिंह के शासन को प्रायः केवल युद्धों और राजनीतिक संघर्षों तक सीमित कर प्रस्तुत किया गया।

डा. स्वाति जैन द्वारा संपादित यह पुस्तक ऐसे एकांगी इतिहास-लेखन को नकारते हुए दुर्लभ संदर्भों (शिलालेखों, ताम्रपत्र अभिलेखों) साहित्यिक साक्ष्यों और शोधपरक दृष्टि के माध्यम से महाराणा सांगा को व्यापक और संतुलित ऐतिहासिक संदर्भ में प्रस्तुत करती है। प्रतिष्ठित कवियों और इतिहासकारों में शामिल पंडित नरेंद्र मिश्र, डा. जे. के. ओझा, डा. श्रीकृष्ण जुगनू, डा. राजेंद्र नाथ पुरोहित, डा. मनीष श्रीमाली, गिरिराज सिंह, प्रियदर्शी ओझा, पूनम सिंह एवं अन्य द्वारा अर्पित साहित्यिक श्रद्धांजलियां राणा के व्यक्तित्व को केवल विजयी राजा के रूप में ही नहीं, एक आदर्श नायक के रूप में स्थापित करती हैं। इन सभी के प्रामाणिक आलेख ग्रंथ को बौद्धिक और ऐतिहासिक विश्वसनीयता प्रदान करते हैं।

एक प्राचीन घायल सभ्यता का आत्मावलोकन

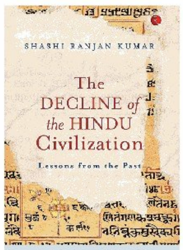

पुस्तक : द डिक्लाइन आफ द हिंदू सिविलाइजेशन
लेखक : शशि रंजन कुमार
प्रकाशक : रूपा पब्लिकेशन
मूल्य : 995 रुपये

साहित्य के नोबेल सम्मान से अलंकृत वी. एस. नायपाल की 'इंडिया : ए वुंडेड सिविलाइजेशन' में भारत एक ऐसी प्राचीन सभ्यता है, जो सहस्राब्दियों के आक्रमणों, दासता और बौद्धिक पराजयों से आहत हुई है। उनका 'घायल सभ्यता' का बिंब किसी एक युद्ध या कालखंड तक सीमित नहीं, बल्कि सदियों तक चले सांस्कृतिक विघटन, ऐतिहासिक विस्मृति और आत्म-संदेह की परिणति है। प्रश्न उठता है कि मानव इतिहास की प्राचीन और महानतम सभ्यताओं में से एक हिंदू सभ्यता, जो अपने बौद्धिक प्रावीण्य और आध्यात्मिक उत्कृष्टता के लिए विख्यात थी, इतनी गंभीर रूप से क्षीण क्यों हुई? इसी तर्कसंगत धरातल पर शशि रंजन कुमार की 'द डिक्लाइन आफ द हिंदू सिविलाइजेशन : लेसंस फ्राम द पास्ट' को पढ़ा जाना आवश्यक है। 16 अध्यायों की यह सुविचारित पुस्तक इन प्रश्नों में मौजूद दीर्घकालीन क्षय को बिना किसी भावनात्मक आग्रह के गहन शोध एवं ऐतिहासिक-तार्किक विश्लेषण से परखती है। आरंभिक भाग में भारतीय, ग्रीक, रोमन और चीनी सभ्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन है, अलेक्जेंड्रिया और नालंदा जैसे महान विश्वविद्यालयों के विनाश से लेकर विज्ञान, खगोलशास्त्र, गणित और चिकित्सा में प्रमुख विचारकों के योगदान तक। प्रेम, नाट्यशास्त्र और साहित्यिक सिद्धांतों के साथ अरस्तू, कौटिल्य आदि के राजनीतिक-ऐतिहासिक प्रभाव रेखांकित हैं। यह भी कि कैसे भारतीय सभ्यता ने बिना सैन्य बल के चीन, जापान, कोरिया और दक्षिण-पूर्व एशिया में अपने विचार, कला और दर्शन से गहरी छाप छोड़ी। यहां मध्यकाल में हुए इस्लामी आक्रमणों के गहरे प्रभाव उद्घाटित हैं। संस्थानों का विनाश, ज्ञान का पलायन और संस्कृत जैसी सृजनात्मक भाषा का क्षरण एक सांस्कृतिक शोक के रूप में उभरता है।

पुस्तक निर्णायक युद्धों और पराजयों का विश्लेषण करते हुए इन्हें सैन्य पराजय नहीं, सभ्यतागत विफलता की संज्ञा देती है। राजनीतिक एकता का अभाव, रक्षात्मक मानसिकता, पुरानी युद्ध-तकनीकें और शत्रु-बोध की कमी ने भारत को बार-बार विदेशी आक्रमणों के सामने असहाय बनाया। लेखक इस पतन को किसी एक कारण (जैसे बाहरी आक्रमण) तक सीमित नहीं करते, बल्कि अपनी इतिहासकार और अनुभवी प्रशासक दृष्टि से इसके अदृश्य कारणों की सूक्ष्म पड़ताल करते हैं। यहां न अतीत का महिमामंडन है, न उसका निषेध और न ही इतिहास का पुनर्लेखन; अतीत, निरंतर हमारे वर्तमान को गढ़ता है, जिससे पलायन संभव नहीं।

****

भारत में डाटा की लागत दुनिया में सबसे कम

नई दिल्ली: केंद्रीय दूरसंचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने शनिवार को कहा कि भारत में डाटा की लागत पूरी दुनिया में सबसे कम है और डाटा की खपत सबसे ज्यादा है। एक एक्स पोस्ट में केंद्रीय मंत्री ने कहा कि देश में अब 120 करोड़ से ज्यादा मोबाइल यूजर हैं और इस वर्ष जून तक देश के प्रत्येक गांव में 4जी नेटवर्क पहुंचने की उम्मीद है। देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 5जी सेवा शुरू हो चुकी है। (आइएएनएस)

ईज आफ डूइंग बिजनेस, मुक्त व्यापार समझौते और लोगों का बढ़ता भरोसा भारत को एक आत्मनिर्भर, प्रतिस्पर्धी और वैश्विक स्तर पर भरोसेमंद अर्थव्यवस्था के रूप में उभरने में मदद कर रहे हैं।
—पीयूष गोयल, केंद्रीय वाणिज्य मंत्री

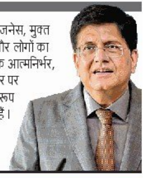

सड़क, रेल और हवाई यात्रा में विकास व सुरक्षा की खाई पाटे सरकार

नई दिल्ली: वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण जब वर्ष 2026-27 का आम बजट पेश करेंगी, तब देश का ध्यान केवल नए एक्सप्रेसवे, वंदे भारत ट्रेनों और हवाई अड्डों के विस्तार पर नहीं बल्कि इन ढांचागत सुविधाओं की सुरक्षा पर भी होना चाहिए। बीते वर्षों में सड़क, रेलवे और विमानन सेक्टर में निवेश अभूतपूर्व रहा है। लेकिन इसके समानांतर यात्रा को सुरक्षित बनाने की रफ्तार उतनी तेज नहीं दिखती। पिछले कुछ वर्षों में सड़क दुर्घटनाओं में बढ़ती मौतें, रेल हादसों की आशंका और विमानन निगरानी तंत्र पर उठते सवाल यह संकेत देते हैं कि इन्फ्रास्ट्रक्चर का विस्तार अब सुरक्षा सुधार के बिना अधूरा है। बजट 2026-27 सरकार के लिए यह अवसर है कि वह विकास और सुरक्षा के बीच की इस खाई को पाटे और स्मार्ट निवेश व नीतिगत बदलाव करे ताकि हम एक सुरक्षित भारत की ओर बढ़ें।

बजट 2026-27 बिगुल

जयप्रकाश रंजन • जागरण

क्यों जरूरी है सुरक्षा को प्राथमिकता देना

सड़क : 2023 में सड़कों पर 1.72 लाख मौतें हुईं, जो रोजाना औसतन 470 मौतों के बराबर है। उस वर्ष 4.8 लाख दुर्घटनाएं हुईं। आंकड़े बताते हैं कि दुर्घटना की संख्या 10 प्रतिशत बढ़ी है लेकिन मौतों की संख्या 80 प्रतिशत बढ़ी है। यानी दुर्घटनाएं ज्यादा घातक हो रही हैं। वैसे मुख्य कारण ओवरस्पीडिंग (71 प्रतिशत मौतें), शराब पीकर ड्राइविंग, गलत दिशा में चलना और हेलमेट/सीट बेल्ट न पहनना हैं। सड़कों की गुणवत्ता भी एक प्रमुख कारण है। ऐसे में सवाल उठता है कि सरकारों के स्तर पर इन मौतों को किस तरह से रोका जा सकता है? जानकारों का कहना है कि हालात को देखते हुए केंद्र सरकार की भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है। केंद्र नियमों, नीतियों व कानूनों के जरिए एक बानगी पेश कर सकता है। सभी राज्यों को सुरक्षित यातायात को वरीयता देने का दबाव बना सकता है। केंद्र की पहल पर पूरे देश में स्मार्ट सिग्नलिंग या एआइ आधारित ट्रैफिक निगरानी प्रणाली को अपनाने की नीति लागू की जा सकती है। हेलमेट और सीटबेल्ट अनुपालन की तकनीकी निगरानी को भी मजबूत किया जा सकता है। इमरजेंसी मेडिकल रिस्पांस नेटवर्क के राष्ट्रीय क्रियान्वयन को भी जरूरी माना जा रहा है ताकि बचाव टीम को देश के कोने-कोने में दुर्घटना-स्थल तक जल्दी पहुंचने की व्यवस्था हो।

रेलवे : आंकड़ों में भारतीय रेलवे में दुर्घटना की संख्या कम हुई है। 1960 के दशक में सालाना 1,390 दुर्घटनाएं हुई थीं, जिनकी संख्या घटकर अब करीब 80 पर सिमट गई है। लेकिन वर्ष 2023-24 में 40 गंभीर हादसे हुए। सबसे बड़ा कारण बोगियों का डिरेलमेंट यानी पटरी से उतरना है। 55 प्रतिशत से ज्यादा दुर्घटनाओं के लिए मानवीय गलतियों को जिम्मेदार माना गया।

1.72 लाख मौतें हुई थी कैलेंडर वर्ष 2023 के दौरान पूरे देश में सड़क हादसों के कारण, उस वर्ष 4.8 लाख सड़क दुर्घटनाएं हुई थीं

71% मौतें ओवरस्पीडिंग के कारण होती हैं सड़क हादसों में, शराब पीकर या गलत साइड ड्राइविंग और हेलमेन न पहनना भी प्रमुख कारण

विमानन : अगर एविएशन की बात की जाए तो में 2025 का एअर इंडिया विमान एआइ-171 दुर्घटना (260 मौतें) जैसे हादसे हुए, जिसने जांच प्रक्रिया की विश्वसनीयता पर सवाल उठाए। दिसंबर, 2025 में भारतीय एविएशन सेक्टर में तकरीबन 70 प्रतिशत हिस्सेदारी रखने वाली इंडिगो की एक साथ सैकड़ों उड़ानों के रद्द होने से जो हालात पैदा हुए, उसने नियमन संबंधी कमजोरियों को बाहर ला दिया है।

कौन-कौन से कदम उठाए जाने चाहिए

- आम बजट में सभी प्रमुख मार्गों पर कवच और सीबीटीसी जैसे उन्नत ट्रेन सुरक्षा प्रणालियों के विस्तृत विस्तार की घोषणा कर यात्रा को सुरक्षा बनाने का भरोसा दिलाया जाए
- कवच के लिए एक समयबद्ध राष्ट्रीय कार्यक्रम की घोषणा होनी चाहिए
- रेल यात्रा को सुरक्षित बनाने के लिए ड्रोन व एआइ के इस्तेमाल को लेकर भी महत्वाकांक्षी कदम उठाए जाएं
- डीजीसीए को अधिक स्वायत्तता और संसाधन प्रदान करने की घोषणा करके इस सेक्टर में ज्यादा नीतिगत स्पष्टता लाई जाए
- भारत को विमानन क्षेत्र में वैश्विक हब बनाने के लिए विमान रखरखाव व मरम्मत नेटवर्क को लेकर अलग से विशेष कोष स्थापित करने की जरूरत

दूसरे देशों से सीखने की जरूरत

दुनिया की चौथी सबसे बड़ी इकोनमी बनने के साथ ही सरकार की मंशा साफ है कि आने वाले वर्षों में अभी सड़क, रेलवे व हवाई नेटवर्क पर भारी भरकम निवेश हो। यहां सरकार चाहे तो चीन व जापान से काफी कुछ सीख सकती है, जहां सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए लगातार टेक्नोलाजी आधारित समाधान पर काम किया जा रहा है। चीन की हाई-स्पीड रेल (60,809 किमी नेटवर्क) में मौतें बहुत कम होती हैं क्योंकि ग्रेड सेपरेशन, अग्रिम सिग्नलिंग और नियमों का बहुत ही सख्ती से पालन किया जाता है। भारत में जहां दो प्रतिशत सड़कें 36 प्रतिशत मौतों के लिए जिम्मेदार हैं, वहीं चीन ने एक्सप्रेसवे नेटवर्क का जाल बिछाने के बावजूद दुर्घटनाओं के जोखिम को कम किया है। जापान में भूकंप अर्ली वार्निंग सिस्टम ट्रेनों को पहले रोक देता है। यूरोप और अमेरिका में पाजिटिव ट्रेन कंट्रोल (पीटीसी) से दुर्घटनाओं में 80 प्रतिशत कमी की गई है। यूरोप में यात्री प्रति किमी पर मौतें भारत से 10 गुना कम हैं, क्योंकि सख्त कानून प्रवर्तन हैं। इन सभी देशों में केंद्रीय कानून के तहत सुरक्षा संबंधी नियमों का सख्ती से पालन होता है। इनसे सीखते हुए 2026-27 बजट में सरकार को सुरक्षा पर केंद्रित करना चाहिए।

एक नजर में

35 हजार करोड़ रुपये का निवेश करेगी मारुति सुजकी

गांधीनगर: देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी मारुति सुजकी इंडिया गुजरात के खोराज में नया संयंत्र बनाएगी। कंपनी ने शनिवार को कहा कि इस संयंत्र पर 35 हजार करोड़ रुपये का निवेश होगा और इसकी कुल वार्षिक उत्पादन 10 लाख वाहन होगी। मारुति सुजकी के प्रबंध निदेशक श्रीयुत हिताची ताकेउची ने गांधीनगर में आयोजित एक समारोह में गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल को निवेश पत्र सौंपा। इस परियोजना से 12 हजार लोगों के लिए रोजगार के अवसर सृजित होंगे। (आइएएनएस)

टेक क्षेत्र में 1.25 लाख नौकरियां सृजित होंगी

नई दिल्ली : रोजगार से जुड़े समाधान प्रदान करने वाली कंपनी एडेको इंडिया ने एक रिपोर्ट में कहा है कि कैलेंडर वर्ष 2026 के दौरान भारत के टेक क्षेत्र में नई नौकरियों में 12-15 प्रतिशत की वृद्धि होगी। इस दौरान करीब 1.25 लाख नई नौकरियां सृजित होंगी। इसमें स्थायी, अस्थायी और ठेके वाली नौकरियां शामिल हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि टेक क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ), डाटा और साइबर सुरक्षा के जानकारों की मांग में 51 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, क्योंकि संस्थानों के लिए अब यह जरूरी आवश्यकता बन गए हैं। (आइएएनएस)

2030 तक 16 लाख करोड़ का होगा अपैरल बाजार

नई दिल्ली : केयरएज रेटिंग्स ने ताजा रिपोर्ट में कहा है कि भारत का खुदरा अपैरल बाजार अगले पांच वर्षों में तेज विस्तार के लिए तैयार है और वित्त वर्ष 2029-30 तक इसका आकार बढ़कर 16 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान है। वित्त वर्ष 2024-25 में अपैरल बाजार का आकार 9.30 लाख करोड़ रुपये रहा है और 2017-18 से अब तक इसमें वर्ष-दर-वर्ष आधार पर सात प्रतिशत की वृद्धि रही है। कुल अपैरल बाजार में संगठित खुदरा बाजार की करीब 41 प्रतिशत हिस्सेदारी है और अगले पांच वर्षों में इसके 10-13 प्रतिशत की तेजी से बढ़ने की उम्मीद है। (एएनआइ)

2025 में 117 लाख करोड़ बढ़ी पारिवारिक संपत्ति

पिछले वर्ष के दौरान भारतीय परिवारों की संपत्ति बढ़ने में सोने की कीमतों में तेजी का प्रमुख योगदान

नई दिल्ली, आइएएनएस: कैलेंडर वर्ष 2025 के दौरान भारतीय परिवारों की संपत्ति में एक महत्वपूर्ण वृद्धि रही है। यह मुख्य रूप से सोने की कीमतों के तेज बढ़ोतरी के कारण हुई है। एचडीएफसी म्यूचुअल फंड की ईयरबुक 2026 रिपोर्ट के अनुसार, पिछले कैलेंडर वर्ष के दौरान भारतीय परिवारों की संपत्ति में 117 लाख करोड़ रुपये या करीब 1.3 ट्रिलियन डालर की वृद्धि हुई है। इससे परिवारों के लिए एक मजबूत खर्च करने की क्षमता बनी है।

फंड हाउस ने बताया कि यह पिछले 25 वर्षों में सोने की कीमतों में वृद्धि से होने वाला सबसे बड़ा संपत्ति लाभ है। कैलेंडर वर्ष 2025 के दौरान सोने की कीमत में 58,310 रुपये प्रति 10 ग्राम या 73.45 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस तेज वृद्धि ने एक मजबूत सकारात्मक संपत्ति प्रभाव उत्पन्न किया है, जिसमें सोने के खिलाफ खुदरा कर्ज (गोल्ड लोन) में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। रिपोर्ट के अनुसार, 2025 भारतीय शेयर बाजारों के लिए एक समेकन का वर्ष साबित हुआ, जबकि सोने जैसे वैकल्पिक संपत्तियों ने असाधारण ताकत दिखाई।

पिछले वर्ष सोना स्पष्ट रूप से एक सुरक्षित संपत्ति के रूप में उभरा, जबकि शेयरों पर दबाव था। 2025 के दौरान वैश्विक बाजारों में भी भारत का प्रदर्शन खराब रहा, जिसके कारण वैश्विक बाजार पूंजीकरण में इसकी हिस्सेदारी में गिरावट आई। निफ्टी ने वैश्विक समकक्षों और उभरते बाजारों की तुलना में लगभग 25 प्रतिशत कम प्रदर्शन किया, जो लगभग तीन दशकों में इसका सबसे खराब प्रदर्शन है। इस सुधार ने भारत के मूल्यांकन प्रीमियम को इसके दीर्घकालिक औसत के करीब ला दिया है।

कैलेंडर वर्ष 2025 के दौरान वैश्विक स्तर पर सोना, उभरते बाजार, यूरोप और शानदार-7 शेयर शीर्ष प्रदर्शन करने वालों में थे। इसके विपरीत, तेल, अमेरिकी डालर और बिटकाइन वर्ष के दौरान सबसे खराब प्रदर्शन करने वाली संपत्तियों में रहे। शानदार-7 में एपल, माइक्रोसाफ्ट, एमेजोन, अल्फाबेट, मेटा, एनवीडिया और टेस्ला के शेयर शामिल हैं। यह सातों दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे प्रभावशाली टेक्नोलाजी कंपनियां हैं और अमेरिका के प्रमुख सूचकांक एसएंडपी 500 और कुल बाजार में इनकी महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है। यह कंपनियां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ), क्लाउड, इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) और ई-कामर्स में इनोवेशन के लिए जानी जाती हैं।

- पिछले वर्ष के दौरान 58,310 रुपये बढ़ा सोने का मूल्य
- कीमत बढ़ने के कारण गोल्ड लोन में भी वृद्धि दर्ज की गई
- तेल, डालर और बिटकाइन का खराब प्रदर्शन रहा

73 प्रतिशत से ज्यादा रिटर्न दिया सोने ने पिछले वर्ष के दौरान

25 प्रतिशत से कम रहा निफ्टी का प्रदर्शन समकक्षों की तुलना में

हाइब्रिड फंड पर विचार कर सकते हैं निवेशत

रिपोर्ट में कहा गया है कि कई वर्षों की मजबूत वृद्धि के बाद छोटे और मिड-कैप शेयरों ने 2025 में लार्ज-कैप शेयरों की तुलना में कम प्रदर्शन किया है, जबकि बाजार के विभिन्न क्षेत्रों में मूल्यांकन ठंडा हुआ है। लार्ज-कैप शेयर अभी भी बेहतर मूल्य प्रदान कर रहे हैं। एचडीएफसी म्यूचुअल फंड ने सलाह देते हुए कहा है कि निवेशक पोर्टफोलियो की अस्थिरता को कम करने के लिए हाइब्रिड फंड पर विचार कर सकते हैं। ऐसे फंड निवेशकों को शेयर, डेट और सोने के मिश्रण से लाभ उठाने की अनुमति देते हैं, जो अनिश्चित बाजार स्थितियों में बेहतर संतुलन प्रदान करते हैं।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

तीसरी तिमाही में एचडीएफसी बैंक का लाभ 12 प्रतिशत बढ़ा

मुंबई, प्रेट्र : निजी क्षेत्र के एचडीएफसी बैंक ने शनिवार को बताया कि चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही (अक्टूबर-दिसंबर 2025) के दौरान उसका कुल लाभ 12.17 प्रतिशत बढ़कर 19,807 करोड़ रुपये का लाभ हुआ है। अक्टूबर-दिसंबर 2024 के दौरान बैंक को 17,657 करोड़ रुपये और जुलाई-सितंबर 2025 में 19,611 करोड़ रुपये का लाभ हुआ था।

बैंक ने शेयर बाजारों को बताया कि बीती तिमाही में उसकी ब्याज से शुद्ध आय 6.4 प्रतिशत बढ़कर 32,60 करोड़ रुपये और गैर-ब्याज से आय 13,250 करोड़ रुपये रही है। इस दौरान शुद्ध ब्याज लाभ 3.35 प्रतिशत रहा है। तिमाही के दौरान नए लेबर कोडों के कार्यान्वयन से बैंक पर 800 करोड़ रुपये का खर्च पड़ा है। उधर, कम प्रोविजन के कारण बीती तिमाही में यस बैंक का लाभ 55 प्रतिशत बढ़कर 952 करोड़ रुपये रहा है।

- बीती तिमाही में बैंक को 19,807 करोड़ रुपये का लाभ
- आइसीआइसीआइ बैंक को 12,537 करोड़ रुपये का लाभ

आइसीआइसीआइ बैंक का लाभ 2.68 प्रतिशत घटा: आइसीआइसीआइ बैंक ने कहा है कि अक्टूबर-दिसंबर 2025 तिमाही के दौरान उसका शुद्ध लाभ 2.68 प्रतिशत घटकर 12,537.98 करोड़ रुपये रहा है। पिछले वर्ष समान तिमाही में बैंक को 12,883.37 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था। बैंक ने बताया कि बीती तिमाही में ब्याज से शुद्ध आय 7.7 प्रतिशत बढ़कर 21,932 करोड़ रुपये रही है और कर्ज वितरण में 11.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। नए लेबर कोड लागू करने से बैंक पर 145 करोड़ रुपये का अतिरिक्त बोझ पड़ा है। साथ ही प्रोविजन 2,556 करोड़ रुपये रहा है।

तीन वर्षों में ईयू को दोगुना हो जाएगा निर्यात

नई दिल्ली, प्रेट्र : निर्यातकों का कहना है कि भारत और 27 देशों के संगठन यूरोपीय संघ (ईयू) के बीच मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) होने से वस्त्र, फार्मास्यूटिकल्स, रसायन, इंजीनियरिंग सामान, रत्न व आभूषण के निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। समझौते के लिए वार्ता के समापन की घोषणा 27 जनवरी को की जा सकती है। उद्योग का अनुमान है कि एफटीए के कारण टैरिफ समाप्त होने से अगले तीन वर्षों में ईयू को निर्यात दोगुना हो जाएगा।

निर्यातकों ने बताया कि यह एफटीए निर्यात के लिए एक स्थिर और पूर्वानुमानित ढांचा प्रदान करेगा, जिससे भारतीय कंपनियों को दीर्घकालिक निवेश योजना बनाने, यूरोपीय मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत होने और बाजार तक पहुंच सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी। अपैरल एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल के चेयरमैन ए शक्तिवेल का कहना है कि यह एफटीए किसी एक बाजार पर हमारी निर्भरता को कम करने में एक गेम चेंजर होगा। उन्होंने कहा कि अमेरिका की ओर से भारतीय वस्तुओं पर लगाए गए उच्च टैरिफ के कारण घरेलू निर्यातकों को उच्च लागत और एक प्रमुख बाजार में प्रतिस्पर्धा में कमी का सामना करना पड़ रहा है, जिसने भारतीय निर्यातकों को निर्यात बाजार में विविधता लाने के लिए प्रेरित किया है।

एफटीए वार्ता में उन क्षेत्रों पर जोर दिया गया है, जहां भारत का यूरोपीय संघ को निर्यात मजबूत है। वस्त्र और परिधान, फार्मास्यूटिकल्स, इंजीनियरिंग सामान, पेट्रोलियम उत्पाद और रसायन केंद्र में हैं। वर्तमान में वस्त्र और परिधान पर ईयू में 12-16 प्रतिशत आयात शुल्क लगता है, जिससे भारतीय वस्तुएँ कम प्रतिस्पर्धी हो जाती हैं। यूरोपीय संघ में तैयार कपड़ों के लिए औसत आयात शुल्क 12 प्रतिशत है, जो भारत को यूरोपीय संघ की सामान्यीकृत प्राथमिकता योजना (जिसे अब जीसीटीएस कहा जाता है) के तहत विशेष पहुंच मिलने के कारण 9.6 प्रतिशत हो जाता है।

कानपुर स्थित ग्रोमोर इंटरनेशनल के प्रबंध निदेशक यद्वेंद्र सिंह सचान ने कहा कि घरेलू चमड़ा निर्यातकों को इस अवसर का उपयोग करके निर्यात को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाना चाहिए। भारतीय निर्यात संगठनों के महासंघ (फियो) का कहना है कि एक व्यापक भारत-ईयू एफटीए का समापन न केवल समय पर है, बल्कि यह रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है।

- भारत-यूरोपीय संघ एफटीए वार्ता के समापन की घोषणा 27 जनवरी को संभव
- वस्त्र, फार्मास्यूटिकल्स और रसायन समेत कई क्षेत्रों में निर्यात बढ़ेगा

बेदम कानूनों का क्या फायदा

दो दोस्त जंगल में बाघ का शिकार करने गए। रास्ते में उन्होंने सोचा कि बाघ वाले इलाके में पहुंचने से पहले थोड़ा टहल लिया जाए। वे गाड़ी से उतरे और घूम ही रहे थे कि अचानक उनका सामना एक बाघ से हो गया। अब समस्या यह थी कि उन्होंने अपनी बंदूकें गाड़ी में ही छोड़ दी थीं। तभी उनमें से एक को शानदार आइडिया आया। उसने जेब से अपनी बंदूक का लाइसेंस निकाला और बाघ को दिखाते हुए कहा- देखो, मेरे पास लाइसेंस है।

धीरेंद्र कुमार, संपादक, हिंदी डाट वैल्यूरिसर्चआनलाइन डाट काम

बोनस

भले ही यह एक चुटकुला है लेकिन इसलिए काम करता है क्योंकि हम सब सहज रूप से समझते हैं कि कागज का एक टुकड़ा बाघ पर कोई असर नहीं डालता। बाघ वही करेगा, जो बाघ करते हैं। पिछले कुछ समय से अंतरराष्ट्रीय कानून को लेकर काफी चर्चा हो रही है। वेनेजुएला में अमेरिका की कार्रवाई और ग्रीनलैंड को लेकर दी गई धमकियों ने संप्रभुता, संयुक्त राष्ट्र चार्टर और नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था पर बहस छेड़ दी है। इंटरनेट मीडिया स्थापित नियमों के उल्लंघन पर नैतिक आक्रोश से भरा पड़ा है।

यह एक असहज सच है, जो अंतरराष्ट्रीय राजनीति और वित्तीय बाजार-दोनों पर समान रूप से लागू होता है। कागज पर लिखे शब्दों में अपने आप कोई ताकत नहीं होती। कोई कानून, नियम, चार्टर या संधि-ये सब स्याही की जमावट भर हैं। ये किसी को शारीरिक रूप से कुछ करने से रोक नहीं सकते। कानूनों को ताकत उनकी भाषा या नैतिक स्पष्टता से नहीं, बल्कि परिणामों की निश्चितता से मिलती है। कानून तभी काम करता है, जब उसे तोड़ने वाले को यह साफ पता हो कि सजा मिलेगी और वह सजा सच में नुकसान पहुंचाएगी। जैसे ही यह भरोसा कमजोर पड़ता है, कानून एक आदर्श वाक्य बनकर रह जाता है। यही सच्चाई भारत के वित्तीय नियामकों पर भी लागू होती है। हमारे यहां नियमों की कोई कमी नहीं है। सेबी, इरडा और आरबीआइ के विस्तृत नियम मौजूद हैं, जिन्हें बार-बार अपडेट किया जाता है। हर नए घोटाले के बाद प्रतिक्रिया लगभग तय रहती है- और नियम, ज्यादा जानकारी, सख्त अनुपालन। लेकिन जमीनी स्तर पर तस्वीर नहीं बदलती।

मिस-सेलिंग आज भी आम है। बीमा एजेंट उन लोगों को महंगी एंडोमेंट पालिसियां बेचते हैं, जिन्हें केवल साधारण टर्म इंश्योरेंस की जरूरत होती है। बैंक के रिलेशनशिप मैनेजर जटिल उत्पाद उन ग्राहकों को थमा देते हैं, जो उन्हें समझ ही नहीं पाते। डिस्ट्रीब्यूटर वही फंड सुझाते हैं, जिनमें उनका कमीशन ज्यादा हो। स्टाकब्रोकर जानते हुए भी खुदरा निवेशकों को डेरिवेटिव्स की ओर धकेलते हैं, जबकि सेबी के आंकड़े बताते हैं कि 90 प्रतिशत ट्रेडर वहां पैसा गंवाते हैं।

हाल ही में सामने आया एक मामला इस समस्या को साफ दिखाता है.। यूपी में रहने वाले एक बुजुर्ग दंपती के बैंक खाते में विदेश में काम कर रहे बेटे द्वारा पैसे भेजे गए। बैंक ने तुरंत उन पर बीमा पालिसी खरीदने का दबाव बनाना शुरू कर दिया। बेटे के मना करने के बावजूद बैंक कर्मचारी घर पहुंच गए, दस्तखत और चेक की मांग की। पड़ोसी जमा हो गए, माहौल तनावपूर्ण हो गया और दबाव इतना बढ़ा कि बुजुर्ग व्यक्ति की तबीयत बिगड़ गई। यह सब सिर्फ एक सेल्स टार्गेट के लिए।

यह कोई अपवाद नहीं। वजह सीधी है: नियम तोड़ने पर मिलने वाली सजा, उससे होने वाले मुनाफे के मुकाबले बहुत मामूली है। जुर्माने और चेतावनियां बिजनेस की लागत बन चुकी हैं। असली बदलाव तभी आएगा, जब कार्रवाई वास्तविक नुकसान पहुंचाए। लाइसेंस रद्द हों, आर्थिक मार पड़े और जरूरत पड़े तो जेल भी। निवेशकों की सुरक्षा बेहतर नियमों से नहीं, बल्कि सख्त और निश्चित अमल से होगी। खतरनाक जानवरों को लाइसेंस दिखाना बंद कीजिए। पिंजरे बनाना शुरू कीजिए।

राष्ट्रीय फलक

बिहार के विराट रामायण मंदिर में हुई विश्व के सबसे बड़े अखंड शिवलिंग की स्थापना

जासं, मोतिहारी (पूर्वी चंपारण)

बिहार में पूर्वी चंपारण जिले के कल्याणपुर स्थित कैथवलिया स्वनाम धन्य जानकी नगर में निर्माणाधीन विराट रामायण मंदिर परिसर में शनिवार को विश्व के सबसे बड़े अखंड 33 फीट ऊंचे शिवलिंग (सहस्त्रलिंगम) की स्थापना हुई। आगम विधि से सुबह आठ बजे इसकी पूजा हुई। पीठ पूजा के लिए चारों वेदों के ज्ञाता विद्वान आचार्यों ने मंत्रोच्चारण किया। महादेव की नगरी काशी (वाराणसी), मिथिला व भारतवर्ष के विभिन्न नगरों से आए विद्वान पंडितों ने ईशान संहिता के अनुसार शिवलिंग की उत्पति की जानकारी दी और उसी तिथि नरक निवारण चतुर्दशी के पुण्य अवसर पर सहस्त्रलिंगम की स्थापना के लिए मंत्रोच्चारण शुरू किया। सुबह 10:45 बजे क्रेन से शिवलिंग को आधार पीठ पर रखने की शुरू प्रक्रिया 11:57 बजे संपन्न हुई। इस पल के साक्षी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी बने।

निर्माणाधीन विराट रामायण मंदिर में बने 36 फीट ऊंचे आधार पीठ में स्थापित 33 फीट ऊंचे अखंड शिवलिंग में ब्रह्मा, विष्णु व शिव भाग बने हैं। शिवलिंग निर्माण में शिल्पकारों का नेतृत्व करने वाली हेमलता देवी व उनके पुत्र विनायक वेंकेट रमण बताते हैं कि अब तक के इतिहास में एक ही पत्थर से इतने बड़े सहस्त्रलिंगम का निर्माण पहली बार हुआ है।

- 36 फीट ऊंचे आधार पीठ पर स्थापित 33 फीट के अखंड शिवलिंग में ब्रह्मा, विष्णु और शिव के बने हैं भाग

बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में विराट रामायण मंदिर में आधार पीठ पर स्थापित अखंड शिवलिंग। जागरण

साप्ताहिक राशिफल

रविवार, 18 जनवरी, 2026 से शनिवार 24 जनवरी, 2026 तक

पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ) कार्य सलाह से करे, धनागम में प्रयास, पारिवारिक सहयोग, विदेश कार्य में सफलता, लक्ष्य के प्रति सजगताए भवन भूमि कार्य में देरी, शिक्षा में एकाग्रता, चयन में सफलता, प्रणय में अनबन, धर्म में रुचि, अधिकारी से सहयोग, राजनैतिक अपयश, आय में सुधार शुभ अंक 4

वृष (इ, ऊ, ए, ओ, पा, वी, वू, वे, वो) कार्य शैली में सुधार करें, अर्थसाधन में सुधार, महिला से सहयोग, वाहन, आभूषण योग, चयन में सफलता, संतान से सहयोग, त्वचा, रक्त विकार योग, शीत प्रकोप का योग, ससुराल से सहयोग, भ्रमण मनोरंजन योग, स्थान पद परिवर्तन योग, व्यय अधिक, शुभ अंक 5

मिथुन (का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा) धनागम में सफलता, विदेश से व्यापार के योग, चिन्ता का समाधान, साधनों की पूर्ति, अध्ययन में रुचि, चयन में सफलता, वाद विवाद से बचें, कुसंग से बचें, राज्यपक्ष से सहयोग, आय में सुधार, शुभ अंक 6

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो) साझेदारी में सावधानी, अर्थसाधन में सफलता, नये व्यापार से बचें, श्रम से सफलता, अतिकल्पना से बचें, विदेश कार्य में प्रगति, निजी मतभेद, भौतिक साधनों की वृद्धि, खानपान का ध्यान रखें, जीवनसाथी का मिलन, राजनैतिक अपयश, धर्म में रुचि, शुभ अंक 7

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे) विशेष व्यक्ति से सहयोग, अर्थसाधन मे संतोष, कार्य में प्रयास से सफलता, सामाजिक कर्य का योग, प्रतिस्पर्धा से चिन्ता, मित्रा से सावधान, साधनों की पूर्ति, चयन मे सफलता, शिक्षा में रुचि, ससुराल से सहयोग, शीत प्रकोप प्रभावी, एकाएक कार्य सम्पन्न, शुभ अंक 8

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो) कार्य में प्रगति, धनागम में प्रयास, निजी और पारिवारिक जीवन में मतभेद, कार्य करने वालों से सावधान, वाहन, आभूषण योग, अध्ययन में रुचि, चयन में सफलता, शत्रुपक्ष परास्त, समय का सदुपयोग करें, दांपत्य में सुख, वाहन में सावधानी, शुभ अंक 9

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते) अर्थसाधन में सुधार, चिन्ता का समाधान, निर्णय सलाह से करें, विदेश कार्य में प्रयास सार्थक, महिला से सहयोग, संतान के लिये योजना, शिक्षा में एकाग्रता, प्रणय में सुख, वाहन में सावधानी, व्यय अधिक, शुभ अंक 1

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू) लक्ष्य का ध्यान रखें, कार्य में श्रम से सफलता, अर्थसाधन में सुधार करें, दिनचर्या व्यस्ततम्, महिला से सहयोग, साधनों की पूर्ति, निजी मतभेद, वाहन, आभूषण का योग, शीत प्रकोप से बचें, शत्रुपक्ष से सावधान, जीवनसाथी का मिलन, व्यय अधिक, शुभ अंक 2

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे) साझेदारी में सावधानी, कार्य में प्रयास से सफलता, धनागम में सफलता, धन के आवागमन में सावधानी, पारिवारिक सहयोग, भवन साजसज्जा तथा वाहन योग, अध्ययन में रुचि, वाद विवाद से बचें, सिरदर्द, रक्त विकार प्रभावी, दांपत्य में अनबन, व्यय अधिक, शुभ अंक 4

मकर (भो, जा, ज, खी, खू, खे, खो, गा, गी) निर्णय सलाह से करें, धनागम में सुधार, कार्य में प्रयास सार्थक, पूंजी निवेश में सावधानी, पारिवारिक तनाव, पारिजनों से सहयोग करें, भौतिक साधन की पूर्ति, संतान से सहयोग, चयन में देरी, शीत प्रकोप से बचें, खानपान का ध्यान रखे, ईर्ष्या से बचें, प्रणय में सुख, शुभ अंक 5

कुम्भ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सा, दा) संबंधों में सुधार, सहयोग से सफलता, निजी मतभेद, साधनों की पूर्ति, समाज में यश, साधनों की पूर्ति, संतान से सहयोग, मित्रों से सहयोग, जीवनसाथी का मिलन, रक्षा साधन कार्य में सफलता, शुभ अंक 6

मीन (दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची) धनागम में प्रयास, साहस की वृद्धि, रचनात्मक एवं सामाजिक कार्य का योग, महिला से सहयोग, चयन में सफलता, भ्रमण एवं मनोरंजन जन योग, वायु विकार रक्त विकार का योग, वाणी पर नियन्त्रण, दाम्पत्य में सुख, अधिकारी से सहयोग, व्यय अधिक, शुभ अंक 7

संक्षिप्त

1,300 फर्जी आपत्तियां आईं
अलवर ड्राफ्ट वोटर रोल: गहलोत

कांग्रेस नेता अशोक गहलोत ने शनिवार को मतदाता सूची संशोधन में कथित अनियमितताओं रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र में प्रक्रिया अलवर जिले में 1,383 "फर्जी आपत्तियों" का दावा एक ही दिन में BJP के एक चुनाव एजेंट ने इन दोनों को लीड किया। उन्होंने प्रशासन और चुनाव आयोग पर आरोप लगाया कि आयोग ने कहा कि वह जो कुछ भी रोकने में विफल रहा, उसे रोकने में विफल रहा। "लोकतंत्र पर हमला"। "यह घटना लोकतंत्र किस स्तर तक पहुँच गया है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण राजस्थान में इसे कम आंका जा रहा है। यह सिर्फ़ 'वोट चोरी' नहीं बल्कि लूट की एक सोची-समझी साज़िश जाली दस्तावेजों के माध्यम से सार्वजनिक जनादेश, गहलोत ने एक पोस्ट में कहा। - PTI

हत्या में शामिल शूटर
मोहाली में कबड्डी खिलाड़ी की हत्या

हत्या में शामिल शूटरों में से एक कबड्डी प्रमोटर-कम-खिलाड़ी कंवर दिग्विजय सिंह उर्फ राणा बलचौरिया शनिवार को कथित तौर पर जवाबी हमले के दौरान मारे गए पंजाब पुलिस ने उसके पुलिस हिरासत से भागने के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया। करण पाठक उर्फ करण डिफॉल्टर, तरनदीप सिंह और उनके साथी को कुछ दिन पहले हिरासत में लिया गया था। पुलिस ने 30 साल के बालाचौरिया को गोली मार दी। 15 दिसंबर 2025 को मोहाली में हमलावरों द्वारा। शुक्रवार रात पाठक ने सीने में दर्द की शिकायत की और जब उसे अस्पताल ले जाया जा रहा था, पुलिस की गाड़ी सड़क के डिवाइडर से टकरा गई और पाठक मोहाली के वरिष्ठ अधीक्षक ने कहा, भाग निकला पुलिस हरमनदीप सिंह हंस. - PTI

AIADMK ने पांच चुनावों की घोषणा की मासिक सहित वादे
महिलाओं को ₹2,000 की सहायता

अन्य वादों में पुरुषों के लिए मुफ्त बस यात्रा योजना का विस्तार, यात्रा की अवधि बढ़ाना शामिल है
ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना और पांच लाख महिलाओं को दोपहिया वाहन वितरित करना

टी. रामकृष्णन
चेन्नई

ए 2026 के प्रमुख विधानसभा चुनाव तमिलनाडु, अखिल भारतीय भारत अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (AIADMK) शनिवार को आश्वासन दिया लोगों से चुनावी वादे राज्य का, जिसमें मासिक राशि प्रदान करना शामिल है महिला मुखिया को ₹2,000 राशन कार्ड सिस्टम के तहत आने वाले हर परिवार का।

इस योजना को कुल विलाक-कु थिट्टम कहा जाएगा एक रिपोर्ट के मुताबिक, इस स्कीम का मकसद महिला बेनिफिशियरी के बैंक अकाउंट में फंड ट्रांसफर करना होगा।

द्वारा जारी बयान अन्नाद्रमुक महासचिव एडप्पाडी के. पलानीस्वामी।

यह पहली बार नहीं है पार्टी ने यह योजना बनाई है ऐसी योजना।

2021 विधानसभा चुनाव, AIADMK ने घोषणा की थी मासिक भत्ता महिलाओं के लिए ₹1,500. हालांकि, यह द्रमुक के एक दिन बाद आया (डीएमके) प्रमुख एमके स्टालिन, तब तमिलनाडु विधानसभा में विपक्ष के नेता ने एक योजना का अनावरण किया

AIADMK के महासचिव एडप्पाडी के. पलानीस्वामी। फाइल फोटो

प्रति व्यक्ति ₹1,000 की गारंटी महीना।

सितंबर 2023 से, सत्तारूढ़ द्रमुक सरकार प्रदान कर रही है कलैगनार के तहत महिलाओं को ₹1,000 प्रति माह मगालिर उरीमाई थिट्टम योजना।

श्री पलानीस्वामी ने दिया चार और आश्वासन, जिनमें विस्तार भी शामिल है पुरुषों और महिलाओं के लिए मुफ़्त बस यात्रा कंक्रीट का निर्माण खरीदे गए भूखंडों पर मकान सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में उन लोगों के लिए क्षेत्र जो नहीं करते हैं

उन्होंने ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना की अवधि बढ़ाने का भी वादा किया।

125 दिनों से 150 दिनों तक, जैसा कि घोषणा की गई है विकास के तहत केंद्र भारत-रोज़गार और आजीविका मिशन के लिए गारंटी, और 5 लाख महिलाओं को दोपहिया वाहन वितरित करेंगे ₹25,000 की सब्सिडी के साथ प्रत्येक।

विदियाल के हिस्से के रूप में पयानम (मुफ़्त बस यात्रा) महिलाओं के लिए), लागू किया गया मई 2021 से, जब DMK का शासन आया, लगभग 59 लाख महिलाएं प्रतिदिन 7,500 साधारण ट्रेनों में यात्रा करती हैं शहर और घाट की बसें, कुल यात्रियों का 66.45% हिस्सा हैं। 2025 में राज्य सरकार ने 26 बजट आवंटित किया था ₹3,600 करोड़ योजना।

एक योजना का पुनरुद्धार श्री पलानीस्वामी ने अम्मा मंदिर के पुनरुद्धार की घोषणा की दोपहिया वाहन योजना, उनके कार्यकाल के दौरान लागू किए गए एआईएडीएमके कार्यक्रम 2017 से मुख्यमंत्री के रूप में 2021 तक। हालाँकि, वर्तमान DMK सरकार ने स्कीम को खत्म कर दिया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा लॉन्च किया गया फरवरी 2018 को पूर्व तमिल की 70वीं जयंती के अवसर पर तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता ने कहा कि इस योजना के तहत हर लाभार्थी को एक लाख रुपये दिए जाएंगे। 50% के बराबर अनुदान एक दोपहिया वाहन की कीमत, या ₹25,000, जो भी अधिक हो निचला।

एक अतिरिक्त वित्तीय ₹6,250 की सहायता दी गई उन लोगों के लिए अलग रखें जिनके पास विकलांगता।

पंजाब के मुख्यमंत्री की बैठक शाह ने चिंता जताई ओवर ड्राफ्ट बीज विधेयक

द हिंदू ब्यूरो
चंडीगढ़

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की शाह से शनिवार को मुलाकात की और बीजों के मसौदे पर "गंभीर आपत्ति" जताई विधेयक, 2025, जिसके लागू होने की संभावना है संसद में पेश किया जाएगा आने वाले बजट सेशन के दौरान।

विधेयक, जो निर्धारित करता है एक नियामक ढांचा बीजों की गुणवत्ता सुनिश्चित करें किसानों को बेचा जाता है, बढ़ावा देता है "व्यापार करने में आसानी" और अनुपालन कम करता है बोझ का विरोध किया गया है विभिन्न किसान समूहों द्वारा और विपक्षी दल, जिनमें कांग्रेस भी शामिल है भारत राष्ट्र समिति। प्रस्तावित कानून के आलोचकों ने इसे किसानों के हितों के लिए हानिकारक और एक "हमला" बताया राज्य शक्तियों पर", और एक "सौंपने" का प्रयास बीज क्षेत्र से लेकर कॉरपोरेट्स तक"।

मीटिंग के बाद, मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने भी सुत-लेज-यमुना लिंक (एसवाईएल) विवाद, "धीमी गति" जैसे कई लंबे समय से लंबित मुद्दों को उठाया खाद्यान्नों का वितरण भारतीय निगम, ग्रामीण विकास निधि का "भुगतान न करना", और पंजाब का "कमजोर पड़ना" प्रशासन में भूमिका चंडीगढ़ वालिए।

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ शाह ने शनिवार को नई बात कही। ANI

चिंता व्यक्त करते हुए बीज विधेयक, श्री मान कहा, "विधेयक में पेश की गई क्षेत्र-आधारित प्रणाली पंजाब के प्रतिनिधित्व की गारंटी नहीं देता केंद्रीय बीज समिति, मौजूदा सिस्टम के विपरीत, जिससे राज्य की उन निर्णयों में आवाज उठ सीधे क्षेत्र को प्रभावित करते हैं।

"ड्राफ्ट इस पर चुप है किसानों के लिए मजबूत मुआवजा ढांचा उन्होंने कहा, "जब पंजीकृत बीज काम नहीं करता है तो किसानों को नुकसान होता है।"

'कोई अतिरिक्त पानी नहीं' मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि "पंजाब के पास किसी अन्य के साथ साझा करने के लिए कोई अतिरिक्त जल नहीं है राज्य में एक में पर्याप्त कमी सतलुज की उपलब्धता, रावी और ब्यास का पानी। तो, एसवाईएल का निर्माण नहर व्यवहार्य नहीं है"।

2 MLA के सस्पेंशन के बाद BJD में 'अंदरूनी बेचैनी' सामने आई

सत्यसुंदर बारिक
भुवनेश्वर

हाल ही में निलंबन बीजू जनता दल के दो मौजूदा विधायक (बीजद) विधायकों की संख्या पार्टी के अनुसार के अध्यक्ष और नेता विपक्ष के नेता नवीन पटनायक ने मंथन का संकेत दिया है क्षेत्रीय पार्टी के भीतर, जारी असंतोष के बीच

कथित तौर पर इस्तेमाल किया गया प्रभाव वीके पांडियन, एक पूर्व आईएएस अधिकारी और करीबी सहयोगी श्री पटनायक की।

हालाँकि श्री पांडियन सार्वजनिक रूप से घोषणा की थी बीजेडी की हार के बाद उन्होंने राजनीति से इस्तीफा दे दिया। 2024 ओडिशा विधानसभा चुनाव, पार्टी नेता दावा किया कि वह जारी है पर्दे के पीछे से "निर्णय लेना"।

निलंबित विधायकों में सनातन महाकुड, एक प्रभावशाली ट्रांसपोर्टर खनिज युक्त के- से ओंझर जिला – भी मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी का गृह जिला – और अरबिंद महापात्रा, बिजय महापात्रा के बेटे, BJD के संस्थापक सदस्यों में से एक, बिजय मोहपात्रा को श्री मोदी ने बिना किसी औपचारिकता के सस्पेंड कर दिया।

2000 में पार्टी के सत्ता में आने के तुरंत बाद पटनायक और तब से व्यापक रूप से सबसे बुरा माना जाता है BJD अध्यक्ष के.

गुरुवार को बीजेडी ने एक छोटा बयान जारी कर कहा कि दोनों विधायकों ने उनके लिए निलंबित कर दिया गया "पार्टी विरोधी" में शामिल होना बाद में, पार्टी प्रवक्ता लेनिन मोहंती ने एक विज्ञप्ति में कहा कि "गतिशील के तहत नवीन पटनायक के नेतृत्व में बीजद सबसे अलग है। भारत की सबसे सफल क्षेत्रीय पार्टियों में से एक एक करोड़ से ज़्यादा समर्पित सदस्यों वाली पार्टी

बीजद अध्यक्ष नवीन पटनायक

सदस्यों को सख्ती से पार्टी के संविधान और दिशा-निर्देशों का पालन करें।

'दिशानिर्देशों का उल्लंघन'

"निर्णायक कार्रवाई हमेशा उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की गई है। नवीन पटनायक ने कभी नहीं भ्रष्ट देशद्रोहियों को बर्दाश्त करता है। महापात्र और महाकुड बयान में कहा गया है, "इन दिशा-निर्देशों का उल्लंघन किया गया है।" जोड़ा गया.

हालाँकि, राजनीतिक विश्लेषकों और कई पार्टियों नेताओं ने सवाल उठाए हैं सामाजिक व्याख्या।

"दोनों नेताओं में से कोई भी देखा या देखा गया है BJD के एक नेता ने नाम न बताने की शर्त पर कहा, "हाल के दिनों में पार्टी विरोधी गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं।" "दो लोगों का सस्पेंशन मौजूदा विधायक एक संकेत जो किसी को भी नहीं करना चाहिए लाल रेखा भी पार करो हालांकि पटनायक अब नहीं रहे वह अधिकार रखता है एक बार अपने दौरान व्यायाम किया मुख्यमंत्री का कार्यकाल उसने तीखा कहा।

पार्टी के अंदर बेचैनी की और हवा मिली है श्री पांडियन की पत्नी सुजाता कार्ति-केयन ने कहा कि और एक पूर्व आईएएस अधिकारी खुद को नामांकित किया जा सकता है राज्य सभा में जब चार सीटें खाली हो गई हैं अप्रैल. ऐसी उम्मीद कुछ नेताओं ने यह कदम उठाया है खुले तौर पर असंतोष व्यक्त किया, जबकि अन्य हैं

कहा जाता है कि उन्होंने इसका समर्थन किया है कथित कदम.

इस बीच, अटकलें संभावित लॉन्च के बारे में एक नए क्षेत्रीय राजनीतिक ओडिशा में बढ़त हुई है मोमेंटम. हाल के दूर श्री बिजय महापात्रा द्वारा राज्य के विभिन्न भागों और मजबूत किया है ये अफवाहें. पार्टी नेतृत्व को आशंका है महत्वपूर्ण ब्रेकअवे, के साथ नेताओं का एक हिस्सा संभावित रूप से प्रस्तावित नए गठन के साथ जुड़ सकता है।

चिंताएँ भी हैं बीजद के भीतर एक नई पार्टी के समर्थक प्रभावित करने का प्रयास आगामी राज्यसभा चुनाव।

राज्य की राजनीति में बदलाव की ओर बीजद के दबदबे के बाद 25 साल के शासन में, उच्च-समर्थक निलंबन किया जा रहा है की शुरुआत के रूप में देखा एक बड़ा राजनीतिक मंथन।

NEET कैंडिडेट की मौत: अगले दिन पोस्टमार्टम रिपोर्ट सामने आई, बिहार पुलिस की एसआईटी ने जांच शुरू की

अमित भेलारी
पटना

विशेष जांच द्वारा गठित टीम (एसआईटी) बिहार पुलिस ने शनिवार को मामले की जांच शुरू कर दी है। 11 जनवरी को पटना में एक NEET कैंडिडेट की मौत हो गई।

पुलिस ने पहले इसे आत्महत्या का मामला बताया और बेईमानी से इनकार किया जबकि मृतक के परिजन अल- एक "कवर-अप" और छात्र ने दावा किया कि यौन उत्पीड़न किया गया था।

एसआईटी का गठन किया गया शुक्रवार को के आदेश पर राज्य सरकार उम्मीदवार के कुछ घंटों बाद पोस्टमार्टम रिपोर्ट की तारीख 12 जनवरी को सामने आया पब्लिक डोमेन. रिपोर्ट

"शारीरिक चोटों" का उल्लेख किया और हिंसा के निशान शरीर" और कहा कि "यौन हिंसा नहीं हो सकती से इंकार"।

शनिवार को पटना के महानिरीक्षक (मध्य) रेंज) जितेंद्र राणा ने चित्रगुप्त नगर में गर्ल्स हॉस्टल का दौरा किया, जहां लड़की 6 जनवरी को बेहोशी की हालत में मिली थी। इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई पांच दिन बाद, श्री राणा ने उस कमरे का निरीक्षण किया जहां पीड़ित वहीं रुका रहा और आसपास की जाँच की कॉरिडोर में टीम ने दूसरे स्टूडेंट्स से सवाल-जवाब किए। छात्रावास, एक अधिकारी ने कहा।

13 जनवरी को पुलिस ने लाठीचार्ज किया था मृतक के परिवार के सदस्य

विरोध प्रदर्शन बंद कर दिया राज्य की राजधानी में निष्पक्ष जांच की मांग करते हुए प्रदर्शन किया।

'यौन हिंसा'
पीड़ित की रिपोर्ट पोस्टमार्टम किया गया पटना मेडिकल कॉलेज और अस्पताल द्वारा जारी एक बयान में कहा गया है: "यौन हिंसा नहीं हो सकती संभावना को खारिज कर दिया गया। नाखून के कई आधे काटने के निशान थे। शरीर पर शारीरिक चोटें थीं, हिंसा के निशान. संघर्ष हाल ही में बल प्रयोग के संकेत/ जबरदस्ती प्रवेश।" मौत का सही कारण पता चल रहा है अभी तक तय नहीं हुआ है।

छात्र के परिजनों ने पहले आरोप लगाया था कि हॉस्टल ने उन्हें ₹10 ऑफर किए थे केस बंद करने के लिए लाख रुपये मांगे गए।

सुर्खियों

आशना बुटानी

सिंगवाई परिवार हरियाणा के फतेहाबाद जिले में ढाणी भोजराज गांव हँसी से भरा हुआ है। परिवार के छोटे से घर में दिखाते हैं, शेल्फ के ऊपर बिस्तर tro- से भरा हुआ है नौ बेटियों ने डांस, कबड्डी और खो-खो कॉम्पिटिशन में जीतीं मेडल परिवार के ऊपर। बच्चों की तस्वीरें हैं दीवार पर टेप से चिपके लड़के, एक लंबे समय से चली आ रही इच्छा के प्रतीक पूरी तरह से पूरे हो गए।

तेरह वर्षीय सुशी-ला, तीसरी बेटी सुनीता और संजय सिंगवाई, वह पिछले साल बनाई अपनी ड्राइंग को गर्व से दिखाती है एक कल्पित भाई - एक मुस्कुराता हुआ बच्चा घिरा हुआ महबस, दिल और टेडी बियर. वह तुलना करती है यह असली भाई पैदा हुआ 4 जनवरी को। "अब कोई नहीं स्कूल में मुझे फ़ोन करने की हिम्मत नहीं होगी "फिर से 'भाई-विहीन'," उसने कहा कहती है।

लगातार ताने ताने लगातार थे, सुनीता को अपनी याद आती है बिस्तर, जहाँ वह आराम करती है उसका दो हफ़्ते का बेटा।

"मैंने कभी लड़कियों की तरफ नहीं देखा और लड़कों को अलग-अलग। लेकिन एक बार मैं एक पड़ोसी के बच्चे को गोद में लिए हुए थी, और वह मैंने उसे छीन लिया, यह सोचकर कि मैं उसे ले जाऊँगा क्योंकि मेरा कोई बेटा नहीं है।

उस दिन मैंने फैसला किया 37 साल की इस महिला ने कहा, "मुझे एक लड़का ही चाहिए था, चाहे कुछ भी हो जाए।" "चाहे कुछ भी हो जाए" मतलब 11 प्रेग्नेंसी। सुन-इता मानती हैं कि वह थक गई हैं, पर उनका मानना है कि उनका "परिवार अब पूरा हो गया है"।

उनकी सबसे बड़ी बेटी, 18-वर्षीय सरीना कहती है, "वह [माँ] हमेशा से रही है गर्भवती. कभी-कभी हम हम परेशान थे, लेकिन हमने उसे कभी रुकने के लिए नहीं कहा। भाई नहीं चाहता?"

वह मुस्कुराते हुए कहती है, "भाई के साथ मस्ती अलग है (मज़ा जो आप कर सकते हैं (एक भाई अलग है)।"

सुनीता वापस नहीं आ सकी तुरंत बाद घर बच्चे को जन्म देते समय उसे खून की ज़रूरत थी एनीमिया के कारण आधान और लगातार प्रेग्नेंसी के बाद यूट्रस कमज़ोर हो गया। लेकिन फिर भी सेलिब्रेशन शुरू हो गया। पड़ोसी और रिश्तेदार इकट्ठा हुए, गुब्बारे लटकाए गए आंगन में एक डीजे था बुलाया, और बेटियों

एक लंबे समय से पोषित 'इच्छा' सांस्कृतिक पूर्वाग्रह में डूबा हुआ

हरियाणा के एक गांव में 18 साल बाद बेटे के जन्म से हलचल मच गई
खुशी की बात है। घर वापसी की खुशी उन अंदरूनी बातों को दिखाती है जो
इसे आकार दिया: लगातार ताने, और बेटा पैदा करने की सांस्कृतिक उम्मीद

सुनीता सिंगवाई अपने नवजात बेटे, पति संजय और बेटियों के साथ हरियाणा में। आर.वी. मूर्ति

एक बड़ा "स्वागत" किया संकेत।

"यहां तक कि जो लोग हमें ताना मारने आए। उन्होंने कहा भगवान ने आखिरकार हमारी सुन ली सरीना कहती हैं, "प्रार्थनाएँ।" उस कमरे के बाहर जहाँ सुनीता आराम कर रही है, उसका पति, 38 वर्षीय संजय एक कुर्सी पर बैठे हैं उसके चारों ओर चारपाई बेटियाँ. "इसमें से कुछ नहीं इसका मतलब है कि मैं अपने लड़कियों के बारे में... यह गलत धारणा है," वे कहते हैं। नौवीं बेटी, तीन साल की आइना, उसके कमरे में चढ़ जाती है उसके गाल को चूमता है, हंसी-मजाक के बीच सेटिंग अपनी बहनों को घूमने के लिए आगे बढ़ाती है। बहन की।

परिवार का कहना है कि कोई ज़बरदस्ती नहीं थी. "यह बहुत बेटा चाहना आम बात है। लड़कियों को उनकी कमी महसूस हुई एक भाई। बहुत से लोग ऐसा करते हैं कन्या भ्रूण हत्या, लेकिन आप मैं अपनी सभी बेटियों को देख सकता हूँ संजय कहते हैं, "यहाँ।" अपने बेटे को शिक्षित करने की उम्मीद और उसे एक "बड़ा ओ-एर" बना दो। जहाँ तक उसकी बेटियों का सवाल है, वह कहते हैं, "लड़कियां भी सब कुछ कर सकती हैं। वे पढ़ेंगी और नौकरी करेंगी। हम जल्द ही अपनी शादी के बारे में सोचना शुरू करें।"

सुनीता के लिए दबाव न केवल घर से आया बल्कि बड़े समुदाय से।

"पड़ोसी मेरा मज़ाक उड़ाते और कहते कि मैं बेटियाँ पैदा करते रहे घर के काम में मदद लें," वह कहती हैं।

राजस्थान से, वह बड़ी हुई पाँच भाइयों के साथ एक बहन। रक्षाबंधन के दौरान बंधन अपने गांव जाती है, उसकी बेटियां रोते हुए कहते हैं, "तुम्हारे भाई हैं, हमारे भाई में क्या है?"

सत्रह वर्षीय अमृता, दूसरी बेटी, एक की लालसा कहती है भाई को आकार दिया गया था सहपाठियों ने कैसा व्यवहार किया "स्कूल में लड़कियाँ ज़ोर-ज़ोर से डींगें हांकेंगे उनके भाइयों ने कैसे खरीदा उन्हें उपहार दिए या उन्हें ले लिया बाहर. उन्होंने ये बातें नहीं जानबूझकर जब मैं चारों ओर।" उसकी बहनें सिर हिलाती हैं, कभी-कभी मज़ाक उड़ाते हुए ये रोने लगते थे। सरीना कहती हैं, "हर लड़की एक भाई की ज़रूरत है क्योंकि हमें एज्जाम या कॉम्पिटिशन के लिए दूर जाना पड़ता है, और हमारा साथ देने वाला कोई नहीं है।"

हरियाणा में सबसे कम
भारत में लिंग अनुपात 2011 की जनगणना में 879 महिलाएं प्रति 1,000 पुरुषों पर। तो, सरकारी अभियानों से सुधार हुआ है।

नागरिक पंजीकरण प्रणाली, राज्य का लिंग अनुपात 2025 में जन्म दर बढ़कर 923 हो गई, पांच साल में सबसे ज़्यादा। नमूना पंजीकरण सिस्टम कम दिखाता है लेकिन सुधार का रुझान: 884 इंच 2018 में 843 से बढ़कर 2023 में, लेकिन अभी भी राष्ट्रीय स्तर से नीचे औसत 917. फिर भी बेटे को प्राथमिकता बनी हुई है गहराई से जमी हुई है, खासकर कम आय वाले लोगों में लक्ष्मी, एक मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य पास में रहने वाले कार्यकर्ता, ऐसा विश्वास है कि एक बेटा परिवार का नाम रखता है आगे बढ़ना अभी भी फैसलों को आकार देता है। "यह वहाँ अधिक आम है जहाँ वित्त हैं कमज़ोर। भले ही यह माँओं के लिए जोखिम भरा है, फिर भी कई माँएँ इसे रखती हैं जब तक वे बच्चे पैदा नहीं करते एक लड़का है," वह कहती है सुनील जगलान, हरियाणा-

आधारित कार्यकर्ता जो "सेल्फी विद" लॉन्च किया बेटी" अभियान 2017, का कहना है कि यह मुद्दा फैला हुआ है समुदायों और आय "महिलाओं को सामूहिक दबाव का सामना करना पड़ता है। बचपन से ही उन्हें बताया जाता है कि लड़का परिवार का साथ देगा नाम आगे बढ़ाएं," वे कहते हैं. उनका NGO अब इस पर अध्ययन करता है बेटे को पसंद करने की जड़ें। उनके सर्वे से दो बातें पता चलती हैं अलग-अलग पैटर्न।

"संसाधन संपन्न परिवार अभी भी कन्या भ्रूण हत्या में लिप्त हैं, और इसलिए बहुत कम बेटियाँ हैं। कुछ प्रतिबंधित है या कंट्रोल में आने पर यह महंगा हो जाता है। इस बीच, गरीब परिवारों के पास पैसे होते रहते हैं बेटियाँ जब तक लड़का न हो पैदा हुआ। अजीब बात है, यह सुधार में योगदान देता है लिंग अनुपात

सिंगवाई में वापस घर पर, संजय ज़ोर देकर कहते हैं कि विरासत की कोई भूमिका नहीं थी उनकी इच्छा में. "हमारे पास है कोई ज़मीन नहीं थी. यह सिर्फ़ हमारा था वह कहता है, "काश।" उसकी माँ, 60 साल की माया इस बात से सहमत हैं: "बेटा बहुत देर बाद आया कठिनाई की बात है, लेकिन मैं खुश हूँ कि मेरा एक पोता है।" सुनीता का भी दावा है कि किसी दबाव का सामना नहीं करना पड़ा।

आशना.बुटानी@thehindu.co.in

संक्षिप्त

कोर्ट ने कथित रेप केस में केरल के MLA की ज़मानत अर्ज़ी खारिज कर दी

न्यायिक प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट न्यायालय तिरुवल्ला ने शनिवार को पलक्कड़ को ज़मानत देने से इनकार कर दिया विधायक राहुल मामकूटाथिल एक मामले के सिलसिले में एक NRI महिला के साथ कथित बलात्कार का मामला। इसके बाद भी वह रिमांड के तहत जेल में रहेगा। जज अरुंधति दिलीप ने याचिका खारिज कर दी विस्तृत सुनवाई। अपनी ज़मानत याचिका में, MLA ने कहा था दावा किया कि महिला के साथ उसका रिश्ता सहमति से हुआ था। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि उचित उनकी गिरफ़्तारी के दौरान प्रक्रियाओं का पालन नहीं किया गया।

दक्षिणपंथी कार्यकर्ता गिरफ्तार प्रवासी श्रमिकों को परेशान करना

बेंगलुरु पुलिस ने पुनीत केरेहल्ली को गिरफ्तार किया, एक दक्षिणपंथी कार्यकर्ता, पर अनधिकृत प्रवेश का आरोप प्रवासी मज़दूरों के घरों में घुसकर धमकाया उनसे व्यक्तिगत पहचान की मांग करके प्रॉपर्टी से जुड़े डॉक्यूमेंट्स भी शेयर किए। सोशल मीडिया पर उनकी हरकतों के वीडियो में कहा गया है कि यह 'ऑपरेशन' अवैध बांग्लादेशियों के खिलाफ है आप्रवासियों और सरकार की निंदा की और पुलिस की निष्क्रियता के लिए। केरेहल्ली एक आदतन एक अपराधी है और उस पर कई केस दर्ज हैं।

केरल के किसान ने आत्महत्या कर ली ऋण चुकौती में कठिनाई

केरल के अट्टापडी के एक किसान ने आत्महत्या कर ली शनिवार को गोपालकृष्णन (57) का निधन हो गया। अगाली पंचायत के उपाध्यक्ष। एक बैंक ने कथित तौर पर भूमि वसूली की कार्यवाही शुरू की गोपालकृष्णन ने लोन चुकाने में चूक की थी। ज़मीन बेचना मुश्किल हो गया, क्योंकि उन्होंने कोशिश की भूमि रिकॉर्ड में अपना नाम ठीक करवाने के लिए फेल हो गया। उनके परिवार ने आरोप लगाया कि कार्रवाई न करना अधिकारियों की वजह से उनकी मौत हो गई। (जो लोग परेशानी में हैं, उनके लिए, काउंसलिंग TeleMANAS-14416 पर उपलब्ध है)

सर, एक कष्टदायक अनुभव

कांग्रेस ने चुनाव आयोग से कहा कि वोटरों के लिए यह एक बड़ी चुनौती है।

MLA मैथ्यू कुझालनादन ने आरोप लगाया है कि केरल में करीब 60 लाख वोटरों को वोटरों के ... अनिश्चितता; डेलीगेशन ने मांग की कि SIR के तहत नए एनरोलमेंट के लिए 14 फरवरी तक इजाज़त दी जाए।

द हिंदू ब्यूरो
तिरुवनंतपुरम

टी केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी (केपीसीसी) ने भारत के चुनाव आयोग (ईसी) से कहा मतदाताओं को बुलाने से बचें विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के तहत सुनवाई के लिए मतदाता सूची के मामलों में 'तार्किक विसंगतियां' (प्रविष्टियों में विसंगतियां) और गैर-मैपिंग के रूप में सूचीबद्ध ऐसे मामले जहां मतदाता सक्षम हैं डॉक्यूमेंट्स बनाने के लिए।

केपीसीसी प्रतिनिधिमंडल में मैथ्यू कुझाल-नादान, पीसी विष्णुनाथ शामिल थे और एम. विंसेंट, एमएलए, जो मुख्य निर्वाचन अधिकारी से मिले ओसार (केरल) राथन यू. केलकर ने शनिवार को कहा,

अब तक नए पदों के लिए 4.8 लाख से ज़्यादा आवेदन आ चुके हैं
मतदाता सूची में नामांकन। तुलसी कक्कट

कि एसआईआर एक "दुखद" में बदल गया था और परेशान करने वाला अनुभव" वोटर्स.

"जिस तरीके से अनुपस्थित/स्थानांतरित/मृत (ASD) सूची, गैर-मैपिंग लिस्ट, और लॉजिकल डिस्क्रिप्शन लिस्ट बनाई जा रही हैं और उस पर कार्रवाई की गई है चुनाव आयोग को दिए एक अभ्यावेदन में इसने कहा, "बड़ी संख्या में वास्तविक मतदाताओं के बहिष्कृत होने का खतरा है।"

कांग्रेस ने भी मांग की गई कि SIR के तहत 14 फरवरी तक नए एनरोलमेंट की अनुमति दी जाए।

श्री कुझालनादन ने कहा इसके अलावा 24.08 लाख ASD सूची में सूचीबद्ध, और 19.32 लाख लोग लिस्टेड हैं गैर-मानचित्रित (अर्थ) उन्हें इससे जोड़ा नहीं जा सका 2002 की एसआईआर सूची के अनुसार, 18 लाख वोटर्स को इसमें शामिल किया गया है 'लॉजिकल अंतर' लिस्ट। "इसका मतलब है कि चुनाव आयोग, जिससे नए एनरोलमेंट को बढ़ावा मिलना चाहिए वोटर लिस्ट में इसके बजाय उन्होंने आरोप लगाया, ''इसने करीब 60 लाख मौजूदा मतदाताओं को अनिश्चितता में धकेल दिया।''

अब तक 4.8 लाख से ज़्यादा आवेदन आए हैं में नए नामांकन के लिए नेतृत्व किया चुनाव आयोग के बाद मतदाता सूची सीईओ के कार्यालय द्वारा जारी एक अपडेट के अनुसार, ड्राफ्ट रोल प्रकाशित किया गया (केरल) शनिवार को।

वरिष्ठ सामाजिक कार्यक्रम आयोजित
रिश्वत लेने के लिए

द हिंदू ब्यूरो
बेंगलुरु

लोकायुक्त पुलिस ने शनिवार को वरिष्ठ गिरफ्तार कर्नाटक में आबकारी विभाग के अधिकारियों के लिए कथित तौर पर मांग और मोटी रिश्वत स्वीकार करना स्पष्ट शराब से संबंधित लाइसेंस।

गिरफ्तार किए गए लोगों ने उसकी पहचान जग-दीश नाइक, आबकारी उप निरीक्षक के रूप में हुई है आयुक्त (बेंगलुरु) शहरी जिला-8), और थम्मा के.एम., सुपे- आबकारी निरीक्षक। आबकारी कांस्टेबल ने भी आरोपी बनाया गया है।

यह कार्रवाई एक के बाद हुई लक्ष्मीनारायण ने शिकायत दर्ज कराई थी, जिसमें आरोप लगाया गया था जिसकी अधिकारियों ने मांग की थी जारी करने में सुविधा के लिए ₹80 लाख की रिश्वत CL-7 (बार) लाइसेंस और एक माइक्रो-ब्रूअरी लाइसेंस।

शिकायत पर कार्रवाई करते हुए लोकायुक्त पुलिस ने जाल बिछाया और कथित तौर पर अधिकारियों को रिश्वत की पहली किस्त, ₹25 लाख लेते हुए पकड़ा।

जेडीएस की केरल इकाई ISJD के साथ विलय

द हिंदू ब्यूरो
कोच्चि

जनता दल (सेक्युलर) [जेडी(एस)] की केरल इकाई सामाजिक रूप से विलय हो गया नवगठित भारतीय समाजवादी जनता दल (आईएसजेडी) शनिवार को यहां।

यह मर्जर मतभेदों का नतीजा है जो बीच में उभरा पार्टी का राज्य और राष्ट्रीय नेतृत्व आगे लोकसभा चुनाव के 2024 में। केरल इकाई सर्वसम्मति से अस्वीकार कर दिया था अपनी पार्टी के सुप्रीमो एचडी देवेगौड़ा के फैसले भाजपा से हाथ मिलाओ।

मैथ्यू टी. थॉमस, विधायक और प्रदेश अध्यक्ष जेडी(एस) ने कहा कि आईएसजेडी के सहयोगी के रूप में जारी रहेगा वाम लोकतांत्रिक मोर्चा केरल में हम जारी रखेंगे भाजपा और दोनों का विरोध करने के लिए उन्होंने कहा, कांग्रेस।

श्री थॉमस ने भी इसका खंडन किया इस बात को लेकर चिंता है कि क्या वह और के. कृष्णनकुट्टी, बिजली मंत्री, मर्जर के बाद डिसक्वालिफिकेशन हो जाएगी।

मध्य प्रदेश सरकार बनाएगी
भोपाल में स्मारक
गैस त्रासदी स्थल: मुख्यमंत्री

मेहुल मालपानी
भोपाल

मध्य प्रदेश सरकार योजना बना रही है पीड़ितों की याद में एक स्मारक बनाएं 1984 की भोपाल गैस त्रासदी बंद पड़ी यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री की जगह पर हुई थी, मुख्यमंत्री मोहन यादव ने शनिवार को कहा।

"रासायनिक अपशिष्ट वहां लगभग 40 साल तक रहे। के मार्गदर्शन में हाई कोर्ट, हमारी सरकार ने सफलतापूर्वक निपटारा किया बिना किसी पर्यावरणीय प्रभाव के रासायनिक कचरे का क्षति या मानव हानि," श्री यादव ने भोपाल के आरिफ नगर इलाके में फैक्ट्री के खाली पड़े कैंपस का दौरा करते हुए यह बात कही।

"सभी वर्गों को लेते हुए समाज और प्रभावित हितधारकों को विश्वास में लेना, अब हम आगे बढ़ेंगे उन लोगों के लिए एक स्मारक बनाएं भोपाल गैस कांड में किसकी मौत हुई? उन्होंने कहा, "अब साफ-सुथरे हो चुके इन परिसरों में त्रासदी हुई है।" जोड़ा गया.

भोपाल गैस त्रासदी, की मध्यरात्रि को 2 और 3 दिसंबर, 1984, इसके बाद 5,479 लोगों की मौत हो गई अत्यधिक विषैली मिथाइल आइसोसायनेट गैस लीक हो गई यूनियन कार्बाइड यूनिट। सरकारी अनुमान कहते हैं कि इस त्रासदी के कारण गंभीर स्वास्थ्य प्रभाव और विकलांगों के बीच पांच लाख से ज़्यादा लोग पिछले कुछ वर्षों में।

इस दौरे के दौरान, श्री या-दव ने वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात की के विकास पर चर्चा करें प्रस्तावित स्मारक।

मुख्यमंत्री ने भी आलोचना की कांग्रेस नेता राहुल गांधी, जो दौरे पर थे

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव

इंदौर जल विवाद के पीड़ितों प्रदूषण और डायरिया का प्रकोप उसी दिन, पिछली कांग्रेस सरकारों पर इसे छोड़ने का आरोप लगाया गैस त्रासदी के पीड़ितों। उन्होंने आगे आरोप लगाया कि कांग्रेस ने वॉरेन की "मदद" की एंडरसन, तत्कालीन सीईओ यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड, देश से भागने के लिए।

'कांग्रेस ने लोगों को मरने के लिए छोड़ दिया'

"कांग्रेस ने न केवल वामपंथी लोग यहाँ मरने के लिए हैं, लेकिन और भी बड़ा अपराध किया एंडरसन की मदद करके पाप किया, यूनियन कार-बाइड के मालिक भाग निकले। कांग्रेस ने उनकी मदद करने में बड़ी भूमिका निभाई

बच निकलना। राहुल गांधी इसके लिए माफ़ी मांगनी चाहिए शासन का वह चरण जब उसकी अपनी दादी और मेरे पिता सत्ता में थे," श्री. यादव ने कहा।

लगभग 358 टन ज़हरीला रासायनिक कचरा बंद पड़ी फैक्ट्री साइट एक निजी स्थान पर जला दिया गया अपशिष्ट उपचार सुविधा धार जिले के पीथमपुर 2025 में, निवासियों के रूप में भी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया कदम।

'गर्मी के दावे हवा के गुब्बारे आपातकाल लैंडिंग गलत है

द हिंदू ब्यूरो
हैदराबाद

सोशल मीडिया पर वायरल दावों को खारिज करते हुए कहा गया कि हॉट एयर बैलून ने इमरजेंसी पैदा कर दी नेकनामपुर के पास लैंडिंग हैदराबाद में शनिवार को तकनीकी खराबी के बाद झील में आग लग गई।

चल रहे हॉट एयर बैलून फेस्टिवल से जुड़े कहा कि वीडियो केवल खुले में एक नियमित और नियंत्रित लैंडिंग दिखाई क्षेत्र।

"चित्र और वीडियो व्यापक रूप से साझा किया जा रहा है सामान्य लैंडिंग हुई प्रक्रिया। यह बस एक कैप्टन एम. चौहान, उड़ान प्रमुख स्काई वाल्ट्ज ने कहा कि सुरक्षा।

पतंग का तमाशा

आसमान छूता नज़ारा: दक्षिणा द्वारा आयोजित इंटरनेशनल काइट फेस्टिवल के दौरान शनिवार को मंगलुरु के तन्निर्भवी बीच पर एक नज़ारा
करावली उत्सव के हिस्से के तौर पर कन्नड़ ज़िला प्रशासन। एचएस मंजूनाथ

काकीनाडा 'हरा' होगा 'भारत की हाइड्रोजन वैली': सीएम

द हिंदू ब्यूरो
काकीनाडा

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने काकीनाडा को 100 करोड़ रुपये का कर्ज देने की घोषणा की है। "ग्रीन हाइड्रोजन" के रूप में भारत की घाटी।

वह बाद में बोल रहे थे भूमि पूजा करते हुए ₹15,600 करोड़ के लिए ग्रीन हाइड्रोजन और ग्रीन अमोनिया प्रोडक्शन कॉम्प्लेक्स, जिसे दुनिया का सबसे बड़ा, ए.एम. ग्रीन द्वारा स्थापित ग्रीनको ग्रुप 495 पर-काकीनाडा में एकड़ कैंपस शनिवार को।

पहला उत्पादन लक्ष्य

सभा को संबोधित करते हुए इस अवसर पर, श्री नायडू कहा, "पहला उत्पादन 0.5 मिलियन मीट्रिक टन हरे रंग का अमोनिया होने की उम्मीद है 2027 के मध्य तक हासिल कर लिया गया

मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू और उपमुख्यमंत्री के. पवन कल्याण काकीनाडा में कॉम्प्लेक्स की 'भूमि पूजा'। स्पेशल अरेंजमेंट

एएम ग्रीन के वार्षिक कार्यक्रम का हिस्सा 1.5 का उत्पादन लक्ष्य मिलियन मीट्रिक टन।"

"काकीनाडा में निर्मित, हरा अमोनिया होगा ज़्यादातर यूरोप को सप्लाई किया जाता है, और जर्मनी प्रमुख है श्री नायडू ने कहा,

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चांसलर जर्मनी फ्रेडरिक मर्ज़ के हस्ताक्षर का स्वागत किया ओटेक समझौते के लिए एएम ग्रीन से यूनीपर ग्लोबल कमोडिटीज को ग्रीन बारूद की आपूर्ति

हाल ही में भारत दौरे के दौरान जर्मनी के राष्ट्रपति ने यह बात कही।

श्री नायडू ने घोषणा की कि एएम ग्रीन भी काकी-नाडा कॉम्प्लेक्स में ₹2,000 का निवेश करें प्रोजेक्ट के लिए दो-GW एल्कलाइन इलेक्ट्रो-लाइज़र।

महामघम त्योहार इसके अंतर्गत आते हैं केरल में जांच

द हिंदू ब्यूरो
मलप्पुरम

मलप्पुरम जिला प्रशासन ने पूछा है महा-माघम उत्सव के आयोजकों को के तट पर आयोजित केरल के तिरुना-वाया में भरतपुझा को एक प्रस्ताव जमा करना है। मूर्खतापूर्ण कार्य योजना सुरक्षा और बचाव सुनिश्चित करें।

यह त्योहार, राज्यपाल राजेंद्र आर्लेकर द्वारा उद्घाटन किया जाएगा सोमवार से शुरू होने वाला यह कार्यक्रम 3 फरवरी तक चलेगा। इस कार्यक्रम में हजारों भक्तों के आने की उम्मीद है।

कलेक्टर वीआर विनोद ने कहा कि सुरक्षा व्यवस्था एक बड़ी चिंता बनी हुई है।

राज्यपाल करेंगे उद्घाटन करें सोमवार को त्योहार, और यह जारी रहेगा 3 फरवरी तक

जिला प्रशासन ने एक अस्थायी निर्माण कार्य को रोकने के लिए स्टॉप मी-मो जारी किया था बांस का पुल नदी, त्योहार के लिए। हालाँकि, इस कदम से व्यापक विरोध प्रदर्शन।

"हमने पुल का पूरा ब्योरा मांगा है, की संख्या सहित श्री विनोद ने कहा, "यह एक समय में कितने लोगों को सुरक्षित रूप से समायोजित कर सकता है।"

कानून-व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई कर्नाटक, बल्लारी में भाजपा नेताओं का आरोप

द हिंदू ब्यूरो
कलबुर्गी

भाजपा ने शनिवार को तीखा हमला बोला कांग्रेस सरकार के खिलाफ कानून व्यवस्था पूरी तरह से खराब होने का आरोप लगाया और कर्नाटक में व्यवस्था।

जनता को संबोधित करते हुए बल्लारी शहर में सभा, की पृष्ठभूमि में आयोजित 1 जनवरी को बैनर से जुड़ी झड़प और रिंग की घटना जिसने जान ले ली कांग्रेस कार्यकर्ता राजशेखर रेड्डी, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र ने कहा बल्लारी में हिंसा, डकैती, हत्या, डकैती और हमलों की हाल की घटनाएं "प्रत्यक्ष प्रमाण" थीं राज्य में शासन व्यवस्था के पतन का।

बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष बीवाई विजयेंद्र के साथ सीनियर बीजेपी नेताओं ने एक मीटिंग की। शनिवार को बल्लारी में पब्लिक गैदरिंग होगी। स्पेशल अरेंजमेंट

"यहां तक कि एक अंगूठी की घटना के बाद भी जिसमें मौत हो गई एक निर्दोष पार्टी कार्यकर्ता की, सरकार ने नहीं ज़िम्मेदारी का कोई भाव नहीं दिखाया। पतला किया जा रहा है और गंभीर मामलों को दबाना," उन्होंने कथित।

पूर्व मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने कहा, "राजनीतिक नफ़रत होनी चाहिए धक्का देने की अनुमति नहीं दी जाएगी राज्य को हिंसा में धकेल दिया गया"।

पूर्व उप प्रमुख मंत्री गोविंद करजोल ने कांग्रेस सरकार पर दमन का आरोप लगाया लोकतांत्रिक असहमति और चेतावनी दी कि बल्लारी यह विरोध प्रदर्शन "कुशासन और" के खिलाफ राज्यव्यापी आंदोलन की शुरुआत का प्रतीक होगा राजनीतिक हिंसा"।

भाजपा नेताओं ने भरत रेड्डी की तत्काल गिरफ्तारी की मांग की के स्थानांतरण की मांग की और मामला केंद्रीय ब्यूरो को सौंप दिया गया जांच का।

पीड़ित के परिजनों को ₹10 लाख इससे पहले दिन में, वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने राजशेखर रेड्डी के घर जाकर चेक भेंट किया शोक संतप्त लोगों को ₹10 लाख की सहायता परिवार।

ईडी ने पूर्व सांसद को तलब किया
विजयसाई रेड्डी
आंध्र प्रदेश शराब घोटाला

राजुलापुडी श्रीनिवास
विजयवाड़ा

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारी, जो जांच कर रहे हैं मनी लॉन्ड्रिंग पहलू आंध्र प्रदेश के कथित शराब घोटाले में पूर्व राज्यसभा सदस्य को तलब किया गया मामले में सदस्य वी. विजयसाई रेड्डी।

ED अधिकारियों ने शुक्रवार को की को नोटिस दिया। रेड्डी को आदेश दिया कि वह 22 जनवरी को जांच अधिकारियों के सामने पेश हों।

सरकार ने जांच के लिए एक स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम (SIT) बनाई। कथित बहु-करोड़ में घोटाला।

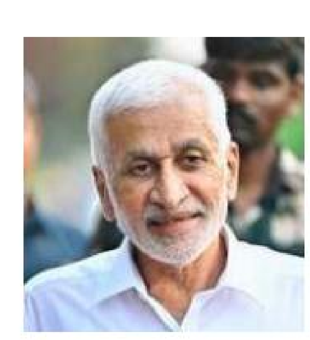

वी. विजयसाई रेड्डी

यह आरोप लगाया गया था कि विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने कुछ लोगों के साथ मिलीभगत की जन प्रतिनिधियों 2019 से 2024 तक, शराब नीति में बदलाव किया, रिश्वत मिली, ओटेड नए ब्रांड और सहारा लिया भ्रष्टाचार के लिए।

पहले पेज से

ईरान के प्रमुख ब्रांड

ट्रम्प एक 'अपराधी'

उन्होंने कहा, "हम US प्रेसिडेंट को अपराधी मानते हैं, क्योंकि ईरानी राष्ट्र के खिलाफ़ आरोपों की वजह से उन्हें बहुत नुकसान हुआ है।"

सुप्रीम लीडर ने हज़ारों मौतों के लिए प्रदर्शनकारियों को ज़िम्मेदार ठहराया और प्रदर्शनकारियों को US के "पैदल सैनिक" बताया और कहा कि उन्होंने

मस्जिदों और एजुकेशनल सेंटर्स को नष्ट कर दिया।
"लोगों को चोट पहुँचाकर, उन्होंने कई लोगों को मार डाला
उन्होंने कहा, "उनमें से हजारों लोग हैं।"
उनकी यह टिप्पणी श्री ट्रम्प के एक दिन बाद आई है।
उन्होंने सुलह का स्वर देते हुए कहा कि "ईरान
800 से ज़्यादा लोगों की फांसी रद्द कर दी," और
उन्होंने कहा कि "मैं इस बात का बहुत सम्मान करता हूं कि
उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि उन्होंने किससे बात की
ईरान से किसी भी प्लान किए गए फांसी की स्थिति की पुष्टि करने के लिए कहा। उनकी बातें इस बात का संकेत थीं कि वह मिलिट्री हमले से पीछे हट सकते हैं।
अपने भाषण में, श्री खामेनेई ने कहा कि दंगाई
आयातित जीवित गोला-बारूद से लैस
विदेश से, किसी देश का नाम लिए बिना।
"हम प्लान नहीं बनाते, हम देश को युद्ध की तरफ नहीं ले जाते। लेकिन हम घरेलू ओफ्फेंडर्स को नहीं छोड़ते, घरेलू ओफ्फेंडर्स से भी बुरे, इंटरनेशनल ओफ्फेंडर्स भी हैं। हम उन्हें अकेला नहीं छोड़ते।

या तो, "उन्होंने कहा, और सामाजिक लोगों से आगे बढ़ने का आग्रह किया मामले।
इस कार्रवाई में कम से कम 3,090 लोग मारे गए हैं
रिपोर्ट के अनुसार, मृतकों में 2,885 प्रदर्शनकारी शामिल हैं।
अमेरिका स्थित मानवाधिकार कार्यकर्ता समाचार एजेंसी,
किसी भी अन्य विरोध प्रदर्शन से अधिक या
ईरान में दशकों में सबसे ज़्यादा अशांति।

लिट फॉर लाइफ 2026 शुरू होता है

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के आह्वान के साथ

"द हिंदू लिट फॉर लाइफ सार्वजनिक जीवन में किताबों की स्थायी प्रासंगिकता को मज़बूत करता है। यह एक साझा जीवन बनाता है ऐसी जगह जहाँ विचारों को बातचीत में परखा जाता है, न कि अकेले में किसी एक को सुनकर।
भाषा, विश्वास और के अंतरों के पार एक और
अनुभव से, हम पदों या को पहचानना नहीं सीखते
पहचान, लेकिन लोग, साथी मनुष्य
जिनकी ज़िंदगी ध्यान और देखभाल के लायक है," श्री.
चंद्रचूड़ ने कहा।
दो दिन के फेस्टिवल के एजेंडा को बताते हुए,
सुश्री लक्ष्मण ने कहा: "हमें भी इस बात की बहुत खुशी है कि
त्योहार त्योहार के अवसर प्रदान करते हैं
अपने पसंदीदा लेखकों से मिलने और बातचीत करने के लिए
उनसे सीधे बात करें। हम बुक भी ऑर्गनाइज़ कर रहे हैं
आज और कल यहां हस्ताक्षर होंगे, और इनमें से एक
हमारे लिए सबसे खुशी की बात यह देखना है कि कितने लोग
किताबें खरीदें। हम एक मिनी बच्चों का सेंटर जोड़ने की उम्मीद कर रहे हैं
अगले साल युवा मन में पढ़ने और सोचने को प्रोत्साहित करने के लिए उत्सव।"

"एक स्वतंत्र मीडिया के अभिन्न अंग के रूप में
घर, हम अपने साथ ईमानदार और निडर लोगों को लेकर चलते हैं
द हिंदू की परंपराएं ... लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक समावेश, न्याय, सच्चाई का पालन

और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए एक दृढ़ प्रतिबद्धता, जो इस उत्सव की आधारशिला है," उन्होंने कहा।
जोड़ा गया।
श्री ग्रेलिंग, द
मीनिंग ऑफ थिंग्स, द गुडबुक और द गॉड आर्ग्युमेंट में उल्लेख किया गया है कि "एक समाज के बने रहने का विचार
ज़िंदा रहना, ताज़ा रहना, हमेशा अपनी मान्यताओं पर फिर से सोचना, पूरी बहस के लिए इतना ज़रूरी है कि
"मैं भाग ले रहा हूँ
25 से ज़्यादा सालों से साहित्यिक समारोहों में, और
पिछले 15 सालों में, मैंने देखा है कि
दुनिया भर के त्योहारों में से कुछ
यूनाइटेड किंगडम, ऑस्ट्रेलिया में प्रमुख त्योहार,
यहाँ भारत में, बड़े और बड़े होते गए हैं
साल बीत गए हैं, यह बात साफ़ है कि
किताबों और किताबों में क्या होता है, इस बारे में बातचीत, उन कहानियों के बारे में जिनके
साथ हम जीते हैं और एक-दूसरे को बताते हैं
दूसरा, और पेज पर आने वाले विचार एक हैं
श्री ग्रेलिंग ने कहा, "यह किसी भी समाज के लिए खुद से होने वाली बातचीत के लिए एक बड़ी प्रेरणा है।"
द हिंदू के संपादक सुरेश नंबथ ने कहा,
लिट फॉर लाइफ में लिट साहित्य और प्रकाश दोनों की ओर इशारा करता है,
शब्द पाठक को जो ज्ञान देते हैं, विचारों का आदान-प्रदान, प्रगति का मार्ग,

अंधकार और भय से बाहर निकलने का मार्ग, तथा ज्ञान व स्वतंत्रता की ओर।"

एल.वी. नवनीत, चीफ एग्जीक्यूटिव, ओसर, द
हिंदू ग्रुप ने कहा, "द हिंदू लिट फॉर लाइफ में 100 से ज़्यादा स्पीकर्स के साथ लगभग 50 सेशन होते हैं
ये तीनों आयोजन स्थल और तीन अलग-अलग जगहों पर आठ कार्यशालाएं हैं।"

कई भारतीय वापस लौटते हैं ईरान में वाणिज्यिक उड़ानें

ईरान में विरोध प्रदर्शनों और सरकारी कार्रवाई के बीच तनाव बढ़ने के साथ ही भारतीय नागरिक उनसे अपनी सुरक्षा को प्राथमिकता देने और घर लौटने का आग्रह किया गया, जिसमें भारतीय दूतावास मदद कर रहा है

प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया
नई दिल्ली

एस कई भारतीय, छात्रों सहित, न्यू में आ गए हैं
दिल्ली में कमर्शियल
इस्लामिक राष्ट्र और तेहरान में व्यापक विरोध प्रदर्शनों के बीच ईरान से उड़ानें

अब तक की कार्रवाई
2,500 से ज़्यादा लोग मारे गए
लोग।
रातें पहुँच गई
शुक्रवार को दिल्ली एयरपोर्ट पर देर रात
रात में. यह तुरंत पता नहीं चला कि कितने

भारतीय आ चुके थे
ये कमर्शियल लाइटें।
एयरपोर्ट पर पहुंचने पर, अली नकी, जो एक
12 या 13 के समूह का हिस्सा
यात्रियों से पूछा गया कि क्या वे
ईरान में किसी भी मुश्किल का सामना करना पड़ा।
उन्होंने जवाब दिया, "हमें कोई प्रॉब्लम नहीं हुई।"
"हम यहाँ से लौटे हैं
तेहरान। पहले, हम
इराक, फिर हम वहां गए
ईरान. आठ दिन के बाद
उन्होंने कहा, ''हम वहां नहीं रुके और हम भारत लौट आए हैं।''
एक युवा महिला, जो
शिराज के एक मेडिकल कॉलेज में पढ़ रहे एक छात्र ने कहा, "
इंटरनेट काम नहीं कर रहा था।
तो, हमें ठीक से पता नहीं था
क्या हो रहा था
देश भर में।"
छात्रा ने बताया कि जिस शहर में वह
थी, वहां की स्थिति
में "ने" था। "हमारे पास है
हम अपने आप वापस आ गए
वाणिज्यिक प्रकाश, और नहीं

एक भारतीय नागरिक एयरपोर्ट पर पहुंचने के बाद अपने एक रिश्तेदार को गले लगाता है।
शनिवार को तेहरान से नई दिल्ली के लिए कमर्शियल फ़्लाइट्स। रॉयटर्स

की व्यवस्था पर
भारत सरकार।"
शुक्रवार देर रात,
बहुत से लोग पहुंचे
ईरान से आने वाले अपने रिश्तेदारों को लेने के लिए एयरपोर्ट पर पहुंचे।
जबकि कई लोग ऐसा लग रहे थे
चिंता की भावना से ग्रसित, उन्होंने कहा कि
तेहरान में भारतीय दूतावास

वहां सभी भारतीय नागरिकों को भरोसा दिलाया गया है,
किसी भी माध्यम से
संचार की
उपलब्ध।
अब्बास काज़मी, जिनके
माँ और चाची लौट आईं
ईरान से, ने कहा, "वहाँ
निश्चित रूप से कुछ चिंता थी क्योंकि यह एक वैश्विक था
समस्या थी, और जब इंटरनेट बंद हो गया, तो हम
काफी चिंतित हूं।"

"लेकिन जैसे ही संचार फिर से शुरू हुआ, हमें
एहसास हुआ कि चीजें नियंत्रण में थीं
कंट्रोल। इससे हमें भरोसा मिला कि सब कुछ ठीक था
हमने रजिस्टर किया था
दूतावास के साथ जल्द से जल्द
जैसे ही सलाह जारी की गई
और आगे के निर्देशों का इंतज़ार कर रहे थे।
मेरी माँ की यात्रा पहले से ही तय थी, इसलिए
सब कुछ ठीक रहा।

उन्होंने कहा, ''यह सुचारू रूप से चल रहा है और
हम खुश हैं।''
विदेश मंत्रालय
प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने अपने साप्ताहिक
मीडिया में कहा,
ब्रिएंग ने शुक्रवार को कहा,
"वर्तमान में, हमारे लगभग 9,000

ईरान में रहने वाले नागरिक।
उनमें से ज़्यादातर हमारे हैं
छात्रों."

इसके अलावा,
नाविक, तीर्थयात्री और
कुछ लोग जो व्यापार से जुड़े हैं और

उन्होंने कहा कि हाल ही में वहां हुए डेवलपमेंट और एक्टिविटीज़ को देखते हुए,

"हमने दो जारी किए हैं
तीन सलाह"।
"इन सलाहों में, हम
कहा है कि हमारे नागरिकों को यात्रा नहीं करनी चाहिए
इस समय ईरान और
भारतीय नागरिक जो
वर्तमान में वहाँ रह रहे हैं
सलाह दी गई है कि,
किसी भी माध्यम से
वर्तमान में देश छोड़ने के लिए उपलब्ध,
वाणिज्यिक
लाइट्स अभी भी चल रही हैं,
और वह विकल्प भी है
उपलब्ध; उन्हें होना चाहिए
उनका उपयोग करें" और
छोड़ो," उन्होंने कहा.
इसके अलावा, न्यू
श्री जायसवाल ने कहा था कि दिल्ली "वहां की स्थिति और विकास पर बारीकी से नज़र रख रही है"।

ईरान हिल गया है
में विरोध की लहर
पिछले कई हफ़्तों में
और करेंसी डीवैल्यूएशन। विरोध प्रदर्शन शुरू हुआ
पिछले महीने के अंत में तेहरान में
ईरानी मुद्रा के बाद,
रियाल, रिकॉर्ड स्तर पर गिर गया
विरोध प्रदर्शन बहुत कम हो गए हैं
तब से यह सभी 31 प्रांतों में फैल गया है,
और एक से विकसित हुआ है
आर्थिक के खिलाफ आंदोलन
राजनीतिक बदलाव की मांग को लेकर चिंताएं।

लोगों ने सड़क जाम कर दिया, जिससे यातायात ठप हो गया
शनिवार को मुर्शिदाबाद। ANI वीडियो ग्रैब

मुर्शिदाबाद देखता है ताज़ा अशांति; पुलिस लाठीचार्ज करने वाली भीड़

शिव सहाय सिंह
कोलकाता

ताज़ा अशांति की खबर मिली
पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के बेलडांगा में
शनिवार को स्थानीय लोगों ने
राष्ट्रीय राजमार्ग अवरुद्ध
12. सैकड़ों स्थानीय लोग बेल-डांगा के बरुआ मोड़ पर हाईवे पर इकट्ठा हुए और ट्रैक को क्षतिग्रस्त कर दिया।

ठहराव और ट्रिगरिंग
फंसे हुए लोगों की लंबी कतारें
वाहन।
प्रदर्शनकारियों ने भी नुकसान पहुंचाया
रेलवे फाटक पर हमला किया और ट्रेन सेवाओं को बाधित करने का प्रयास किया
सियालदह-लालगोला के साथ
पूर्वी रेलवे खंड
रेलवे. एक राज्य परिवहन
भीड़ ने निगम की बस में तोड़फोड़ की और

कुछ यात्री थे
घायल।
"कुछ थे
नाकाबंदी जहाँ हमें करना पड़ा
लाठीचार्ज का सहारा लें और
सब कुछ साफ़ कर दिया है।
स्थिति सामान्य है, दुकानें

खुले हैं," कुमार सनी
मुर्शिदाबाद के पुलिस अधीक्षक राज ने बताया

प्रेस वालों ने कहा। एसपी ने कहा
स्थिति यह रही है
नियंत्रण में लाया गया
आधे घंटे और लगभग 30
लोगों को उठाया गया
हिंसा में उनकी भूमिका
मौके से ही।
हिंसा भड़क उठी थी
बेलडांगा में शुक्रवार को 36 साल के अलाउद्दीन शेख की मौत हो गई, जो इलाके के एक माइग्रेंट वर्कर थे।

जो झारखंड में मारा गया था। स्थिति लगभग सामान्य हो गई

मुर्शिदाबाद के जिला मजिस्ट्रेट के पांच घंटे बाद

और वरिष्ठ अधिकारियों ने कोशिश की
गुस्साई भीड़ को शांत करें।
एक महिला पत्रकार
स्थानीय टेलीविजन समाचार चैनल को चोटें आई
शुक्रवार को हुई हिंसा।
एसपी ने कहा कि चार लोगों
हमले के लिए गिरफ्तार किया गया था और
पुलिस ने स्वप्रेरणा से मामला दर्ज किया था।

चार माओवादी में मारे गए छत्तीसगढ़

शुभोमय सिकदर
रायपुर

वरिष्ठ कमांडर समेत कम से कम चार
माओवादी मारे गए
दिलीप बेदजा की हत्या कर दी गई।
शनिवार को छत्तीसगढ़ के बीजापुर में सुरक्षा बलों ने...
पुलिस ने कहा।
बीजापुर अधीक्षक
पुलिस जितेंद्र यादव
कहा कि चल रहा ऑपरेशन तब शुरू किया गया था
पुलिस को माओवादियों की नेशनल पार्क एरिया कमेटी के डिविजनल कमांडर बेदजा और अन्य के बारे में गुप्त सूचना मिली थी

जंगल और पहाड़ी इलाकों में हथियारबंद कैडर

बीजापुर जिले का उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र।

जिला प्रशासन की एक संयुक्त टीम
राज्य के रिजर्व गार्ड और विशेष कार्य बल

पुलिस और कमांडो बटालियन दृढ़ कार्रवाई के लिए
[एक विशेष, कुलीन इकाई
भारत का केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल] कर रहा है

चल रहे ऑपरेशन में, उन्होंने जोड़ा गया। रुक-रुक कर बजना
के बीच चल रहा है
संयुक्त टीम और
शनिवार से माओवादियों
सुबह।

बीरेन सिंह और शाह ने अनुकूल माहौल पर चर्चा की मणिपुर सरकार बनाने की स्थिति

विजेता सिंह
नई दिल्ली

मणिपुर के पूर्व मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह से मिले
केंद्रीय गृह मंत्री अमित
शाह शुक्रवार देर रात दिल्ली में थे, जहां बातचीत हुई।
स्थापित करने पर केंद्रित
"अनुकूल वातावरण"
और लोकप्रिय होने से पहले "जटिलताओं को दूर करना"
पूर्वोत्तर में सरकार बहाल हो सकती है

राज्य, करीबी सूत्रों
पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा।
एक सरकारी सामाजिक
कहा कि बैठक
"नियमित मामलों" के बारे में,
और यह पहली बार नहीं है
एक महीने में ऐसी मीटिंग।
श्री सिंह की पिछली मुलाकात
भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के गृह मंत्री-

दिल्ली में सीई कब
कार्यकारी पार्टी अध्यक्ष
नितिन नवीन को यह मान लेना था
15 दिसंबर को चार्ज
सोशल ने कहा।
के बीच बैठक
दोनों ने रात 10 बजे शुरुआत की
शुक्रवार (16 जनवरी,
2026) और एक घंटे तक चला।
संघ की ओर से कोई सामाजिक बयान नहीं दिया गया

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने तत्कालीन गृह मंत्री अमित शाह के साथ बैठक की।
मणिपुर के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह 2023 में नई दिल्ली में। PTI

गृह मंत्रालय के संबंध में
बैठक।
"राज्य से जुड़े राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा हुई। हालांकि कोई खास

चुनी हुई सरकार को फिर से बनाने के लिए समयसीमा दी गई थी, इससे जुड़े मामले

आंतरिक समस्याओं के समाधान पर चर्चा की गई।
सूत्र ने कहा।
बैठक में माना गया है
इस बात के संकेत हैं कि केंद्र एक राष्ट्रीय
अल्पसंख्यक आयोग के गठन के लिए इच्छुक है।

में लोकप्रिय सरकार
फरवरी से पहले मणिपुर
13. मणिपुर में फरवरी को राष्ट्रपति शासन लगाया गया-

13 फरवरी, 2025, और
असेंबली को सस्पेंड कर दिया गया

श्री सिंह के इस्तीफे के बाद अगले चुनाव

फरवरी-मार्च में देय हैं
2027.
मणिपुर जातीय हिंसा से प्रभावित रहा है

मेइतेई और के बीच
कुकी-ज़ो लोग मई से
3, 2023, जो अब तक
लगभग 250 लोगों की जान चली गई
और इससे ज़्यादा विस्थापित हुए
60,000 लोग.
सरकारी सामाजिक
अलग से पकड़े हुए हैं
के सदस्यों के साथ बैठकें
कुकी-ज़ो समुदाय।

14 जनवरी को, नॉर्थईस्ट के सलाहकार, ए.के. मिश्रा,
गृह मंत्रालय से मुलाकात की
कुकी-ज़ो के अध्यक्ष
काउंसिल (KZC), आदिवासी समूह का एक समूह,
में इसका सहयोग मांग रहा है
लोकप्रिय सरकार की बहाली। KZC ने

विस्तार की मांग की
राष्ट्रपति शासन की, जोड़कर
कि कुकी-ज़ो विधायक
सरकार में शामिल हो सकते हैं
अपने जोखिम पर।
12 जनवरी को कुकी-ज़ो आदिवासी समूहों ने
दो विद्रोही समूहों
के साथ राजनीतिक बातचीत में
मिनिस्ट्री ने कहा कि उन्होंने पॉपुलर गुप में शामिल होने का फैसला किया है।
मणिपुर में सरकार,
बशर्ते संघ और
राज्य सरकारें देती हैं
एक लिखित प्रतिबद्धता
के तहत विधान के साथ एक केंद्र शासित प्रदेश के लिए बातचीत के जरिए राजनीतिक
समाधान का समर्थन करते हैं

संविधान का सार।
10 कुकी-ज़ो हैं
मणिपुर में विधायक, और
नेता इसके पक्ष में नहीं हैं
उन्हें इसके बाहर रखना
सोशल ने कहा, "अगली सरकार के गठन में देरी होगी।"

'कांग्रेस झूठ फैलाना काशी के बारे में विकास'

द हिंदू ब्यूरो
लखनऊ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने
शनिवार को कांग्रेस पर 'झूठ' फैलाने का आरोप लगाया

बदनाम करने के लिए "प्रचार"
काशी और उसके व्यापक विकास में बाधा

झूठ और गलत जानकारी के ज़रिए। वह इन आरोपों का जवाब दे रहे थे

मंदिरों का विध्वंस
वाराणसी के मणिकर्णिका घाट पर प्रेस को
संबोधित करते हुए
कॉन्ग्रेस में उन्होंने कहा कि इमेज
पुरानी और क्षतिग्रस्त मूर्तियों की
सोशल मीडिया पर जानबूझकर पोस्ट किए जा रहे थे
एक नकारात्मक कथा बनाएँ
के पुनर्विकास के बीच
मणिकर्णिका घाट।
"यह मेरे लिए ज़रूरी था
आज यहाँ आने के लिए ताकि
सही तथ्य हो सकते हैं
जनता के सामने रखा गया।
मूर्तियों के टूटे हुए अवशेष
उन कार्यशालाओं से लाए गए थे जहाँ मूर्तियाँ हैं
श्वेत प्रचार के लिए सोशल मीडिया पर बनाया और प्रसारित किया गया
उन्होंने कहा, "यह झूठ है कि मंदिर तोड़े जा रहे हैं।"

प्रेग्नेंसी में पैरासिटामोल के इस्तेमाल का ऑटिज़्म से कोई लेना-देना नहीं: स्टडी

रम्या कन्नन
चेन्नई

की एक व्यापक समीक्षा
पूरे देश में किए गए अध्ययनों
दुनिया , में प्रकाशित
लैंसेट प्रसूति, स्त्री रोग और महिला स्वास्थ्य
शुक्रवार को, ध्वस्त कर दिया गया है
तर्क यह है कि पैरासिटामोल के संपर्क में आने से
गर्भवती महिलाओं से जुड़ा हुआ है
शिशुओं में ऑटिज़्म के साथ।
दरअसल, यह चेतावनी देता है कि
गर्भावस्था के दौरान पैरा-सिटामोल के सही इस्तेमाल से बचने से खतरा बढ़ सकता है

महिलाओं और बच्चों को असल में नुकसान।

यह याद रखा जा सकता है
कि सितंबर 2025 में,
अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड
ट्रम्प ने खुद सलाह दी
गर्भवती महिलाओं को सीमित करना

पैरासिटामोल का उपयोग
गर्भावस्था के दौरान, यह कहना
में ऑटिज़्म से जुड़ा था-
फ़ैंट्स. का ज़िक्र करते हुए
दवा का ब्रांड नाम
अमेरिका, श्री ट्रम्प ने कहा,
"टाइलेनॉल न लें... टाय-लेनॉल अच्छा नहीं है।"
सरकार ने एक रिव्यू का हवाला दिया

एसिटामिनोफेन के उपयोग को जोड़ना
गर्भावस्था में न्यूरोडेवलपमेंटल परिणामों के लिए।
लैंसेट का व्यवस्थित
समीक्षा और मेटा-विश्लेषण,
"प्रीनेटल पैरासिटामोल एक्सपोज़र और चाइल्ड न्यूरोडेवलपमेंट", में प्रकाशित

सहकर्मी-समीक्षित पत्रिका
फ्रांसेस्को डी'एंटोनियो एट द्वारा
अल, से परे स्थापित किया है
मुझे शक है कि कोई सीधा लिंक दिखाने के लिए
कोई सबूत मौजूद नहीं है

प्रसवपूर्व उपयोग के बीच

पैरासिटामोल अभी भी एक है
सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली दवाएं
प्रेग्नेंसी. GETTY IMAGES

पैरासिटामोल और ऑटिज़्म
पैदा हुए बच्चे।
लेखकों ने स्पष्ट किया
कि, "पैरासिटामोल, या ऐस-टैमिनोफेन, सबसे अधिक है
आमतौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला दर्दनाशक
और ज्वरनाशक के दौरान
गर्भावस्था, अनुशंसित
विश्व स्तर पर प्रथम-पंक्ति संचालन के रूप में

दर्द से राहत और बुखार कम करने के लिए। इसकी सुरक्षा विशेषताएं-
le आम तौर पर ज़्यादा होता है
की तुलना में अनुकूल
गैर-स्टेरायडल एंटी-इन्फ्लेमेटरी दवाएं और
ओपिओइड,
इसे पसंदीदा बनाना
प्रसूति देखभाल में विकल्प।"
लेख में 43 की समीक्षा की गई
मौजूदा नैदानिक अध्ययनों
और निष्कर्ष निकाला कि, "वर्तमान साक्ष्य नैदानिक रूप से महत्वपूर्ण वृद्धि का संकेत नहीं देते हैं

ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम विकार, एडीएचडी, या की संभावना
बौद्धिक अक्षमता
गर्भवती महिलाओं के बच्चे जो
निर्देशानुसार पैरासिटामोल का उपयोग करते हैं, मौजूदा स्थिति का समर्थन करते हैं
इसकी सिफारिशें
सुरक्षा।" इसके अलावा, इसमें कहा गया कि
इस संगति की अनुपस्थिति

सभी अध्ययनों पर विचार करने के बाद भी
यह कायम रहा
पाँच साल से ज़्यादा
पालन करें।
उन्होंने लिखा, "हमारे री-रिज़ल्ट्स में साफ़ क्लिनिकल री-लेवेंस है। पैरासिटामोल सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होने वाले में से एक है

व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली दवाएं
गर्भावस्था, आमतौर पर दर्द या बुखार के लिए लिया जाता है, और
डब्ल्यूएचओ सूची में शामिल
ज़रूरी दवाओं के बारे में
कई सेटिंग्स में से, यह एकमात्र है
सुरक्षित और सुलभ विकल्प
बुखार और दर्द के इलाज के लिए।
पैरासिटामोल से परहेज
अनिर्वायक सबूतों के आधार पर गर्भवती
महिलाओं और उनके बच्चों को ज्ञात जोखिमों का सामना करना पड़ सकता है

अनुपचारित से संबंधित
बुखार या तेज दर्द। बिना इलाज के मां का बुखार,

विशेष रूप से, जोड़ा गया है
गर्भपात, जन्मजात
विसंगतियाँ, समय से पहले जन्म,
और न्यूरो-डेवलपमेंट में अंतर। इस कारण से,
एप-ऑफ को हतोत्साहित करना

उचित उपयोग
पैरासिटामोल में अधिक नुकसान पहुंचाने की क्षमता होती है
"यह दवा से भी ज़्यादा नुकसानदायक है।"
इस तरह रिव्यू ने बड़े प्रोफ़ेशनल और
रेगुलेटरी बॉडीज़ के गाइडेंस को और मज़बूत किया, जिसमें शामिल हैं

अमेरिकन कॉलेज ऑफ
प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ, रॉयल कॉलेज ऑफ
प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ, और यूरोपीय मेडिसिन एजेंसी,

जो पैरासिटामोल की सलाह देते रहते हैं

प्रेग्नेंसी में पहली लाइन एनाल्जेसिक और एंटी-पायरेटिक।

राष्ट्रपति भवन

9 दिनों के लिए दर्शकों के लिए बंद

द हिंदू ब्यूरो
नई दिल्ली

राष्ट्रपति भवन
(सर्किट 1) बना रहेगा
जनता के लिए बंद
21 जनवरी से 29 जनवरी तक

आगामी गणतंत्र दिवस परेड और

बीटिंग द रिट्रीट सेरेमनी के मौके पर एक बयान जारी किया गया
शनिवार को सर्किट 1 ने कहा।
राष्ट्रपति का दौरा
भवन की मुख्य इमारत।

स्पंदन

पीड़ा-1

गुलाब कोठारी

लेखक पत्रिका समूह के प्रधान संपादक हैं

अपने अन्दर जो बिना किसी सहयोग और अपने-आप उत्पन्न होता है, उसे आध्यात्मिक दु:ख कहते हैं।

पीड़ा के कई स्वरूप होते हैं। शरीर के साथ-साथ मन की पीड़ा भी बहुत असह्य होती है। शरीर की पीड़ा तो फिर भी स्वयं के शरीर तक रहती है, किन्तु मन की पीड़ा तो अन्तहीन होती है। कोई प्रियजन बिछुड़ता है तो मन में पीड़ा होने लगती है। प्रियजन को पीड़ित देखकर भी मन उतना ही पीड़ित हो जाता है, जितना कि स्वयं पीड़ित।

जीवन में सब प्राणी सुख चाहते हैं। दु:खी होना कौन चाहता है? सारा पुरुषार्थ अभ्युदय के लिए ही किया जाता है लेकिन दर्द है कि पीछा ही नहीं छोड़ता। सही बात तो यह है कि जीवन की शुरुआत ही पीड़ा से होती है। मां की प्रसव पीड़ा और सन्तान की धरती पर आने की पीड़ा। उसके बाद मृत्यु के भय की पीड़ा। फिर किसी नई योनि में जाने की पीड़ा। नौ माह किसी के पेट में बन्द हो जाने की पीड़ा। कर्मफलों को भोगने की पीड़ा। भोगों के कारण, प्रसव काल में, ईश्वर से सम्बन्ध विच्छेद की पीड़ा। अभावग्रस्त होने की पीड़ा, जो है उसके खो जाने की पीड़ा। शरीर की व्याधियों की पीड़ा, असाध्य रोगों, शत्रुओं से संघर्ष की पीड़ा। जीवन पीड़ाओं का एक अन्तहीन सिलसिला है। इसी में जीते हुए सुखी होने का प्रयास अथवा हार मानकर दु:ख को ही सुख मान लेने की लाचारी स्वीकार करनी पड़ती है।

पीड़ा के कई स्वरूप होते हैं। शरीर के साथ-साथ मन की पीड़ा भी बहुत असह्य होती है। शरीर की पीड़ा तो फिर भी स्वयं के शरीर तक रहती है, किन्तु मन की पीड़ा तो अन्तहीन होती है। कोई प्रियजन बिछुड़ता है तो मन में पीड़ा होने लगती है। प्रियजन को पीड़ित देखकर भी मन उतना ही पीड़ित हो जाता है, जितना कि स्वयं पीड़ित। अतः शास्त्रों में, भक्ति मार्ग के साहित्य में पीड़ा का निवारण ही धर्म कहा गया है। कहा है- परहित सरिस धरम नहीं भाई। परपीड़ा सम नहीं अधमाई। इसी प्रकार दूसरों को पीड़ा पहुंचाने वालों की दुष्ट संज्ञा है। उनके विरुद्ध संघर्ष करना भी धर्म कहा है। इससे भी एक कदम आगे कृष्ण कहते हैं कि-परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे। अवतार का लक्ष्य भक्तों की पीड़ा का हरण ही है।

परम पुरुषार्थ मोक्ष के हेतु को जानने के लिए ईश्वरकृष्ण अपने ग्रन्थ 'सांख्य कारिका' में कहते हैं कि यदि संसार में दु:ख नहीं हो तो लोग शास्त्रों में वर्णित विषय को जानने की इच्छा ही न करें।

दु:खत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा
तदपघातके हेतौ।
दृष्टे साऽपार्था
चेन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावाद्॥

दु:ख के तीन भेद आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक हैं। अपने अन्दर जो बिना किसी सहयोग और अपने-आप उत्पन्न होता है, उसे आध्यात्मिक दु:ख कहते हैं। आध्यात्मिक दु:ख दो तरह का है- शारीरिक और मानसिक। वात, पित्त, श्लेष इत्यादि शारीरिक सत्वों के असंतुलन होने पर शारीरिक दु:ख होता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, ईर्ष्या तथा विषाद इत्यादि होने पर मानसिक दु:ख होता है। बाहरी साधनों से जो दु:ख उत्पन्न होता है वह दो प्रकार का होता है-आधिभौतिक और आधिदैविक। मनुष्य, पशु, सरीसृप (रेंगकर चलने वाले) और स्थावर (वृक्ष आदि) से होने वाला दु:ख आधिभौतिक है। जैसे कुत्ते और शेर के काटने से तथा दण्ड इत्यादि के प्रहार करने से आधिभौतिक दु:ख होता है। यक्ष, राक्षस तथा ग्रहों से होने वाली पीड़ा आधिदैविक है।

सुख और दु:ख दो अलग भाव नहीं हैं। सुख के कम होते ही दु:ख का आभास होने लगता है। इसी प्रकार दु:ख कम होते-होते सुख बढ़ता जान पड़ता है। सुख अच्छा लगता है। आनन्द को ईश्वर का पर्याय कहा है। निरन्तर विकसित होते जाना ही आनन्द का मूल है। दु:ख की घड़ी में लगता है कि विकास रुक गया। आनन्द का कोई प्रतिकूल शब्द नहीं है। जबकि अन्नंभट्ट ने 'तर्क संग्रह' में अनुकूलवेदनीयं सुखम्, प्रतिकूलवेदनीयं दु:खम् कहा है।

एक दु:ख ऐकान्तिक, अल्पकालिक होता है। दूसरा दीर्घकालिक होता है- जैसे किसी असाध्य रोग का। नि:सन्तान होने का। ऐकान्तिक दु:ख की पुनरावृत्ति हो सकती है। दवा लेते ही ज्वर ठीक हो गया। कुछ काल बाद फिर आ सकता है। मणि-मन्त्र-औषधि से जो निवृत्ति होती है, वह भी इसी श्रेणी में आती है। यज्ञ को भी इस दृष्टि से क्षरणधर्मा ही कहा गया है। क्षयातिक्षययुक्त। यज्ञ किया, परिणाम आया और यज्ञ समाप्त। अर्थात् एक बार के यज्ञ का परिणाम भी एक ही बार आता है। जैसे टिकिट लेकर दिल्ली गए। पूरे मार्ग में इस टिकिट का मूल्य है। दिल्ली पहुंचने पर 'शून्य'।

महर्षि वेदव्यास ने 18 पुराणों की रचना की। सबका सार दो शब्दों में ही है-परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्। मीरा भी गाती थी-हरि तुम हरो जन की पीर। व्यक्ति भी जब किसी की पीड़ा दूर करता है तो ईश्वर कोटि का हो जाता है। जैसे कि डॉक्टर को भगवान का रूप कहते हैं।

शास्त्र कहते हैं कि न तो सुख स्थायी है और न ही दु:ख स्थायी है। दूसरी ओर उपनिषद् कहते हैं कि वैराग्य के लिए, मोक्ष मार्ग के लिए, दु:ख आवश्यक है। इसका अर्थ क्या यह है कि सुख के पीछे भागने वाला मोक्ष से वंचित रह जाएगा?

गोपीनाथ कविराज से एक श्रद्धालु मिलने आया। जब उससे पूछा कि कैसे हो तो बोला-'सब ठीक है।' दो-तीन बार की चर्चा में भी यही भाव देखा, तब कविराज ने कहा कि 'इसको बाहर भेज दो। इसको कोई दु:ख नहीं है। अतः इसे ब्रह्मजिज्ञासा होना कठिन है।'

अध्यात्म के तो सभी ग्रन्थ दु:ख को ही महत्त्व देते हैं। दु:ख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय। सुमिरन भक्ति का आधार कहा गया है। यह भी कहा गया है कि जब भी भक्तों पर संकट आता है, प्रभु दौड़े-दौड़े आते हैं। तब कौन से भक्त को सुख चाहिए?

(क्रमशः)

gulabkothari@epatrika.com

सामाजिक संस्कारों से जुड़ा यह स्तंभ नई पीढ़ी को भी पढ़ाएं।

काव्यांजलि

POEM

मैं ऐसा हो जाऊं

विजय सिंह नाहटा

प्रभो!
मुझमें इतना
अक्षय भर दो
कि मेरा होना
किसी और के ठहरने की
वजह बन जाए।
मेरी चुप्पी इतनी
अर्थ पूर्ण हो
कि जहां संवाद
दरकने लगे
वहां समझ के नवीन
वातायन खुल जाएं।
मुझे इतना हल्का कर दो
चिड़िया के पंख सा निर्भार
कि मैं बोझ न रहूं
और इतना थिर
कि डगमगाते इरादे
मेरे पास आकर
संतुलन का पाठ
सीख लें।
मेरे हिस्से की थकान
अगर किसी अन्य की
राह आसान कर दे तो...,
मुझे विश्राम की कतई
जरूरत नहीं।
मेरी विफलताएं
किसी और के
साहस का आधार बने
और मेरी खामोशी
किसी के टूटते विश्वास
को संभाल ले।
मैं चाहता हूं...मेरा अंत
किसी अंतहीन शून्य का
विस्तार न बने
बल्कि किसी आरम्भ की
मौन घोषणा हो।
मेरे रहने से अगर
किसी का डर कम हो
और... मेरे पथ से
हटने से
किसी का विश्वास बढ़े
तो वही मेरी एकमेव
सार्थकता हो।
मैं कोई उदाहरण
कोई किंवदंती
नहीं बनना चाहता
बस इतना काफी है
कि मेरे होने की वजह से
किसी का रास्ता कम
कठिन हो जाए
और, एक मंद उजास
सहसा क्षितिज से
झांकने लगे।

मल्लिका को अपना जवाब मिल गया था जो वर्षों से वह नीलकुरिंजी के साथ खोज रही थी। नीलकुरिंजी का खिलना उसके सपने के सच होने जैसा था। उसके अधर थिरक रहे थे।

एस.डी. वैष्णव

patrika.com

नीलकुरिंजी

मल्लिका के घर के सामने नीलगिरि की सबसे ऊंची चोटी डोड्डाबेट्टा केरल तथा कर्नाटक की ओर अपनी बांहें फैलाए साफ नजर आती थी। घर की ड्योढ़ी से अक्सर नीलगिरि को ताकती मल्लिका की आंखों को नीलकुरिंजी के खिलने का इंतजार रहता था। विश्वविद्यालय में वह नई-नई अंग्रेजी की सहायक प्रोफेसर लगी थी। उन्हीं दिनों विश्वविद्यालय में कुमार साहब का भी चयन हुआ था। कुछ वर्षों के अध्यापन से वे नीलगिरि में हिंदी के उस्ताद कहे जाने लगे थे। विश्वविद्यालय में कुमार साहब का आगमन एक तरह से नीलगिरि में साहित्य के पुनर्जन्म का समय था। यह वैसे ही था- जैसे प्रकृति में एकाएक वसंत आता है, भीषण शीत के बाद।

'वाट्स गोइंग ऑन मिस्टर कुमार?' मिस मल्लिका सामंथा जो उनकी समकालीन थी, ने कॉरिडोर में सामने से आते हुए कुमार साहब से पूछा। खास नहीं, बस बहार है।' कुमार साहब ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

'बहार! यू मीन स्प्रिंग?' 'आई एम नॉट टॉकिंग अबाउट स्प्रिंग। आई एम सेइंग दैट देयर इज स्प्रिंग इन लाइफ। इट्स जॉय।'

कुमार साहब अपनी लय में आए और मिस मल्लिका को अपने अंदाज में बताया कि प्रकृति में ही नहीं, व्यक्ति के जीवन में भी वसंत होता है। उनका जवाब सुनकर मिस मल्लिका के होंठों पर हंसी के फव्वारे फूटने लगे। उसने कहा- 'बाय द वे, मिस्टर कुमार, दिस टाइम आई एम कंडक्टिंग अ सेमिनार ऑन पॉएट्री। योर प्रेजन्स इज मस्ट। बिसाइड्स, यू हैव टू चेअर अ सेशन।'

'दिस इज गुड न्यूज। वेन आर यू गेटिंग इट डन?' 'नॉट डिसाइडेड यट, बट प्रोबेबली इन द मंथ ऑफ जनवरी।'

'ओके! आई एम रेडी, बट एट वंस यू मस्ट इनफॉर्म मी।' 'येस..व्हाय नॉट! आई विल डेफिनेटली इनफॉर्म यू।' कहते हुए मल्लिका अपने कमरे में चली गई।

वैचारिक सोच से समृद्ध कुमार साहब विश्वविद्यालय के लंबे-चौड़े कैंपस में साहित्य के इतने बड़े सिंधु में 'पुष्टिमार्ग का जहाज' पढ़ाते थे। प्रासंगिक विषयवस्तु जो कक्षा में चर्चा के केंद्र में होती, उसे हमेशा ब्लैक बोर्ड पर रेखांकित करते। इसी कारण क्लास से दूरी बनाकर रखने वाले विद्यार्थी भी उनकी क्लास में लौटते। कुमार साहब जब क्लास रूम में व्याख्यान देते और ब्लैक बोर्ड पर मोतियों के मानिंद सुंदर अक्षर गढ़ते, तब पूरी क्लास उन्हें 'पिन ड्रॉप साइलेंस' सुनती थी। हिंदी के साथ अंग्रेजी और उर्दू भी उनकी जुबां पर अटी पड़ी थी। विद्यार्थियों के प्रति उनके समर्पण भाव ने उन्हें सम्मान के उस शिखर तक पहुंचाया, जहां कॉलेज के कॉरिडोर में ही नहीं, बल्कि नीलगिरि के गलियारों में भी उनके सम्मान में रेड कार्पेट बिछती थी।

साहित्य तो कुमार साहब के पास रमा पड़ा था। आकाशवाणी पर उनकी वार्ताएं जादू बिखेरती थीं। आचार्य शुक्ल और नगेंद्र का इतिहास उनके दिमाग में पैबस्त था, किसी मशीनी स्क्रू की तरह। एक तरह से वे वाचिक परंपरा के आचार्य थे। कुलपति की नजरों में जम गए, फिर तो विश्वविद्यालय में उनका चयन होना ही था, सो हो गया। दिल्ली की चकाचौंध से निकालकर नीलगिरि की उपत्यका में हिंदी का लोहा मनवाते कुमार साहब की प्रतिभा के विविध आयामों से परिपूर्ण छवि कहीं न कहीं मल्लिका के अंतस को बेध रही थी।

वर्षों के इंतजार के बाद नीलगिरि नीला-बैंगनी हुआ था। नीलकुरिंजी जो खिले थे। उनकी मनमोहक छटा मल्लिका के हृदय को भीतर तक उद्वेलित कर रही थी। उसने सोचा, क्या मिस्टर कुमार को मन की बात कहने का यह सही वक्त है! उसने नीलकुरिंजी की ओर देखा। नीलकुरिंजी ने कहा, 'सामंथा! ईश्वर सुन रहा है।' उसके शरीर में एक अजीब-सी सिहरन दौड़ पड़ी।

एक दिन उसने कुमार साहब को अपने घर लंच के लिए आमंत्रित किया। वह मन में बहुत कुछ संजोए बैठी थी। यदि आज नहीं कहा, तो फिर कभी नहीं। भोजन करते हुए उसने कहा, 'मिरेप्पुदीन नीलकुरिंजी तुसारा?' इस बहाने मल्लिका बात आगे बढ़ाने का अवसर तलाश रही थी।

'मतलब!' कुमार साहब ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। 'ओह! मेरा मतलब है कि आपने कभी नीलकुरिंजी देखे हैं?'

'नहीं, पहली बार यहीं पर देखे हैं। खिलते हुए कितने सुंदर लगते हैं।'

लंच के उपरांत कुमार साहब जाने लगे। मल्लिका के शब्द मुख विवर में ठहर रहे थे। हड़बड़ाहट में उसने फिर तेलुगु में कहा, 'नीकू नेननटे इस्तमा?' कहते हुए मल्लिका भूल गई थी कि वह भाषा के जादूगर के सामने खड़ी है। वह भाषाई गलती दुरुस्त करती, इससे पहले कुमार साहब ने मुस्कुराते हुए, पीछे मुड़कर देखा। फिर कहा, 'सामंथा! ईश्वर और नीलकुरिंजी दोनों सुन रहे हैं। क्या नीलगिरि के ये खूबसूरत फूल इस बात के साक्षी बनेंगे?'

मल्लिका को जवाब मिल गया था जो वर्षों से वह नीलकुरिंजी के साथ खोज रही थी। नीलकुरिंजी का खिलना उसके सपने के सच होने जैसा था। उसके अधर थिरक रहे थे। और चेहरे पर फैली लज्जा को छुईमुई-सी वह स्वयं में समेट रही थी। नीलगिरि पर सूर्य की रश्मियां बिखर रही थीं। उसने कहा, 'नीलकुरिंजी! तुम सालों में नहीं, प्रतिवर्ष खिलते रहो।' कहते हुए, मधुयामिनी की सुखद कल्पना उसकी आंखों में तैर रही थी। कुमार साहब अपने भीतर के आतप को फैलाए अनिमेष नीलकुरिंजी के वैभव को देख रहे थे।

यूनानी चिकित्सा

सर्दी-जुकाम और साइनस से राहत पाने के लिए पानी में 1 चम्मच अजवाइन, 5-7 तुलसी पत्तियां, 2-3 लौंग उबालें। सिर ढककर 5-10 मिनट भाप लें।

मेरी सेहत Health

फिटनेस मंत्र

खर्राटों की समस्या में नाड़ी शोधन प्राणायाम अत्यंत प्रभावी माना गया है। खर्राटों के कारण अनिद्रा, थकान, चिड़चिड़ापन में ये प्राणायम राहत देता है।

रोज एक अनार खाने से दूर होगी वाइट डिस्चार्ज की समस्या

वैद्या प्रो. हेतल दवे

सीओई, श्रीकृष्ण आयुष विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

patrika.com

महिलाओं में होने वाली स्वास्थ्य समस्या में वाइट डिस्चार्ज प्रमुख है। इसके पीछे कारण बदलती जीवनशैली, गलत खानपान, तनाव, हार्मोनल असंतुलन और कमजोर पाचन आदि हो सकते हैं। ऐसे में इस समस्या से निजात पाने के लिए जानते हैं कुछ प्रभावी प्राकृतिक उपायों के बारे में...

वुमन हैल्थ

क्यों बढ़ती है समस्या?

आयुर्वेद में वाइट डिस्चार्ज यानी लिकोरिया मुख्य रूप से कफ दोष की अधिकता और अग्नि (पाचन शक्ति) की कमजोरी के कारण होता है। जब शरीर में कफ बढ़ जाता है और पाचन ठीक से काम नहीं करता, तो योनि से सफेद, गाढ़ा या दुर्गंध युक्त स्राव होने लगता है। इसके साथ कमजोरी, कमर दर्द, चक्कर आना और मानसिक थकान भी महसूस हो सकती है। समस्या बढ़ने पर खुजली, जलन आदि परेशानी बढ़ जाती है।

सुबह खाली पेट खाएं

- **सुबह** खाली पेट या नाश्ते में एक ताजा अनार खाना सबसे लाभकारी होता है।
- **यदि** पूरा फल उपलब्ध न हो, तो अनार का ताजा रस भी लिया जा सकता है, लेकिन उसमें चीनी न मिलाएं।
- **गंभीर** समस्या में आयुर्वेदाचार्य की सलाह से अनार के छिलके का काढ़ा भी उपयोग किया जाता है।

अनार क्यों है लाभकारी?

आयुर्वेद में अनार को त्रिदोषनाशक, विशेष रूप से कफ और पित्त शमन करने वाला फल माना गया है। इसका कषाय और मधुर रस वाइट डिस्चार्ज को नियंत्रित करता है। पाचन शक्ति को मजबूत करता है। खून की कमी व कमजोरी को दूर करता है। इन्हीं गुणों के कारण अनार को वाइट डिस्चार्ज में उपयोगी माना गया है। रोजाना एक ताजा अनार खाने से शरीर में बढ़ा हुआ कफ संतुलित होता है और पाचन सुधरता है। शरीर में विषैले तत्त्व नहीं बनते और हार्मोनल संतुलन बेहतर होता है।

इन चीजों को भी करें डाइट में शामिल

- **सिंघाड़ा:** सिंघाड़ा भी वाइट डिस्चार्ज की समस्या को दूर करने में बहुत उपयोगी है। इसे आप ताजा फल के रूप में या इसके आटे का हलवा बनाकर भी खा सकते हैं। गोंद के साथ सिंगाड़े के आटे का लड्डू बनाकर भी नियमित खाने से वाइट डिस्चार्ज की समस्या दूर होगी।
- **चिया सीड्स:** इसमें ओमेगा-3 फैटी एसिड भरपूर मात्रा में होते हैं। यह हार्मोन को संतुलित कर वाइट डिस्चार्ज की समस्या से राहत देते हैं। एक चम्मच चिया सीड्स को रात में भिगो दें। अगले दिन में 11 बजे के बाद गुनगुने पानी के साथ लें। रोजाना 1-2 चम्मच से ज्यादा नहीं खाना चाहिए।
- **आंवला:** आंवला की सब्जी या मुरब्बा या नमक और हल्दी के पानी में भिगोए हुए आंवले भी प्रयोग कर सकते हैं।

इन बातों का रखें ध्यान?

ज्यादा तला-भुना, मैदा और मीठा भोजन कम करें। ठंडी चीजें और देर रात खाने से बचें। पर्याप्त नींद लें और तनाव कम करें। हाइजीन का ध्यान रखें।

आयुर्वेद से...

औषधि ही नहीं संपूर्ण स्वास्थ्य की रक्षक है हरड़

*हरड़ जिसे हरीतकी, अभया और कायस्थ भी कहा जाता है। यह बहुत ही फायदेमंद औषधि है। इसी कारण कहा गया है **पथ्या सदा हरीतकी**। यह पंचरसयुक्त, कषाय रस प्रधान, त्रिदोष शामक और विशेष रूप से वातनाशक मानी गई है। नियमित प्रयोग से इम्यूनिटी बढ़ती है।*

रोग के अनुसार ऐसे करें प्रयोग

1. पेट के रोगों में: कब्ज, अपच, गैस एवं पाचन संबंधी अन्य समस्याओं में हरड़ अत्यंत उपयोगी है। रात को भोजन के दो घंटे बाद गुनगुने पानी के साथ 3-5 ग्राम हरड़ चूर्ण लेने से पेट ठीक रहता है, भूख खुलती है और भारीपन दूर होता है। कृमि रोग में भी कारगर है।

2. मोटापा-मधुमेह में: हरड़, आंवला और बहेड़ा को समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनाकर सुबह गुनगुने पानी के साथ लेने से शरीर का चयापचय सुधरता है, चर्बी घटती है और रक्त में शर्करा का संतुलन बना रहता है। यह योग शरीर से विषैले तत्त्वों को बाहर निकालता है।

3. श्वास और कफ रोगों में: खांसी, दमा, श्वास एवं गले के रोगों में हरड़ का चूर्ण शहद के साथ लेने से कफ बाहर निकलता है। छाती का जकड़ाव कम होता है और श्वसन तंत्र मजबूत बनता है।

4. जोड़ और वात रोगों में: आमवात, गठिया, साइटिका आदि समस्याओं में अरंड़ी के तेल में भुनी हुई हरड़ का चूर्ण गुनगुने पानी के साथ लेने से जोड़ों की सूजन, दर्द और जकड़न में लाभ मिलता है।

5. नेत्र और सामान्य रोगों में: रात में हरड़ को पानी में भिगोकर सुबह उस जल से आंखों को धोने से नेत्र ज्योति बढ़ती है और आंखों की थकान दूर होती है। यह स्मरण शक्ति बढ़ाने, ओज को पुष्ट करने और शरीर को शुद्ध करने वाली उत्तम रसायन औषधि है।

6. हृदय, रक्त और मूत्र विकारों में: हरड़ का नियमित सेवन रक्त को शुद्ध करता है, हृदय की मांसपेशियों को बल देता है और रक्त संचार को सुधारता है। मूत्र विकार और यकृत संबंधी समस्याओं में भी यह कारगर मानी गई है।

__हरड़__ एक औषधि नहीं, बल्कि संपूर्ण स्वास्थ्य की रक्षक है। सही मात्रा और विधि से, वैद्य की सलाह अनुसार नियमित सेवन से दीर्घकालिक लाभ मिलेंगे।

डॉ. भगवान सहाय शर्मा

आयुर्वेद विशेषज्ञ, नई दिल्ली

patrika.com

लगातार थकान, चिड़चिड़ापन और मूड स्विंग्स...कहीं थायरॉइड तो नहीं इसकी वजह?

तनाव प्रबंधन ही है सबसे बड़ा बचाव

डॉ. सौरव शिशिर अग्रवाल

हार्मोन रोग विशेषज्ञ, मेदांता हॉस्पिटल, नोएडा patrika.com

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन चुका है। काम का दबाव, पारिवारिक जिम्मेदारियां, आर्थिक चिंता, नींद की कमी और डिजिटल लाइफस्टाइल..ये सभी मिलकर शरीर और मन पर लगातार असर डालते हैं। अक्सर लोग थकान, वजन बढ़ने, बाल झड़ने या मूड बदलने जैसी शिकायतों को केवल तनाव मानकर नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन कई मामलों में यही तनाव ऑटोइम्यून थायरॉइड डिजीज की अहम वजह बन सकता है।

तनाव और ऑटोइम्यून थायरॉइड का संबंध

लंबे समय तक बना रहने वाला तनाव शरीर में कॉर्टिसोल नामक हार्मोन को बढ़ा देता है। थोड़े समय के लिए यह हार्मोन फायदेमंद होता है, लेकिन जब यह लगातार ऊंचे स्तर पर बना रहे तो इसके दुष्प्रभाव सामने आने लगते हैं।

- **इम्यून** सिस्टम असंतुलित हो जाता है
- **शरीर** में सूजन बढ़ती है।
- **हार्मोनल** संतुलन बिगड़ता है।

यही असंतुलन ऑटोइम्यून बीमारियों की जमीन तैयार करता है।

ऑटोइम्यून थायरॉइड क्या है?

ऑटोइम्यून थायरॉइड वह स्थिति है, जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली गलती से थायरॉइड ग्रंथि को ही बाहरी दुश्मन समझकर उस पर हमला करने लगती है। इसके दो प्रमुख रूप हैं–

1. हाशिमोटो थायरॉइडाइटिस, जिसमें थायरॉइड हार्मोन कम बनने लगता है, इसे हाइपोथायरॉइडिज्म कहते हैं।

2. ग्रेव्स डिजीज, जिसमें थायरॉइड हार्मोन जरूरत से ज्यादा बनने लगता है यानी हाइपरथायरॉइडिज्म। दरअसल, थायरॉइड हार्मोन शरीर की मेटाबॉलिज्म, दिल की धड़कन, ऊर्जा स्तर, पाचन, प्रजनन स्वास्थ्य और मानसिक स्थिति को नियंत्रित करता है। इसमें गड़बड़ी पूरे शरीर को प्रभावित करती है।

किन लक्षणों को न करें नजरअंदाज?

ऑटोइम्यून थायरॉइड के लक्षण धीरे-धीरे उभरते हैं, जानते हैं इसके कुछ सामान्य लक्षण –

- **बालों** का झड़ना और त्वचा रूखी होना
- **लगातार** थकान और कमजोरी
- **वजन** का बिना वजह बढ़ना या घटना
- **ठंड** या गर्मी अधिक लगना
- **चिड़चिड़ापन,** घबराहट, एंजाइटी या डिप्रेशन
- **पीरियड्स** की अनियमितता और फर्टिलिटी से जुड़ी समस्याएं
- **दिल** की धड़कन तेज होना या सुस्ती

अगर ये लक्षण लंबे समय तक बने रहें, तो केवल तनाव मानकर इन्हें टालना सही नहीं है।

5-10 % *ज्यादा पाया जाता है __महिलाओं में ऑटोइम्यून थायरॉइड__ पुरुषों की तुलना में।*

30-50 *वर्ष की उम्र __सबसे अधिक संवेदनशील__ होती है। परिवार में थायरॉइड की हिस्ट्री है तो रिस्क बढ़ता।*

42 *मिलियन लोग देश में __थायरॉइड से प्रभावित हैं,__ जिसमें ऑटोइम्यून थायरॉइड भी शामिल है।*

बचाव और नियंत्रण के प्रभावी उपाय

ऑटोइम्यून थायरॉइड को पूरी तरह रोका तो नहीं जा सकता, लेकिन सही समय पर पहचान और जीवनशैली में बदलाव से इसे काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

1. **तनाव प्रबंधन को जीवन का हिस्सा बनाएं:** रोजाना योग, प्राणायाम या गहरी सांसों का अभ्यास करें। यह कॉर्टिसोल नियंत्रित करता है और इम्यून सिस्टम को संतुलन में रखता है।
2. **नींद को प्राथमिकता दें:** 7-8 घंटे की गहरी और नियमित नींद हार्मोनल बैलेंस सुधारती है। देर रात तक मोबाइल या लैपटॉप का इस्तेमाल कम करें।
3. **संतुलित और पोषक आहार लें:** आयोडीन, सेलेनियम और जिंक युक्त खाद्य पदार्थ शामिल करें। हरी सब्जियां, फल, साबुत अनाज और पर्याप्त प्रोटीन लें। अत्यधिक प्रोसेस्ड फूड, शक्कर और जंक फूड से बचें।
4. **नियमित जांच कराते रहें:** अगर परिवार में थायरॉइड या किसी ऑटोइम्यून बीमारी का इतिहास है, तो TSH, T3, T4, एंटी-TPO जांच कराएं।
5. **खुद से दवा न लें:** थायरॉइड की दवाएं लंबे समय तक चलती हैं। बिना डॉक्टर की सलाह दवा बंद या शुरू करना नुकसानदायक हो सकता है।

दूध के साथ गुड़ खाने से जोड़ों के दर्द में मिलेगी राहत

आयुर्वेद में गुड़ केवल मिठास नहीं, बल्कि अमृत के समान है। जानते हैं इसके औषधीय लाभ...

गुड़ के फायदे

1. **भोजन** के बाद थोड़ा सा गुड़ खाने से पाचन ठीक रहता है। कब्ज नहीं होती।
2. **अदरक** व गुड़ साथ खाने से सूखी खांसी और गले के दर्द में आराम मिलता है।
3. **इसमें** आयरन होता है, जो खून की कमी दूर करता है।
4. **दूध** के साथ गुड़ खाने से जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है।
5. **यदि** थकान हो तो दिन में दो बार गुड़ खाकर आधे घंटे बाद दूध पीने से एनर्जी मिलेगी।
6. **जो** बच्चे बिस्तर में मूत्र कर देते हैं, उन्हें तिल-गुड़ खिलाएं।

इन पर करें गौर - ■ **गुड़ की** तासीर गर्म होती है, गर्मी के मौसम गुड़ कम खाएं। ■ सफेद गुड़ की जगह गहरे भूरे रंग का गुड़ ही खरीदें। ■ मधुमेह और मोटापे से परेशान लोग गुड़ का कम मात्रा में सेवन करें।

पैसे का सवाल Q A

पिता की संपत्ति में पत्नी और बच्चों का बराबर हिस्सा

संदीप टिक्कीवाल
अधिवक्ता
Patrika.com

विशेषज्ञ से सवालों के जवाब जानिए। अपना सवाल वॉट्सऐप नंबर 8955003879 पर भेजें।

Q मेरे पिता की पहली पत्नी के निधन के बाद उन्होंने दूसरी शादी की। मैं दूसरी पत्नी से उत्पन्न पुत्र हूं। अब पिता की भी मृत्यु हो चुकी है। पहली पत्नी से चार व दूसरी पत्नी (मेरी मां) से दो संतान हैं। मेरे पिता की संपत्ति में मेरी मां को कितना हिस्सा मिलेगा। *-एक पाठक*

हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 की धारा 8 के अनुसार Class–I heirs को बराबर हिस्सा मिलता है। जिसमें पत्नी, सभी पुत्र/पुत्रियां (पहली या दूसरी पत्नी से हों) शामिल हैं। पहली पत्नी नहीं हैं, इसलिए वह वारिस नहीं होंगी।

वैध उत्तराधिकारी कौन होंगे

इस मामले में Class I heirs होंगे:

- दूसरी पत्नी (आपकी मां)
- पहली पत्नी से 4 संतानें
- दूसरी पत्नी से 2 संतानें
- कुल उत्तराधिकारी = 1 पत्नी + 6 संतानें = 7 उत्तराधिकारी
- पहली पत्नी का पहले ही निधन हो चुका है, इसलिए उन्हें कोई हिस्सा नहीं मिलेगा।

संपत्ति बंटवारा कैसे होगा

हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम के अनुसार:

- पत्नी और सभी संतानें बराबर हिस्से की हकदार होती हैं
- किसी भी संतान के साथ भेदभाव नहीं किया जाता, चाहे वह पहली पत्नी से हो या दूसरी से।
- इसलिए पिता की कुल संपत्ति को 7 बराबर हिस्सों में बांटा जाएगा।

आपकी मां को कितना हिस्सा मिलेगा: आपकी मां (दूसरी पत्नी) को 1/7 हिस्सा मिलेगा। पहली पत्नी से प्रत्येक संतान को 1/7 हिस्सा दूसरी पत्नी से प्रत्येक संतान को भी 1/7 हिस्सा मिलेगा।

महत्त्वपूर्ण नोट: यदि संपत्ति पैतृक (ancestral) है या पिता ने वसीयत बनाई थी, तो हिसाब बदल सकता है। ऐसी स्थिति में कानूनी जानकार से सलाह लें।

निवेश ज्ञान | आम आदमी के लिए शेयर बाजार का मंत्र

आप इंवेस्ट कर रहे हैं या ट्रेड? खुद फर्क समझिए, नुकसान से बचिए

विकास बंसल
निवेश सलाहकार
Patrika.com

आज के दौर में शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड और डिजिटल ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म आम आदमी की पहुंच में आ चुके हैं। मोबाइल ऐप्स ने निवेश को जितना आसान बनाया है, उतना ही भ्रम भी बढ़ा दिया है। अक्सर लोग यह समझ नहीं पाते कि वे इंवेस्ट (निवेश) कर रहे हैं या ट्रेड। यही भ्रम कई बार नुकसान का कारण बन जाता है। यह समझना जरूरी है कि निवेश व ट्रेडिंग में अंतर क्या है।

क्या है निवेश?

निवेश का अर्थ है किसी अच्छी कंपनी, बिजनेस या एसेट में लंबे समय के लिए पैसा लगाना, ताकि वह समय के साथ बढ़े। निवेशक कंपनी की बुनियादी स्थिति पर भरोसा करता है–जैसे बिजनेस मॉडल, मैनेजमेंट, मुनाफा, भविष्य की संभावनाएं आदि। निवेश का मकसद धैर्य के साथ संपत्ति बनाना है। इसमें उतार-चढ़ाव आते हैं, लेकिन समय के साथ अच्छे निवेश आमतौर पर बेहतर रिटर्न देते हैं। वॉरेन बफेट जैसे दिग्गज निवेशक इसी सिद्धांत पर चलते हैं, लंबे समय में बाजार धैर्यवान लोगों को इनाम देता है।

समयावधि
ट्रेडिंग शॉर्ट टर्म होती है, निवेश लॉन्ग टर्म के लिए किया जाता है।

फैसले का आधार
ट्रेडिंग टेक्निकल चार्ट पर, निवेश फंडामेंटल पर आधारित।

ट्रेडिंग समझें

ट्रेडिंग का मतलब है कम समय में मुनाफा कमाने के लिए बार-बार खरीद-बिक्री करना। यह मिनटों, घंटों या कुछ दिनों का खेल हो सकता है। ट्रेडर शेयर की कीमतों के उतार-चढ़ाव, चार्ट, टेक्निकल इंडिकेटर्स और खबरों पर ध्यान देता है। ट्रेडिंग में मुनाफा जल्दी हो सकता है, लेकिन जोखिम भी उतना ही ज्यादा होता है। सही ज्ञान और अनुशासन की कमी से अधिकांश नए ट्रेडर नुकसान उठाते हैं।

ट्रेडिंग में लगातार निगरानी, निवेश में धैर्य जरूरी। ट्रेडिंग में ब्रोकरेज व टैक्स अधिक, निवेश में कम।

निवेश और ट्रेडिंग में अंतर

निवेश में समय आपका मित्र होता है, जबकि ट्रेडिंग में समय आपके खिलाफ भी जा सकता है। निवेश में तनाव कम और निर्णय सीमित होते हैं, वहीं ट्रेडिंग में स्क्रीन के सामने घंटों बैठना पड़ता है और मानसिक दबाव अधिक होता है। निवेश आम लोगों के लिए उपयुक्त है, जबकि ट्रेडिंग एक पेशा है, जिसे पूरी ट्रेनिंग और अनुशासन की जरूरत होती है।

आम निवेशक समझें

आज सोशल मीडिया पर जल्दी पैसा कमाने के सपने दिखाए जाते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि स्थायी संपत्ति निवेश से ही बनती है, ट्रेडिंग से नहीं। यदि आपके पास पूरा समय, गहरा ज्ञान और जोखिम सहने की क्षमता नहीं है, तो ट्रेडिंग से दूर रहना ही समझदारी है।

बैंक नहीं काट सकता अवैध रूप से आपके खाते से पैसे

भारत में बैंक खाताधारकों को कई कानूनी अधिकार प्राप्त हैं। बैंक आपकी अनुमति या स्पष्ट कानूनी आधार के बिना खाते से पैसे नहीं काट सकता। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (RBI) के दिशानिर्देशों के अनुसार, किसी भी प्रकार की कटौती से पहले ग्राहक को जानकारी देना और सहमति लेना आवश्यक है।

कब कटौती वैध

बैंक केवल कुछ विशेष स्थितियों में ही खाते से रकम काट सकता है, जैसे– लोन की बकाया EMI, क्रेडिट कार्ड बकाया, न्यूनतम बैलेंस चार्ज, कोर्ट या सरकारी आदेश या ग्राहक द्वारा पहले से अधिकृत ऑटो-डेबिट। इन सभी मामलों में नियमों का पालन जरूरी है।

अवैध कटौती

यदि बैंक बिना सूचना दिए, बिना आपकी सहमति के या गलत कारण से पैसे काट लेता है, तो यह अवैध माना जाएगा। तकनीकी त्रुटि, गलत चार्ज या थर्ड पार्टी की गलती की जिम्मेदारी भी बैंक की होती है।

शिकायत कैसे करें

सबसे पहले बैंक की शाखा या कस्टमर केयर में लिखित शिकायत करें। यदि 30 दिन में समाधान न हो, तो बैंकिंग लोकपाल (RBI Ombudsman) में ऑनलाइन शिकायत दर्ज की जा सकती है। इसके अलावा उपभोक्ता फोरम भी एक प्रभावी विकल्प है।

सावधानी

अपने खाते का स्टेटमेंट नियमित रूप से जांचें और किसी भी संदिग्ध लेनदेन पर तुरंत कार्रवाई करें।

बीमा ज्ञान | स्वास्थ्य बीमा में सुपर टॉप-अप क्यों कराना चाहिए?

बढ़ते इलाज खर्चों के दौर में एक समझदारी भरा निर्णय

आज के समय में स्वास्थ्य सेवाओं की लागत तेजी से बढ़ रही है। एक साधारण बीमारी का इलाज भी लाखों रुपए तक पहुंच सकता है। ऐसे में केवल बेसिक हैल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी पर निर्भर रहना कई बार पर्याप्त साबित नहीं होता। यहीं पर सुपर टॉप-अप हैल्थ इंश्योरेंस एक उपयोगी व किफायती समाधान बन सकता है।

सुपर टॉप-अप क्या है?

सुपर टॉप-अप एक अतिरिक्त स्वास्थ्य बीमा कवर है, जो आपकी मौजूदा हैल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी की सीमा पूरी होने के बाद सक्रिय होता है। इसमें एक डिडक्टिबल राशि तय रहती है, यानी उस सीमा तक का खर्च बेस पॉलिसी या अपनी जेब से देना होता है। डिडक्टिबल पार होते ही उससे ऊपर का खर्च सुपर टॉप-अप कवर करता है। उदाहरण के लिए, 5 लाख रुपए की बेस पॉलिसी और 20 लाख रुपए का सुपर टॉप-अप लिया है, जिसमें डिडक्टिबल 5 लाख होने पर कुल 25 लाख रुपए तक का सुरक्षा कवच मिल जाता है।

सुपर टॉप-अप क्यों जरूरी है?

इलाज का बढ़ता खर्च: आज निजी अस्पतालों में गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर, हार्ट सर्जरी या अंग प्रत्यारोपण का खर्च 15-20 लाख रुपए या उससे अधिक हो सकता है। ऐसे में बेस पॉलिसी जल्दी समाप्त हो जाती है।

कम प्रीमियम में ज्यादा कवरेज: सुपर टॉप-अप पॉलिसी का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह बहुत कम प्रीमियम में उच्च कवरेज प्रदान करती है। समान कवरेज की नई बेस पॉलिसी लेने की तुलना में यह काफी सस्ती होती है।

परिवार के लिए बेहतर सुरक्षा: कई लोग फैमिली फ्लोटर पॉलिसी लेते हैं। यदि परिवार के दो सदस्य अस्पताल में भर्ती होते हैं तो बेस पॉलिसी जल्दी खत्म हो सकती है। सुपर टॉप-अप ऐसी स्थिति में सुरक्षा देता है।

एक से अधिक क्लेम का लाभ: साधारण टॉप-अप पॉलिसी एक ही क्लेम पर आधारित होती है, जबकि सुपर टॉप-अप में पूरे वर्ष के कुल खर्च को देखा जाता है। इससे बार-बार अस्पताल में भर्ती होने की स्थिति में भी बेहतर लाभ मिलता है।

नियोक्ता की पॉलिसी पर निर्भरता कम: कई लोग केवल ऑफिस की ग्रुप हैल्थ पॉलिसी पर निर्भर रहते हैं। नौकरी बदलने या रिटायरमेंट के बाद यह कवर समाप्त हो सकता है। सुपर टॉप-अप व्यक्तिगत सुरक्षा करता है।

किन लोगों के लिए ज्यादा फायदेमंद?

यह पॉलिसी मध्यम आय वर्ग के परिवार, वरिष्ठ नागरिक, वे लोग जिनके परिवार में पहले से कोई गंभीर बीमारी का इतिहास हो व वे कर्मचारी जो सिर्फ कंपनी की हैल्थ पॉलिसी पर निर्भर हैं, ले सकते हैं।

ध्यान रखने योग्य बातें

इसे लेते समय डिडक्टिबल राशि, वेटिंग पीरियड, बीमारियों की शर्तें पहले जांच लें।

गोविंद अग्रवाल
बीमा विशेषज्ञ
Patrika.com

कानूनी सलाह

रेंट एग्रीमेंट का रजिस्ट्रेशन करवाना है जरूरी, समझें महत्त्व

आलोक भट्ट
अधिवक्ता
Patrika.com

रेंट एग्रीमेंट का रजिस्ट्रेशन कराना कानूनी रूप से बेहद जरूरी है, खासकर जब किराया अवधि 11 महीने से अधिक हो। रजिस्टर्ड एग्रीमेंट कोर्ट में मान्य होता है और किसी भी विवाद की स्थिति में मजबूत सबूत माना जाता है।

ऑनर व रेंटर की सुरक्षा: रजिस्टर्ड रेंट एग्रीमेंट से दोनों पक्षों के अधिकार सुरक्षित रहते हैं। इसमें किराया, सुरक्षा राशि, अवधि, रख-रखाव और खाली कराने की शर्तें स्पष्ट होती हैं, जिससे गलतफहमी की संभावना कम हो जाती है।

किराएदार सत्यापन अनिवार्य: किराएदार रखने से पहले उसका पुलिस वेरिफिकेशन कराना जरूरी होता है। कई राज्यों में यह नियम अनिवार्य है और न कराने पर जुर्माना भी लग सकता है।

बिना रजिस्ट्रेशन के नुकसान: अनरजिस्टर्ड एग्रीमेंट कोर्ट में कमजोर सबूत माना जाता है। किराया न मिलने या मकान खाली न करने जैसी स्थिति में मकान मालिक को कानूनी परेशानी हो सकती है।

टैक्स और अन्य नियम: रेंट से होने वाली आय पर आयकर देना जरूरी है। साथ ही स्थानीय नगर निकाय के नियमों का पालन भी करना होता है।

सलाह: रेंट एग्रीमेंट हमेशा लिखित और रजिस्टर्ड कराएं, किराया, अवधि, डिपॉजिट और शर्तें स्पष्ट रखें। किराएदार का पुलिस वेरिफिकेशन कराएं और भुगतान का रिकॉर्ड सुरक्षित रखें, ताकि भविष्य में किसी भी विवाद से बचा जा सके।

उद्योग ज्ञान | शुरुआत से सफलता तक....

लोहे और स्टील के छोटे पुर्जे निर्माण

पत्रिका फीचर डेस्क
patrika.com

लोहे और स्टील के छोटे पुर्जे (जैसे नट-बोल्ट, ब्रैकेट, क्लैम्प, गियर पार्ट्स आदि) का निर्माण एक लाभकारी लघु उद्योग हो सकता है, क्योंकि ऑटोमोबाइल, निर्माण, कृषि उपकरण और मशीनरी क्षेत्रों में इसकी निरंतर मांग रहती है। इस उद्योग की शुरुआत से पहले कुछ महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

1. *स्थान और जलवायु का महत्त्व:* इसके लिए अत्यधिक विशेष जलवायु की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन एरिया का चयन बहुत महत्त्वपूर्ण है। फैक्ट्री ऐसे स्थान पर होनी चाहिए जहां बिजली, पानी, सड़क और परिवहन की अच्छी सुविधा हो। औद्योगिक क्षेत्र या औद्योगिक क्लस्टर में इकाई लगाने से कच्चा माल और बाजार तक पहुंच आसान होती है।

2. मशीनरी और तकनीकी व्यवस्था: छोटे पुर्जों के निर्माण के लिए लेथ व ड्रिल मशीन, पावर प्रेस, ग्राइंडर, वेल्डिंग मशीन व माप उपकरणों की जरूरत होती है। साथ ही कारीगर व नियंत्रण भी जरूरी है।

3. कागजात व पंजीकरण:

- जीएसटी पंजीकरण
- उद्योग आधार/उद्यम पंजीकरण
- फैक्ट्री लाइसेंस (यदि श्रमिक संख्या सीमा से अधिक हो)
- प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से अनुमति
- बिजली और स्थानीय निकाय की स्वीकृति
- बैंक खाता और पैन कार्ड।

4. सरकार से मिलने वाले लाभ: सरकार एमएसएमई योजना के तहत कई सुविधाएं देती है, जैसे कम ब्याज पर ऋण, सब्सिडी, मशीनरी पर सहायता, तकनीकी प्रशिक्षण और मार्केटिंग सपोर्ट। स्टैंड-अप इंडिया, पीएमईजीपी और मुद्रा योजना के तहत वित्तीय सहायता मिल सकती है।

5. कच्चा माल कहां से आएगा: लोहे और स्टील के छोटे पुर्जों के लिए कच्चा माल मुख्य रूप से स्टील रोल, रॉड, शीट और स्क्रैप के रूप में मिलता है। यह सामग्री स्टील प्लांट, अधिकृत डीलर, थोक व्यापारी या स्थानीय स्क्रैप बाजार से प्राप्त की जा सकती है।

(ये विशेषज्ञों के विचार हैं। अच्छी तरह सोच-समझकर और विशेषज्ञों की राय लेकर ही निवेश व वित्त से जुड़े फैसले लें।)

पाठक भी हमसे जुड़ सकते हैं *मनी-मंत्र पेज पर दी गई जानकारी आपको कैसी लगी। सुझाव देने के लिए* ***हमें वॉट्सऐप 8955003879 करें।***

जीवन में आगे बढ़ने के लिए उतार-चढ़ाव बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि ECG में एक सीधी रेखा का मतलब है कि हम जीवित नहीं हैं। ***-रतन टाटा,*** *टाटा समूह*

नए डिजिटल पेमेंट नियम: एसएमएस-ओटीपी से आगे 2-फैक्टर प्रमाणीकरण करें लागू

टेक अपडेट

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने डिजिटल भुगतान लेन-देन की सुरक्षा को और अधिक मजबूत करने के लिए नए Authentication Mechanisms for Digital Payment Transactions Directions जारी किए हैं। ये नियम 1 अप्रैल, 2026 से भारत में लागू होंगे, ताकि डिजिटल लेन-देन को साइबर धोखाधड़ी और अनधिकृत उपयोग से और सुरक्षित बनाया जा सके।

क्या बदल रहा है?

अब डिजिटल पेमेंट में एक मात्र SMS-आधारित One-Time Password (OTP) तक सीमित प्रमाणीकरण नहीं रहेगा। RBI ने स्पष्ट किया है कि सभी डिजिटल लेन-देन में दो-कारक प्रमाणीकरण (Two-Factor Authentication / 2FA) अनिवार्य होगा, जिसमें कम से कम दो अलग-अलग फैक्टर्स उपयोग किए जाएंगे।

ये दो फैक्टर्स निम्न श्रेणियों में से हो सकते हैं

- **कुछ** ऐसा जो यूजर के पास हो-जैसे डिवाइस, हार्डवेयर/ सॉफ्टवेयर टोकन
- **कुछ** ऐसा जो यूजर जानता हो- पासवर्ड, पासफ्रेज, PIN
- **कुछ** ऐसा जो यूजर है- बायोमेट्रिक पहचान जैसे-फिंगरप्रिंट या फेस पहचान।

क्या होंगे लाभ?:

- डिजिटल फ्रॉड और साइबर खतरों से सुरक्षा
- आधुनिक प्रमाणीकरण तरीकों को अपनाना
- सुविधाजनक व भरोसेमंद डिजिटल भुगतान अनुभव

डायनेमिक फैक्टर का महत्त्व

RBI ने यह भी कहा है कि इन दो में से कम से कम एक फैक्टर डायनेमिक होना चाहिए। यानी हर लेन-देन के लिए अलग और विशिष्ट प्रमाणीकरण का तरीका होना चाहिए। इससे धोखाधड़ी के जोखिम को और कम किया जा सकेगा।

SMS–OTP अभी भी मान्य

हालांकि SMS-OTP अब भी एक प्रमाणीकरण फैक्टर के तौर पर प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन यह अकेले पर्याप्त नहीं होगा। बैंक, भुगतान ऐप्स और अन्य भुगतान सेवा प्रदाता अब अन्य रूपों जैसे बायोमेट्रिक्स, पासवर्ड/पिन, डिवाइस-आधारित टोकन आदि का उपयोग कर 2FA सुनिश्चित करेंगे।

टेक अलर्ट

जल्दबाजी में फोन खरीदा तो होगा पछतावा

अगर आप भी नया स्मार्टफोन खरीदने की सोच रहे हैं और चाहते हैं कि कम पैसों में एक शानदार डील मिल जाए, तो सिर्फ मॉडल नहीं बल्कि उसे खरीदने का सही वक्त जानना भी जरूरी है। जी हां, अक्सर लोग जल्दबाजी में मोबाइल खरीद लेते हैं और बाद में फोन और भी ज्यादा सस्ता मिलता है तो उन्हें बहुत बुरा लगता है, क्योंकि कुछ ही दिनों बाद वही फोन बंपर डिस्काउंट पर मिल रहा होता है।

त्योहारी सीजन में करें खरीदारी

भारत में स्मार्टफोन खरीदने का सबसे अच्छा टाइम त्योहारों के आसपास होता है। जहां इन मौको पर सबसे तगड़ी डील्स देखने को मिलती हैं। इसके बाद न्यू ईयर सेल के दौरान कंपनियां और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म भारी डिस्काउंट ऑफर्स देते हैं। इस दौरान बैंक ऑफर्स, एक्सचेंज बोनस और नो-कॉस्ट EMI जैसी सुविधाएं फोन को खरीदना और भी आसान बना देती हैं।

नया मॉडल आने पर खरीदें पुराना वाला

जब भी किसी ब्रांड का नया स्मार्टफोन मार्केट में एंट्री लेता है, तो उसके पुराने मॉडल की कीमतों में तुरंत गिरावट होती है। अगर आपको लेटेस्ट फीचर्स की जरूरत नहीं है, तो नया फोन लॉन्च होने के बाद पुराना मॉडल खरीदना ज्यादा बेहतर है।

सेल का रखें खास ध्यान: अमेजन-फ्लिपकार्ट जैसे कई बड़े ई कॉमर्स प्लेटफॉर्म हर महीने कोई न कोई सेल अपने ग्राहकों के लिए लेकर आते हैं। अगर तुरंत फोन की जरूरत नहीं तो सेल का इंतजार करना बेहतर होगा। कई बार सेल के दौरान कुछ स्मार्टफोन्स पर तो 5 से 10 हजार रुपए तक का डिस्काउंट मिल जाता है, यानी इस पैसों से आप चाहें तो फोन की अन्य एक्सेसरीज भी ले सकते हैं।

टेक टिप्स

अनचाहे ऐड को खुद करें बंद

गूगल आपकी सर्च और ऑनलाइन गतिविधियों के आधार पर विज्ञापन दिखाता है। इन्हें हटाने या कम करने के लिए Google Ad Settings में जाएं। यहां जाकर Ad Personalization को ऑफ या सीमित किया जा सकता है।

- **सर्च हिस्ट्री मैनेज करें:** आपकी सर्च हिस्ट्री के आधार पर भी ऐड दिखते हैं। इसके लिए Google Account में जाकर Data & Privacy सेक्शन में सर्च व यूट्यूब हिस्ट्री को डिलीट या पॉज कर दें।
- **ब्राउजर से करें ब्लॉक:** Chrome, Firefox जैसे ब्राउजर में Pop-up और Redirect Ads को ब्लॉक करने का विकल्प होता है। इसके लिए Settings में जाकर Privacy & Security में Pop-ups को बंद करें।
- **ऐड ब्लॉकर का इस्तेमाल:** AdBlock या Block Origin जैसे भरोसेमंद ऐड ब्लॉकर एक्सटेंशन इंस्टॉल करके अनचाहे विज्ञापनों से राहत पाई जा सकती है।
- **संदिग्ध ऐप हटाएं:** मोबाइल में ऐसे ऐप्स जो जरूरत से ज्यादा ऐड दिखाते हैं, उन्हें अनइंस्टॉल करें। भरोसेमंद ऐप ही डाउनलोड करें।

ऑटो केयर

पेट्रोल-डीजल भरवाते समय रखें ये सावधानियां

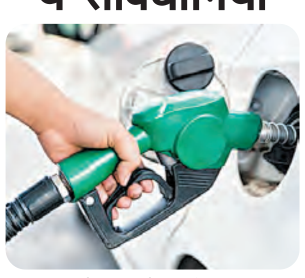

पत्रिका फीचर डेस्क
patrika.com

पेट्रोल पंप पर हमेशा टैंक फुल करवाने की कोशिश करें। इससे आपको पता रहता है कि आपकी गाड़ी के टैंक में कितनी क्षमता है और ज्यादा तेल दिखाए जाने पर तुरंत शक किया जा सकता है।

- **फ्यूल गेज पर रखें नजर:** आपकी गाड़ी में कितने लीटर तेल भरने पर गेज कितना ऊपर जाता है, इसका अंदाजा होना जरूरी है। अगर गेज अपेक्षा से कम बढ़े, तो तुरंत सवाल करें।
- **मीटर जीरो से शुरू हो:** तेल भरवाने से पहले यह जरूर देखें कि मीटर शून्य (0) पर है। कई बार कर्मचारी पहले से चल रहा मीटर दिखाकर धोखाधड़ी कर देते हैं।
- **लीटर में भरवाएं पेट्रोल:** रुपयों में पेट्रोल भरवाने से बचें। हमेशा लीटर में तेल भरवाएं, ताकि मात्रा को लेकर कोई भ्रम न रहे।
- **शिकायत करने से न डरें:** अगर धोखाधड़ी का शक हो तो तुरंत 1800-233-3555 पर कॉल करें या संबंधित कंपनी की वेबसाइट पर शिकायत दर्ज करें। सतर्कता ही बचाव है।

टेक नॉलेज | डेटा, एआइ और सुरक्षा का संगम

कैसे स्मार्ट सर्विलांस बदल रहा है आपके शहरों की निगरानी

पत्रिका फीचर डेस्क
patrika.com

अमर वर्मा
टेक एक्सपर्ट
Patrika.com

आधुनिक समय में शहर केवल सड़क, इमारत और परिवहन जैसी भौतिक संरचनाओं तक सीमित नहीं रहे हैं। आज के शहर साइबर-फिजिकल सिस्टम्स के रूप में विकसित हो रहे हैं, जहां भौतिक संसाधन, डिजिटल प्लेटफॉर्म और मानवीय गतिविधियां आपस में एकीकृत होकर कार्य करती हैं। इसी विकास प्रक्रिया में स्मार्ट सिटी व स्मार्ट सर्विलांस जैसी अवधारणाएं उभरकर सामने आई हैं, जिनका उद्देश्य शहरी जीवन को अधिक सुरक्षित, कुशल और डेटा-आधारित बनाना है।

स्मार्ट सिटी: तकनीकी रूपरेखा और उद्देश्य

तकनीकी दृष्टि से स्मार्ट सिटी एक समग्र शहरी प्रणाली है, जिसमें IoT-सक्षम सेंसर नेटवर्क, हाई-स्पीड कम्युनिकेशन इंफ्रास्ट्रक्चर (5G/ऑप्टिकल फाइबर), क्लाउड और एज कंप्यूटिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) तथा बिग डेटा एनालिटिक्स का समन्वित उपयोग किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य शहरी संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन, सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार और नागरिकों की जीवन-गुणवत्ता को मापनीय रूप से बेहतर बनाना है।

स्मार्ट सिटी आर्किटेक्चर और एकीकृत प्रणालियां

स्मार्ट सिटी आर्किटेक्चर में ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम, स्मार्ट ग्रिड, इंटेलिजेंट वॉटर मैनेजमेंट, ई-गवर्नेंस प्लेटफॉर्म और सार्वजनिक सुरक्षा प्रणालियां एक साझा डेटा प्लेटफॉर्म के माध्यम से जुड़ी होती हैं। यह एकीकरण रियल-टाइम निर्णय लेने और सेवाओं को तेजी से लागू करने में सहायक होता है।

स्मार्ट सर्विलांस: पारंपरिक निगरानी से आगे

स्मार्ट सर्विलांस, स्मार्ट सिटी का एक महत्त्वपूर्ण उप-तंत्र है। यह पारंपरिक CCTV निगरानी से आगे बढ़कर AI-आधारित वीडियो एनालिटिक्स को अपनाता है। इसमें कन्वोल्यूशनल न्यूरल नेटवर्क (CNN) द्वारा फेस रिकग्निशन, डीप लर्निंग आधारित बिहेवियर एनालिसिस व ऑटोमेटेड नंबर प्लेट रिकग्निशन (ANPR) जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

रियल-टाइम एनालिसिस और प्रीडिक्टिव अलर्ट

यह रियल-टाइम वीडियो स्ट्रीम से पैटर्न पहचान कर असामान्य गतिविधियों की पहचान और पूर्व चेतावनी देने में सक्षम होते हैं। उदाहरण के तौर पर, इंटेलिजेंट ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम (ITMS) कैमरा-आधारित डेटा से ट्रैफिक सिग्नल को स्वत: नियंत्रित करता है, जबकि सार्वजनिक स्थानों पर लगे कैमरे संदिग्ध गतिविधियों पर तुरंत अलर्ट भेजते हैं।

ICCC: स्मार्ट सिटी का नर्व सेंटर

इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर (ICCC) को स्मार्ट सिटी का नर्व सेंटर माना जाता है। यहां CCTV, सेंसर और विभिन्न डेटाबेस से प्राप्त सूचनाएं एकीकृत होती हैं। यह आपात स्थिति में तुरंत एंबुलेंस, पुलिस आदि को सक्रिय करती है।

डेटा गोपनीयता और साइबर सुरक्षा की चुनौतियां

डेटा संग्रहण के साथ डेटा प्राइवेसी, एथिकल AI व साइबर सुरक्षा बड़ी चुनौतियां हैं। इसके लिए एन्क्रिप्शन-बाय-डिजाइन, रोल-बेस्ड एक्सेस कंट्रोल (RBAC), डेटा एनोनिमाइजेशन और स्पष्ट डेटा रिटेंशन पॉलिसी आवश्यक है।

टेक टॉक | कई काम को बनाएं क्रिएटिव

क्यूआर कोड के इस्तेमाल से आसान बनाएं काम

आशीष खंडेलवाल
तकनीकी एक्सपर्ट एवं ब्लॉगर
Patrika.com

पत्रिका फीचर डेस्क
patrika.com

क्यूआर कोड आज जीवन का अहम हिस्सा हैं। मेन्यू से यूपीआइ तक सीमित नहीं, ये जानकारी, यादें, सुरक्षा और सुविधा जोड़कर रोजमर्रा की जिंदगी को स्मार्ट, रोचक और अधिक आसान बना सकते हैं।

हस्तलिखित नोट्स

डायरी के खास आइडिया खोने से बचाने के लिए पेज पर क्यूआर कोड लगाएं, स्कैन करते ही नोट सीधे डिजिटल फाइल या क्लाउड डॉक्यूमेंट से जुड़ जाएगा।

मेमोरी वॉल्ट

अब यादें सिर्फ तस्वीरों तक सीमित नहीं। फोटो या गिफ्ट पर क्यूआर कोड लगाएं, स्कैन करते ही ऑडियो, वीडियो या कहानी खुले, जो परिवार का निजी इतिहास सहेजे।

इमरजेंसी में मदद

वॉलेट या फोन वॉलपेपर पर क्यूआर कोड रखें, जिसमें मेडिकल हिस्ट्री, एलर्जी, ब्लड ग्रुप और इमरजेंसी नंबर हों, ताकि हादसे में एक स्कैन से तुरंत जरूरी जानकारी मिल सके।

पौधों की देखभाल

हर गमले पर क्यूआर कोड लगाएं, स्कैन करने पर पानी, धूप, खाद और रीपॉटिंग की जानकारी मिले। इससे देखभाल आसान होगी और पौधों से जुड़ी कहानी भी बन जाएगी।

तुरंत टेक-सपोर्ट

बुजुर्गों की सुविधा के लिए राउटर या टीवी पास क्यूआर कोड लगाएं, स्कैन पर आसान भाषा में वाई-फाई, पासवर्ड और डिवाइस इस्तेमाल की स्टेप-बाय-स्टेप गाइड खुले।

गिफ्ट के साथ इमोशन

गिफ्ट के साथ क्यूआर कोड लगाएं, स्कैन करने पर पर्सनल मैसेज, यादों की तस्वीरें या गिफ्ट चुनने की वजह खुले, क्योंकि लोग गिफ्ट से ज्यादा उसके पीछे की भावना याद रखते हैं।

मूड-मैचिंग प्लेलिस्ट

घर के हर कमरे के मूड के अनुसार क्यूआर कोड लगाएं। स्कैन करते ही डेस्क, सोफा या किचन के लिए तय प्लेलिस्ट खुल जाए।

रसरंग

अब आप रसरंग के सभी आर्टिकल DB एप पर हर रविवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें DB एप

दोनों पक्ष संयम बरतें। एक और युद्ध दुनिया की अर्थव्यवस्था को बर्बाद कर देगा।
- एंटोनियो गुटेरेस, संयुक्त राष्ट्र के महासचिव

ईरान का मौजूदा संकट आज वैश्विक कूटनीति की सबसे बड़ी 'अग्नि परीक्षा' बन चुका है। यह केवल एक देश की आंतरिक उथल-पुथल या क्षेत्रीय तनाव का मामला नहीं है, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के नाजुक संतुलन को भी चुनौती दे रहा है।

ईरान संकट: दुनिया के लिए अग्निपरीक्षा!

कवर स्टोरी

हर्ष वी. पंत
अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ
किंग्स कॉलेज ऑफ लंदन

ईरान एक बार फिर वैश्विक भू-राजनीति के केंद्र में है। आंतरिक असंतोष, लंबे समय से चले आ रहे आर्थिक प्रतिबंध और अमेरिका की कड़ी चेतावनियों ने वहां की स्थिति को बेहद संवेदनशील बना दिया है। इस पूरे घटनाक्रम पर रूस और चीन की भी पैनी नजर है, जो ईरान में यथास्थिति बनाए रखने के पक्षधर हैं। मिडिल ईस्ट पहले से ही सत्ता संघर्षों से जूझ रहा है। ऐसे में ईरान में किसी भी तरह की बड़ी राजनीतिक उथल-पुथल सिर्फ एक देश तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि उसका असर पूरे क्षेत्र और वैश्विक शक्ति संतुलन पर पड़ेगा। यही वजह है कि ईरान का मौजूदा संकट पूरे दुनिया के लिए एक बड़ी अग्निपरीक्षा बन गया है। ईरान की अस्थिरता न केवल क्षेत्रीय संकट है, बल्कि एक नए कोल्ड वॉर की आहट भी हो सकती है।

पूरा मिडिल ईस्ट अस्थिरता की ओर?

ईरान लंबे समय से आर्थिक प्रतिबंधों और आंतरिक दबावों से जूझ रहा है। इन प्रतिबंधों ने आम जनता में गहरा असंतोष पैदा किया है, जो अब चरम पर पहुंच चुका है। इस आंतरिक असंतोष के अलावा अमेरिका का दबाव भी मौजूद है, जिससे स्थिति अत्यंत चुनौतीपूर्ण बनती जा रही है। मिडिल ईस्ट वैसे भी पहले से ही अस्थिरता और सत्ता संघर्षों से गुजर रहा है। इस क्षेत्र में शिया-सुन्नी विवाद और इजराइल-ईरान के बीच की वैचारिक व सामरिक दुश्मनी से तनाव पसरा हुआ है। यदि यह तनाव और बढ़ता है तो पूरा मिडिल ईस्ट ही अस्थिरता की चपेट में आ सकता है।

तीनों शक्ति केंद्रों की नजर ईरान पर?

इस समय दुनिया में शक्ति के तीन केंद्र हैं - अमेरिका, रूस और चीन। और तीनों ही ईरान को लेकर सक्रिय हैं। एक तरफ अमेरिका है, जो लंबे समय से ईरान में सत्ता परिवर्तन की संभावना तलाशता रहा है। यदि अमेरिका के समर्थन से वहां सत्ता परिवर्तन होता है, तो रूस और चीन की ओर से तीखी प्रतिक्रिया आना तय है। रूस तो साफ कह चुका है कि वह ईरान में किसी भी तरह के अमेरिकी हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करेगा। चीन का भी ईरान में गहरा रणनीतिक और आर्थिक दखल है। वेनेजुएला का उदाहरण सामने है, जहां चीन ने बड़े पैमाने पर निवेश किया था, लेकिन मादुरो के हटते ही उसका निवेश जोखिम में आ गया। इसी अनुभव के चलते चीन ईरान को लेकर अत्यंत सतर्क है।

क्या अमेरिका करेगा सीधी कार्रवाई?

अमेरिका द्वारा वेनेजुएला में अपनाए गए रुख को देखते हुए ईरान में असंतोष का नेतृत्व करने वाले समूहों को यह उम्मीद है कि उन्हें भी अंतरराष्ट्रीय समर्थन मिल सकता है। डोनाल्ड ट्रम्प की ओर से ऐसे संकेत भी दिए गए कि यदि प्रदर्शनकारियों को मृत्युदंड दिया गया तो अमेरिका सैन्य कार्रवाई से पीछे नहीं हटेगा। हालांकि अब ईरान ने कहा है कि वह प्रदर्शनों से संबंधित किसी भी शख्स को मृत्युदंड देने की तैयारी में नहीं है। ऐसे में दोनों पक्षों की ओर से डि-एस्केलेशन यानी टकराव को टालने की संभावना कुछ हद तक बढ़ती दिख रही है। हालांकि ट्रम्प हमेशा से अनप्रेडिक्टेबल रहे हैं। इसलिए कल क्या होगा, यह आज नहीं कहा जा सकता।

क्या दुनिया कोल्ड वॉर की तरफ?

रूस और चीन, दोनों ही ईरान में यथास्थिति बनाए रखने के पक्षधर हैं, क्योंकि मौजूदा सत्ता-संरचना उन्हें रणनीतिक रूप से सूट करती है। अगर अमेरिका सैन्य कार्रवाई करता है तो हालात और बिगड़ने की आशंका बढ़ जाएगी। ऐसे में दुनिया कोल्ड वॉर जैसे हालात की ओर बढ़ सकती है, जहां एक तरफ अमेरिका होगा और दूसरी ओर रूस तथा चीन। इसके बाद रूस और चीन के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हस्तक्षेप की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। इसलिए ईरान की अस्थिरता केवल एक देश की समस्या नहीं है, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन के लिए भी यह एक गंभीर चुनौती बन सकती है।

सत्ता परिवर्तन से क्या आएगी शांति?

सत्ता परिवर्तन अपेक्षाकृत आसान होता है, लेकिन उसके बाद स्थिति को नियंत्रित करना कहीं अधिक कठिन। इराक, लीबिया और सीरिया जैसे उदाहरण बताते हैं कि जब पावर वैक्यूम पैदा होता है, तो अलग-अलग गुट, मिलिशिया और सशस्त्र समूह सत्ता पर कब्जा जमाने की कोशिश करने लगते हैं। ईरान में वर्तमान में हो रहे प्रदर्शनों का कोई संगठित नेतृत्व नहीं है। ट्रम्प पहले ही यह स्पष्ट कर चुके हैं कि अमेरिका ईरान में अपनी जमीनी सेना नहीं भेजेगा। इसी वजह से ईरान में संभावित सत्ता परिवर्तन शांति के बजाय लंबे समय तक चलने वाले संकट का कारण बन सकता है।

ईरान में निर्माणाधीन चाबहार परियोजना भारत के लिए काफी अहम है। ईरान की अस्थिरता से यह प्रभावित हो सकती है।

भारत : क्यों अस्थिरता भारत के हित में नहीं?

मिडिल ईस्ट में अस्थिरता भारत के हित में नहीं है। भारत ने हमेशा अरब देशों, ईरान और इजराइल के बीच संतुलन बनाकर अपनी विदेश नीति को आगे बढ़ाया है। हालांकि यह भी उतना ही बड़ा सच है कि समय के साथ ईरान के संग भारत के रिश्तों में चुनौतियां बढ़ी हैं। ईरान के साथ भारत का व्यापार घटा है और उससे तेल आयात भी कम हुआ है। भले ही हाल के वर्षों में भारत के रणनीतिक और आर्थिक दांव इजराइल और अरब देशों पर अधिक लगे हों, लेकिन भारत मोटे तौर पर यही चाहेगा कि इस क्षेत्र में अस्थिरता न बढ़े। किसी भी तरह की उथल-पुथल से भारत के समग्र आर्थिक, ऊर्जा और रणनीतिक हितों के सामने गंभीर समस्याएं खड़ी हो सकती हैं।

चाबहार : दूसरे चरण का काम बाकी

चाबहार परियोजना को लेकर भारत ने अमेरिका के समक्ष बार-बार यह स्पष्ट किया है कि यह उसके लिए रणनीतिक रूप से अहम है। अमेरिका ने इस बात को समझा भी है और इसी कारण ईरान पर लगाए गए प्रतिबंधों के बावजूद भारत को इस मामले में लगातार रियायतें मिलती रही हैं। इसके पहले चरण का काम पूरा हो चुका है, लेकिन दूसरे चरण का भविष्य पूरी तरह से क्षेत्रीय स्थिरता पर निर्भर करता है। यदि ईरान पर सैन्य हमला होता है या वहां आंतरिक अस्थिरता बढ़ती है, तो ईरान की प्राथमिकताएं बदल जाएंगी और चाबहार जैसी दीर्घकालिक परियोजनाएं अधर में लटक सकती हैं।

भारत के लिए क्यों अहम ये प्रोजेक्ट?

चाबहार प्रोजेक्ट भारत के लिए काफी महत्वपूर्ण है, जिस पर करोड़ों डॉलर खर्च हो चुके हैं। इसके माध्यम से भारत, पाकिस्तान की भूमि का उपयोग किए बिना सीधे अफगानिस्तान और मध्य एशियाई देशों तक पहुंच सकता है। यह बंदरगाह 'इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर' का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो भारत को रूस और यूरोप से जोड़ने का एक छोटा और सस्ता रास्ता प्रदान करता है। इसके अलावा यह पाकिस्तान के ग्वादर पोर्ट (जिसे चीन विकसित कर रहा है) से मात्र 70-100 किमी की दूरी पर स्थित है, जिससे भारत क्षेत्र में अपनी रणनीतिक उपस्थिति भी बनाए रख सकता है।

रसरंग नॉलेज: सायरस द ग्रेट से इस्लामिक धर्मतंत्र तक

ईरान, जिसे ऐतिहासिक रूप से फारस या पर्शिया कहा जाता है, दुनिया की सबसे पुरानी और प्रभावशाली सभ्यताओं में से एक है। इसके इतिहास को समझने के लिए इसे तीन प्रमुख कालखंडों में विभाजित किया जा सकता है :

1. प्राचीन इतिहास (600 ईसा पूर्व – 651 ईस्वी)

सायरस द ग्रेट का टोम्ब

प्राचीन ईरान के सबसे महत्वपूर्ण हखामनी साम्राज्य की स्थापना 550 ईसा पूर्व में सायरस द ग्रेट ने की थी। यह दुनिया का ऐसा पहला विशाल साम्राज्य था, जो भारत से लेकर यूनान और मिस्र तक फैला था। लेकिन 330 ईसा पूर्व में सिकंदर ने हखामनी साम्राज्य को नष्ट कर दिया। इसके बाद वहां सदियों तक स्थानीय पार्थियन और सासानियन साम्राज्यों का शासन रहा।

2. मध्यकालीन व आधुनिक इतिहास (651 ईस्वी से)

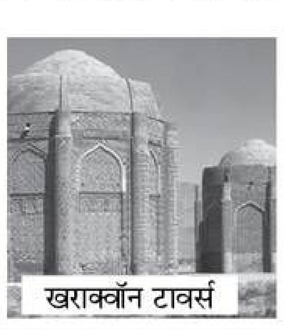

खराक्वॉन टावर्स

651 ईस्वी में यहां अरबों ने आक्रमण किया। इससे सासानियन साम्राज्य का पतन हुआ और ईरान में धीरे-धीरे इस्लाम फैला। सफवी राजवंश (1501) ने शिया इस्लाम को ईरान का आधिकारिक धर्म बनाया। फिर पहलवी वंश (1925-1979) के रजा शाह पहलवी ने आधुनिक ईरान की नींव रखी। उनके बेटे मोहम्मद रजा शाह ने व्हाइट रिजोल्यूशन के जरिए देश का आधुनिकीकरण किया।

3. अयातुल्ला खोमैने की इस्लामिक क्रांति (1979)

इस्लामिक क्रांति

पश्चिमीकरण से धार्मिक वर्ग तथा भ्रष्टाचार से आम जनता नाराज थी। निर्वासन में रह रहे धार्मिक नेता अयातुल्ला रुहोल्लाह खोमैनी क्रांति का चेहरा बने। उन्होंने शाह के खिलाफ लोगों को एकजुट किया। आखिरकार भारी विरोध प्रदर्शनों के बाद फरवरी 1979 में शाह देश छोड़कर भाग गए। एक जनमत संग्रह के जरिए 'इस्लामिक गणराज्य' की घोषणा की गई।

हर हफ्ते खेलिए भास्कर फैमिली क्विज

हर रविवार **रसरंग** में खेलिए भास्कर फैमिली क्विज। इसमें भाग लेने के लिए यहां दिए गए **क्यूआर कोड** को स्कैन करें। वहां आपको मिलेंगे पांच सवाल।

या आप **8770592563** नंबर पर QUIZ टाइप करके वॉट्सअप भी भेज सकते हैं। इस पर मिले लिंक को ओपन करके दीजिए सवालों के जवाब। पांचों सवालों के सही जवाब देकर आप बन सकते हैं लकी विनर और जीत सकते हैं 2100 रु. तक के उपहार।

भास्कर फैमिली क्विज-165 के सवाल

Q-1. महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास की माता का नाम इनमें से क्या था?
(A) मांडवी (B) सत्यवती
(C) अंबालिका (D) गंगा

Q-2. विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना इनमें से किसने की थी?
(A) राजा राममोहन राय
(B) बंकिमचन्द्र चटर्जी
(C) रवींद्रनाथ टैगोर
(D) मुल्कराज आनंद

Q-3. प्रसिद्ध उपन्यास 'मय्यादास की माड़ी' के रचनाकार इनमें से कौन हैं?
(A) चंद्रधर शर्मा (B) भीष्म साहनी
(C) जयशंकर प्रसाद (D) महादेवी वर्मा

Q-4. काराकास इनमें से किस देश की राजधानी है?
(A) मिस्र (B) वेनेजुएला
(C) नार्वे (D) भूटान

Q-5. पाइथागोरस का संबंध इनमें से किस क्षेत्र से है?
(A) गणित (B) राजनीति
(C) साहित्य (D) अर्थशास्त्र

भास्कर फैमिली क्विज-164 के जवाब

प्रश्न 1 - सही जवाब : (D) सरस्वती, प्रश्न 2: (C) नगालैंड, प्रश्न 3: (D) कोपरनिकस, प्रश्न 4: (A) हीराकुंड बांध, 5: (A) हॉटस्पॉट।

... और लकी विनर्स

दुली चंद (XXXXX03672),
कमल राय श्रीवास्तव (XXXXX87404),
लोकेश (XXXXX76675),
नीतीश कुमार (XXXXX30653),
राकेश धाकड़ (XXXXX06536),
रमेश कुमार (XXXXX31333),
रंजना शर्मा (XXXXX57124),
संदीप अग्रवाल (XXXXX50828),
शोभा साईवन्या (XXXXX89180),
सिया बेनीबाल (XXXXX80060)।

(लकी विनर्स से दैनिक भास्कर की टीम संपर्क करेगी)

उत्तर से दक्षिण तक ऐसे फैलीं पुराणों की कथाएं

मायथोलॉजी

देवदत्त पट्टनायक

तटवर्ती आंध्र प्रदेश में ऐसे पांच मंदिर हैं, जिनका संबंध तारकासुर से है। तारकासुर का वध कार्तिकेय के हाथों हुआ था। चूंकि वह शिव भक्त भी था, इसलिए उसके सिर के भाग जहां-जहां गिरे वहां-वहां शिव मंदिर स्थापित किए गए। इन मंदिरों को पंचराम क्षेत्र कहा जाता है।

तमिलनाडु में पलनी के पहाड़ स्थित हैं। जब कार्तिकेय गुस्से में कैलाश पर्वत छोड़कर दक्षिण भारत गए, तब पार्वती नहीं चाहती थीं कि उन्हें अपने घर की याद आए। इसलिए जब अगस्त्य ऋषि दक्षिण भारत के लिए निकले, तब पार्वती के कहने पर वे अपने साथ हिमालय के कुछ पहाड़ भी ले गए। हिडिंबा नामक असुर उन पहाड़ों को अपने कंधों पर टंगे कांवड़ पर रखकर साथ ले गया। रास्ते में पहाड़ इतने भारी हो गए कि हिडिंबा को उन्हें धरती पर रखना पड़ा। उसने पाया कि पहाड़ उस पर बैठे एक बालक के कारण भारी हो गया था। वह जान गया कि वह बालक स्वयं कार्तिकेय थे। जिस स्थान पर पहाड़ नीचे रखे गए, वहां आज पलनी का प्रसिद्ध तीर्थस्थल है।

कहते हैं कि एक बार रावण कैलाश पर्वत को उठाकर लंका ले जाना चाहता था। लेकिन इससे पहले कि वह उसे उठा पाता, शिव ने उसे कैलाश पर्वत के नीचे दबा दिया। यह घटना मंदिरों में रावणानुग्रह मूर्ति के माध्यम से दिखाई जाती है। एक बार जब विभीषण विष्णु की प्रतिमा को दक्षिण ले जा रहे थे, तब उन्हें भी वह प्रतिमा कावेरी नदी के पास रखने के लिए विवश किया गया। इस क्षेत्र में विष्णु को रंगनाथ के रूप में पूजा जाता है।

दक्खन के पठार के पत्थरों के साथ भी एक रोचक कथा जुड़ी है। हनुमान के नेतृत्व में वानर सेना ने रामसेतु का निर्माण किया था। कहा जाता है कि सेतु के निर्माण के बाद वानरों ने अपने हाथों में लिए पत्थर वहीं रख दिए, जिन्हें आज हम दक्खन के पठार में फैले हुए पाते हैं। भारत का पश्चिमी समुद्रतट परशुराम से जुड़ा हुआ है।

उत्तर-पूर्व भारत में वराह और भू-देवी के पुत्र नरक

बद्रीनाथ धाम स्थित बद्रीनाथ मंदिर। यहां विष्णु को बद्री नारायण के रूप में पूजा जाता है।

भौम का राज्य हुआ करता था, जिसे कृष्ण ने पराजित किया था। कृष्ण ने बाणासुर को भी पराजित किया था, जो असम के सोनितपुर में राज करता था। इस क्षेत्र की दंतकथाओं के अनुसार कृष्ण की पत्नी रुक्मिणी और उनकी बहू ऊषा ब्रह्मपुत्र क्षेत्र की निवासी थीं।

राम की दक्षिणी यात्रा के बारे में सभी जानते हैं, लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि दक्षिण भारत की देवियां, जैसे मदुरै की मीनाक्षी देवी, भी शिव से विवाह करने उत्तर भारत आई थीं। उन्हें और शिव के सुंदरेश्वर रूप को मदुरै के मीनाक्षी-सुंदरेश्वर मंदिर में पूजा जाता है। तमिलनाडु के ही चिदंबरम में शिव को नृत्य के देवता, अर्थात नटराज के रूप में पूजा जाता है।

भारत में कुछ स्थान ऐसे भी हैं, जहां शिव स्वयं अग्नि के अंतहीन स्तंभ के रूप में प्रकट हुए थे। इन्हें ज्योतिर्लिंग कहा जाता है और वहां शिव की पूजा की जाती है। ये ज्योतिर्लिंग केवल हिमालय क्षेत्र में ही नहीं हैं, बल्कि दक्खन के क्षेत्रों में भी पाए जाते हैं।

जहां उत्तर और दक्षिण भारत शिव के माध्यम से जुड़े, वहीं विष्णु के कारण पूर्व और पश्चिम भारत आपस में जुड़े। विष्णु को उत्तराखंड के बद्रीनाथ में, ओडिशा के पुरी में, तमिलनाडु के रामेश्वरम में और गुजरात के द्वारका में पूजा जाता है।

• devdutthindi@gmail.com

इस कॉलम को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

धूम के बहाने अपनी संवेदनाओं की परख!

हिन्दवी से खास

आदित्य कुमार,
नई पीढ़ी के लेखक

बीते कुछ दिनों से इंस्टाग्राम, फेसबुक, एक्स तथा अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक वीडियो धड़ल्ले से वायरल हो रहा है, जिसमें एक लड़का यह कहता है - 'किरीस का गाना सुनेगा?' इसके बाद वह एक गीत गाता है - 'दिल ना लिया, दिल ना दिया, तो बोलो ना बोलो क्या किया?'

इस वीडियो के वायरल होने की कोई खास वजह नजर नहीं आती। ना कोई लय, ना कोई रिदम, फिर भी यह वीडियो इतनी रफ्तार से फैल रहा है कि इसने कोरोना संक्रमण के फैलाव को भी मात दे दी है। पिछले कुछ दिनों में इसे लगभग आठ से दस करोड़ लोगों ने देखा है। वीडियो में दिखने वाला लड़का अपना नाम 'धूम' बताता है। धूम छोटी कद-काठी का है और फटे-पुराने कपड़ों से दिसंबर की ठंड का सामना कर रहा है। बोलते समय उसका शरीर ऐसे डगमगा रहा होता है, जिसे देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह या तो नशे में है या किसी अंदरूनी बीमारी से ग्रस्त है। यहां साफ पता चल रहा है कि लोग ना तो उसके गाने को पसंद कर रहे हैं और ना ही धूम को। लोग पसंद कर रहे हैं धूम की परिस्थिति को, उसकी बदहाली को, उसकी गरीबी को और उसकी अभावग्रस्त जिंदगी को। भिखारी जैसा दिखने वाला लड़का अपने आप को धूम नाम देता है, जो जॉन अब्राहम, ऋतिक रोशन, आमिर खान अभिनीत फिल्मों (धूम श्रृंखला) से प्रेरित लगता है। वह 'कृष' का गाना सुनाता है। यह प्रसंग मुख्यधारा के तथाकथित समृद्ध लोगों के बीच कौतूहल का विषय बन जाता है, लोगों के लिए यह मजाक-मस्ती का साधन बन जाता है। अपने इस सुख को वे अपने मित्रों तक साझा करते हैं। शायद यही वजह है कि हर महीने-दो महीने में धूम जैसा कोई गरीब, अभावग्रस्त लड़का या लड़की किसी के मनोरंजन के साधन के रूप में सोशल मीडिया पर सुर्खियों में रहता/रहती है।

कई महान दार्शनिक विचारकों ने कहा है कि मनुष्य दूसरों के दुख से दुखी होता है। लेकिन यहां तो आलम यह है कि धूम जैसे कचरा उठाने वाले के दुख को देखकर सुख लूटने वालों ने उनके इस तर्क की धज्जियां उड़ा दी है। विलासियों की भीड़ में हमारी संवेदना खो हो चुकी है।

कृष का गाना सुनाने वाले हजारों-लाखों धूम हमारे उस भारत में हैं, जिसकी ऐतिहासिक विरासत का गुणगान करते वक्त हमारा सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है। इसी देश में एक तरफ गांधी, आम्बेडकर जन्मे जिन्होंने संवेदनशीलता को मानव हृदय का विशिष्ट अंग बताया और दूसरी तरफ धूम की बदहाली को मनोरंजन का साधन बनाने वाले संवेदनाहीन लंपट भी। आधुनिक होने के नाते हम अपनी तुलना अमेरिका, रूस, चीन तथा अन्य यूरोपीय देशों से करते हैं और उनके समकक्ष खड़े होने की प्रबल इच्छा भी रखते हैं। पश्चिमी देशों में जहा युवा तकनीकी कौशल में पारंगत होता है तो हमारे भारत में युवा या तो धूम की स्थिति में होता है या धूम का मजाक उड़ाने की स्थिति में। जब तक देश के किसी भी कोने में धूम जैसा असहाय निर्धन रोटी के एक टुकड़े के लिए प्लास्टिक की बोतल चुनता रहेगा, तब तक हमारे लिए दुनिया की तीसरी या चौथी अर्थव्यवस्था बन जाने का भी कोई अर्थ नहीं रहेगा। मैं चाहता हूं कि धूम दिल खोलकर गाए, लेकिन वैसी परिस्थिति में नहीं, जहां उसका गाना नहीं, वरन उसके हालात मनोरंजन के साधन बन जाए।

• हिन्दवी के साथ विशेष अनुबंध के तहत।

साल 2004 में कराची के पास बम विस्फोट में बाल-बाल बच गए थे सोनू निगम

जब हमले के बाद भी सोनू ने किया था शो!

मेरे हिस्से के किस्से

रूमी जाफरी
बॉलीवुड फिल्मों के लेखक और निर्देशक

लाइव कॉन्सर्ट में परफॉर्म करते सोनू निगम (फाइल फोटो)।

आजकल रेडियो पर, टीवी पर, सोशल मीडिया में, रियलिटी शो में, ऑर्केस्ट्रा में, स्टेज पर, यानी हर जगह एक ही गाना गूंज रहा है- फिल्म 'बॉर्डर' का 'संदेसे आते हैं...'। वैसे तो यह गाना हम पिछले 30 सालों से सुनते आ रहे हैं, मगर अब 'बॉर्डर 2' में फिर से इस गाने का इस्तेमाल हुआ है तो सोनू निगम का गाया यह गीत एक बार फिर सुपरहिट हो गया है। हिंदुस्तान ही नहीं, विदेश की धरती पर भी यह गाना खूब सुना जा रहा है।

कमाल तो तब हुआ, जब मैंने सोशल मीडिया पर पाकिस्तानियों को भी यह गाना गाते और इस पर डांस करते देखा। तब मुझे सोनू निगम का एक बेहद दिलचस्प और निडरता की मिसाल कायम करने वाला किस्सा याद आ गया, क्योंकि वह किस्सा भी पाकिस्तान से ही जुड़ा है।

बात साल 2004 की है, जब हमारे सोनू निगम अपना एक लाइव शो करने कराची गए थे। सोनू बताते हैं कि उनकी वहां पर बड़ी खातिरदारी हुई। सब कुछ बहुत अच्छा था, कोई समस्या नहीं हुई। सोनू के पूरे ग्रुप के लिए वहां के एक स्थानीय टीवी चैनल ने एक शानदार लग्जरी बस तैयार करवाई थी, जिस पर चारों तरफ सोनू के फोटो लगे हुए थे और उस पर लिखा था, 'सोनू निगम शो'।

सोनू की नई-नई शादी हुई थी, इसलिए उनकी पत्नी मधुरिमा भी उनके साथ गई थीं। सोनू अपनी होटल से बस में बैठकर निकले। साथ में उनकी सिंगर सौम्या राव थीं, मम्मी-पापा थे और दोनों बहनें भी थीं। उनका शो आर्मी के इलाके में था। सोनू बताते हैं कि हम वेन्यू के नजदीक ही पहुंचे थे कि अचानक पीछे से एक बहुत जोरदार धमाका हुआ। धमाके की आवाज इतनी तेज थी कि हमारे कान सुन्न हो गए।

पता चला कि सोनू निगम की बस पर आतंकी हमला हुआ था। ऊपरवाले की कृपा और फैंस की दुआओं से यह हुआ कि जो बम आतंकवादियों ने प्लांट किया था, उसका रिमोट कुछ सेकंड देरी से चला और सोनू की बस बम से थोड़ी आगे निकल गई। फिर भी बम विस्फोट से चारों तरफ अफरातफरी और सड़क पर भगदड़ मच गई। चूंकि इलाका आर्मी का था, इसलिए फौरन सेना पहुंच गई और बस को तेजी से भगाकर स्टेडियम के अंदर बैकस्टेज में ले जाया गया।

सिक्योरिटी और पुलिस ने चारों तरफ से घेर लिया और सभी को ऑडिटोरियम के अंदर पहुंचाया। वहां उन्होंने माफी मांगी और कहा कि हमें बेहद अफसोस है कि आपके साथ हमारे मुल्क में, हमारे शहर में ऐसा हुआ। हम समझ सकते हैं कि इस वक्त आपके ग्रुप पर क्या गुजर रही होगी। ऐसी मानसिक स्थिति में गाना गाना संभव नहीं होगा, इसलिए हम शो कैंसिल कर देते हैं। हम स्टेज पर जाकर पब्लिक से माफी मांग लेंगे और बता देंगे कि हादसे की वजह से शो नहीं हो पाएगा।

सोनू ने कहा, रूमी भाई, जब मैंने देखा कि 14 से 15 हजार लोग मुझे सुनने के लिए बैठे हैं और बेताब हैं, तो मैंने फैसला कर लिया कि मैं उन्हें मायूस नहीं करूंगा। मैं शो करूंगा। वहां मौजूद लोग हैरान रह गए। उन्होंने कहा, सोनू भाई, रास्ते में अटैक हुआ, आप बाल-बाल बच गए, लेकिन अगर स्टेज पर परफॉर्म करते वक्त इतनी भीड़ में से किसी ने आप पर हमला किया तो आपको कौन बचाएगा? सोनू ने कहा, जिसने वहां बचाया था, वही यहां भी बचाएगा।

इसी बात पर मुझे राहत इंदौरी का यह शेर याद आ गयाः

तेरे हाथों में है तलवार, मेरे लब पर दुआ
सूरमा आ मुझे मैदान से बाहर कर दे...

सोनू ने पूरे जोश के साथ अपनी परफॉर्मेंस दी और पाकिस्तानी फैंस का दिल जीत लिया। उन्होंने पाकिस्तानियों के सामने हिंदुस्तानी जज्बे और हौसले की एक मिसाल रख दी। बॉर्डर फिल्म में तो कहानी के किरदार पाकिस्तानियों का मनोबल तोड़ते हैं और उन्हें हराते हैं, लेकिन सोनू हकीकत में उनसे जीतकर आए।

सोनू की हिम्मत और उनके जज्बे को सलाम। बॉर्डर का गाना तो आप आजकल सुन ही रहे हैं, मगर सोनू की आवाज में फिल्म 'मैं हूं ना' का यह मेरा पसंदीदा गाना जरूर सुनिए, अपना ख्याल रखिए और खुश रहिए।

किसका है ये तुमको इंतजार, मैं हूं ना...

• rumyjafrywrites@gmail.com

लेखक-प्रकाशक के पास सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित पूर्वानुमति के बिना इस लेख के किसी भी हिस्से को ना तो पुनः प्रकाशित किया जा सकता है, ना ही किसी तरह का व्यावसायिक इस्तेमाल कियाजासकताहै।

'मेरे हिस्से के किस्से' कॉलम को अपने मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

पालक के स्टीम कोफ्ते स्वाद के साथ सेहत से भरे

रीडर रेसिपी कॉन्टेस्ट

शिखा त्रिवेदी
वर्किंग वुमन
भोपाल (मप्र)

भेजिए रेसिपी और जीतिए 5,100 रु. का गिफ्ट

इस कॉलम में आप भी अपनी रेसिपी भेजकर हर सप्ताह जीत सकते हैं **5,100 रु.** मूल्य का गिफ्ट। इसके लिए **QR कोड** को स्कैन कीजिए और लिख भेजिए अपनी रेसिपी। साथ में अपना नाम, प्रोफेशन, फोटो, डिश की तस्वीर जरूर भेजें।

पालक के स्टीम कोफ्ते एक पौष्टिक और स्वादिष्ट सब्जी है, जो बिना तले बनाई जाती है। इसमें पालक के पौष्टिक तत्वों के साथ टमाटर-प्याज की हल्की ग्रेवी का तड़का होता है। यह रेसिपी खास तौर पर उन लोगों के लिए है, जो स्वाद के साथ सेहत का भी ध्यान रखते हैं।

बनाने की सामग्री :

250 ग्राम पालक, 3 टमाटर, 2 प्याज, 8-10 लहसुन की कलियां, 2-3 हरी मिर्च, 2 चम्मच बेसन, 1 चम्मच दही, 1 चम्मच मलाई, 1 बड़ा चम्मच तेल, अदरक का छोटा टुकड़ा, नमक, हल्दी, लाल मिर्च, धनिया पाउडर, जीरा, अजवाइन (स्वादानुसार)।

बनाने की विधि :

- पालक को अच्छी तरह धोकर डंठल निकाल दें और बारीक काट लीजिए। एक बर्तन में पालक डालकर आधा चम्मच नमक मिलाएं और 10 मिनट के लिए छोड़ दीजिए। इसके बाद पालक को अच्छी तरह निचोड़ लें, ताकि अतिरिक्त पानी निकल जाए। फिर प्याज को बहुत बारीक काट लीजिए। लहसुन, अदरक और हरी मिर्च का पेस्ट बना लें तथा टमाटर की प्यूरी तैयार कर लीजिए।
- अब कड़ाही में तेल गरम करें। इसमें राई व जीरा तड़का लें। फिर प्याज डालकर सुनहरा होने तक भून लीजिए। इसके बाद अदरक-लहसुन-हरी मिर्च का पेस्ट डालें और अच्छी तरह पका लीजिए। टमाटर की प्यूरी डालकर मिलाएं और 5-7 मिनट ढककर पकने दीजिए।
- दूसरे बर्तन में निचोड़ा हुआ पालक डालें। इसमें बेसन, अजवाइन, जीरा, हल्दी, मिर्च, नमक और धनिया पाउडर डालकर अच्छी तरह मिला लीजिए। मिश्रण से छोटे-छोटे कोफ्ते बना लीजिए।
- ग्रेवी में जब तेल ऊपर आने लगे, तब इसमें दही व मलाई डालकर मिलाएं और थोड़ा पानी डालें। अब ग्रेवी के ऊपर जाली या चलनी रखकर उस पर सारे कोफ्ते रखें। ढककर मध्यम आंच पर 5-6 मिनट स्टीम करें। कोफ्ते स्टीम हो जाने पर उन्हें ग्रेवी में डाल दीजिए।
- 2-3 मिनट तेज आंच पर उबालने के बाद गैस बंद कर दीजिए। स्वादिष्ट और हेल्दी पालक कोफ्ते परोसे जाने के लिए तैयार हैं।

तारे-सितारे

मनीष शर्मा
ज्योतिषाचार्य

सप्ताह का आरंभ देश के लिए अच्छा रहेगा। भारत विश्व में अपना परचम लहराएगा। जीडीपी में ग्रोथ होगी। डॉलर की कीमत कम हो सकती है। ईडी और आयकर की कार्रवाइयां बढ़ सकती हैं। मंगलवार एवं बुधवार को बाजार गिर सकता हैं।

• jyotish.sansar@gmail.com

मेष
परेशानियों का हल खोजने में सफल होंगे। मंगल एवं बुधवार को राजनीतिज्ञों को संभलकर रहना होगा। गुरु एवं शुक्रवार को आय के मामलों में सुधार होगा, किंतु व्यय भी तेजी से होंगे। शनिवार अनुकूल दिन रहेगा।

वृषभ
चंद्र की अनुकूलता बड़ी सफलता दिला सकती है। मंगल एवं बुधवार को आर्थिक आधार मजबूत रहेगा। गुरु एवं शुक्रवार भी आय के मामलों में अच्छे दिन रह सकते हैं। शनिवार को संभलकर रहना होगा।

मिथुन
आरंभ में अष्टम चंद्र होने से कठिनाई आ सकती है। मंगल एवं बुधवार से आय में वृद्धि होगी। गुरुवार को बड़ी सफलता मिल सकती है। शुक्र को निराशा का भाव हावी हो सकता है। शनिवार को धन की प्राप्ति संभव।

कर्क
चंद्र की दृष्टि राशि पर है। आय में वृद्धि होगी। मंगलवार एवं बुधवार को व्यय की अधिकता बढ़ सकती है। गुरुवार से समय में सुधार होगा। शुक्रवार को सफलता की प्राप्ति होगी। शनिवार भी अच्छा दिन रहेगा।

सिंह
षष्ठम चंद्र से प्रारंभ में आय के मामले अच्छे रहेंगे। मंगल एवं बुधवार को प्रसन्नता रहेगी। गुरु एवं शुक्रवार को आय में गिरावट आ सकती है। शनि को पुनः अनुकूलता बन जाएगी। पूरा दिन अच्छे से व्यतीत होगा।

कन्या
कार्यस्थल पर अनुकूल माहौल रहेगा। मंगल एवं बुधवार को विरोधियों का शमन होगा। माता से स्नेह मिलेगा। गुरु एवं शुक्रवार को धन लाभ के बड़े मौके हैं। कार्य समय पर होंगे। शनिवार को सावधानी रखनी होगी।

तुला
अनावश्यक तनाव रहेगा। मंगलवार-बुधवार के बाद के दिनों में आराम मिलने की संभावना है। गुरु एवं शुक्रवार को उदासी हावी रह सकती है। शनिवार सबसे अनुकूल दिन रहेगा। कार्य में सफलता मिलेगी।

वृश्चिक
प्रतिस्पर्धा में विजय प्राप्त होगी। मंगल एवं बुधवार को आय में कमी के साथ व्यय की अधिकता हो सकती है। गुरु एवं शुक्रवार पुनः अच्छी स्थितियां निर्मित करेंगे। शनिवार को भी परेशानी आने की संभावना नहीं है।

धनु
द्वितीय चंद्र के गोचर से आय में वृद्धि होगी। मंगल एवं बुधवार को भाइयों से सहयोग मिलेगा। गुरु एवं शुक्रवार को परिवार का साथ मिलेगा। अतिथि आगमन हो सकता है। शनिवार शाम को समय अनुकूल हो जाएगा।

मकर
चंद्र के गोचर से संतान सुख प्राप्त होगा। मंगल एवं बुधवार को पराक्रम श्रेष्ठ रहेगा। गुरु और शुक्रवार को किसी विशेष प्रकार की समस्या आने की संभावना नहीं है। शनिवार को खर्च में वृद्धि हो सकती है।

कुंभ
द्वादश चंद्र से आरंभ में कुछ कठिनाई आ सकती है। मंगलवार से स्थितियां बेहतर हो जाएंगी। बुधवार को सहयोग प्राप्त होगा। गुरुवार एवं शुक्रवार को संभलकर रहें। सप्ताहांत में यात्रा पर जाना पड़ सकता है।

मीन
शनि का गोचर है। मंगल एवं बुधवार चिंताजनक हो सकते हैं। अनावश्यक व्यय होंगे। यात्रा में परेशानी हो सकती है। गुरु-शुक्रवार अच्छे होंगे। शनिवार भी बेहतर दिन रहेगा। कार्य में सफलता की प्राप्ति और आय में वृद्धि होगी।

मेरा पैसा

सुझाव और प्रतिक्रिया इस पते पर भेज सकते हैं-
business.bhaskar@dbcorp.in

मैनेजमेंट गुरु

एन. रघुरामन

क्या आप पैसों के मामले में पर्याप्त समझदार हैं?

मैं कम से कम ऐसे तीन लोगों को जानता हूं जो इस जनवरी में घर खरीद रहे हैं। पिछले कई वर्षों के दौरान मैंने लोगों को जनवरी में कार खरीदते देखा था। इसका कारण यह था कि डीलर्स पुराने साल की बनी कारों पर भारी छूट देते थे। लेकिन जनवरी में घर खरीदना मेरे लिए एक नई बात थी।

हाल ही में एक वेबसाइट ने 2015 से लेकर 2024 के बीच बाजार की स्थिति का विश्लेषण किया और बताया कि जनवरी का महीना घर खरीदने के लिए सबसे सस्ता होता है। साल के बाकी 11 महीनों की तुलना में इस महीने सबसे ज्यादा बचत होती है। अगर आप जनवरी में नहीं खरीद पाए, तो फरवरी भी अच्छा विकल्प है क्योंकि पिछले 10 सालों में यह दूसरा सबसे सस्ता महीना रहा है। वहीं, अगर आप जानना चाहते हैं कि घर सबसे महंगे कब होते हैं, तो वह महीना है मई।

इसी तरह, समझदार निवेशक समय और परिस्थिति के हिसाब से अपनी चाल बदलते हैं। जैसे ही ईरान में चल रहे प्रदर्शनों के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने संदेश भेजा, 'मदद भेजी जा रही है।' इस छोटे से संदेश को निवेशकों ने भांप लिया कि अमेरिका जल्द ही ईरान पर हमला कर सकता है और युद्ध की आशंका में डिफेंस कंपनियों (रक्षा क्षेत्र) के शेयरों के दाम तेजी से बढ़ गए।

दूसरी ओर, जब राष्ट्रपति ट्रम्प ने यह प्रस्ताव रखा कि 20 जनवरी 2026 से क्रेडिट कार्ड के ब्याज की दर 10% से ज्यादा नहीं होगी, तो बैंकों के शेयर डगमगा गए। ऐसा इसलिए क्योंकि इस नियम से बैंकों के बिजनेस करने के पुराने तरीके पर असर पड़ेगा।

पिछले साल वैश्विक बाजारों में ज्यादातर समय टेक्नोलॉजी (आईटी) सेक्टर के शेयरों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया, क्योंकि हर कोई 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' (एआई) को लेकर उत्साहित था। लेकिन साल के अंत तक, निवेशकों ने इस मामले में सावधानी बरतनी शुरू कर दी और दूसरी जगहों पर मौके तलाशने लगे। दरअसल, अब सरकारी नीतियां तय कर रही हैं कि निवेशकों का पैसा कहां लगेगा।

कुल मिलाकर, निवेश केवल आंकड़ों का खेल नहीं, बल्कि सही समय पर सटीक निर्णय लेने की कला है। जो बदलती हवाओं को पहचानकर खुद को ढाल लेता है, वही असली विजेता बनता है। इसलिए भीड़ के पीछे भागने के बजाय अपनी सूझबूझ पर भरोसा रखें और समझदारी से अपनी वित्तीय यात्रा को नई ऊंचाइयों पर ले जाएं।

मैनेजमेंट टिपः

बाजार में किसी भी शेयर की कीमत ऊपर-नीचे होने के कई कारण होते हैं। लेकिन होशियार निवेशक हमेशा अपनी आंख, कान और नाक खुले रखता है। वह दुनिया के हालात और सरकारी नीतियों पर पैनी नजर रखता है, क्योंकि आज के समय में शेयर बाजार की तेजी इसी पर टिकी होती है।

टर्म इंश्योरेंस | कैश इनकम वालों को बिना बैंक स्टेटमेंट के नहीं मिलता है बेहतर कवर

नकद कमाई में 1 करोड़ का टर्म प्लान ऐसे पाएं

एसके सेठी
डायरेक्टर, रिया इंश्योरेंस ब्रोकर्स

यदि आप ट्यूशन टीचर, दुकानदार या फ्रीलांसर हैं और आपको नकद आय होती है, तो याद रखें, आपका बैंक स्टेटमेंट ही आपकी सैलरी स्लिप है। टर्म इंश्योरेंस कंपनियां आपकी आय पर तभी भरोसा करती हैं, जब वह कम से कम 12-24 महीनों तक बैंक खाते में नियमित दिखे। भारत में जीवन बीमा के अंतर्गत टर्म इंश्योरेंस को सबसे शुद्ध और महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह बहुत ही कम प्रीमियम में 1-2 करोड़ जैसी बड़ी सुरक्षा राशि देता है। आपके न रहने पर यह परिवार के भविष्य, बच्चों की पढ़ाई और कर्ज को चुकाने के लिए एक टैक्स-फ्री फंड सुनिश्चित करता है। यह बिना किसी तामझाम के शुद्ध 'लाइफ कवर' है, जिसका मुख्य उद्देश्य केवल परिवार को आर्थिक सहारा देना है। अगर आप चाहते हैं कि आप को बेहतर कवर मिले और भविष्य में क्लेम को लेकर कोई सवाल न उठे, तो नकद इनकम को बैंक क्रेडिट करना शुरू करें।

मासिक नकद आय बैंक में जमा करें, इसका 150 गुना तक कवर मिल सकता है

12-24 महीनों के बैंक क्रेडिट का रिकॉर्ड बनाएं

औसत मासिक बैंक क्रेडिट (जमा)	अधिकतम टर्म कवर
₹20,000	25-35 लाख
₹40,000	50-75 लाख
₹70,000-80,000	1-1.5 करोड़
₹1.5 लाख+	2-3 करोड़ या अधिक

मासिक आय का 70% तक बैंक में क्रेडिट करें

मासिक नकद आय	बैंक में जमा करें	पात्र टर्म कवर
30,000	20-22,000	40-50 लाख
50,000	35-40,000	75 लाख–1.25 करोड़
80,000-1 लाख	60-80,000	1.5–2.5 करोड़

50 हजार मासिक बैंक क्रेडिट पर 1.25 करोड़ तक का टर्म कवर।

नियमित बैंक डिपॉजिट क्यों अनिवार्य हैं?

- 80% मामलों में बैंक स्टेटमेंट ही मान्य है। आईटीआर बैंक जमा से अधिक है, तो बीमा कंपनी आवेदन खारिज या कवर घटा सकती हैं।
- यदि पैसा बैंक में नहीं, तो कंपनियां घोषित नकद आय का 10-20% ही वास्तविक मानती हैं।
- 2023 से इरडा ने 50 लाख से अधिक के कवर के लिए 12-24 महीने का बैंक स्टेटमेंट अपलोड करना अनिवार्य कर दिया।
- बैंक स्टेटमेंट और आईटीआर वालों को सबसे कम प्रीमियम वाला स्लैब मिलता है। नकद लेनदेन वालों को 'हाई-रिस्क' श्रेणी में रखा जाता है, प्रीमियम 30-50% तक बढ़ जाता है।
- यदि परिवार 2 करोड़ का क्लेम करता है लेकिन स्टेटमेंट में केवल 2-3 लाख का फ्लो हैं, तो बीमा कंपनी भुगतान कम कर सकती है।
- नकद आय को बैंक में जमा करने की आदत से टर्म इंश्योरेंस के साथ-साथ होम लोन और बिजनेस लोन की पात्रता भी पक्की हो जाती है।
- कुल मिलाकर, बैंक खाते में दिखने वाली एंट्री आपकी वित्तीय जिम्मेदारी और आय का सबसे ठोस प्रमाण होती है।

आज से ही अपनाएं ये 3 'गोल्डन हैबिट्स'

1. नकद कमाई उसी दिन या अगले दिन बैंक में जमा करें। इसके लिए बैंक की कैश डिपॉजिट मशीन या काउंटर का उपयोग करें।
2. सभी व्यावसायिक और व्यक्तिगत जमा के लिए एक ही बचत/चालू खाते का उपयोग करें। इसे 4-5 खातों में न फैलाएं।
3. यदि परिवार के सदस्य नकद देते हैं, तो उसे खाते में ट्रांसफर करवाएं ताकि वह 'क्रेडिट' के रूप में दर्ज हो।

- **12-24 माह बाद परिणामः**
- 1-2 करोड़ का टर्म प्लान 15 मिनट में ऑनलाइन अप्रूव होगा।
- सबसे कम प्रीमियम दर मिलेगी।
- मेडिकल या टेली-इंटरव्यू में कोई सवाल नहीं पूछा जाएगा।
- परिवार को बिना किसी विवाद के पूरा क्लेम मिलेगा।
- **अपने खाते से ही पालिसी का प्रीमियम भरें...** टर्म इंश्योरेंस का प्रीमियम हमेशा अपने बैंक खाते से भरे। कैश पेमेंट की अनुमति नहीं है। किसी दूसरे व्यक्ति के अकाउंट से भुगतान करने पर दिक्कत आ सकती है। जिस बैंक अकाउंट से प्रीमियम जाता है, वह आधार और पैन से लिंक होना जरूरी है, तभी पॉलिसी सही तरीके से जारी रहे।

एनपीएस वात्सल्यः निवेश के तीन साल बाद आंशिक निकासी कर सकेंगे

- पीएफआरडीए ने एनपीएस वात्सल्य योजना के निकासी और एग्जिट नियमों में ढील देकर इसे माता-पिता के लिए ज्यादा फ्लेक्सिबल निवेश विकल्प बना दिया है। बीते साल बजट में शुरू की गई इस योजना में माता-पिता अपने नाबालिग बच्चे के नाम पर पेंशन अकाउंट खोल सकते हैं। न्यूनतम सालाना योगदान 250 रुपए है।
- नए नियमों के अनुसार, अकाउंट खुलने के तीन साल बाद आंशिक निकासी की अनुमति होगी। माता-पिता 25% तक बच्चों की शिक्षा, मेडिकल इलाज या तय दिव्यांगता स्थितियों में निकाल सकते हैं। 18 वर्ष से पहले दो बार और 18 से 21 वर्ष के बीच दो बार निकासी की सुविधा दी गई है।
- बालिग होने पर कॉर्पस को रेगुलर एनपीएस टियर-I अकाउंट में ट्रांसफर किया जा सकता है या योजना से बाहर निकला जा सकता है। इस दौरान 80% तक राशि एकमुश्त निकाली जा सकती है, जबकि 20% एन्युटी में लगानी होगी।

8-4-3 का नियमः कम्पाउंडिंग के दम पर करोड़पति बनने का फॉर्मूला

- वेल्थ क्रिएशन के लिए चक्रवृद्धि (कम्पाउंड) ब्याज सबसे शक्तिशाली टूल है। कंपाउंडिंग की जादुई रफ्तार को 8-4-3 के नियम से आसानी से समझा जा सकता है।
- मान लीजिए कि आप सालाना 12% रिटर्न की उम्मीद के साथ हर महीने 21,250 रुपए का निवेश करते हैं।
- **पहले 8 सालः** आपका निवेश धीरे-धीरे बढ़कर 34.3 लाख रुपए हो जाता है।
- **अगले 4 सालः** निवेश की गति बढ़ती है और यह लगभग दोगुना होकर 68.5 लाख रुपए पर पहुंच जाता है।
- **अंतिम 3 सालः** यहां 'स्नोबॉल इफेक्ट' काम करता है और आपका फंड 1 करोड़ के पार निकल जाता है।
- **टेकअवेः** निवेश की शुरुआत में धैर्य रखें। पहले 8 साल नींव बनाने के होते हैं, लेकिन असली संपत्ति आखिरी के 3-5 वर्षों में तेजी से बनती है। इसलिए जरूरी है कि शुरुआती वर्षों की धीमी संपत्ति वृद्धि को नजरअंदाज किया जाए।

वार्निंग अलर्टः अगर क्रेडिट रिपोर्ट में SMA दिख रहा है तो सचेत हो जाइए

अगर आपकी क्रेडिट रिपोर्ट में SMA लिखा है, तो घबराने की जरूरत नहीं है, लेकिन सावधान होना जरूरी है। एसएमए का मतलब है 'स्पेशल मेंशन अकाउंट'। यह एक 'अर्ली वार्निंग सिग्नल' है जो बताता है कि आपके भुगतान में देरी हो रही है।

आरबीआई के मुताबिक SMA के तीन चरण हैं...

SMA-0: भुगतान में 1 से 30 दिन की देरी।
SMA-1: भुगतान में 31 से 60 दिन की देरी।
SMA-2: भुगतान में 61 से 90 दिन की देरी।

यदि देरी 90 दिन से अधिक हो जाती है, तो खाता एनपीए बन जाता है। क्रेडिट स्कोर प्रभावित होता है। नया लोन मुश्किल।

एसएमए से बचने के लिए ये तीन उपाय अपनाएं

1. हमेशा ड्यू डेट से पहले बिल चुकाएं।
2. अपने बैंक खाते में ऑटो-डेबिट सुविधा सेट करें।
3. नियमित रूप से अपनी क्रेडिट रिपोर्ट चेक करें और गलतियों को ठीक करवाएं।

सोमवार को भास्कर बिजनेस गाइड में पढ़ें दो बड़ी फूड कंपनियां देवयानी इंटरनेशनल और सेफायर हाथ मिला रही हैं, इसके क्या मायने हैं। | निफ्टी को अभी 25,600 के आसपास सपोर्ट मिल रहा है। यानी बड़ी गिरावट की आशंका नहीं है। | एमसीएक्स ने पहली बार 1:5 स्टॉक स्प्लिट की घोषणा की। इसके शेयरों तक छोटे निवेशकों की पहुंच बढ़ेगी।

भास्कर Q&A

एनआरआई आसानी से भारत में निवेश कर सकते हैं

▪ मैं ऑस्ट्रेलिया में रहता हूं। भारत में म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहता हूं। लेकिन जानकारी कम है। क्या करूं? -पिनु पटेल, मेलबर्न

एनआरआई के लिए भारत में निवेश करना काफी सरल होता है, बशर्ते आप सही चरणों का पालन करें। आपके पास एनआरई या एनआरओ खाता होना चाहिए। वैध पैन व अपडेटेड केवाईसी प्रक्रिया पूरी होनी चाहिए। विदेशी खातों पर टैक्स पारदर्शिता के लिए एफएटीसीए घोषणा पूरा करें। ये औपचारिकताएं पूरी हो जाने पर आप सीधे म्यूचुअल फंड हाउस की वेबसाइट या अधिकृत निवेश प्लेटफॉर्म से निवेश शुरू कर सकते हैं। **निवेश रणनीतिः** शुरुआती निवेशकों के लिए एसआईपी सबसे प्रभावी विकल्प है। यह बाजार के उतार-चढ़ाव के जोखिम को कम करता है। लंबी अवधि में कम्पाउंडिंग का लाभ मिलता है। 60-70% इक्विटी फंड और 20-30% हाइब्रिड फंड में रख सकते हैं। **कराधान और डीटीएए का लाभः** एनआरआई निवेशकों को भारत में होने वाले कैपिटल गेन पर टैक्स देना होता है। भारत-ऑस्ट्रेलिया दोहरा कराधान परिहार समझौता (डीटीएए) आपको दोहरे टैक्स से बचाता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आपको एक ही आय पर दोनों देशों में पूरा टैक्स न देना पड़े।

▪ मेरी सैलरी 50,000 है। 1 लाख सालाना यूलिप लिया है। क्या यूलिप प्रीमियम भरने के लिए 1 साल की इक्विटी एसआईपी सही है? -नरेश कुमार

नहीं, यह एक जोखिम भरी रणनीति है। अगर आपकी मासिक आय 50,000 है और आप 1 लाख की सालाना यूलिप किस्त भरने के लिए 12,000 की मंथली एसआईपी कर रहे हैं, तो आप मुश्किल में फंस सकते हैं। इक्विटी एसआईपी लंबी अवधि के लिए होती है। अगर भुगतान के वक्त बाजार गिर गया, तो आपके निवेश की वैल्यू घट जाएगी, जिससे आप पर वित्तीय दबाव बढ़ेगा। यूलिप में 5 साल का लॉक-इन होता है। प्रीमियम समय पर न भरने पर पॉलिसी जोखिम में आ जाती है। अगर आप 5 साल से पहले यूलिप पॉलिसी छोड़ते हैं, तो पहले साल 3,000 और दूसरे साल 2,000 तक की पेनल्टी (सालाना प्रीमियम के प्रतिशत के आधार पर) लग सकती है। बेहतर तरीका यह है कि यूलिप प्रीमियम स्थिर आय से ही भरें।

▪ दिसंबर 2024 में 24 लाख का होम लोन लिया है। इसे 7 साल में कैसे खत्म करूं? -सागर सिंह

मान लीजिए कि आपने 7.5% ब्याज पर 20 साल के लिए होम लोन लिया है। आपकी ईएमआई ₹19,334 होगी। अगर आप हर महीने 17 हजार रुपए ईएमआई बढ़ाते हैं तो यह लोन 7 साल में खत्म हो सकता है। इससे आपको ब्याज के तौर पर 15-16 लाख रुपए की बचत होगी। अगर आप ऐसा करने की स्थिति में नहीं हैं तो हर साल 1-2 ईएमआई अतिरिक्त जमा कर सकते हैं या 5-10% ईएमआई बढ़ा सकते हैं। फ्लोटिंग रेट वाले होम लोन में आमतौर पर प्री-पेमेंट चार्ज नहीं लगता है। इससे ब्याज तेजी से घटता है और लोन जल्द खत्म होता है।

एक्सपर्टः विजय माहेश्वरी, फाउंडर, स्टॉकटिक

आपके मन में बचत, निवेश और टैक्स जैसे पर्सनल फाइनेंस से जुड़े कोई भी सवाल हों, तो यह क्यूआर कोड स्कैन करके भेजें। एक्सपर्ट इनके जवाब देंगे।

Get Exclusive Access to My Private Channel

✅ One-Time Entry Fee Only. No Monthly Fees. Lifetime Validity.

♦ Indian Newspaper

1) Times of India
2) The Hindu
3) Business line
4) The Indian Express
5) Economic Times
6) Financial Express
7) Live Mint
8) Hindustan Times
9) Business Standard

♦ International Newspapers channel

[Europian, American, Gulf & Asia]

♦ Magazine Channel

National & International

[Genaral & Exam related]

♦ English Editorials

[National + International Editorials]

Click here to join

अभियान

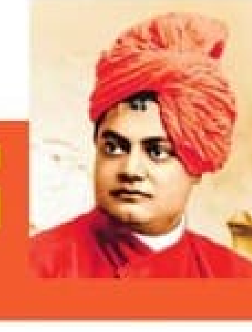

अगर धन दूसरों की भलाई करने में मदद करे तो इसका कुछ मूल्य है, अन्यथा यह सिर्फ बुराई का एक ढेर है और इससे जितनी जल्दी छुटकारा मिल जाए, उतना बेहतर है। - स्वामी विवेकानंद

amarujala.com
अमर उजाला

सामान जल्द डिलीवर करने की होड़ सेवा देने वालों की जान जोखिम में तो डालती ही है, दुर्घटना का कारण भी बनती है। क्विक कॉमर्स की 10 मिनट में डिलीवरी देने वाली सेवा पर सरकार और कंपनियों की रोक एक सराहनीय पहल है।

सबसे पहले जान की सुरक्षा

जानलेवा रफ्तार पर लगाम

इधर जरूरत और उधर पूर्ति की मानसिकता देश में बहुतेरे नजर आती है। लोग जरूरत पूरी होने में कुछ मिनट भी इंतजार नहीं कर सकते। इस त्वरित सेवा की संस्कृति ने यह साफ कर दिया है कि हड़बड़ी किस तरह जानलेवा बन सकती है। क्विक कॉमर्स (गिग वर्कर्स) की 10 मिनट में डिलीवरी पर सरकार द्वारा रोक लगाना स्वागत योग्य है। इसे इस तरह की सेवा देने वाली कंपनियों ने भी मान लिया है।

यह बात सही है कि ऑनलाइन सेवा देने वाली कंपनियों ने बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार मुहैया कराया है, लेकिन विडंबना यह है कि अधिकांश दुर्घटनाएं किसी मजबूरी से नहीं, बल्कि जल्दी पहुंचने जैसे आत्मघाती आत्मविश्वास से होती हैं। क्विक कॉमर्स ने कर्मचारियों की सुरक्षा का संदेश दे दिया है। अब आम आदमी की बारी है अपनी रफ्तार, आदतों और सोच पर ब्रेक लगाने की। उसे भी यह समझना होगा कि सुरक्षित जीवन शॉर्टकट से नहीं, संतुलित गति से ही तय होगा। मंजिल तक सुरक्षित पहुंचने के लिए नियम-कायदों के पालन के साथ ही गति को भी नियंत्रण में रखना होगा। लोग भूल जाते हैं कि कुछ मिनट बचाने की कोशिश जीवन भर का दर्द दे सकती है। सरकार नियम बनाए, चालान बढ़ाए, कैमरे लगाए यह सब जरूरी है, लेकिन पर्याप्त नहीं। असली बदलाव तब आएगा, जब आम आदमी स्वयं यह माने कि उसकी जान अनमोल है। सड़क केवल पहुंचने का साधन नहीं, बल्कि साझा जिम्मेदारी है। सरकार को उन निजी क्षेत्रों या फैक्ट्रियों की भी आर्थिक मदद करनी चाहिए और टैक्स में रियायत देनी चाहिए, जिन्होंने बेरोजगारों को काम दिया है।

चिट्ठी 1

▪ अमृतलाल मारू 'रवि' इंदौर

महाराष्ट्र नगरपालिका चुनाव कुछ कहते हैं

महाराष्ट्र में मुंबई सहित सभी 29 महानगरपालिकाओं के चुनाव परिणामों ने उन राजनीतिक दलों और नेताओं को करारा संदेश दिया है, जो लोगों को बांटने की राजनीति करते रहे हैं। क्षेत्रीय पार्टी मनसे के प्रमुख राज ठाकरे द्वारा हिंदी भाषी राज्यों के लोगों को 'महाराष्ट्र से बाहर करने' जैसे बयानों से न केवल हिंदी भाषी नागरिकों की भावनाएं आहत हुईं, बल्कि महाराष्ट्र के मराठी समाज को भी यह नागवार गुजरा। इसी का परिणाम रहा कि महाराष्ट्र की जनता ने चुनाव में ऐसे बयानों की राजनीति करने वाले नेताओं को न केवल दिलों, बल्कि सत्ता से भी बाहर का रास्ता दिखा दिया। यह स्पष्ट संकेत है कि महाराष्ट्र ही नहीं, बल्कि देश का जनमानस अब जाति, धर्म और भाषा के नाम पर की जाने वाली विभाजनकारी राजनीति के बहकावे में आने वाला नहीं है। यही कारण है कि वर्तमान राजनीति में वही दल और नेता जनता का विश्वास जीत रहे हैं, जो राष्ट्रहित और विकास के मुद्दों पर काम कर रहे हैं। मुंबई महानगरपालिका, जिसका बजट कई राज्यों के बजट के बराबर है, वहां तीन दशक बाद भाजपा का सत्ता में लौटना जनता के सरकार के प्रति बढ़ते विश्वास का प्रतीक है। उम्मीद है कि भाजपा गठबंधन महाराष्ट्र की जनता की अपेक्षाओं और जनादेश की कसौटी पर खरा उतरेगा।

चिट्ठी 2

▪ अरविंद रावल, झाबुआ

चीनी मांझा से पतंगबाजी राहगीरों के लिए खतरा

पतंग उड़ाने के लिए अधिकांशतः इस्तेमाल होने वाले चीनी मांझा प्रतिबंधित किया जा चुका है। यह अब केवल पतंग उड़ाने का साधन नहीं रहा, बल्कि यह एक जानलेवा हथियार में बदल चुका है। देश के अलग-अलग हिस्सों में इसकी वजह से गले और चेहरे पर गंभीर चोटें आने और मौत की खबरें यह साबित करती हैं कि यह एक दुर्घटना नहीं, बल्कि सामूहिक लापरवाही और प्रशासनिक ढिलाई का परिणाम है। सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि प्रतिबंध के बावजूद चीनी मांझे की खुलेआम बिक्री और उपयोग जारी है। सवाल उठता है कि जब कानून मौजूद है तो उसका प्रभाव जमीन पर क्यों नहीं दिखता? क्या त्योहारों के दौरान विशेष निगरानी की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन केवल प्रशासन को दोष देना पर्याप्त नहीं है। समाज और नागरिकों की भूमिका इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। परंपरा के नाम पर अगर हम दूसरों की जान जोखिम में डालते हैं, तो यह परंपरा नहीं संवेदनहीनता है। पतंग उड़ाना कोई अपराध नहीं है, लेकिन ऐसी सामग्री का उपयोग करना जो किसी की जान ले सकती है निश्चित रूप से अपराध की श्रेणी में आता है। हमें समझना होगा कि आनंद और आस्था तब तक ही सार्थक है, जब तक वे सुरक्षित है।

चिट्ठी 3

▪ शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

इनकी **चिट्ठियां** भी सराहनीय रहीं: मेरठ से मनोज पुरुषार्थी, हाथरस से देव सादावादी, बरेली से सीमा गुप्ता, दिल्ली से विजय किशोर तिवारी, मोहाली से अभिलाषा गुप्ता, दिल्ली से योगेश कुमार गोयल, लुधियाना से अनिल तलवाड़, जालंधर से राजेश कुमार चौहान, लखनऊ से शिवांशु के. श्रीवास्तव, हल्द्वानी से अशोक कुमार वार्ष्णेय, शिवपुरी से प्रमोद भार्गव, सूरत से कांतिलाल मांडोत।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

Hindi@mithelesh
▪ मिथिलेश बारिया

गोल चबूतरा

तुम अब जो मोबाइल पर फेरते रहते हो अक्सर,
उन उंगलियों को वो किताब जाने
कब से तरसती है...

शाम को घर वापस आ जाते हो,
अरे!, और क्या-क्या चाहते हो...?

नीयत जिनकी बच्चों सी हो,
लोग वो कितने बड़े हो जाते हैं...

शरीर के भीतर देखना संभव हुआ

झरोखा
18 जनवरी

1896 में आज के ही दिन एच.एल. स्मिथ ने एक कामकाजी एक्स-रे मशीन बनाकर सार्वजनिक रूप से पेश की, जिससे चिकित्सा निदान में बड़ा बदलाव आया। इस मशीन में इलेक्ट्रोमैग्नेटिक विकिरण का उपयोग किया गया, जिससे शरीर के अंदरूनी अंगों, खासकर हड्डियों को देखना संभव हो पाया। इससे ठीक एक साल पहले जर्मन वैज्ञानिक विल्हेम रॉन्टजेन ने एक्स-रे की खोज की थी। उन्होंने सबसे पहले क्रूक्स ट्यूबों से निकलने वाले एक्स-रे की खोज की और इसके कई महत्वपूर्ण उपयोग समझाए। जैसा कि रॉन्टजेन ने अपनी पत्नी के हाथ की पहली एक्स-रे तस्वीर में दिखाया था। खोज के बाद कुछ ही हफ्तों में, यूरोप और अमेरिका में सर्जन टूटे हुए हड्डियों और शरीर के अंदर फंसे गोलियों का पता लगाने के लिए एक्स-रे का उपयोग करने लगे, जिससे रेडियोलॉजी का जन्म हुआ। शुरू में जूते की दुकानों में भी एक्स-रे मशीनें लगाई गईं, लेकिन बाद में पता चला कि अत्यधिक विकिरण से कैंसर जैसी बीमारी हो सकती है, जिससे इसका उपयोग नियंत्रित हो गया। 1904 में मेले क्लैरेंस ने सार्वजनिक इस्तेमाल के लिए एक पूर्ण रूप से कामकाजी एक्स-रे मशीन पेश की।

▪ प्रणय दास, चंबा

कुछ अलग

अमेरिका से रूस का पैदल रास्ता

अमेरिका और रूस के बीच आज भले सीमा का निर्धारण हो, मगर एक समय दोनों देशों के लोग पैदल ही इधर से उधर आ-जा सकते थे।

अमेरिका और रूस भले ही राजनीतिक रूप से एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी माने जाते हों, लेकिन भौगोलिक दृष्टि से दोनों देश बेहद करीब हैं। आम तौर पर वर्ल्ड मैप में ये दोनों देश दुनिया के अलग-अलग छोर पर दिखाई देते हैं, लेकिन चूंकि धरती गोल है, इसलिए दूसरी ओर से देखने पर इनकी दूरी बहुत ही कम हो जाती है। बेरिंग स्ट्रेट के सबसे संकरे हिस्से से अमेरिका और रूस के बीच की दूरी महज 51 मील है। 18वीं सदी में यह जलमार्ग साइबेरिया के व्यापारियों, रूसी ऑर्थोडॉक्स मिशनरियों और इन्यूपियाट व यूपिक जैसे स्थानीय आदिवासी समुदायों के आवागमन का खुला रास्ता हुआ करता था। लोग बिना किसी सीमा के एक-दूसरे के यहां आते-जाते थे, व्यापार करते, शादियां करते और शिकार पर निकलते थे। 1867 में अलास्का के अमेरिका में शामिल होने से पहले यह इलाका 1799 से रूसी शासन के अधीन था, जिसे अमेरिका ने रूस से केवल 72 लाख डॉलर में खरीदा था। आज भी अलास्का में रूसी विरासत के निशान गुंबददार चर्च, रूसी उपनाम और संग्रहालय देखे जा सकते हैं।

अमेरिका और रूस की यह नजदीकी सबसे स्पष्ट रूप से डायोमीड आइलैंड्स पर दिखाई देती है। ये दो छोटे ज्वालामुखीय द्वीप मात्र 3.8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। लिटिल डायोमीड अमेरिका का हिस्सा है, जबकि बिग डायोमीड रूस के नियंत्रण में है। इनके बीच इंटरनेशनल डेट लाइन गुजरती है, जिसके कारण दोनों द्वीपों के समय में 21 घंटे का अंतर है। इसलिए इन्हें 'यस्टरडे और टुमॉरो आइलैंड्स' भी कहा जाता है। सीमाएं बनने से पहले यहां के आदिवासी एक ही समाज की तरह रहते थे, लेकिन शीत युद्ध के दौरान यह संपर्क टूट गया। आज भी दोनों ओर बसे कई परिवारों के रिश्तेदार एक-दूसरे से जुदा हैं, जो इतिहास की इस अनोखी नजदीकी की गवाही देते हैं।

▪ देवेश गुप्ता, दिल्ली

मुझे भी बंदूक दो मैं भी लड़ने जाऊंगा...

विभीषिका से अनजान फ्रांसीसी बच्चा पहले विश्व युद्ध के दौरान फ्रांस और ब्रिटेन के पक्ष में लड़ने मार्सिले पहुंची भारतीय सेना के कैंप में पहुंच गया था।

▪ श्वेता दास, पानीपत

छायानट

बिमल दा ने लगाई अवार्ड की डबल हैट्रिक

हिंदी सिनेमा के इतिहास बिमल दा न सिर्फ कलात्मक सिनेमा के अग्रदूत थे, बल्कि वे पुरस्कारों की दुनिया में एक अनोखा रिकॉर्ड बनाने वाले इकलौते निर्देशक भी रहे।

सन 1953 में 'दो बीघा जमीन' से बिमल रॉय ने इतिहास रच दिया। इस फिल्म के लिए उन्हें पहला फिल्मफेयर बेस्ट डायरेक्टर अवार्ड मिला और यही नहीं, यह पहली भारतीय फिल्म बनी, जिसे कान्स फिल्म फेस्टिवल में अंतरराष्ट्रीय सम्मान मिला। इसके बाद 'परिणीता' और 'बिराज बहू' के लिए लगातार दो वर्षों तक फिल्मफेयर जीतकर उन्होंने फिल्मफेयर की पहली हैट्रिक पूरी की। 1958 में आई 'मधुमती' ने पुरस्कारों की बारिश कर दी। इस फिल्म को '9 फिल्मफेयर अवार्ड्स' मिले, जिनमें बेस्ट डायरेक्टर भी शामिल था। इसके बाद 'सुजाता' और 'परख' के लिए फिर लगातार फिल्मफेयर जीतकर उन्होंने डबल हैट्रिक का अनोखा रिकॉर्ड बनाया। अपने निर्देशन करियर में बिमल रॉय ने 7 बार बेस्ट डायरेक्टर फिल्मफेयर अवार्ड जीता- यह रिकॉर्ड आज भी कायम है। कम फिल्में, लेकिन असाधारण सम्मान, यही बिमल रॉय की सबसे बड़ी विरासत है।

▪ लोकेश राज, चंडीगढ़

नौकरी और बेरोजगारी के बीच की स्थिति

एक तरफ पद खाली पड़े हैं, दूसरी ओर कुछ नौकरियां करने में युवाओं की दिलचस्पी नहीं है। यह स्थिति किसी एक सरकार की देन नहीं है। यह समस्या बढ़ती ही जा रही है।

पी चिदंबरम
पूर्व केंद्रीय मंत्री

चारों तरफ अच्छी खबरें सुनने को मिल रही हैं। खुदरा महंगाई की दर 1.33 प्रतिशत है। वित्त वर्ष 2025-26 में जीडीपी की वृद्धि दर 7.4 प्रतिशत रहने का अनुमान है। मुझे लगता है कि इसमें एक बात और जोड़ी जानी चाहिए कि भारत में बेरोजगारी नहीं है। कम से कम वैसी तो नहीं है, जिसकी हमें चिंता करनी चाहिए।

आंकड़े बताते हैं कि सरकारी और अर्द्ध-सरकारी क्षेत्र में लाखों पद खाली पड़े हैं, लेकिन उन्हें भरने की चिंता किसी को नहीं है। आठवां वेतन आयोग आने के बाद लोगों की स्थिति और बेहतर हो जाएगी। महंगाई भत्ते, वार्षिक वेतन वृद्धि, पदोन्नति, नौकरी की सुरक्षा, चिकित्सा सुविधाएं, एचआरए, परिवहन भत्ता व अन्य भत्ते, अवकाश सुविधाएं, अग्रिम और ऋण तथा एकीकृत पेंशन योजना, जैसी सुविधाओं के होने के बावजूद युवा पुरुष और महिलाएं इन सरकारी स्वीकृत पदों को स्वीकार करने के क्या इच्छुक नहीं हैं। खाली पदों को भरने में दिलचस्पी न दिखाना तो इसी बात को दर्शाता है। इस स्थिति से आप और क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं, सिवाय इसके कि भारत में बेरोजगारी नहीं है। शिक्षा मंत्रालय के अनुसार, एक अप्रैल 2024 तक केंद्रीय विश्वविद्यालयों में स्वीकृत और खाली पद इस प्रकार हैं-

पदों के प्रकार	स्वीकृत	रिक्त
शिक्षण पद	18940	5060
गैर-शिक्षण पद	35640	16719

आंकड़ों के हिसाब से केंद्रीय विश्वविद्यालयों में 27 प्रतिशत शिक्षण पद और 47 प्रतिशत गैर-शिक्षण पद खाली थे। जून 2025 तक केंद्रीय विद्यालय संगठन में 7765 और नवोदय विद्यालय समिति में 4323 शिक्षण पद खाली थे। फिर भी हमें आश्वस्त किया जाता रहा है कि भारत में शिक्षा व्यवस्था अच्छी तरह से चल रही है।

आंकड़ों की जुबानी

इस तरह के उदाहरण पूरे देश में देखे जा सकते हैं। केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में कांस्टेबल के 25487 पद रिक्त हैं। राजस्थान में एलडीसी/क्लर्क ग्रेड-दो के 10644 पद खाली हैं। बिहार में 12199 पद खाली हैं। उत्तर प्रदेश में कांस्टेबल के 60244 पद रिक्त हैं। तमिलनाडु में स्टाफ नर्सों के 2255 पद खाली हैं। गौरतलब है कि इन पदों के लिए आवेदन करने वाले आम तौर पर निम्न व मध्यम वर्ग के वह छात्र-छात्राएं होते हैं, जिन्होंने हाल ही में 12वीं या स्नातक की पढ़ाई पूरी की है। उच्च शिक्षा की तरफ जाएं तो 21 एम्स में 3485 फैकल्टी तैनात हैं, जबकि 1731 पद खाली चल रहे हैं। ओडिशा राज्य के केंद्रपाड़ा जिले में डॉक्टर और पैरा मेडिकल स्टाफ के 805 पद खाली हैं। भरे पदों की संख्या 1087 है।

बैंकिंग सेक्टर को प्रतिष्ठित और आकर्षक माना जाता है। 12 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में कर्मचारियों की स्थिति इस प्रकार है-

	कार्यरत	रिक्त
अधिकारी	430599	17500
क्लर्क	243817	12861
अधीनस्थ कर्मचारी	84092	2206

प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना की शुरुआत अक्तूबर 2024 में की गई थी। एक अखबार में दो दिसंबर, 2025 को प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, दो चरणों में कंपनियों ने कुल 165000 इंटर्नशिप ऑफर दिए, लेकिन उनमें से केवल 20 प्रतिशत को ही स्वीकार किया गया। ऑफर स्वीकार करने वालों में पांच में से एक ने इंटर्नशिप पूरी होने से पहले उसे छोड़ दिया। इस तरह लगभग 140000 ऑफर किसी ने स्वीकार नहीं किए। भारत में बेरोजगारी को समस्या न मानने वाले, यहां निराश हो सकते हैं।

हमें निष्पक्षता के साथ यह स्वीकार करना होगा कि एक ओर बड़ी संख्या में पद खाली पड़े हैं और दूसरी ओर कुछ नौकरियों में युवाओं की दिलचस्पी नहीं है। वह उन्हें करना नहीं चाहते। यह स्थिति केवल भाजपा सरकार की देन नहीं है। यह समस्या कई सरकारों और कई दशकों से चली आ रही है। हां, दो घटनाओं ने इस स्थिति को और गंभीर बना दिया है।

दो घटनाओं का असर

पहली घटना-नोटबंदी। यह एक थोपी गई घटना थी। जैसा कि मैं पहले भी लिख चुका हूं, यह असलियत में नोटबंदी थी ही नहीं, क्योंकि किसी भी मुद्रा को स्थायी रूप से अमान्य कर प्रणाली से बाहर नहीं किया गया। यह दरअसल 'पुराने नोटों के बदले नए नोट' देने की एक योजना भर थी। जितनी मुद्रा बाजार में थी, उतनी जल्द ही बाजार में लौट आई, बल्कि उससे भी आगे निकल गई। चार नवंबर, 2016 को प्रचलन में मुद्रा का मूल्य 17.97 लाख करोड़ रुपये था, दिसंबर 2025 के अंत तक यह दोगुने से भी अधिक बढ़कर 39.24 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया। नोटबंदी का दुष्प्रभाव यह रहा कि हजारों छोटे और मध्यम उद्यम बंद हो गए और लाखों नौकरियां चल गईं-हालांकि सरकार इससे इनकार करती है। लेकिन ऑल इंडिया व्यापार मंडल के अनुसार, 2016 में देश में 6.25 करोड़ छोटे व्यवसाय थे, जिनमें से लगभग 48 प्रतिशत पिछले एक दशक में बंद हो चुके हैं।

दूसरी घटना-कोविड महामारी है। 2022 में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, 14 प्रतिशत एमएसएमई महामारी के कारण स्थायी रूप से बंद हो गए। एक सरकारी रिपोर्ट बताती है कि जुलाई 2020 से फरवरी 2025 के बीच 75000 पंजीकृत एमएसएमई बंद हुए (मतलब यह प्रभाव कोविड काल से आगे तक गया)। यूएनसीटीएडी का अनुमान है कि फरवरी 2022 तक भारत में लगभग 47 प्रतिशत एमएसएमई अस्थायी या स्थायी रूप से बंद हो चुके थे। इन आंकड़ों की पुष्टि भले ही न हो, लेकिन सच्चाई से मेल खाते हैं।

मनरेगा को एक ऐसी योजना से बदलना जो मांग आधारित नहीं है, जिसमें रोजगार की गारंटी नहीं है और जो पैसे की कमी से जूझ रही है, ग्रामीण गरीबों की स्थिति को और खराब बना देगा। उन्हें बेरोजगारी या अर्द्ध-बेरोजगारी का सामना करना पड़ सकता है। इससे ग्रामीण परिवारों, विशेषकर महिलाओं की अतिरिक्त आय का स्रोत छिन सकता है। यह मानना कि बेरोजगारी कोई बड़ी समस्या नहीं है, सच से मुंह फेरना है। सरकार अपनी प्रशंसा में डूबी है और बेरोजगारी देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा रही है।

Licensed by The Indian Express Limited

गोल्ज्यू देव के दरबार में दया और न्याय

हिमालय की गोद में बसे उत्तराखंड में अनेक लोक देवताओं की मान्यता है, जिनमें ग्वाल या गोल्ज्यू देवता को न्याय के देवता के रूप में पूजा जाता है। उनके प्रति लोगों की आस्था आज भी उतनी ही प्रगाढ़ है, जितनी सदियों पहले थी। ऐसा विश्वास है कि गोल्ज्यू देवता के दरबार में पहुंचने वाला कोई भी फरियादी निराश नहीं लौटता और वहां लगाई गई हर अर्जी की सुनवाई के बाद न्यायपूर्ण समाधान होता है।

डॉ. राजेन्द्र सिंह क्वीरा

खुला आकाश

स्थानीय लोगों के साथ ही दूर-दराज से आने वाले श्रद्धालुओं की भी गोल्ज्यू देवता के प्रति अटूट आस्था है। ऐसा विश्वास है कि उनके दरबार में लगाई गई हर अर्जी की सुनवाई होती है। गोल्ज्यू देव दयालु और न्यायप्रिय देवता के रूप में पूजे जाते हैं।

गोल्ज्यू देवता को कुमाऊं क्षेत्र में ग्वाल्ल, गोल्ज्यू और ग्वाल महाराज जैसे नामों से भी जाना जाता है। उनका बाल्यकालीन मंदिर चंपावत जनपद के गोरलचौड़ में स्थित है। इसके अलावा अल्मोड़ा जिला मुख्यालय से लगभग पंद्रह किलोमीटर दूर गैराड़ का गोल्ज्यू देव मंदिर तथा नैनीताल जिले के घोड़ाखाल स्थित गोल्ज्यू देव (गोल्ज्यू) मंदिर अत्यंत प्रसिद्ध हैं। इन मंदिरों में पूरे साल श्रद्धालुओं और फरियादियों की भीड़ लगी रहती है। लोग अपनी समस्याएं कागज पर लिखकर मंदिर में रख देते हैं और मनोकामना पूरी होने पर घंटियां अर्पित करते हैं। मंदिरों में टंगी हजारों घंटियां लोगों की अटूट श्रद्धा का प्रमाण हैं।

लोक कथाओं के अनुसार, गोल्ज्यू देवता के पिता झालुराय कत्यूरी वंश के राजा थे। उनकी सात रानियां थीं, लेकिन कोई संतान नहीं हुई। बाद में उन्होंने पंचनाम देवों की बहन कालिका से विवाह किया। जब कालिका गर्भवती हुईं तो अन्य रानियां ईर्ष्या से भर गईं और उन्होंने षड्यंत्र रचा कि किसी प्रकार इस बालक को जन्म से पहले ही मार दिया जाए। सातों रानियों ने राजा से कहा कि वे सभी मिलकर प्रसव में सहायता करेंगी। उन्होंने कालिका की आंखों पर पट्टी बांध दी और बालक को नीचे बकरियों की गोठ में डाल दिया। जब वहां भी बालक सुरक्षित रहा तो उसे लोहे के संदूक में बंद कर कालीगंगा नदी में बहा दिया। कालीगंगा में मछली पकड़ने गए एक निस्संतान व्यक्ति को वह संदूक मिला। संदूक खोलने पर उसे बालक ग्वाल्ल प्राप्त हुआ, जिसे उसने अपने पुत्र की तरह पाला। समय के साथ ग्वाल्ल ने अपनी माता कालिका को पहचान दिलाई और सच्चाई सामने आई। आगे चलकर वह उत्तराखंड में गोल्ज्यू देवता, ग्वाल महाराज, बाला गोरिया और गौर भैरव जैसे नामों से प्रसिद्ध हुए।

महिला कोच से तीन पुरुष यात्री पकड़े

दादरी। हावड़ा–दिल्ली रेल मार्ग पर अलीगढ़ से दिल्ली के बीच संचालित लोकल यात्री ट्रेन के महिला कोच में अनधिकृत रूप से यात्रा कर रहे तीन पुरुष यात्रियों को रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई दादरी रेलवे स्टेशन पर चेकिंग के दौरान की गई। आरपीएफ प्रभारी निरीक्षक निदेशक जितेंद्र कुमार ने बताया कि लोकल यात्री ट्रेन के महिला कोच में पुरुष यात्रियों द्वारा यात्रा किए जाने की लगातार शिकायतें मिल रही थीं। शिकायत को गंभीरता से लेते हुए आरपीएफ द्वारा विशेष अभियान चलाया गया। इस दौरान लोकल यात्री ट्रेन संख्या-64151 के दो महिला कोचों में तीन पुरुष यात्रियों को पकड़ा गया। संवाद

डीएफसीसीआईएल, जेएनपीटी और पश्चिमी रेलवे की बैठक संपन्न

नई दिल्ली। लॉजिस्टिक्स व्यवस्था को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप विकसित करने के उद्देश्य से डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (डीएफसीसीआईएल), जवाहरलाल नेहरू पोर्ट प्राधिकरण (जेएनपीटी) और पश्चिमी रेलवे के अधिकारियों के बीच दो दिवसीय उच्च स्तरीय समन्वय बैठक संपन्न हो गई।

बैठक में मुख्य रूप से पश्चिमी डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (डब्ल्यूडीएफसी) के शेष वैतरणा जेएनपीटी खंड को जवाहरलाल नेहरू पोर्ट से जोड़ने की योजना पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में डीएफसीसीआईएल के निदेशक शोभित भटनागर तथा जेएनपीटी के डिप्टी चेयरमैन रवीश कुमार सिंह ने बैठक की और जेएनपीटी पोर्ट का दौरा किया। गुरुवार को डीएफसीसीआईएल के निदेशक शोभित भटनागर ने पश्चिमी रेलवे के प्रिंसिपल चीफ ऑपरेटिंग मैनेजर वीए मालेगांवकर, मुख्य फ्रेट ट्रांसपोर्टेशन मैनेजर नरेंद्र पंवार, मंडल रेल प्रबंधक मुंबई सेंट्रल मंडल पंकज सिंह के साथ बैठक की। बैठक और दौरे के दौरान डिप्टी एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर व टर्मिनल हेड अभिषेक सिंह, मैनेजर वेंकटेश्वर चतुर्वेदी, जयदीप कदम, अश्विनी एस सुदर्शन सहित कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

पावरग्रिड ने देश का पहला 315 एमवीए ग्रीन ट्रांसफॉर्मर किया उद्घाटित

गुरुग्राम (वि)। पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (पावरग्रिड) ने भिवाड़ी सब-स्टेशन पर देश का पहला 315 एमवीए, 400/220/33 केवी सिंथेटिक एस्टर ऑयल-फिल्ड पावर ट्रांसफॉर्मर उद्घाटित किया।

इसका उद्घाटन डॉ. आरके त्यागी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने किया। इस अवसर पर जी रविशंकर, निदेशक (वित्त), नवीन श्रीवास्तव, निदेशक (प्रचालन), बुर्रा वामसी राम मोहन, निदेशक (परियोजना), नवीन कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, शिव तपस्या पासवान, स्वतंत्र निदेशक, आलोक शर्मा, कार्यपालक निदेशक (उ. क्षे.-1) सहित पावरग्रिड कॉर्पोरेट कार्यालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। नया ट्रांसफॉर्मर पारंपरिक मिनरल ऑयल के बजाय बायोडिग्रेडेबल, अग्निरोधी और नेक्स्ट जेन सिंथेटिक एस्टर इन्सुलेटिंग ऑयल से संचालित है, जो पर्यावरणीय जोखिम को कम करता है। पावरग्रिड ने 31 दिसंबर 2025 तक 287 सब-स्टेशन, 1,81,894 सर्किट किमी ट्रांसमिशन लाइन और 5,94,016 एमवीए ट्रांसफॉर्मेशन क्षमता के साथ 99.84 प्रतिशत प्रणाली उपलब्धता सुनिश्चित की है।

अल फलाह विवि में सत्यापन बिना नियुक्ति, कागजों में दिखाए डॉक्टर

ईडी की चार्जशीट में सामने आया काला चिट्ठा...मान्यता के लिए नियामकों को किया गुमराह

अमर उजाला ब्यूरो

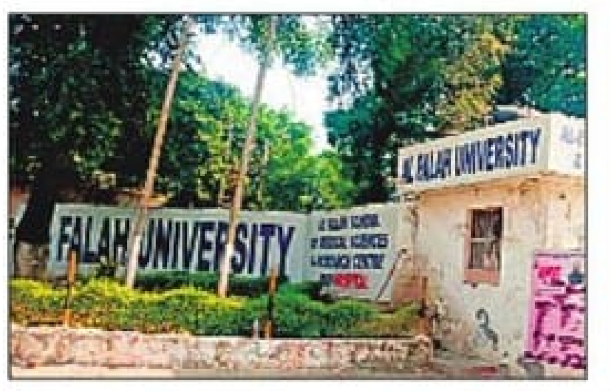

सिद्दीकी करते थे डॉक्टरों की नियुक्ति : चार्जशीट में कुलपति भूपिंदर कौर और आनंद का भी बयान है। उन्होंने माना है कि लाल किले विस्फोट मामले में आत्मघाती डॉ. उमर, नबी, जूनियर रेजिडेंट डॉ. मुजम्मील और एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. शाहीन की नियुक्ति उनके कार्यकाल में हुई। उन्होंने यह भी बताया कि अंततः इन डॉक्टरों की नियुक्तियों को सिद्दीकी ने ही अनुमोदित किया। उन्होंने यह भी पुष्टि की कि उन उम्मीदवारों के संबंध में कोई पुलिस सत्यापन या जांच नहीं की गई थी।

नई दिल्ली। पिछले साल लाल किला के पास आत्मघाती विस्फोट के बाद विवादों में आए अल फलाह विश्वविद्यालय का काला चिट्ठा धीरे-धीरे सामने आ रहा है। विश्वविद्यालय ने न सिर्फ मेडिकल के छात्रों और उनके अभिभावकों से शुल्क के नाम पर अवैध वसूली की, बल्कि मान्यता पाने के लिए नियामकों को भी गुमराह किया। निरीक्षण के दौरान मेडिकल कॉलेज के अस्पताल में फर्जी मरीज भर्ती किए और कागजों पर डॉक्टरों की नियुक्ति दिखाई। आत्मघाती हमलावर डॉ. उमर नबी जैसे कुछ स्टाफ भर्ती भी किए तो पुलिस से उनका सत्यापन नहीं कराया।

अल फलाह विश्वविद्यालय और मेडिकल कॉलेज संचालित करने वाले अल फलाह चैरिटेबल ट्रस्ट और अल फलाह समूह के चेयरमैन जवाद अहमद सिद्दीकी के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की ओर से धन शोधन मामले में दायर चार्जशीट में ये जानकारियां सामने आई हैं। ईडी ने विश्वविद्यालय की धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत लगभग 140 करोड़ रुपये की संपत्तियां अटैच की हैं। छात्रों के साथ धोखाधड़ी से जुड़े धन शोधन के मामले में ईडी ने सिद्दीकी को पिछले साल नवंबर में गिरफ्तार किया था।

लगभग 260 पन्नों की चार्जशीट में सिद्दीकी और उनके ट्रस्ट पर छात्रों की ओर से भुगतान की गई फीस से कथित तौर पर अवैध धन जुटाने और साथ ही अपने संस्थानों की मान्यता और प्रमाणन के बारे में गलत जानकारी देने के आरोप में मुकदमा चलाने की मांग की गई है। कहा गया है कि अल फलाह ट्रस्ट और सिद्दीकी ने राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (एनएएसी) और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से मान्यता पाने के लिए अस्पताल में फर्जी मरीजों को भर्ती किया। अस्पताल में जिन डॉक्टरों की नियुक्ति दिखाई गई वह सिर्फ कागजों पर ही थे, न कभी अस्पताल में और न ही कभी कक्षाएं ही ली।

नियुक्तियों पर अंतिम फैसला सिद्दीकी का : ईडी विश्वविद्यालय और ट्रस्ट के खिलाफ वित्तीय अपराधों की जांच कर रहा है। एजेंसी ने अपने अभियोग शिकायत में दावा किया है कि लाल किले विस्फोट के मुख्य आरोपी उमर उन नबी और अन्य आरोपी डॉक्टरों की नियुक्तियां विश्वविद्यालय के मानव संसाधन विभाग के प्रमुख डॉ. जमील खान की ओर से अनुशंसित की गई थी। इसके बाद समूह के अध्यक्ष जवाद अहमद सिद्दीकी द्वारा अनुमोदित की गई थीं। लाल किले विस्फोट मामले में गिरफ्तार किए गए आरोपी डॉक्टरों के खिलाफ आरोप अल फलाह विश्वविद्यालय के कई महत्वपूर्ण प्रबंधकीय कर्मचारियों, जिनमें कुलपति और प्रधानाध्यापक शामिल हैं, के बयानों और छापेमारी के दौरान जब्त किए गए कई दस्तावेजी सबूतों पर आधारित हैं।

विश्वविद्यालय का पीआरओ फर्जी मरीजों का ब्योरा रखता था

सूत्रों ने बताया कि चार्जशीट में अल फलाह के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के एक अधिकारी फरदीन बेग के बयान का उल्लेख है, जिन्होंने मेडिकल कॉलेज और अस्पताल की ओर से फर्जी मरीजों को भर्ती करने की जानकारी होने की बात स्वीकार की है। एजेंसी ने दावा किया कि इन फर्जी मरीजों को कथित तौर पर निरीक्षण के दौरान मरीजों की मौजूदगी का भ्रम पैदा करने के लिए आशा कार्यकर्ताओं के समन्वय से रखा गया था। बयान में यह भी सामने आया है कि फर्जी मरीजों के विस्तृत विवरण और भुगतान विवरण अल फलाह के जनसंपर्क अधिकारी कामरान आलम रखता था, जिनकी जांच और अनुमोदन सिद्दीकी करते थे। इसके अलावा, यह भी आरोप लगाया गया है कि नियमित प्रक्रिया के तहत फर्जी मरीजों को वाउचर के बदले नकद भुगतान जारी किए जाते थे।

गणतंत्र दिवस से पहले दिल्ली में आतंकी हमले की साजिश

खालिस्तानी व कट्टरपंथी हैंडलरों के लिए काम कर रहे पंजाब के गैंगस्टर, कर सकते हैं वारदात

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। खुफिया एजेंसियों ने गणतंत्र दिवस से पहले दिल्ली में आतंकी हमले की आशंका को लेकर अलर्ट जारी किया है। खुफिया ब्यूरो (आईबी) के सूत्रों के अनुसार, प्रतिबंधित खालिस्तान समर्थक संगठन और बांग्लादेश स्थित आतंकी संगठन 26 जनवरी से पहले नई दिल्ली समेत देश के कई अन्य शहरों को निशाना बनाने की नापाक कोशिश कर सकते हैं।

सूत्रों के अनुसार, पंजाब के कुछ गैंगस्टर विदेश से संचालित खालिस्तान समर्थक और कट्टरपंथी हैंडलरों के लिए काम कर रहे हैं। ये हैंडलर अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने और देश की आंतरिक सुरक्षा में सेंध लगाने के लिए आपराधिक नेटवर्क का इस्तेमाल कर रहे हैं। ये गैंगस्टर हरियाणा, दिल्ली-एनसीआर, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में सक्रिय हैं और धीरे-धीरे खालिस्तानी आतंकी संगठनों से संपर्क बढ़ा रहे हैं।

दिल्ली में 10 नवंबर, 2025 को लाल किला के पास कार के जरिये किए गए आत्मघाती आतंकी हमले में 15 लोगों की मौत हुई थी।

26 जनवरी को इंडिया गेट के सामने कर्तव्य पथ पर होने वाली गणतंत्र दिवस परेड से पहले दिल्ली पुलिस ने संवेदनशील और भीड़भाड़ वाले इलाकों में मॉक ड्रिल की।

संवेदनशील इलाकों में की गई मॉक ड्रिल

लालकिला, आईएसबीटी कश्मीरी गेट, चांदनी चौक, मेट्रो स्टेशनों, सदर बाजार, खरी बावली पर भी मॉक ड्रिल की गई। इसका मकसद आतंक हमलों को रोकने की तैयारियों की जांच और संबंधित एजेंसियों, आम लोगों को सतर्क करना था।

पत्नी ने प्रेमी संग रची थी पति की हत्या की साजिश, दोनों पकड़े

बुलंदशहर। खुर्जा नगर थाना क्षेत्र में 8 जनवरी को मिले अज्ञात शव की गुत्थी पुलिस ने सुलझाते हुए मृतक की पत्नी और उसके प्रेमी को गिरफ्तार कर लिया है। जांच में सामने आया कि पत्नी ने ही अपने प्रेमी के साथ मिलकर पति को रास्ते से हटाने की साजिश रची थी। पुलिस ने आरोपियों की निशानदेही पर हत्या में इस्तेमाल किया गया गमछा और खून से सनी ईंट बरामद कर ली है मामले का खुलासा कर एसपी सिटी शंकर प्रसाद ने बताया कि 8 जनवरी को खुर्जा के अगवाल फाटक के पास एक अज्ञात व्यक्ति का शव मिला था। शव की शिनाख्त न होने पर पुलिस के लिए यह मामला एक बड़ी चुनौती बन गया था। एसएसपी के निर्देश पर स्वाट टीम और खुर्जा नगर पुलिस को तफ्तीश में लगाया गया। पुलिस ने शव की पहचान के लिए दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के कई जिलों में करीब 2,000 पर्चे बंटवाए और सैकड़ों सीसीटीवी फुटेज खंगालीं। संवाद

दिल्ली में 2.89 करोड़ का सोना व 8.77 करोड़ का गांजा जब्त

दिल्ली हवाईअड्डे पर कार्रवाई, पांच गिरफ्तार

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। नई दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सीमा शुल्क विभाग ने तस्करी के खिलाफ दो बड़ी कार्रवाइयां की हैं। अधिकारियों ने तीन म्यांमार नागरिकों और दो भारतीयों को गिरफ्तार किया है। पहली घटना में, 14 जनवरी को यांगून से आए तीन म्यांमार नागरिकों के पास से 2158 ग्राम सोना बरामद किया गया। जब्त किए गए 13 सोने के बिस्कुट की कीमत 2.89 करोड़ रुपये आंकी गई है। इन्हें सीमा शुल्क अधिनियम के तहत गिरफ्तार किया गया है। दूसरी कार्रवाई में, बैंकॉक से आए दो भारतीय यात्रियों के पास से 8.77 किलोग्राम गांजा बरामद हुआ। ग्रीन चैनल पर संदेह होने पर उनके ट्रॉली बैग की एक्स-रे जांच की गई। इसमें नौ पॉलीथीन पाउच में छिपाकर रखा गया मादक पदार्थ मिला। अंतरराष्ट्रीय बाजार में इसकी कीमत लगभग 8.771 करोड़ रुपये है। आरोपियों को एनडीपीएस अधिनियम के तहत गिरफ्तार किया गया है। इसके साथ ही मामले में आगे की कार्रवाई जारी है।

यमुना एक्सप्रेसवे पर कोहरे में वाहनों को रोका गया

यमुना सिटी। यमुना एक्सप्रेसवे पर शनिवार सुबह घना कोहरा छा गया। दृश्यता शून्य होने के बाद सुरक्षा कारणों से ट्रक और ट्रैक्टर सहित बड़े वाहनों को जन सुविधा केंद्रों पर रोककर 60-60 के समूह में आगे बढ़ाया गया। एक्सप्रेसवे प्रबंधन ने जगह-जगह दस मोबाइल डिस्प्ले बोर्ड लगाए हैं, जिन पर सुरक्षित ड्राइविंग के संदेश प्रदर्शित किए जा रहे हैं। टोल प्लाजा और प्रवेश-निकास मार्गों पर भी डिजिटल बोर्ड लगाए गए हैं ताकि वाहन चालकों को लगातार सतर्क किया जा सके। एक्सप्रेसवे प्रबंधन ने बताया कि मौके पर अवैध रूप से खड़े वाहनों को हटाया गया और टोल पर लाउडस्पीकर से चेतावनी दी जा रही है। चालकों को सुरक्षित ड्राइविंग संबंधी पंफलेट वितरित किए जा रहे हैं, वाहनों के पीछे रिफ्लेक्टिव टेप लगाए जा रहे हैं। संवाद

कोहरे के बीच डिवाइडर से टकराई कार, एक की मौत और तीन घायल

मुरादनगर। घने कोहरे के बीच कार डिवाइडर से टकराने के चलते हरियाणा के रोहतक से बहन की शादी के लिए घर आ रहे युवक की मौत हो गई। हादसे में मृतक के दो भाई और भतीजा गंभीर रूप से घायल हुए हैं। तीनों का अस्पताल में उपचार चल रहा है। घटना ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे पर शुक्रवार रात मिलक चाकरपुर गांव के पास हुई।

मूल रूप से रामपुर जिले के स्वार स्थित रसूलपुर मोहल्ला निवासी शोहराब अली (28) रोहतक में वेल्डिंग का कार्य करते थे। उनका सगा भाई शादाब, ममेरा भाई अजीम और भतीजा जैद भी साथ रहते थे। शोहराब के बड़े भाई इफ्तिकार ने बताया कि 19 जनवरी को उनकी बहन की शादी है। इसी में शामिल होने के लिए चारों शुक्रवार दोपहर रोहतक से कार में सवार होकर घर के लिए निकले थे। रात करीब 11 बजे उनकी कार ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे पर मिलक चाकरपुर गांव के पास पहुंची। वहां पेट्रोल पंप के पास कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, इस दौरान घना कोहरा छाया हुआ था। डिवाइडर की टक्कर से कार का पिछला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। शोहराब पीछे की सीट पर उसी तरफ बैठे हुए थे। इससे वह बुरी तरह लहूलुहान हो गए और मौके पर ही दम तोड़ दिया। संवाद

30 झांकियां दिखाएंगी देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, विकास और ऑपरेशन सिंदूर का शौर्य

गणतंत्र दिवस परेड : वंदे मातरम और आत्मनिर्भर भारत की थीम बढ़ाएगी उत्साह

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। गणतंत्र दिवस परेड में इस बार कर्तव्य पथ पर 30 झांकियां निकलेंगी, जो देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विकास की उपलब्धियों की झलक दिखाएंगी।

इनमें से 17 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की होंगी जबकि 13 अलग-अलग मंत्रालयों, विभागों और सेवाओं की होंगी। ये झांकियां स्वंत्रता का मंत्र- वंदे मातरम और समृद्धि के मंत्र- आत्मनिर्भर भारत की थीम पर आधारित होंगी, जो राष्ट्रीय गीत के 150 साल पूरे होने का भी प्रतीक है। इन झांकियों के साथ 2500 से अधिक कलाकार पस्तुति भी देंगे। असम की झांकी में शिल्प गांव आशीरकंडी की झलक दिखेगी जबकि गुजरात और छत्तीसगढ़ की झांकी वंदे मातरम थीम पर आधारित होगी।

महाराष्ट्र आत्मनिर्भरता के प्रतीक के रूप में गणेशोत्सव को दिखाएगा और पश्चिम बंगाल स्वतंत्रता आंदोलन में बंगाल की भूमिका को दर्शाएगा।

ओडिशा की मिट्टी से सिलिकॉन झांकी परंपरा में निहित विकास को दिखाएगी।

परंपरा और नवाचार की झलक

तमिलनाडु देश को ईवी मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में उभरते हुए पेश करेगा और केरल अपनी वॉटर मेट्रो और 100 प्रतिशत डिजिटल गवर्नेंस पहल की जानकारी देगा। नागालैंड की झांकी हॉर्नबिल फेस्टिवल को संस्कृति, पर्यटन और आत्मनिर्भरता के प्रतीक के रूप में दिखाएगी।

ऑपरेशन सिंदूर का दिखेगा शौर्य : सैन्य मामलों का विभाग ऑपरेशन सिंदूर पर तीनों सेनाओं की झांकी पेश करेगा, जो एकजुटता का प्रतीक है। आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय की फूलों वाली झांकी वंदे मातरम के 150 साल पूरे होने की याद दिलाएगी।

देहरा गांव में गला घोंटकर युवक की हत्या

धौलाना। थाना क्षेत्र के गांव देहरा स्थित पचोरियान मोहल्ला में घेर में पशु बांधने के कमरे में सो रहे युवक आमिर (24 वर्ष) की गला घोटकर हत्या कर दी गई। मृतक के गले पर रस्सी से गला कसने के निशान हैं। सुबह परिजन मौके पर पहुंचे तो युवक का शव चारपाई पर पड़ा मिला। मौके पर पहुंची पुलिस और फॉरेंसिक टीम ने जांच की। परिजनों ने गांव के ही एक परिवार पर रंजिशन हत्या का आरोप लगाते हुए तहरीर दी है। हत्या से परिवार में कोहराम मचा है। मृतक के चाचा भूरा ने तहरीर देते हुए बताया कि उनकी भतीजी मुस्काना शनिवार सुबह करीब पांच बजे घेर में पशुओं को चारा डालने गई थी। वहां चारपाई पर सो रहा आमिर उर्फ डैनी अचेत अवस्था में पड़ा था। आवाज लगाने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तो उसने उसे हिलाया, जिस पर वह एक ओर लुढ़क गया। इसके बाद परिजनों को सूचना दी गई। युवक की मौत से परिवार में कोहराम मच गया। आमिर अविवाहित था। संवाद

डिवाइडर से टकराई कार, सिविल इंजीनियर की मौत, एक घायल

गुरुग्राम। डीएलएफ फेज-1 थाना के गोल्फ कोर्स रोड पर मेट्रो स्टेशन के अंडरपास में शुक्रवार की रात को तेज रफ्तार कार डिवाइडर से टकरा गई। हादसे में सिविल इंजीनियर की मौत हो गई, जबकि एक अन्य युवक गंभीर रूप से घायल होने पर आईसीयू में भर्ती है। वहीं, एयरबैग खुलने से चालक मोहित व अगली सीट पर बैठे बिलाल को हल्की चोटें आईं। डीएलएफ फेज-1 थाने की पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को उपचार के लिए निजी अस्पताल पहुंचाया। जहां एक युवक को डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। वहीं मिथिलेश को आईसीयू में भर्ती किया गया है।

मृतक की पहचान सीकर (राजस्थान) के फतेहपुर गांव निवासी अनिल के रूप में हुई है। एक महीने के बाद उसकी शादी होने वाली थी। वह उद्योग विहार स्थित निजी कंपनी में सिविल इंजीनियर था और उसी कंपनी में मिथिलेश, मोहित व बिलाल भी नौकरी करते थे। शुक्रवार की रात को मिथिलेश, मोहित व अनिल अपने साथी बिलाल को होंडा सिटी कार से फरीदाबाद छोड़ने के लिए जा रहे थे। कार को मोहित चला रहा था और अनिल व मिथिलेश कार में पीछे बैठे थे। बताया जा रहा है कि गाड़ी तेज रफ्तार में थी और कार जब रात करीब 1 बजे गोल्फ कोर्स रोड के अंडरपास में पहुंची तो अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। ब्यूरो

हादसे के बाद सड़क पर उतरे कई सोसाइटी के निवासी

नोएडा। घने कोहरे और खराब दृश्यता के कारण सेक्टर 150 मोड़ पर शुक्रवार रात हुए हादसे के बाद आसपास की कई सोसाइटी निवासी सड़क पर उतरे। निवासियों ने प्रदर्शन करते हुए जिम्मेदारों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की और उनके खिलाफ कार्रवाई के लिए नजदीकी थाने भी पहुंचे। लोगों ने कहा कि पानी के भराव से सेक्टर में खतरा बना हुआ है और इससे बीमारियां भी फैल रही हैं।

लोगों ने हादसे के जिम्मेदारों के खिलाफ कार्रवाई की मांग

सेक्टर 150 में शाम होते ही टाटा यूरेका पार्क, एल्डिको, एटीएस ली ग्रैंडियोज, गोदरेज, समृद्धि समेत अन्य सोसाइटी निवासियों ने सड़क का घेराव कर प्रदर्शन किया। इस दौरान लोगों ने जिला प्रशासन, नोएडा प्राधिकरण और जनप्रतिनिधियों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। बिल्डर और प्रशासन की मिलीभगत के आरोप भी लगाए। प्रदर्शन में मौजूद डिलिवरी बॉय ने बताया कि पानी में गाड़ी गिरने के बाद दो घंटे तक युवक ने राहगीरों से मदद मांगी थी लेकिन कोई भी उसे बचाने नहीं आया। जबकि वहां पर रेस्क्यू करने की टीम मौजूद थी और सेफ्टी जैकेट भी थी। उनका कहना था कि पानी ठंडा है और सरिये भी लगने का डर है। इसी बीच डिलिवरी बॉय अपने कपड़े उतारकर अंदर गया और 40 मिनट तक पानी में लड़के को ढूंढा लेकिन वह कहीं नहीं मिला। ब्यूरो

कार्यालय अधीक्षण अभियंता
लोक निर्माण विभाग (भ/स) अम्बिकापुर मण्डल अम्बिकापुर

निविदा आमंत्रण तिथि: 15.01.2026
ई-प्रोक्योरमेंट निविदा सूचना

01. निविदा की विस्तृत जानकारी के लिये Log in करें http://eproc.cgstate.gov.in
02. संबंधित संभाग- मनेन्द्रगढ़ संभाग
03. स.क्र. 1 'स' वर्ग एवं ऊपर ठेकेदार
04. ऑनलाईन निविदा डालने की अंतिम तिथि स.क्र. 1-30.01.2026

सरल क्र.	एन.आई.टी. क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में)
1	2	3	4
1	232	व्यवहार न्यायालय जनकपुर के तृतीय श्रेणी कर्मचारियों हेतु 02 नग 'जी' टाईप एवं 07 नग 'एच' टाईप शासकीय आवास गृह निर्माण कार्य विद्युतीकरण सहित। (द्वितीय आमंत्रण)	129.70

अधीक्षण अभियंता
लोक निर्माण विभाग
अम्बिकापुर मण्डल अम्बिकापुर

G-252606100/1

NAGAR NIGAM, GORAKHPUR

No. 171/AMC/NNG/2025-26 Dated: 17.01.2026

Request for Proposal (RFP)

Nagar Nigam, Gorakhpur invites item Bids for the work mentioned below through e-Procurement in conformity with the terms and conditions of this advertisement and the detailed RFP notice in two Bid system from intending bidders fulfilling the eligibility criteria mentioned in this Notice and other qualifying requirements mentioned in this RFP. Bidders can participate in the bidding after registering them on E- tendering portal **http://etender.up.nic.in**. Bidder can download the RFP from **http://etender.up.nic.in** after paying the tender cost through online payment in the name of Nagar Nigam Gorakhpur.Bank Name- IDFC First Bank. Account No.- 10174963707 (IFSC Code- IDFB0021561). Bidders will have to upload the scanned copy of transaction slip along with technical bid failing this; the Bid is liable to be rejected. The Bidder should deposit the Earnest Money online in above mentioned account. The bidders should have necessary Portal enrollment (Digital Signature Certificate) under e-procurement process of Govt. of Uttar Pradesh in required class/category. In case of any queries on this RFP, intending bidders may contact GM Jalkal, Nagar Nigam, Gorakhpur **(Tel. No:-8810709322)**

S. No.	Name of the Work	RFP Cost with GST	EMD (Rs.)
1	Selection of Consultant for providing Transaction Advisory Services for Urban Flood within Management Works at critical and flood-prone zones Gorakhpur Urban city with a focus on integrated storm water drainage planning, nature-based solutions and sustainable urban water infrastructure development.	5900.00	1,00,000.00

Time Schedule for Bidding:

S.No.	Description	Date
1	Start date of RFP document download	17.01.2026
2	Last date of Online submission of proposal	27.01.2026 @ 05:00 PM
3	Opening of Technical proposal	28.01.2026 @ 11:00 AM
4	Opening of Financial proposal	Will be communicate

1. Other details can be seen on website **http://etender.up.nic.in** (for view, download and bidding).
2. Subsequent corrigendum, if required, shall appear in these websites.
3. Municipal Commissioner, Gorakhpur reserves the right to reject any or all the tenders without assigning any reasons.
4. Contractor who wants to participate in bid must register themselves on **http://etender.up.nic.in.**

Additional Municipal Commissioner Nagar Nigam, Gorakhpur
Municipal Commissioner Nagar Nigam, Gorakhpur

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
निर्माण कार्य हेतु निविदा सूचना

निविदा क्रमांक: सी.ए.ओ./सी/बीएसपी/25–26/21 दिनांक 01–01–2026 (ओपन टेंडर–टू पैकेट सिस्टम)
कार्य : सारागांव स्टेशन पर पुल संख्या 46 के निरीक्षण क्रैडल का निर्माण, अकलतरा स्टेशन पर प्लेटफॉर्म का संशोधन/निर्माण और अकलतरा और सारागांव स्टेशन के बीच चौथी लाईन के निर्माण से संबंधित शेष अन्य कार्य।
निविदा मूल्य: 10,67,12,455.82/-. (दस करोड़ सड़सठ लाख बारह हजार चार सौ पचपन रूपये और बियासी पैसे) मात्र। अमानत राशि: ₹ 6,83,600.00/-. (छः लाख तिरासी हजार छः सौ रूपये मात्र), निविदा दस्तावेज की लागत : शून्य, कार्य पूरा होने की अवधि: 09 (नौ) महीने स्वीकृति पत्र प्राप्त होने की तिथि से। निविदा बंद होने का समय एवं दिनांक: 23–01–2026 को 15.00 बजे तक, निविदा खोलने होने का समय एवं दिनांक: 23–01–2026 को 15.30 बजे।
विस्तृत जानकारी/निविदा दस्तावेज पात्रता का मापदंड तथा अन्य विस्तृत विवरण हेतु मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) द.पू.म. रेलवे बिलासपुर पिन–495004, अथवा उप मुख्य अभियंता (निर्माण) दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर पिन–492009 अथवा मुख्य परियोजना प्रबंधक/पश्चिम/निर्माण/नागपुर दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे नागपुर पिन–440001 के कार्यालय में संपर्क करें अथवा निविदा कागजात, जो हमारी वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है उसे डाउन लोड कर/देख सकते हैं।

उप मुख्य अभियंता/निर्माण
सीपीआर/10/FL/588 द.पू.म. रेलवे, बिलासपुर
South East Central Railway @secrail

उस्तरा

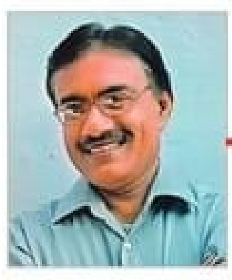

राकेश सोहम

क्या कहिए

चूहामुखी विकास हो रहे, क्या कहिए,
योजनाओं में छिद्र हो रहे, क्या कहिए।
रंगे हाथ वो पकड़े जाते, पक्का ही
पुलिस वाले हाथ धो रहे, क्या कहिए।
जंगल काटे, पंछी बेघर कर डाले,
गमलों में सुनसान बो रहे, क्या कहिए।
दिनदहाड़े लूट मची है, हिम्मत देखो
आदमी भी शैतान हो रहे, क्या कहिए।
फेसबुकी शान, आत्मप्रवंचना ज्ञान
हर कवि रसखान हो रहे, क्या कहिए।
बड़बोलों की चल निकली है, 'सोहम' जी
सीधे ही बदनाम हो रहे, क्या कहिए।

छेदीलाल बने 'शुभारंभ' मंत्री

नेता जी की गिड़गिड़ाहट पर छेदीलाल 'मर्सी' दिखाते हुए डिप्टी से खिसककर कैबिनेट पद पर अड़ गए। तब नेता जी के दिमाग में एक नायाब आइडिया कौंधा। बोले, "आपके लिए नया काबीना मंत्रालय बना रहे हैं- 'शुभारंभ' मंत्रालय! देश सेवा का शानदार अवसर दे रहे हैं!"

चुनाव हुए और परिणाम आए तो छेदीलाल की बाछें खिल गईं। पत्नी को गोद में उठाकर हिनहिनाए, "तू कहती थी न, निर्दलीय जीत भी गए तो कीमत रहेगी दो कौड़ी की ही। अब देखना कि कीमत दो कौड़ी की रहती है या दो करोड़ की।"

छेदीलाल के मन में कैबिनेट मंत्री बनने की इच्छा शिद्दत से फुफकार रही थी। वजह दो थीं। सामाजिक रुतबा तो बढ़ेगा ही, पैसा भी खटाखट आएगा। पचास 'पेटी' के डोनेशन पर कोई भी बड़ी पार्टी टिकट दे देती। पर खटका यह था कि चुनाव जीत गए तो पार्टी पुराने कैडरों के रूबरू उनके जैसे नए रंगरूट को कैबिनेट में एंट्री देगी भी!

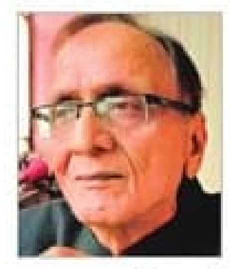

महावीर राजी

चुनाव मैदान में दो प्रमुख गठबंधन थे और तस्वीर ऐसी बन रही थी कि शायद ही किसी को बहुमत मिले। छेदीलाल ठहरे पक्के बनिया। दो दिन और तीन रात के गंभीर चिंतन के बाद उन्होंने रिस्क लेते हुए गठबंधनहीन निर्दलीय पर दांव लगा दिया। परिणाम सचमुच वैसा ही आया, जैसा सोचा था। 'हंग' असेंबली! सबसे बड़े दल के रूप में उभरे 'दलदल' गठबंधन को बहुमत के लिए पांच 'घोड़ों' की जरूरत थी। चार जुगाड़ लिए गए थे। पांचवें बस छेदीलाल बचे। छेदीलाल मंजे खिलाड़ी के अंदाज में शहर के पांच तारा होटल के 'कोप भवन' में जा बैठे। दलदल पार्टी के घोषित मुख्यमंत्री को वहां आना पड़ा। कॉफी सुड़कते हुए नेता जी ने छेदीलाल की आंखों में झांका- वहां अरबी घोड़ा बिकने को फड़फड़ा रहा था। स्पष्ट पूछ लिया, "सूटकेस कितने का?" वह हंसे, "नो सूटकेस! डिप्टी सीएम का पद चाहिए।" नेता जी की त्योरियां चढ़ गईं। साथियों के रूठने-मनाने के चक्कर में पहले ही जंबो मंत्रिमंडल आकार ले चुका, तीन-तीन उपमुख्यमंत्री बनाने पड़े! एक-एक मंत्रालय को विखंडित करके दो काबीना पद सृजित हुए। अब तो डिप्टी सीएम क्या, कोई काबीना पद भी मुश्किल है! लिजलिजी मुस्कान बिखेरकर बोले, "सॉरी, डिप्टी क्या, कोई काबीना पद भी मुश्किल है महाराज! चलिए, 50 पेटी पर समर्थन दे दें।" छेदीलाल मन में मुस्काए कि मंत्री पद मिला तो 50 पेटी क्या, 50 करोड़ खटाखट खिंचे आएंगे। रुतबा बढ़ेगा, सो अलग। प्रकट में नकार में मुंडी हिला दी। सौदेबाजी सवा चार घंटे चली। नेता जी की गिड़गिड़ाहट पर छेदीलाल 'मर्सी' दिखाते हुए डिप्टी से खिसककर कैबिनेट पद पर अड़ गए। लास्ट एंड फाइनल!

खुद नेता जी के लिए सीएम का प्रस्ताव छींका टूटने जैसा था। अप्रत्याशित! इस छींके को लपकने का नायाब मौका कैसे छोड़ दें। दूसरे साथियों को दिया मंत्रालय वापस मांगा तो बवाल मचना तय है। अब! सारी रात छेदीलाल पर लानत के कोड़े बरसाते रहे। दो कौड़ी का निर्दलीय भावी सीएम को ब्लैकमेल कर रहा है! भोर होते ही एक नायाब आइडिया खट से दिमाग में कौंधा। दौड़ते-भागते छेदीलाल के कोपभवन पहुंचे, "आपके लिए नया काबीना मंत्रालय बना रहे हैं- 'शुभारंभ' मंत्रालय! विशुद्ध हिंदी नामकरण! हमारी सरकार पब्लिक कारखाना हो या मेट्रो स्टेशन, हाईवे, प्राइवेट ब्यूटी पार्लर हो, मॉल हो या शोरूम, सभी नए उपक्रमों के उद्घाटन न्योतों को पूरी निष्ठा से स्वीकार करेगी। उनके 'शुभारंभ' का जिम्मा आपके मंत्रालय पर रहेगा। देश लूटने, सॉरी, देश सेवा का शानदार अवसर दे रहे हैं! सरकार की नाक नीची न होने पाए।"

बात-बेबात

सरकार बन गई। छेदीलाल कैबिनेट मंत्री बनकर ही रहे- 'शुभारंभ' मंत्री। एसपीजी एस्कॉर्ट, शनदार कोठी, लाल बत्ती गाड़ी, एक झटके में फर्श से अर्श पर! शपथ लेने के बाद पहला प्रोजेक्ट! पुराने मोहल्ले के उनके लंगोटिया यार भगेलू साव 'सोमरस' शॉप खोल रहे थे। आम मित्र ने खास मित्र को उद्घघाटन के लिए निमंत्रित किया। छेदीलाल सायरन बजाते पूरे लाव-लश्कर के साथ आए। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच फीता काटा और भीतर प्रवेश कर यार के संग एक पैग भी लिया। जाते वक्त पूर्व निर्देश के अनुसार भगेलू ने भरे मन से पीए के हाथ में चुपके से एक लिफाफा थमाया। यार है तो क्या 'फीस' में कैसी रियायत। सोमरस शॉप और खटाखट आय, दोनों का शुभारंभ हो गया।

चूरण

गोलू : डॉक्टर साहब, क्या आप
मेरी बीमारी का पता लगा सकते हो?
डॉक्टर : हां, आपकी आंखें
बहुत कमजोर हैं!
गोलू : इतनी जल्दी आपको
कैसे पता चल गया?
डॉक्टर : क्योंकि तुमने बाहर
बोर्ड पर नहीं पढ़ा कि
मैं जानवरों का डॉक्टर हूं!

सुबह-सुबह चिंटू एक आदमी को
लात-घूंसों से पीट रहा था,
लोगों ने आश्चर्य से पूछा,
"अजी क्या हुआ, चिंटू?"
चिंटू ने गुस्से में तमतमाते हुए कहा,
"इसको मैंने कुछ रुपये उधार दिए थे,
मैं जब भी अपने रुपये मांगने जाता
तो यह कहता कि
पत्नी फिलहाल हॉस्पिटल में है,
मैं कुछ न बोल पाता,
लेकिन आज पता चला
कि इसकी पत्नी नर्स है,
यह दो साल से उल्लू बना रहा है!"

फुटनोट की महिमा, नाटे को कर दे लंबा

यदि आप उच्चकोटि का साहित्यिक लेख लिखना चाहते हैं तो उसमें फुटनोट और उद्धरण अवश्य दीजिए।

देखिए, आपने यह आलोचनात्मक लेख लिखा जरूर है, पर फुटनोट के अभाव में यह बिल्कुल बेकार है। आपकी बातों को फुटनोट के अभाव में सही कौन मानेगा? इसके बिना आपके कथन ऐसे ही निरर्थक हैं, जैसे अदालत में दिए गए वे बयान, जिनको सबूत पेश करके पुष्ट न किया जाए।

यदि आप उच्चकोटि का साहित्यिक लेख लिखना चाहते हैं तो उसमें फुटनोट और उद्धरण अवश्य दीजिए। प्रतिपादन की सच्चाई सिद्ध करने में इनका जहां उपयोग होगा, वहीं इनसे यह भी लाभ होगा कि आपको कम लिखना पड़ेगा और लेख लंबा हो जाएगा। जब तक लेख लंबा न हो, तब तक विद्वता की धाक नहीं जमती। फुटनोट से युक्त लेख इस बात का परिचायक होता है कि आपका अध्ययन गहरा और विस्तृत है। मौलिक कुछ भी लिखने की क्षमता आपमें न हो तो भी फुटनोटों और उद्धरणों के सहारे आप एक सशक्त लेखक बन सकते हैं। हां, इधर-उधर की सामग्री बटोरने और उसे एक रूप-ढंग से पेश करने की चातुरी आपमें अवश्य होनी चाहिए।

शंकर पुणतांबेकर

इधर-उधर से

फुटनोट पेड़ की जड़ की तरह है। जड़ पेड़ को मजबूत बनाती है, फुटनोट लेख को। इसके विस्तार से ही लेख मजबूत होगा।

फुटनोट पेड़ की जड़ की तरह है। जड़ पेड़ को मजबूत बनाती है, फुटनोट लेख को। इसका जितना अधिक विस्तार होगा, लेख उतना ही मजबूत होगा। फुटनोट का स्ट्रक्चर यदि मूल लेख से बड़ा हो जाए तो डरिए नहीं। मैंने पत्रिकाओं में ऐसे लेख देखे हैं, जिनके फुटनोट लंबे और मूल लेख आकार में नाटे हैं। एक-एक पृष्ठ पर मूल लेख की सिर्फ आठ-दस पंक्तियां और पृष्ठ के शेष हिस्से में फुटनोट। ऐसे पृष्ठ देखकर मुझे लेख की उच्चता उन लोगों की भांति प्रतीत होती है, जो समाज में अपनी ऊंचाई कोठी आदि की ऊंचाई से बढ़ा लेते हैं।

यह भी ध्यान रखिए, जिस भांति पतंग की पूंछ, जो मूल पतंग से लंबी होती है, पतंग को आकाश में ठीक से बनाए रखने में सहायक होती है, उसी भांति फुटनोट की लंबी पूंछ आपके लेख को साहित्याकाश में उचित स्थान पर बनाए रखेगी।

('अंगूर खट्टे नहीं हैं' संग्रह के 'फुटनोट' व्यंग्य लेख से)

आड़े-तिरछे

रेखांकन : दुर्गादत्त पांडेय

Job Alert

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

यूपीएसएसएससी ने जारी किया विज्ञापन

लेखपाल के पदों पर रिक्तियां

7994 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 28 जनवरी, 2026
वेतनमान : रुपये 21,700 से लेकर रुपये 69,100 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें : upsssc.gov.in

सीएससीएसपीवी में संभावनाएं ■ 282 पद

सुपरवाइजर और ऑपरेटर के पदों पर संभावनाएं
आवेदन की अंतिम तिथि
31 जनवरी, 2026
योग्यताएं
दसवीं, बारहवीं व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
cscspv.in

एनसीईआरटी में आवेदन आमंत्रित ■ 173 पद

बिजनेस मैनेजर, प्रोडक्शन ऑफिसर आदि के पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि
30 जनवरी, 2026
योग्यताएं
स्नातक, स्नातकोत्तर व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
ncert.nic.in

बैंक ऑफ महाराष्ट्र में रिक्तियां ■ 600 पद

अप्रेंटिसशिप के लिए योग्य उम्मीदवार करें आवेदन
आवेदन की अंतिम तिथि : 25 जनवरी, 2026
आयु-सीमा : न्यूनतम 20 वर्ष व अधिकतम 28 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें : bankofmaharashtra.bank.in

बीपीएससी ने जारी किया विज्ञापन ■ 64 पद

हवलदार क्लर्क के पदों पर आवेदन आमंत्रित
आवेदन की अंतिम तिथि
02 फरवरी, 2026
आयु-सीमा
न्यूनतम आयु 18 वर्ष व अधिकतम आयु 37 वर्ष
यहां आवेदन करें
bpssc.bihar.gov.in

नालको में रोजगार के अवसर ■ 48 पद

मैनेजर के पदों पर योग्य उम्मीदवार करें अप्लाई
आवेदन की अंतिम तिथि
02 फरवरी, 2026
पात्रताएं
इंजीनियरिंग व अन्य निर्धारित योग्यताएं
यहां आवेदन करें
nalcoindia.com

योग्य उम्मीदवार करें आवेदन ...

- आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान : रजिस्ट्रार का पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 28 फरवरी, 2026
- aries.res.in
- भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण : व्यक्तिगत सहायक का पद रिक्त।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 30 जनवरी, 2026
- iwai.nic.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

SCHOLARSHIP ALERT

जीएसके ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर स्कॉलरशिप

ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर की ओर से जीएसके ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर स्कॉलरशिप प्रोग्राम 2025-26 की शुरुआत की जा रही है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत भर के सरकारी कॉलेजों में एमबीबीएस डिग्री के प्रथम वर्ष में अध्ययनरत छात्रों को सहायता प्रदान करना है। यह स्कॉलरशिप प्रतिभाशाली मेडिकल छात्रों को वित्तीय तनाव से मुक्त होकर अपनी शिक्षा जारी रखने में मदद करती है और शैक्षणिक खर्चों को कम करने का अवसर देती है। आवेदन करने के लिए आवश्यक है कि आवेदकों ने कक्षा बारहवीं की बोर्ड परीक्षा में न्यूनतम 65 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों और उनकी पारिवारिक वार्षिक आय सभी स्रोतों को मिलाकर 6,00,000 रुपये से कम हो। चयनित छात्रों को साढ़े चार वर्षों के लिए प्रति वर्ष 1,00,000 रुपये तक की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। आवेदन के लिए छात्रों के पास कक्षा दसवीं और बारहवीं की मार्कशीट, प्रथम वर्ष एमबीबीएस की सभी फीस की भुगतान रसीद, आय प्रमाण-पत्र और अन्य निर्धारित दस्तावेज होने चाहिए।

- **आवेदन की अंतिम तिथि :** 20 जनवरी, 2026
- **आवेदन लिंक :** tinyurl.com/bmytupd5

2,000 डॉलर का वजीफा पाने का मौका

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (आईआईआईटी), हैदराबाद, एमजेन इंडिया और हार्वर्ड विश्वविद्यालय एमजेन स्कॉलर्स प्रोग्राम-2026 के लिए आवेदन आमंत्रित कर रहे हैं। इस कार्यक्रम के लिए आवेदक को एशियाई देशों के किसी विश्वविद्यालय में स्नातक (या समकक्ष) कार्यक्रम में नामांकित होना चाहिए, और 7 जून, 2026 तक स्नातक अध्ययन का कम से कम एक वर्ष पूरा कर चुके हों। किसी भी विषय में अध्ययन किया जा सकता है, लेकिन गणित विषय अनिवार्य है। आवेदक को 7 जून से 6 अगस्त, 2026 तक पूर्णकालिक उपस्थित रहना होगा और इस अवधि में कोई अन्य कार्य नहीं करना होगा। चयन योग्यता और शैक्षणिक क्षमता के आधार पर किया जाएगा। चयनित उम्मीदवारों को 2,000 अमेरिकी डॉलर का वजीफा और अन्य लाभ मिलेंगे। आवेदन के लिए बायोडाटा, उद्देश्य कथन, संस्थान द्वारा जारी आधिकारिक प्रमाण पत्र और दो संदर्भ पत्र आवश्यक हैं, साथ ही अंग्रेजी भाषा में अच्छा कार्यसाधक ज्ञान होना चाहिए।

- **आवेदन की अंतिम तिथि :** 26 जनवरी, 2026
- **आवेदन लिंक :** amgenscholars.iiit.ac.in/index.html

जेएन टाटा एंडोमेंट की पहल

जेएन टाटा एंडोमेंट की ओर से जेएन टाटा एंडोमेंट लोन स्कॉलरशिप प्रोग्राम के लिए छात्रों से आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। प्रत्येक वर्ष साइंस, मैनेजमेंट, लॉ, कॉमर्स और फाइन आर्ट्स जैसे विभिन्न क्षेत्रों से 100 से अधिक विद्यार्थियों का चयन किया जाता है। इस स्कॉलरशिप के लिए आवेदन करने हेतु आवेदकों का किसी मान्यता प्राप्त भारतीय विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त होना आवश्यक है, साथ ही स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर पर न्यूनतम 60 प्रतिशत अंक होने चाहिए। इसके अतिरिक्त, 30 जून, 2026 तक आवेदक की आयु 45 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। चयनित छात्रों को 20,00,000 रुपये तक की लोन स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी। आवेदन के लिए मार्कशीट, आधार कार्ड, एसओपी, आय प्रमाण-पत्र सहित अन्य निर्धारित दस्तावेज अनिवार्य होंगे। आवेदन केवल ऑनलाइन माध्यम से स्वीकार किए जाएंगे।

- **आवेदन की अंतिम तिथि :** 15 मार्च, 2026
- **आवेदन लिंक :** tinyurl.com/39twvr8d

आज का दिन

18 जनवरी, 1778

ब्रिटिश खोजकर्ता जेम्स कुक ने 'हवाई द्वीपसमूह' की खोज की थी। उन्होंने इस द्वीपसमूह का नाम 'सैंडविच आईलैंड' रखा था। इसके बाद वे काउई द्वीप पहुंचे और स्थानीय लोगों के साथ व्यापार किया।

- **1862 :** अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जॉन टायलर का वर्जीनिया में निधन हुआ था।
- **1882 :** ब्रिटेश लेखक एए मिल्ने का जन्म लंदन में हुआ था।
- **1958 :** विली ओ'री नेशनल हॉकी लीग में खेलने वाले पहले अश्वेत हॉकी खिलाड़ी बने थे।
- **2002 :** पश्चिम अफ्रीकी देश सिएरा लियोन में गृह युद्ध समाप्त हुआ था।

व्रत त्योहार

आज : माघ अमावस्या। **कल :** गुप्त नवरात्र विधान प्रारंभ, शिशिर ऋतु, सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोले।
राहुकाल : प्रातः 07.30 से 09.00 तक

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2082, 29 पौष मास शक 1947, माघ मास 06 प्रविष्टे, 29 रज्जब हिजरी 1447, माघ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा 26.14 तक उपरांत द्वितीया, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र 11.51 तक उपरांत श्रवण नक्षत्र, वज्र योग 20.44 तक उपरांत सिद्धि योग, किन्स्तुघ्न करण 13.47 तक उपरांत बव करण, चंद्रमा मकर राशि में दिन-रात।

सूर्योदय : 07.18
सूर्यास्त : 17.45
(भारतीय मानक समयानुसार)

amarujala.com/astrology

राशिफल

पं. विनोद त्यागी

मेष : मानसिक तनाव बना रहेगा। यात्रा में परेशानी होगी। इच्छापूर्ति में विलंब होगा। संतान से अनबन रहेगी।

वृष : दिनमान प्रतिकूल रहेगा। पूर्व नियोजित कार्यों में विलंब होगा। व्यवसाय में हानि हो सकती है। सेहत नरम रहेगी।

मिथुन : आय का नया स्रोत बन सकता है। घनिष्ठ से भेंट हो सकती है। व्यवसाय में उत्तम धन लाभ होगा।

कर्क : आरोग्य सुख मिलेगा। किसी महिला से अर्थ प्राप्ति संभव है। व्यवसाय में अचानक धन लाभ होगा।

सिंह : मान-सम्मान की चिंता रहेगी। संतान पक्ष से निराशा होगी। यात्रा में परेशानी होगी। आर्थिक चिंतन बना रहेगा।

कन्या : उतावलेपन पर नियंत्रण रखें। स्वजनों से वाद-विवाद हो सकता है। व्यवसाय में सामान्य लाभ होगा।

तुला : मानसिक प्रसन्नता बनी रहेगी। छोटी यात्रा संभव है। सहोदरों का सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा।

वृश्चिक : अध्ययन में अरुचि रहेगी। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। व्यवसाय में लाभ कम होगा। सेहत नरम रहेगी।

धनु : मित्रों का समागम रहेगा। आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। व्यवसाय में लाभ के अवसर मिल सकते हैं।

मकर : बढ़ते व्यय पर नियंत्रण रखें। संतान पक्ष से चिंतित रहेंगे। व्यवसाय में लाभ कम होगा। घर में शांति बनाए रखें।

कुंभ : किसी महत्वाकांक्षा की पूर्ति हो सकती है। आर्थिक स्थिति सुखद रहेगी। भौतिक सुख साधनों पर व्यय होगा।

मीन : पूर्व नियोजित योजना में सफलता मिलेगी। अटके धन की प्राप्ति हो सकती है। व्यवसाय में लाभ होगा।

जन्मदिन

नफीसा अली, अभिनेत्री

इस वर्ष आत्मबल प्रबल रहेगा। बाधाओं से मुक्ति मिलेगी। राजनीतिक क्षेत्र में मान-सम्मान बढ़ेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष महत्वपूर्ण रहेगा। जमीन-जायदाद में वृद्धि के अवसर मिलेंगे। उच्चस्तरीय परीक्षाओं में अनुकूल सफलता मिलेगी। इस वर्ष किसी नए उद्योग का प्रारंभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

सुडोकू

4	8					6		
		1			4		5	
	3	5		2				1
1	6	3						
		2				9		
						7	3	6
8				5		1	7	
	1		2			4		
		7					6	5

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

4	8	9	1	3	5	6	2	7
2	7	1	6	8	4	3	5	9
6	3	5	7	2	9	8	4	1
1	6	3	4	9	7	5	8	2
7	5	2	3	6	8	9	1	4
9	4	8	5	1	2	7	3	6
8	2	4	9	5	6	1	7	3
5	1	6	2	7	3	4	9	8
3	9	7	8	4	1	2	6	5

डेली हेल्थ कैप्सूल

कलौंजी की चाय है बहुत गुणकारी

कलौंजी की चाय में मौजूद गुण डायबिटीज, सूजन, अस्थमा, हड्डियों के दर्द और पेट की समस्याओं में लाभ पहुंचाते हैं।

कलौंजी एक देसी मसाला है, जिसे आयुर्वेद में औषधि रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इसके प्राकृतिक गुण कई स्वास्थ्य समस्याओं में लाभ पहुंचाते हैं। कलौंजी की चाय का सेवन करके भी आप ये लाभ पा सकते हैं। इस चाय में थाइमोक्विनोन नामक एंटीऑक्सिडेंट होता है, जो कोशिका को नुकसान से बचाने में मदद करता है। ये

एंटीऑक्सिडेंट कैंसर, दिल से जुड़ी बीमारियों और डायबिटीज के खतरे को भी कम करता है। कलौंजी की चाय में मौजूद गुण ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में सहायक है। कलौंजी में मौजूद एंटीइंफ्लेमेटरी गुण शरीर में दर्द और सूजन को कम करते हैं। इससे अस्थमा के साथ-साथ हड्डियों के दर्द में आराम मिलता है। यह चाय पाचन क्रिया को तेज करने और गट को स्वस्थ रखने में मदद करती है। अगर आपको पेट में अल्सर या कब्ज है, तो आप इसका सेवन कर सकते हैं। कलौंजी की चाय वजन घटाने और शरीर से विषैले पदार्थों को भी निकालने में सहायक है। कलौंजी की चाय बनाने के लिए पानी में एक चम्मच कलौंजी डालकर आधा रहने तक पकाएं। गुनगुना होने पर इसमें थोड़ा शहद मिलाएं और सेवन करें।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

कलौंजी की चाय के अत्यधिक सेवन से पेट में जलन और गैस हो सकती है। गर्भवती महिलाएं, डायबिटीज और खून पतला करने की दवा लेने वाले सेवन से पहले चिकित्सक की सलाह जरूर लें। -डॉ. नवदीप जोशी, प्राकृतिक चिकित्सक

एक्स से

इस विभाजनकारी दौर में हमारी प्राथमिकता एकता बनाने की होनी चाहिए। अगर हम इंसानियत को सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं देंगे, तो वह सब कुछ खो देंगे, जो हमें मजबूत बनाता है। हमें एकजुट देशों का एक साझा समाज बनाना होगा- एंटोनियो गुटेरस/ संयुक्त राष्ट्र महासचिव

सोशल मीडिया के वक्त में, जब मुंह से निकला महज एक बहका शब्द देश-दुनिया के किसी भी हिस्से में अंगारे बो सकने की कुव्वत रखता हो, तब क्या हमारे नेताओं को देशहित में सोच-समझकर नहीं बोलना चाहिए? वे भूल क्यों जाते हैं? देश किसी भी चुनाव और सत्ता-सदन से बड़ा होता है।

आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

राजनीति का विभाजक एजेंडा

शशि शेखर

आजकल

हमारे वैचारिक आभामंडल को चुनाव की मौसमी छूत ने जकड़ लिया है। एटम बमों के जोर पर ऐंठी इस दुनिया में जब तरह-तरह के पलीते लगाए जा रहे हों, तब हमारे राजनेता क्या कर रहे हैं? वे इस खतरनाक वक्त में देश को एकजुट करने के बजाय विभाजक कुतर्क बुन रहे हैं। उनकी ऐसी हरकतों से यह मुल्क खुद को शर्मसार महसूस करता है।

भरोसा न हो, तो बीएमसी यानी बृहन्मुंबई महानगरपालिका चुनाव पर नजर डाल देखिए। ये वार्ड स्तर के चुनाव थे, लेकिन इसे जीतने के लिए क्या-क्या नहीं किया गया? कल तक जो ठाकरे बंधु एक-दूसरे के खिलाफ थे, वे एकजुट हो गए। राज ठाकरे के भाषणों में शिवसेना का लगभग छह दशक पुराना तमिल विरोध उभर आया। वह तमिलभाषी मुंबइकरों को 'रसमलाई' कह रहे थे। उनके लिए 'लुंगी' और 'पुंगी' जैसे अल्फाजों का इस्तेमाल कर रहे थे। ये शब्द शिवसेना के जनक बालासाहेब ठाकरे के पुराने शब्दकोश से उधार लिए गए थे। बालासाहेब ने 1960-70 के दशक में दक्षिण भारतीयों की खिलाफत अपनी कार्टून साप्ताहिक मैगजीन *मार्मिक* और जनसभाओं के जरिये शुरू की थी। सवाल उठता है, मुंबई के विकास में अगर गैर-मराठी लोगों की सतत भूमिका है, तो फिर वे वहां के हवा-पानी पर हक-हुकूक क्यों नहीं रख सकते? इनमें से तमाम की कई पीढ़ियां यहां खप चुकी हैं। यह 'आमची मुंबई' अब उनका स्थायी पता है।

फिर ऐसा क्यों हो रहा है?

बीएमसी से कहीं 30 साल पुराना प्रभुत्व खत्म न हो जाए, इसलिए ठाकरे परिवार ने बालासाहेब के 'मराठा मानुष' नारे को नए रंग-रोगन के साथ पेश करने की कोशिश की। ठाकरे बंधु राजनीति के प्रचलित भूगोल को अनदेखा कर उस पुराने टोटके पर यकीन कर रहे थे कि भड़की हुई भावनाएं लोगों को एकजुट करती हैं। बिखराव रोकने की बात पर मुझे पवार परिवार याद आ गया। आपको याद होगा कि किस तरह शरद पवार की पार्टी में उनके भतीजे अजीत पवार ने सेंध लगाई थी। बात इतनी बिगड़ गई थी कि उन्होंने अपनी पत्नी सुनेत्रा पवार को चचेरी बहन सुप्रिया सुले के खिलाफ चुनावी मैदान में उतार दिया था। सुप्रिया शरद पवार की पुत्री होने के साथ उनकी सियासी वारिस भी हैं। मतलब साफ है, बीएमसी चुनाव ने वह कर दिखाया, जो लोकसभा और विधानसभा के चुनाव नहीं कर सके।

यह चमत्कार कैसे हुआ?

जवाब दुरूह नहीं है। बीएमसी का सालाना बजट लगभग 75 हजार करोड़ रुपये का है। यह देश की सबसे अमीर नगर इकाई है और इसका बजट नौ राज्यों के सालाना आय-व्यय से ज्यादा है। कभी बालासाहेब ने बृहन्मुंबई महानगरपालिका पर कब्जा कर शिवसेना को यहां तक पहुंचाया था। महाराष्ट्र के इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण महानगर की बादशाहत इस प्रदेश की सियासी दशा-दिशा तय करती है। इस पर कब्जे के लिए राजनीतिक परिवार आपस में लड़ सकते हैं, पुनः जुड़ सकते हैं और जरूरत पड़ने पर दोबारा विभाजित हो सकते हैं। और तो और, पार्टियों के व्हिप तक बिखर सकते हैं। बृहन्मुंबई महानगरपालिका के इन चुनावों में मंत्रालय में साथ बैठने वाली शिवसेना (शिंदे), राष्ट्रवादी कांग्रेस (अजीत) और भाजपा इसीलिए कई क्षेत्रों में आमने-सामने थीं। अंबरनाथ नगरपालिका के अध्यक्ष पद के लिए तो कमाल ही हो गया। भाजपा और कांग्रेस सभासदों ने हाथ मिला लिए। इससे दिल्ली तक हंगामा मच गया था।

इतनी बेमेल संधियों का नतीजा क्या निकला?

भाजपा आगे निकल गई। ठाकरे और पवार परिवारों को एक बार फिर हाथ मलना पड़ गया। कई चुनाव गवाह हैं, ऐसे बेपेंदी के गठबंधनों का वक्त लद चुका है। भारतीय जनता पार्टी का बढ़ता कारवां भी यही मुनादी करता है कि लक्ष्य, सिद्धांत और कार्य-व्यवहार की एकजुटता सतत सफलता की कुंजी है। इस चुनाव ने पुनः जग-जाहिर कर दिया है कि कांग्रेस अपने साथियों के लिए घातक साबित हो रही है।

महाराष्ट्र के चुनाव तो जैसे-तैसे निपट गए। अब पश्चिम बंगाल, केरल, असम, तमिलनाडु और पुडुचेरी में चुनावी बिगुल बजने के साथ अलगाववादी नफरत का अलाव सुलग उठा है। कोलकाता में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के छापों के दौरान ममता बनर्जी ने जो किया, वह अभूतपूर्व था। इस छापे के दौरान ही वह चुनाव संचालन करने वाली कंपनी आईपैक के दफ्तर पहुंच गईं। वह और उनके साथी वहां से तमाम फाइलें व कागजात उठा लाए। तृणमूल सहित समस्त विपक्षी नेता कहते आए हैं कि ईडी चुनाव के समय सिर्फ विपक्षी नेताओं के खिलाफ सक्रिय होता है। तृणमूल का आरोप है कि ईडी का यह छापा किसी आर्थिक घोटाले की जांच नहीं, बल्कि हमारे चुनाव संबंधी दस्तावेजों को उठा ले जाने के लिए प्रायोजित किया गया था।

ममता की इस हरकत पर देश की आला अदालत ने उन्हें जमकर फटकारा है। बंगाल सरकार ने ईडी अधिकारियों के खिलाफ संगीन धाराओं में जो प्राथमिकी दर्ज की थी, उस पर भी रोक लगा दी गई है। आपको याद होगा कि इससे पहले झारखंड और तमिलनाडु में भी ऐसी रिपोर्टें दर्ज हुई थीं। बाद में उन्हें अदालत ने रद्द कर दिया था।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन भी इस मामले में पीछे नहीं हैं। गई 11 जनवरी को उन्होंने प्रधानमंत्री को पत्र लिखा। स्टालिन की मांग है कि मोदी श्रीलंका के राष्ट्रपति से बात कर प्रस्तावित संविधान सुधारों में तमिल आबादी के अधिकारों की सुरक्षा का आश्वासन हासिल करें। पिछले साल श्रीलंका की प्रधानमंत्री हरिनी अमरसूर्या के दिल्ली दौरे के दौरान भी स्टालिन ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर कच्चातिवु द्वीप वापस लेने की मांग की थी। कच्चातिवु द्वीप और श्रीलंकाई तमिलों के साथ भेदभाव दशकों पुरानी समस्या है। इसी के चलते पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी को जान गंवानी पड़ी थी, पर राजनीति नई बोतलों में पुरानी जहरीली शराब बेचने का अनवरत उपक्रम बन गई है।

स्टालिन के भतीजे और द्रमुक सांसद दयानिधि मारन इस आग में अपने तरीके से घी डाल रहे हैं। मंगलवार को चेन्नई के एक सरकारी महिला महाविद्यालय में अलगाववादी भाषण देते हुए उन्होंने कहा, 'यह आत्मविश्वास तमिलनाडु में है, जहां हम लड़कियों से कहते हैं कि पढ़ो और लगातार पढ़ो। उत्तर भारत में क्या कहा जाता है? लड़कियो, काम पर मत जाओ, घर पर रहो, रसोई में रहो, बच्चे पालो, यही तुम्हारा काम है।'

स्टालिन की तरह खुद को देशभक्त बताने वाले फारूक अब्दुल्ला कश्मीर के मुद्दे पर पाकिस्तान से बात करने की बात करते हैं। असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा भी चुनाव जीतने के लिए जिस भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं, इससे बांग्लादेश में भारत-विरोध बढ़ रहा है। वहां के हिंदुओं की दिक्कतों में ऐसे बयान बढ़ोतरी करते हैं।

सोशल मीडिया के वक्त में, जब मुंह से निकला महज एक बहका शब्द देश-दुनिया के किसी भी हिस्से में अंगारे बो सकने की कुव्वत रखता हो, तब क्या हमारे नेताओं को देशहित में सोच-समझकर नहीं बोलना चाहिए? वे भूल क्यों जाते हैं? देश किसी भी चुनाव और सत्ता-सदन से बड़ा होता है।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

मेहराज खुर्शीद मलिक
शिक्षक, मानवाधिकार कार्यकर्ता

काश! कश्मीर के हर कस्बे में एक मेहराज मिल जाए

बातचीत के इन पलों में ही इंसानियत की रोशनी कौंधी और नामुमकिन सी लगने वाली चीज मुमकिन होती गई। मेहराज ने अब तक साढ़े पांच सौ से अधिक भटके दिलों में नफरत व प्रतिशोध की जगह मोहब्बत और इंसानियत बोने में कामयाबी हासिल की है। ये सभी मुख्यधारा में लौट आए हैं।

वह हिन्दुस्तान के उस हिस्से से आते हैं, जिसके लिए कभी कहा गया था कि अगर धरती पर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है...यहीं है। दुर्योग से, आज मेहराज खुर्शीद मलिक का शहर संगीनों के साये में सुकून पाता है। ऐसे में, मेहराज जो आज कुछ कर रहे हैं, उसके लिए वह वाकई हमारे सलाम के हकदार हैं। 'वर्की फाउंडेशन' ने उन्हें इस साल के पचास बेमिसाल शिक्षकों में शुमार किया है।

आज से करीब 34 साल पहले जम्मू-कश्मीर के कुलगाम कस्बे में मेहराज पैदा हुए। पिता खुर्शीद मलिक के पास थोड़ी सी जमीन थी, जिसमें किसानी के अलावा छोटे-मोटे काम करके वह अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे। खुर्शीद खुद तो बहुत पढ़े-लिखे नहीं थे, मगर हर पिता की तरह उनका भी सपना था कि उनकी दोनों बेटियां और मेहराज ऊंची से ऊंची तालीम हासिल करें। अफसोस! जब उनके बच्चों के स्कूल जाने के दिन आए, घाटी में दहशतगर्दी चरम पर पहुंचने लगी थी। स्कूल-कॉलेज अक्सर बंद हो जाते।

खुर्शीद मलिक एक तरक्कीपसंद इंसान थे। मुआशरे की कोई बात उनको सही नहीं लगती, तो बेबाकी से बोल उठते। जाहिर है, उनकी यह मुखरता दहशतगर्दों को नागवार गुजरी। वह उनके निशाने पर आ गए थे। असर यह हुआ कि मुहल्ले के लोग उनसे बात करने से भी कतराने लगे थे। खुर्शीद ने कुलगाम के स्कूल में बच्चों को दाखिला दिलाने की कोशिश की, मगर स्कूल कभी कर्फ्यू की वजह से बंद रहते या कभी जला दिए जाते। सामाजिक दुराव का आलम यह रहा कि कुलगाम छूट गया। अपने परिवार को लेकर वह श्रीनगर पहुंचे कि शायद कुछ समय में हालात सुधरें और वह अपने नाते-रिश्तेदारों के साथ फिर से हिल-मिल पाएं, मगर श्रीनगर का माहौल भी कुलगाम से अलग न था। वहां भी किसी स्कूल में मेहराज और उनकी बहनों को प्रवेश न मिला। आतंकियों की धमकियों के कारण पिता ने कुलगाम की जमीन बेचकर जम्मू में किराये पर घर लिया, ताकि वहां रहकर बच्चों को पढ़ाया जा सके।

देश के दूसरे हिस्सों में बसे लोगों को यही लगता रहा है कि दहशतगर्दों ने सिर्फ घाटी के अल्पसंख्यकों की जिंदगी तबाह की, दर-हकीकत कई खुर्शीद भी उजड़ गए। बहरहाल, साल 2010 में जम्मू से बोर्ड की पढ़ाई पूरी करके मेहराज पंजाब की लवली यूनिवर्सिटी में इंजीनियरिंग करने पहुंचे। 2014 में इंजीनियरिंग मुकम्मल होने से पहले ही गुड़गांव की एक कंपनी ने उन्हें नौकरी का प्रस्ताव दिया और वह गुड़गांव चले आए थे।

मेहराज हर समय पिता और परिवार की माली मदद के लिए बेहतर से बेहतर मौके की तलाश में रहते। यह तलाश उन्हें चंद महीनों में ही गुड़गांव से बेंगलुरु ले गई। माइक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी कंपनी में नौकरी मिल गई थी। वह बहुत खुश थे। वहां काम करते हुए जम्मू-कश्मीर के चार-पांच ऐसे नौजवान मिले,

जो मेहराज की पढ़ाई-लिखाई और अच्छी अंग्रेजी बोलने से प्रभावित थे। उन्होंने उनसे कुछ पढ़ाने-सिखाने का इसरार किया और मेहराज उन्हें पढ़ाने लगे। संयोग ऐसा रहा कि कुछ दिनों बाद ही उन सभी को नौकरी मिल गई।

इस बात ने मेहराज की मुलाकात अपने भीतर के शिक्षक से कराई। उन्हें महसूस हुआ कि शायद वह कुछ ऐसा कर पाएं, जो बाकी न कर सके। वैसे भी, माइक्रोसॉफ्ट में सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट और नेटवर्किंग का काम करते हुए उनके भीतर एक सवाल जन्म ले चुका था कि इस काम से वह अपने मुल्क की मदद कर रहे हैं या अमेरिका की? आखिरकार, साल 2016 के आखिरी महीनों में एक दिन उन्होंने पिता को फोन लगा दिया- पापा, मैं वापस आना चाहता हूं।

आर्थिक परेशानियों से जूझते पिता ने एक बार भी नहीं सोचा कि इतनी बड़ी कंपनी को छोड़ने से बेटे को रोकें। उन्होंने मेहराज से कहा, अगर आपको लगता है कि आप समाज में कुछ बेहतर योगदान कर सकते हो, तो जरूर आओ। संयोग से उन दिनों पिता श्रीनगर में ही थे और कुछ समय पहले ही बुरहान वानी का एनकाउंटर हुआ था। मेहराज जब श्रीनगर पहुंचे, तो माहौल तनावपूर्ण था। जगह-जगह लोग आंदोलित थे, तो कहीं मर और मार रहे थे। मेहराज के शिक्षक ने उनसे पूछा- इस मृत्यु-चक्र को रोकने के लिए कुछ कर सकते हो?

पिता श्रीनगर के जिस मुहल्ले में रह रहे थे, वहां के बच्चों से मेहराज ने बात करनी शुरू की। दो घंटे-चार घंटे, एक दिन-दो दिन बात करने के बाद बच्चों पर उनकी बातों का असर दिखने लगा। मेहराज के जवाब के बाद उनके पास कोई 'कांउटर सवाल' नहीं बचता। कुछ दिनों बाद वह अधिकारियों से मिले। अफसरों को उनका 'विजन' पसंद तो आता, पर उन्हें यकीन नहीं होता कि मरने पर आमादा युवाओं का मन भी बदल सकता है। मेहराज जनरल डी पी पांडेय, जनरल रूपेश मेहता और जनरल विपिन रावत से भी मिले। उन्होंने पूरे आत्मविश्वास के साथ उनसे कहा- सर, एक आतंकी को भी सही जानकारी और उचित प्रयासों से बदला जा सकता है। जनरल पांडेय ने जोखिम उठाकर मेहराज को आगे बढ़ने को कहा। मेहराज ने कई कैदियों, आतंकियों, बेल पर छूटे दहशतगर्दों से बात की। इसके बाद उन्होंने महीने भर का एक 'कोर्स' डिजाइन किया।

इस कोर्स में युवाओं को गुमराह करने वाली बातों का ठोस जवाब तलाशा गया था। अधिकारियों ने कोर्स को देखा और अपनी हरी झंडी दिखा दी। मेहराज भटके हुए लोगों की कक्षाएं लेने लगे। कई-कई बार तो 12-12 घंटे तक कक्षाएं चला करतीं। बातचीत के इन पलों में ही इंसानियत की रोशनी कौंधी और नामुमकिन सी लगने वाली चीज मुमकिन होती गई। मेहराज ने अब तक साढ़े पांच सौ से अधिक भटके दिलों में नफरत व प्रतिशोध की जगह मोहब्बत और इंसानियत बोने में कामयाबी हासिल की है। ये सभी मुख्यधारा में लौट आए हैं। इन 550 'बच्चों' के साथ उन्होंने एक पूरी नस्ल को बर्बाद होने से बचा लिया है। काश! कश्मीर के हर कस्बे में ऐसे युवा होते।

आतंकियों की धमकियों के कारण पिता ने कुलगाम की जमीन बेचकर जम्मू में किराये पर घर लिया, ताकि वहां रहकर बच्चों को पढ़ाया जा सके। देश के दूसरे हिस्सों में बसे लोगों को यही लगता रहा है कि दहशतगर्दों ने सिर्फ घाटी के अल्पसंख्यकों की जिंदगी तबाह की, दर-हकीकत कई खुर्शीद भी उजड़ गए।

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

हसरत मोहानी
स्वतंत्रता सेनानी एवं शायर

इंकलाब जिंदाबाद लगा दिया नारा

वह अपने भाषणों में गुलाम मुल्क की ऐसी तस्वीर खींचते हैं कि दिल भर आता है, अश्क बहने लगते हैं, लेकिन आज उनके तेवर-कलेवर काफी बदले हुए हैं। उन्होंने लगे हाथ यह भी प्रस्ताव रख दिया, 'अब हमें अपने मुल्क के लिए पूर्ण स्वराज की मांग करनी चाहिए।'

अहमदाबाद में साल 1921 का कांग्रेस अधिवेशन बहुत खास था। तब पहली बार खादी के तंबू तने थे। नेताओं के कंधे पर खादी के बैग सजे थे। ऐसा मालूम पड़ता था, मानो गुलाम मुल्क को पहली बार जिस्म ढकने के लिए कपड़े नसीब हुए हों। दिसंबर की गुनगुनी ठंड में खादी के सौंधी महक घुली हुई थी। यह खुशी मुसलसल उमड़ रही थी कि कुछ नया होने वाला है।

एक शायर साहब भी अधिवेशन में शरीक थे। उनकी बारी आई, तो उन्होंने कहा, 'अब छोड़ दीजिए उम्मीद कि अमन-चैन से आपको आजादी मिलेगी, अब तो हथियार उठाने पड़ेंगे। अहिंसा के रास्ते पर चलकर आजादी जल्द नहीं मिलेगी। हम कब तक फिरंगियों के जूतों तले जुल्म सहेंगे?' बाकी नेताओं ने उनकी ओर गौर किया, अरे यह तो हसरत मोहानी साहब हैं। अक्सर अपने भाषणों में गुलाम मुल्क की ऐसी तस्वीर खींचते हैं कि दिल भर आता है, अश्क बहने लगते हैं, लेकिन आज उनके तेवर-कलेवर काफी बदले हुए हैं। उन्होंने लगे हाथ यह भी प्रस्ताव रख दिया, 'अब हमें अपने मुल्क के लिए पूर्ण स्वराज की मांग करनी चाहिए। हमें आधी नहीं, पूरी आजादी चाहिए।'

यह कांग्रेसियों के लिए नई बात थी। हलचल मच गई। पूर्ण स्वराज की मांग हो रही है। अनेक नेताओं ने यही सोचा कि हसरत साहब बौरा गए हैं, लेकिन कांग्रेस के ही एक अन्य सदस्य स्वामी कुमारानंद ने भी पूर्ण स्वराज के पक्ष में ध्वज फहरा दिया। अब यह कांग्रेस के लिए निर्णायक मोड़ बन गया। कांग्रेस पूरी तरह से कानून-व्यवस्था के तहत वैध तरीकों से काम करती थी। उसकी मांग यही होती थी कि भारतीयों के साथ नाइंसाफी न हो। ब्रिटिश साम्राज्य के तहत भारतीयों को ज्यादा हक हासिल हो जाएं, पर यहां तो पहली बार किसी ने पूर्ण स्वराज की मांग रख दी।

जैसा होना था, गांधीजी के नेतृत्व में शायर साहब के प्रस्ताव को एहसासे-कमतरी की कुछ दलीलों के सहारे किनारे कर दिया गया, लेकिन शायर साहब ने अपने भाषण का समापन करते हुए जो नारा लगाया- *इंकलाब जिंदाबाद*, वह सबके जेहन में बैठ गया। इस नारे ने पूर्ण स्वराज की मांग के बीज बो दिए।

हसरत यहीं नहीं थमे, जब वह मुस्लिम लीग के सम्मेलन में गए, तो वहां भी उन्होंने मांग रख दी कि भारत को 1 जनवरी, 1922 से स्वतंत्र घोषित किया जाना चाहिए और इसका नाम संयुक्त राज्य भारत रखा जाना चाहिए। आजादी के लिए जरूरत पड़ जाए, तो गुरिल्ला युद्ध शुरू किया जाना चाहिए। बहरहाल, मुस्लिम लीग ने भी हसरत की मांग को हाशिये पर कर दिया और कुछ ही दिनों बाद हसरत फिर जेल में डाल दिए गए।

वैसे, हसरत मोहानी का जेल से नाता पुराना था। कैद-ए-बा-मशक्कत में हर दिन चक्की पीसते थे। आजादी के लिए बहुत सख्त थे। अंग्रेजों के खिलाफ उनकी आवाज कभी नरम नहीं हुई, पर वह असलियत में मोहब्बत से सराबोर मुकम्मल इंसान थे। मौका मिलते लिखने बैठ जाते थे। जेल में रहते हुए ही उन्होंने हरदिल अजीज गजल लिखी- *चुपके-चुपके रात दिन आंसू बहाना याद है / हमको अब तक आशिकी का वो जमाना याद है।*

उनकी कलम में इश्क की स्याही भरी थी और उन्होंने लिखा- *कुव्वत-ए-इश्क भी क्या शय है कि होकर मायूस/ जब कभी गिरने लगा हूं तो संभाला है मुझे।* उन्हें कृष्ण बहुत प्रिय थे। एक बांसुरी पास रखते थे और बजाते थे। जब कैद में उनसे तमाम सामान जब्त किए जाते थे, तब वह गुहार लगाते, 'यह बांसुरी मेरे पास रहने दीजिए, यह तो कृष्णजी की है।' करीब हर जन्माष्टमी वह मथुरा जाते थे। कृष्ण के प्यार में उन्होंने लिखा है- *बरसाना-ओ-नंद-गांव में भी/ देख आए हैं जल्वा हम किसी का।* हसरत के 13 दीवान हैं, जिनमें से आधे से ज्यादा कैद में रहते तैयार हुए।

वह हिंदू-मुस्लिम एका और अखंड भारत के गजब हिमायती थे। जब मुस्लिम लीग ने यह ठान लिया कि मजहब के नाम पर मुल्क बंटेगा, तब वह लीग से अलग हो गए। आजादी के बाद भारत में ही रहे और आजाद भारत के संविधान लेखन में योगदान दिया। वह मथुरा से मक्का और मास्को तक अमन-चैन-खुशहाली के ख्वाब देखते थे। स्वदेशी के गजब पैरोकार हसरत ने कभी भी सांसद के रूप में किसी सरकारी सहूलियत का फायदा नहीं लिया। अपने पैसे से किराया चुकाकर संसद पहुंचते थे।

हसरत मोहानी (1875-1951) अपने समय से बहुत आगे की सोचने वाले नेता थे। तारीख गवाह है, पूर्ण स्वराज के उनके प्रस्ताव को कांग्रेस ने नौ साल बाद माना। शहीद भगत सिंह से लेकर आज तक दुनिया में कहीं भी इंकलाब जिंदाबाद का नारा लगता है, तो हसरत मोहानी याद आते हैं। वह खुद ही लिखे गए हैं, *आती तो याद उनकी महीनों तक नहीं आती/ मगर जब याद आते हैं तो अक्सर याद आते हैं।*

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

जैसे खिड़की के दिन फिरे

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

हिंदी के दो लेखक गुजर गए- एक, विनोद कुमार शुक्ल और दूसरे, ज्ञानरंजन। दैनिकों ने खबरें दीं, संपादकीय लिखे और विशेष पेज भी निकाले। सोशल मीडिया शोक संदेशों से भरा रहा- इनके जाने से साहित्य की दुनिया कुछ और सूनी हो गई... उनकी कमी हमेशा खलेगी... वे जो शून्य छोड़ गए हैं, कभी भरने वाला नहीं। कुछ *दुखी मन मेरे* गाते दिखे... कुछ ऊपर से दुखी अंदर से सुखी दिखे। कुछ अंग्रेजी दैनिकों ने अपना हिंदी-प्रेम दिखाकर हिंदी वालों को अपना मुरीद बनाया। दोनों लेखकों पर टिप्पणियां छापीं, दोनों को लगभग ठीक-ठीक 'प्लेस' कर उनके साहित्यिक अवदान को याद किया।

कुछ 'शुक्ल' के उपन्यास *नौकर की कमीज, दीवार में एक खिड़की रहती थी* और *खिलेगा तो देखेंगे* की भाषा लीला पर कुर्बान दिखे, तो कुछ ने 'ज्ञान' की कहानियां जैसे *फेंस के इधर उधर, घंटा, बहिर्गमन* या *पिता* आदि को अकहानी का 'ट्रेंड सेटर' मान, उनके खुरदरेपन व ठेठपन के लिए याद किया। इस अवसर पर भी हिंदी वालों का दुख जितना बोला, सगुण भाव से बोला। शोक में भी मेरे-तेरे लगी रही, जबकि अंग्रेजी में बहुत दूर तक तटस्थ भाव दिखा।

सोशल मीडिया पर बात-बेबात 'रिएक्ट' करने वाले रिएक्ट तो किए, पर हिसाब-किताब के साथ कि उसने मेरे लिए क्या कभी कुछ कहा, जो मैं उसके लिए कहूं? जो आजीवन दुश्मन रहा, उसे मैं लिफ्ट क्यों दूं?

हिंदी में सब अपने-अपने बही-खातों में रहते हैं और हर वक्त जोड़-घटाव करते रहते हैं- कब, किसने मेरे लिए क्या किया? किसने कहां 'टांच' मारी? कब, किसने रोड़े अटकाए? वह मेरे साथ है या मेरे दुश्मन के साथ? जब मैं मुसीबत में था, तब उसने साथ दिया कि नहीं? आज उसकी 'लाइन' क्या है? ऐसे बही-खाते तय करते हैं कि किसके बारे में कब, कितना और कैसा बोला जाए और यह कि कहीं ऐसा-वैसा लिखकर अपने हाथ तो नहीं कटवा रहा?

हिंदी में अब बड़े दिल वाले नहीं रहते। हिंदी का दिल सिकुड़ गया है। वह समाज की, सत्य की लाख बात करे, उसका सारा सत्य, यथार्थ, 'कमिटमेंट' और संघर्ष एकदम प्राइवेट लिमिटेड कंपनी की तरह है। साहित्य भी अब '280 कैरेक्टर्स', इंस्टा रील्स या सेल्फी में सीमित रह गया है। हम नाचे, गाए, ठुमका लगाए, दारू चढ़ाए और छाए। उसके बाद फिर हाय-हाय। हरेक की करनी हर लेखक याद रखता है और मौका आते ही उसे ब्याज समेत वापस करता है!

ऐसे में, किसका शोक और कैसा शोक? फिर भी 'रस्म अदायगी' के लिए कुछ तो गमजदा दिखना पड़ता है, इसलिए अवसर आते ही हर हिंदी वाला 'दो मिनट का मौन' बन जाता है। इस दो मिनट के मौन में भी वह कितना मौन रहता है, उसकी आंखें किसे-किसे टटोलती हैं, किस-किस से क्या-क्या बोलती हैं, यह वही जानता है, जो दो मिनट के मौन का एक्सपर्ट होता है।

इतने पर भी यदि उसका मन कुछ सेकंड के लिए पसीज जाता है, तो वह जाने वाले को याद करके हर लाइन में अपना महत्व बताने लगता है कि मैं उनको इतने निकट से जानता था, जितना वह भी अपने को नहीं जानते थे। कृतघ्न हिंदी ने उनको उनका हक नहीं दिया!

मन करता है कि कहूं कि हम भी कैसे हो चले हैं, जो जीते जी किसी को नहीं पूछते, लेकिन उसके सिधारते ही उसे देवता बनाने में लग जाते हैं। इससे तो अच्छी आज की 'जेन जी' है, जो जब किसी लेखक को पसंद करती है, याद करती है, तो बेधड़क व बिंदास याद करती है। इसीलिए विश्व पुस्तक मेले में *दीवार में एक खिड़की रहती थी* साक्षात् दिखी, जिसे इस पीढ़ी ने एक 'सेल्फी पॉइंट' बना लिया।

यह भी अलग तरह की मार्केटिंग रणनीति रही। हिंदी का इसी में कल्याण है। मेले में कोई रचना अगर एक पीढ़ी का सेल्फी पॉइंट बन जाती है, तो यह भी एक नया 'पाठ' है। हम तो कहेंगे भैया, जैसे खिड़की के दिन फिरे, सबके फिरें।

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

बसंत, बिच्छू और आम्रमंजरी

बसंत ने कवियों से लेकर आम जन तक सभी को मोहा है। तभी तो महाप्राण निराला भी अपनी सुध-बुध खोकर कह उठते हैं- 'सखि वसंत आया, भरा हर्ष वन के मन, नवोत्कर्ष छाया...।' बसंत उल्लासपूर्ण जीवन का प्रतीक है। बसंत को लेकर समाज में व्याप्त पौराणिक, लोक और साहित्यिक अवधारणा को द्विवेदी जी ने अपने नजरिये से देखा और परखा है। बसंत पंचमी (23 जनवरी) के अवसर पर यशस्वी साहित्यकार हजारी प्रसाद द्विवेदी के ललित निबंध 'आम फिर बौरा गए' से प्रस्तुत है संपादित अंश...

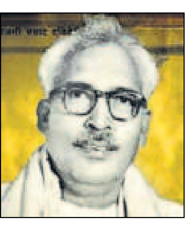

बचपन में सुना था कि बसंत पंचमी के पहले अगर आम्रमंजरी दिख जाए, तो उसे हथेली पर रगड़ लेना चाहिए। ऐसी हथेली साल भर तक बिच्छू के जहर को आसानी से उतार देती है। हर साल ही मेरी आंखें इन्हें खोजती हैं। बसंत पंचमी से पहले जब कभी आम्रमंजरी दिख जाती है, तो बिच्छू की याद आ जाती है।

जरा तुक मिलाइए। आम्रमंजरी मदन देवता का अमोघ बाण है और बिच्छू मदनविध्वंसी महादेव का अचूक बाण है। योगी ने भोगी को भस्म कर दिया, पर भोगी का अस्त्र योगी के अस्त्र को व्यर्थ बना रहा है। कुछ ठिकाना है, इस बेतुकेपन का, परंतु सारी दुनिया इस बात को सच मानती आ रही है।

परसाल भी मैंने बसंत पंचमी के पहले आम्र मुकुल देखे थे, पर बड़ी जल्दी वे मुरझा गए। उसी आम को दुबारा फूलना पड़ा। मुझे बड़ा अद्भुत लगा। मेरे एक मित्र ने कहा था कि मुझे ऐसा लगता है कि नववधू के समान यह बिचारी आम्रमंजरी जरा-सा झांकने बाहर निकली और सामने हमारे जैसे मनहूसों को देखकर लजा गई।

बहुत पहले कालिदास ने इसी प्रकार एक बार आम्रमंजरी को सकुचाते देखा था। 'शकुंतला' नाटक में वे उसका कारण बता गए हैं। दुष्यंत पराक्रमी राजा थे। उनके हृदय में एक बार प्रिया वियोग की विषम ज्वाला जल रही थी, तभी बसंत का पदार्पण हुआ। राजा ने बसंतोत्सव न करने की आज्ञा दी। आम बेचारा बुरी तरह छका। इसका स्वभाव थोड़ा चंचल है। बसंत आया नहीं कि व्याकुल होकर फूल पड़ता है। उस बार भी हजरत पुलकित हो गए। तब तक राजा की आज्ञा हुई। बेवकूफ बनना पड़ा। इन मंजरियों के रूप में मदन देवता ने अपना बाण चढ़ाया था। बेचारे अधखिंचे धनुष के बाण समेटने को बाध्य हुए। आजकल दुष्यंत जैसे प्रतापी राजा नहीं है। पिछली बार भी जब मदन देवता को अपना अर्धकृष्ट शर समेटना ही पड़ा था, तो कैसे कहा जाए कि वैसे प्रतापी लोग अब नहीं हैं? जरूर कोई-न-कोई पराक्रमी मनुष्य कहीं-न-कहीं विरह ज्वाला में संतप्त हो रहा होगा। कार्य जब है, तो कारण भी होगा ही।

आशा करता हूं, इस बार आम्रमंजरी को मुरझाना नहीं पड़ेगा। आहा, कैसा मनोहर कोरक (कली) है। बलिहारी है, इस 'आता भ्रहरित-पाण्डुर' शोभा की। अभी सुगंधित नहीं फैली है, किंतु देर भी नहीं है। कालिदास ने आम्र कोरकों को बसंत काल का 'जीवितसर्वस्व' कहा था। उन दिनों भारतीय लोगों का हृदय अधिक संवेदनशील था। वे सुंदर का सम्मान करना जानते थे। गृहदेवियां इस लाल, हरे, पीले आम्र कोरक को देखकर आनंद विह्वल हो जाती थीं। वे इस 'ऋतुमंगल' पुष्प को श्रद्धा और प्रीति की दृष्टि से देखती थीं।

कामशास्त्र में 'सुवसंतक' नामक उत्सव की चर्चा आती है। 'सरस्वती कंठाभरण' में लिखा है कि सुवसंतक बसंतावतार के दिन को कहते हैं। बसंतावतार अर्थात जिस दिन बसंत पृथ्वी पर अवतरित होता है। मेरा अनुमान है, बसंत पंचमी ही बसंतावतार की तिथि है। 'मत्स्य सूक्त' और 'हरिभक्तिविलास' आदि ग्रंथों में इसी दिन को बसंत का प्रादुर्भाव दिवस माना गया है। इसी दिन मदन देवता की पहली पूजा विहित है। 'सरस्वती कंठाभरण' में महाराज भोजदेव ने सुवसंतक की एक हल्की-सी झांकी दी है।

धर्मशास्त्र की पोथियों में लिखा है कि बसंत पंचमी के दिन मदनमोहन की पूजा करने से स्वयं श्रीकृष्ण प्रसन्न होते हैं। यह और मजेदार बात निकली। तांत्रिक आचार से विष्णु भजन करनेवाले बताते हैं कि 'काम-गायत्री' ही 'श्रीकृष्ण-गायत्री' है, तो कामदेव और श्रीकृष्ण अभिन्न देवता हैं? पुराणों में लिखा है कि कामदेवता श्रीकृष्ण के घर पुत्र रूप में उत्पन्न हुए थे। वह कथा भी कुछ अपने ढंग की अनोखी ही है। कामदेव प्रद्युम्न के रूप में पैदा हुए। शंबर नामक मायावी असुर उन्हें हर ले गया और समुद्र में फेंक दिया। मछली उन्हें खा गई। संयोगवश वही मछली शंबर की भोजनशाला में गई और बालक फिर उसके पेट से बाहर निकला। कामदेवता की पत्नी रतिदेवी वहां पहले से ही मौजूद थीं। ऐसे मौकों पर जिस व्यक्ति का पहुंचना नितांत आवश्यक होता है, वे नारद मुनि भी वहां पहुंच गए। रति को सारी बातें उन्हीं से मालूम हुई। प्रद्युम्न पाले गए। शंबर मारा गया। श्रीकृष्ण के घर में पुत्र ही नहीं, पुत्रवधू भी यथासमय पहुंच गई, इत्यादि-इत्यादि।

पुराणों में असुर प्रायः ही शैव बताए गए हैं। कामदेव उनके दुश्मन हों, यह तो समझ में आ जाता है, पर भागवतों से उसका संबंध कैसे स्थापित हुआ? मेरा मन अधभूले इतिहास के आकाश में चील की तरह मंडरा रहा है। कहीं कुछ चमकती चीज नजर आई नहीं कि झपट्टा मारा, पर कुछ दिख नहीं रहा है। आर्यों के साथ असुरों, दानवों और दैत्यों के संघर्ष से हमारा साहित्य भरा पड़ा है। रह-रहकर मेरा ध्यान मनुष्य की इस अद्भुत विजय-यात्रा की ओर खिंच जाता है।

'सरस्वती कंठाभरण' में लिखा है कि सुवसंतक बसंतावतार के दिन को कहते हैं। बसंतावतार अर्थात जिस दिन बसंत पृथ्वी पर अवतरित होता है। मेरा अनुमान है, बसंत पंचमी ही बसंतावतार की तिथि है।

क्षेमेंद्र बहुत सहृदय और बहुश्रुत आचार्य थे। उन्होंने बहुत-सी पोथियां लिखी हैं। एक का नाम है 'औचित्य विचार चर्चा।' उसमें उन्होंने संज्ञा शब्दों के औचित्य के प्रसंग में कालिदास के 'विक्रमोर्वशीयम्' नाटक का वह श्लोक उद्धृत किया है, जिसमें राजा ने विरहातुर अवस्था में कहा है कि वैसे ही दुर्लभ वस्तुओं के लिए मचल पड़नेवाला पंचबाण (कामदेव) मेरे चित्त को छलनी किए डालता है, अब मलय-पवन से आंदोलित इन आम्र-वृक्षों ने अंकुर दिखा दिए। अब तो बस भगवान ही मालिक हैं। सहृदय शिरोमणि क्षेमेंद्र कहते हैं कि कामदेव को पंचबाण कहना उचित ही है। कामदेव के पंचबाणों में एक तो यही आम्रमंजरी का अंकुर है, लेकिन मैं बिल्कुल उलटा सोच रहा हूं। मैं कहता हूं, पंचबाण कहने से ही तो आम्र कोरक भी कह डाले गए, फिर दुबारा उनकी चर्चा करना कहां संगत है?

मेरा मन पूछता है कि क्या कालिदास आम्रमुकुलों को मदनदेवता के पांच बाणों में नहीं गिनते थे? वैसे तो संसार के सभी फूल मदनदेवता के तूणीर में आ ही सकते हैं, पर कालिदास के युग में लोक प्रचलित कोई विश्वास ऐसा अवश्य रहा होगा कि आम पांच बाणों से अतिरिक्त है। कालिदास ने एक जगह आम्र कोरकों को यह आशीर्वाद दिलाया है कि तुम काम के पांच बाणों से 'अभ्यधिक' बाण बनो। इस 'अभ्यधिक' शब्द का सीधा अर्थ, तो यही मालूम होता है कि पांच से अधिक छठा बाण बनो, पर पंडित लोग कहते हैं कि इसका सही अर्थ है- पांचों में सबसे अधिक तीक्ष्ण। मदनदेवता हमारे साहित्य में कब आए और उनके बाणों का भी क्या कोई इतिहास है? और फिर बिच्छू से इसका कोई नाता-रिश्ता भी है क्या?

मैं दूसरी बात सोच रहा हूं। फूल तो दुनिया में अनेक हैं। आम, लेकिन फूल की अपेक्षा फल रूप में अधिक विख्यात है। कवि लोगों की बात छोड़िए। वे लोग कभी-कभी बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बोलते ही हैं। हम लोग भी जानते हैं कि आम की मंजरी मादक होती है। जब समस्त दिशाएं मंजरी के केसर से मूर्च्छमान हों और मधुपान के लिए व्याकुल बने हुए भौंरे गली-गली घूम रहे हों, तो ऐसे भरे बसंत में किसके चित्त में उत्कंठा नहीं लहरा उठती?

बहुत पुराने जमाने में गंधर्व या कंदर्प देवता ने अपने तरकस में इस बाण को सजाया था। कवियों को उसी आदिम काल का संदेश बसंत में सुनाई देता है। कालिदास जरूर कुछ झिझके थे। शायद उनके जमाने में सहृदय लोग आम को अरविंद, अशोक और नवमालिका की पंगत में बैठाने में हिचकते थे। अच्छा करते थे। वात्स्यायन 'कामसूत्र' में जहां आम और माधवीलता के विवाह के विशुद्ध विनोद का उत्सव सुझा गए हैं, वहां नवाम्रखादनिका या आम के नए टिकोरों को खाने के उत्सव को भूले नहीं हैं। आम की मंजरी विधाता का वरदान है, पर आम का फल मनुष्य की बुद्धि का परिणाम है। मनुष्य प्रकृति को अनुकूल बना देने वाला अद्भुत प्राणी है। यह विशाल विश्व आश्चर्यजनक है, पर इसको समझने के लिए प्रयत्न करनेवाला और इसे करतलगत करने के लिए जूझनेवाला यह मनुष्य और भी आश्चर्यजनक है। आम्रमंजरी उसी अचरज का संदेश लेकर आई है।

(साभार : 'आम फिर बौरा गए', गद्य कोश से संपादित अंश)

पुस्तक अंश

महाभारत के भीष्म सही अर्थों में पितामह

'व्यासपर्व' भारतीय संस्कृति की एक बहुआयामी व्याख्या है। श्रीकृष्ण, भीष्म, द्रोण, गांधारी, विदुर, अश्वत्थामा, अर्जुन, दुर्योधन, कर्ण, द्रौपदी, एकलव्य आदि की अद्भुत झांकी इस पुस्तक में साकार उपस्थित हुई है। इसमें व्यक्तित्व और इतिहास ही नहीं, हमारा समय भी मुखरित होता है। भारतीय संस्कृति की एक बहुआयामी व्याख्या प्रस्तुत करती हाल में आई पुस्तक 'व्यासपर्व' से प्रस्तुत है एक संपादित अंश...

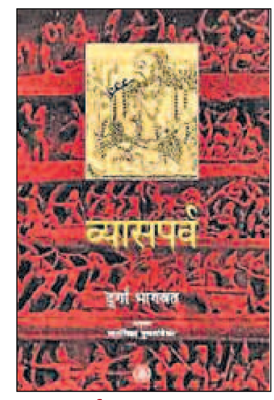

व्यासपर्व
लेखिका : दुर्गा भागवत
अनुवाद : वासंतिका पुणतांबेकर
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : ₹250

कुरुवंश के सर्वश्रेष्ठ पुरुष भीष्म ही हैं। सबको बड़ा करके नीति, कर्तव्य और कर्तृत्व के पाठ देने वाले भी वही हैं। अपने बाद की तीन पीढ़ियां ही नहीं, अपितु अपने पूर्व की पीढ़ी के लिए भी छीजने वाले हैं भीष्म। एक उदासीन, मन-ही-मन में उफनने वाला किंतु ऊपर से शांत और कठोर कवच धारण करने वाला व्यक्तित्व यदि किसी का होगा, तो वह भीष्म का ही है।

भीष्म जन्मतः ही प्रौढ़ थे। अष्टावक्र जैसे। पुरु जैसे। अष्टावक्र ने बंदी के सामने कहा था कि 'मुझे छोटा मत कहो। किसी के केवल केश सफेद हैं, इसलिए वह स्थविर नहीं होता। जो युवा होकर भी पंडित होता है, उसे देव भी वृद्ध कहते हैं।'

पुरु ने खुलेआम पिता का वार्धक्य स्वयं के लिए स्वीकार किया, किंतु वह वार्धक्य अंतरंग को भाषित करने वाला वार्धक्य नहीं था। जिसे युवावस्था की मरण अवस्था कहते हैं, ऐसा सबके द्वारा हमेशा से अनचाहा वार्धक्य था। उसमें कामवासना की मृत्यु थी। निर्माण और परंपरा का अंत था।

भीष्म के रूप में व्यास ने इन दोनों उच्च और निम्न अवस्थाओं का समन्वय कर दिया है। पिता की इच्छा पूरी करते वक्त राज्य, विवाह इन सबका त्याग भीष्म ने किया और उसके लिए उन्हें कभी भी अनुताप नहीं हुआ। जीवन की शारीरिक युवावस्था का त्याग उन्होंने नहीं किया, किंतु उस युवावस्था की बलिष्ठ निर्मिति में उन्होंने अष्टावक्र द्वारा अपेक्षित सभी धैर्य, सभी समझदारी दे डाली। ऐसा करते हुए, एक विलक्षण अंतर्मुखता उन्हें मिली। वे अपने अंदर-ही-अंदर डूबते रहे, किंतु उसी के साथ उनकी तरल संवेदनाएं धीरे-धीरे झुलसती गईं।

युधिष्ठिर की तरह अंतर्मन से निकलने वाली सूक्ष्म संवेदन क्षमता भीष्म में नहीं दिखाई देती। मानो दिखाने का कारण ही अब नहीं रहा था। यह भोथरापन नहीं होता, तो भीष्म के लिए शांत प्रवृत्ति से त्याग का बोझ सहज उठाना संभव नहीं होता। झूलने वाली भावनाएं युधिष्ठिर को शोभा देती थीं।

क्षोभ के कुछ आंसू विदुर भी बहा सके, किंतु भरी युवावस्था में ही आंसू खोया हुआ मनुष्य भीष्म के सिवा कोई दूसरा होगा, ऐसा मुझे नहीं लगता।

हठ से स्वयं ही स्वयं को पराया कर देने वाला, अपने मन के कुछ भाग स्वयं ही बंद कर देने वाला यह मनुष्य पुत्रों के, पुत्र वधुओं के, पौत्र-पौत्रियों के, समग्र परिवार के सुख-दुख कोमलता से सहज ही अपना लेता है।

भीष्म सच्चे पितामह हैं। जमीन पर कसकर पांव गड़ाकर रखने वाला यह मनुष्य पोतों-पड़पोतों के दैनिक व्यवहार में जैसे डूब गया है। स्वयं ब्रह्मचारी होकर भी उनकी बहुत-सी शाखाएं फूटी हुई हैं। वह कभी फूलते नहीं, हंसते नहीं, तब भी इनकी शाखाओं के फल हजारों पंछी अपने चंचुओं से नित्य खोदते-कुरेदते दिखते हैं। उन्हें कृतार्थ करते हैं।

महाभारत में यदि सच्चे अर्थ में कोई अंकित हुआ है, तो वह भीष्म ही हैं। मिट्टी छोड़कर ऊपर उठने के लिए वे बिल्कुल तैयार नहीं। युवावस्था में भोग का स्वर्ग उन्होंने सहज ही दूर फेंक दिया। अपने अतिदीर्घ जीवन में उन्होंने मुमुक्षता का शौक भी नहीं किया। मानो स्वर्ग और पृथ्वी इन दोनों का अंतर समग्र रूप में समाप्त कर उन्हें एक ही स्तर पर लाने का प्रयास उन्होंने किया है। उनके इस प्रयास के कारण ही 'पितामह' का पद उन्हें शोभा देता है।

पुस्तकें आई हैं

संबंधों का विज्ञान

लेखक : मुनि क्षमासागर
प्रकाशक : प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, साहिबाबाद
मूल्य : ₹280

मुनि क्षमासागर द्वारा आपसी संबंधों के विषय में दिए गए प्रवचनों का संकलन है-'संबंधों का विज्ञान।' इनमें संबंध, परिवार, बच्चों में संस्कार, सच्ची मित्रता, श्रद्धा जैसे विषयों के जरिये जीवन को अच्छा बनाने की प्रक्रिया को सरल शब्दों में समझाया गया है। सहज और सरल शैली में लिखे इन लेखों में जीवन जीने की कला और आत्म-कल्याण का विज्ञान सिखाने के साथ बंधन मुक्त होने का भाव भी है।

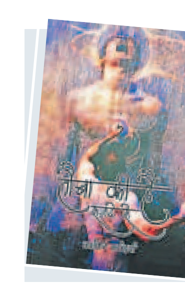

तौबा की है सजदे से
(गजलें और नज्में)

लेखक : काफिर बड़ौदवी (अश्विन चंदाराणा)
प्रकाशक : सायुज्य प्रकाशन, वडोदरा
मूल्य : ₹225

'तू लोहा बन या चांदी बन, तू सोना भी अगर होगा, जो गहने आग में तपते हैं, जा कर वो निखरते हैं।'-ये पंक्तियां दुनिया में हर 'शै' पर बिना किसी शक-ओ-शुब्हा के लागू होती हैं। शायर और शायरी भी इससे अछूती नहीं है। हाल में आए गजल-संग्रह 'तौबा की है सजदे से' की गजलों में खुद्दारी है, तो हुस्नो-इश्क भी है, भागदौड़ भरी जिंदगी है, तो सामाजिक जिम्मेदारी का एहसास भी है।

गुलाबी इच्छाएं
(कहानी-संग्रह)

लेखक : मनीष वैद्य
प्रकाशक : शिवना प्रकाशन सीहोर, मध्य प्रदेश
मूल्य : ₹200

'ये इश्क नहीं आसां इतना ही समझ लीजे। इक आग का दरिया है और डूब के जाना है।' -जिगर साहब से पहले भी प्रेम का यही सच था और कल भी यही रहने वाला है। इसके बावजूद इसमें डूबने की चाह रखने वालों की कमी नहीं है। इसकी हामी भरती हैं, कहानी-संग्रह 'गुलाबी इच्छाएं' की कहानियां। इसमें 'बिल्लौरी आंखों वाली', 'खिरनी' और 'गुलाबी इच्छाएं' जैसी प्रेम में पगी 13 कहानियां हैं।

स्मृति और दंश
(विभाजन, निरंतरता और तीसरी पीढ़ी)

लेखिका : बलवन्त कौर
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : ₹399

दंगे भले ही कोई करवाए, लेकिन उससे सबसे ज्यादा प्रभावित आम आदमी ही होता है। इसके बावजूद दंगों की आंच पर रोटियां सेकने वालों की कमी नहीं। सन् 1984 में हुए सिख दंगों को कौन भूल सकता है। ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की नृशंस हत्या, फिर उसकी प्रतिक्रिया में हुए सिख विरोधी दंगों की दर्दनाक कहानी है- 'स्मृति और दंश।'

रोजनामचा

साप्ताहिक भविष्यफल
(18 जनवरी से 24 जनवरी 2026)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)
मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। शैक्षिक कार्यों में सफल रहेंगे। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में वृद्धि होगी।

वृष (21 अप्रैल-20 मई)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव भी हो सकता है। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। कोई अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिश्रम अधिक रहेगा। सेहत का ध्यान रखें।

मिथुन (21 मई-21 जून)
मन शांत रहेगा, परंतु आत्मविश्वास में कमी हो सकती है। संयत रहें। बातचीत में संतुलन बनाए रखें। अपनी सेहत के प्रति सचेत रहें। कारोबार में बदलाव के योग बन रहे हैं।

कर्क (22 जून-23 जुलाई)
मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। वस्त्र उपहार में मिल सकते हैं। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)
मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी।

कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)
आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान हो सकता है। आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। लंबे समय बाद किसी मित्र से मिलना हो सकता है। आय में वृद्धि होगी।

तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। तरक्की के अवसर भी मिल सकते हैं। किसी मित्र का सहयोग भी मिल सकता है। संतान व अपनी माता की सेहत का ध्यान रखें।

वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। वाणी में मधुरता रहेगी। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ अधिक रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। मित्रों का सहयोग मिलेगा। परिश्रम अधिक रहेगा।

धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। मन प्रसन्न रहेगा। फिर भी धैर्यशीलता बनाए रखें। बातचीत में संतुलित रहें। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। आय में वृद्धि होगी। संतान की ओर से सुखद समाचार मिल सकता है।

मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)
आत्मविश्वास बहुत रहेगा। मन परेशान हो सकता है। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। माता-पिता का सान्निध्य मिलेगा। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें।

कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)
मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। मान-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है।

मीन (19 फरवरी-20 मार्च)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के अवसर भी मिल सकते हैं। स्थान परिवर्तन हो सकता है। परिवार का साथ मिलेगा।

वर्ग पहेली : 8213

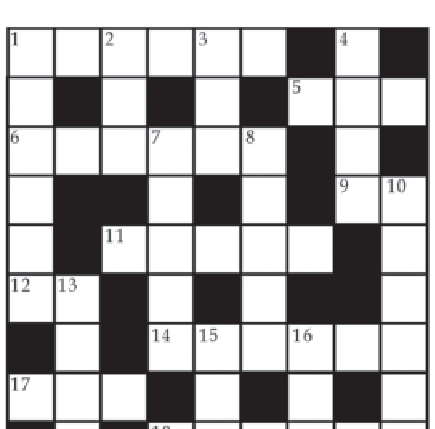

बाएं से दाएं

1. जिसे किसी अन्य के बदले सजा मिले; बलि छाग (2,1,3)
5. चलाने वाला (3)
6. पालने वाले से द्रोह करने वाला; स्वामी से छल करने वाला; कृतघ्न; निष्ठाहीन (6)
9. गुलाम; नौकर; सेवक (2)
11. कश खींचना; कश भरना; दम लगाना (2,3)
12. किश्ती; तरणि; नौका; वहित्र (2)
14. असफल करना; विफल करना (3,3)
17. माल की बिक्री; लागत; उपभोग (3)
18. गड़गड़ाहट; मेघ गर्जना; 'घन-घन' की आवाज (6)

ऊपर से नीचे

1. कहना; प्रशंसा करना; बड़ाई करना; वर्णन करना (3,3)
2. करने वाला; कार्यवाहक; कारण; साधन (3)
3. कक्ष; कोठरी (3)
4. दूर जाना; विदा होना; विदाई (4)
7. निराश होना; आशाहीन होना (3,2)
8. सर्वाधिक मधुर; मधुर की उत्तमावस्था (5)
10. हवा बहने का शब्द; खौलते पानी का स्वर; सन-सन की आवाज (6)
13. दूल्हे के साथ चलने वाले लोग; बराती (4)
15. काल संबंधी; गलीचा (3)
16. उद्यम से धनोपार्जन करना; काम करना; अर्जित करना; कारोबार करना (3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 8212 का उत्तर

1अ	धि	2का	री	■	3ध	ड़	4क	ना
धि	■	र	■	5आ	■	■	ल	■
6ना	स्ति	क	■	जी	■	7सं	गी	8न
य	■	■	9आ	व	श्य	क	■	से
क	■	10घा	■	न	■	र	■	ढ़ी
वा	■	11त	र	स	ना	■	■	ली
12द	13स्त	क	■	द	■	14प	द	क
■	री	■	■	स्य	■	र	■	र
15नि	य	मि	त	■	16अ	ख	र	ना

सुडोकू : 8195
*मध्यम

		2		7		1		
1								7
	9		5		1		8	
3		6				2		1
		4				8		
2		9				5		3
	3		1		4		6	
9								5
		8		9		3		

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल : सुडोकू नं. 8194

1	3	8	9	4	2	5	6	7
7	6	4	5	8	1	9	2	3
9	5	2	7	3	6	8	1	4
8	2	9	1	6	3	4	7	5
3	1	7	4	5	9	6	8	2
6	4	5	2	7	8	3	9	1
4	9	6	3	1	7	2	5	8
2	7	3	8	9	5	1	4	6
5	8	1	6	2	4	7	3	9

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

18 जनवरी, रविवार, **शक संवत्:** 28 पौष (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग:** 05 माघ मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम:** 28 रज्जब, 1447, **विक्रमी संवत्:** माघ कृष्ण अमावस्या तिथि रात्रि 01.22 मिनट तक। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, हर्ष योग रात्रि 09.11 मिनट तक पश्चात वज्र योग, चतुष्पद करण। चंद्रमा धनु राशि में सायं 04.41 मिनट तक उपरांत मकर राशि में।

सूर्य उत्तरायण। सूर्य दक्षिण गोल। शिशिर ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम्। माघ (मौनी) अमावस्या। तीर्थ स्नान माहात्म्य (हरिद्वार, प्रयागादि)।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

मेरी टिंबर फैक्ट्री है, लेकिन खास नहीं चल रही है। कुछ उपाय बताएं। -कुठार सिंह, रोहतक

- आपकी फैक्ट्री की सबसे बड़ी समस्या उसका अनियमित आकार है। आपकी फैक्ट्री ईशान कोण में जाकर पतली हो गई है, जो एकदम गलत है।
- आपने उत्तर दिशा में लेबर क्वार्टर बना रखे हैं, जो गलत हैं। आप लेबर क्वार्टर वहां से हटाकर पश्चिम दिशा में कर लें।
- आपने पानी निकालने के लिए जो नाली बनाई है, उसकी निकासी दक्षिण में है। इससे आपका ढलान उधर हो गया है। यह गलत है। यह पैसे के लिए नुकसान करने वाला होता है। नाली का ढाल पलटवा कर उत्तर दिशा की ओर करें। ईशान कोण में आप हल्का नीला रंग कर लें।

राजदरबार

नववर्ष मिलन

यूपी में आजकल एक मंत्री का नव वर्ष मिलन चर्चाओं में है। इसकी वजह मंत्रीजी का प्रोटोकॉल तोड़कर अफसरों के घर पहुंचना है। मंत्रीजी नए साल पर धड़ाधड़ सुबह-सुबह अफसरों के घर पहुंचने लगे। वे एक नहीं करीब 25 अफसरों के घर पहुंचे और बुके देकर बधाई दी। पहले तो कुछ अफसरों को लगा कि उनकी सीनियरटी की वजह से शायद मंत्री जी आए हैं लेकिन जब राज खुला तो पता चला कि मंत्रीजी तो करीब 25 अफसरों के यहां गए। सत्ता के गलियारे में अब ये चर्चा का विषय बना हुआ है। मंत्रीजी वैसे तो छोटे उद्योग को बढ़ावा देने का काम करते हैं, लेकिन लग रहा है कि संभावित मंत्रिमंडल विस्तार में उनको खतरा कुछ ज्यादा है, जिसके लिए शायद वे अपना दायरा बढ़ाने में जुटे हैं। उनके नव वर्ष मिलन को इससे जोड़कर देखा जा रहा है।

इंतजार की नसीहत

राज्यसभा के द्विवार्षिक चुनावों में कांग्रेस के पास ज्यादा सीट नहीं हैं, पर हर सीट के लिए कई दावेदारों ने पार्टी की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। टिकट के दावेदार पार्टी के तमाम बड़े नेताओं के घर और दफ्तरों के चक्कर लगा रहे हैं। दिल्ली में आकर मुलाकात करते हैं, तो कह दिया जाता है कि प्रदेश जिसका नाम भेजेगा, उसे राज्यसभा में भेजा जाएगा। ऐसे में प्रदेश कांग्रेस नेताओं से मिलें। दावेदार जब प्रदेश नेताओं के पास पहुंचते हैं तो बताया जाता है कि इसका फैसला केंद्रीय नेतृत्व करेगा। टिकट के दावेदार लौटकर फिर दिल्ली आ जाते हैं। टिकट के एक दावेदार ने बड़े नेता से शिकायत करते हुए कहा कि तीन राज्यों के चक्कर लगा चुका हूं। अब साफ-साफ बता दीजिए कि राज्यसभा मिल सकती है या नहीं। नहीं मिलनी है, तो वह आखिर अपना वक्त क्यों बर्बाद करें। पर, बड़े नेता अभी भी इंतजार की नसीहत दे रहे हैं।

साहब की पूजा

उत्तराखंड के एक आला अफसर इन दिनों खासे धार्मिक हो गए हैं। हालांकि, उत्तराखंड में बाबाओं की कमी नहीं है लेकिन वे ओडिशा जैसे दूसरे प्रदेश के बाबाओं के जरिए भी ग्रह चाल शांत करने की कोशिश में लगे हैं। साहब को अति धार्मिक हुआ देख वजह तलाशी गई तो पता चला कि साहब ने पिछली मलाईदार पोस्टिंग में कुछ ऐसे कारनामे कर आए हैं कि पूछिए मत। खबर है कि साहब ने बहती गंगा में हाथ धोते-धोते कुछ बाल्टियां भरने का इंतजाम भी कर लिया था। अब हर वक्त यही डर है कि कहीं भेद खुल न जाए। वैसे भी साहब की जगह जो नई हाकिम आई हैं, उन्हें बेहद कड़क बताया जाता है। बहरहाल, अब सभी को इंतजार है कि पूजा का असर होता भी है कि नहीं?

निजता में खलल

कर्तव्य भवन में केंद्र सरकार के दफ्तरों का शिफ्ट होना शुरू हो चुका है लेकिन इस नए भवन में ज्यादातर मंत्रियों और सचिवों के दफ्तर कुछ इस प्रकार से बने हैं कि एक तरफ पारदर्शी शीशे की दीवार है। यानी भवन के दूसरी तरफ के लोग यह देख सकते हैं कि मंत्री या सचिव दफ्तर में हैं या नहीं। खबर है कि मंत्री और सचिव इससे खुश नहीं हैं। उन्हें लगता है कि ऐसे में दफ्तर की निजता क्या रह जाएगी? खबर यह भी है कि वे अपने स्तर पर इस समस्या का समाधान तलाश रहे हैं, क्योंकि सुनवाई तो कहीं होने से रही।

किससे मिलें?

भाजपा में नए अध्यक्ष के चुनाव के साथ नई टीम को लेकर चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है। मौजूदा पदाधिकारी अपने भविष्य को लेकर चिंतित हैं, खासकर वरिष्ठ नेता। उनको लग रहा है कि युवा एजेंडा में कहीं उनका पत्ता न कट जाए। जिस तरह से अध्यक्ष का फैसला हुआ और किसी को भनक तक नहीं लगी उससे यह तो तय है कि नई टीम की खबर भी बाहर नहीं आएगी। चूंकि इसमें कई नाम होंगे, इसलिए कुछ का तो अंदाजा लगाया जा सकता है, लेकिन सबसे ज्यादा वह परेशान हैं जो बनना चाहते हैं या नई भूमिका चाहते हैं। वे मिलें तो किससे मिलें, जो वरिष्ठ पदाधिकारी हैं उन्हें अपना भी पता नहीं है, वरिष्ठ मंत्रियों की कोई सुनता नहीं।

इलेस्ट्रेशन : यशवंत नामदेव

देश 30s

हादसे में गुजरात के पांच लोगों की मौत

चंडीगढ़। पंजाब के बठिंडा जिले के गुरुथरी गांव के पास राष्ट्रीय राजमार्ग पर शनिवार को एक वाहन डिवाइडर से टकरा गया। इस हादसे में गुजरात के महिला कांस्टेबल सहित पांच लोगों की मौत हो गई है। पुलिस ने बताया कि वाहन में सवार लोग बठिंडा से डबवाली इलाके की ओर जा रहे थे। हादसे में जान गंवाने वाले सभी गुजरात के रहने वाले थे। घटना के तुरंत बाद पीड़ितों को एम्स बठिंडा ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

तिरुवनंतपुरम में पर्यटक बस पलटी, 17 घायल

तिरुवनंतपुरम। केरल में शनिवार को तिरुवनंतपुरम के निकट एक पर्यटक बस पलट गई। इस हादसे में छात्रों सहित 17 लोग घायल हो गए। पुलिस के अनुसार, घायलों में त्रिशूर जिले के कोडकरा स्थित कॉलेज के शिक्षक और छात्र शामिल हैं। वे औद्योगिक भ्रमण के तहत विझिंजम बंदरगाह जा रहे थे। यह हादसा तड़के करीब साढ़े तीन बजे हुआ।

हरियाणा में कांग्रेस समितियों का विस्तार करेगी

चंडीगढ़। हरियाणा कांग्रेस ने शनिवार को संगठन को मजबूत करने और जमीनी स्तर पर उसे सशक्त बनाने के अपने अभियान के तहत कई जिलों में जिला कार्यकारी समितियों के विस्तार की घोषणा की। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने कहा कि कांग्रेस आलाकमान के निर्देशों के अनुसार जिला अध्यक्षों की नियुक्तियां पहले ही पूरी हो चुकी हैं।

मुंबई में शनिवार को आईसीजी पॉल्यूशन कंट्रोल वेसल समुद्र प्रहरी पर भारत और जापान कोस्ट गार्ड ने मिलकर खतरनाक और नुकसानदायक पदार्थों से निपटने के लिए संयुक्त रूप से मॉक ड्रिल की। • एएनआई

धमकी देकर बुजुर्ग से 40 लाख रुपये की ठगी

मुंबई। मुंबई के मुलुंड इलाके में रहने वाले एक 70 वर्षीय बुजुर्ग से साइबर ठगों ने पार्सल में ड्रग्स और डिजिटल गिरफ्तारी की धमकी देकर 40 लाख रुपये की ठगी कर ली। पीड़ित बुजुर्ग अकेले रहते हैं, जबकि उनके दोनों बेटे अमेरिका में रहते हैं। पुलिस ने शनिवार को बताया कि दिसंबर महीने में उन्हें एक अज्ञात व्यक्ति का फोन आया, जिसने खुद को एक निजी कूरियर कंपनी का प्रतिनिधि बताया था।

नदियों में डॉल्फिन की जानकारी हासिल करेंगे

नई दिल्ली। गंगा समेत देश की बड़ी नदियों में कितनी डॉल्फिन हैं, यह पता लगाने के लिए केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने अभियान शुरू कर दिया है। पहले चरण में उत्तर प्रदेश के बिजनौर से पश्चिम बंगाल में गंगासागर तक जांच की जाएगी। इसके बाद सिंधु, ब्रह्मपुत्र और ओडिशा में इरावदी नदी में भी यह अभियान चलाया जाएगा। केंद्रीय मंत्रालय ने शनिवार को बिजनौर से 'प्रोजेक्ट डॉल्फिन' की शुरुआत की।

कर्नाटक के पूर्व मंत्री भीमन्ना खांडरे का निधन

बीदर। कर्नाटक के पूर्व मंत्री भीमन्ना खांडरे का 102 वर्ष की उम्र में वृद्धावस्था संबंधी समस्याओं के कारण निधन हो गया। उनके बेटे और कर्नाटक के वन मंत्री ईश्वर खांडरे ने यह जानकारी दी। ईश्वर ने बताया कि स्वतंत्रता सेनानी भीमन्ना बीते 10-12 दिन से वृद्धावस्था संबंधी बीमारियों के कारण बीदर के निजी अस्पताल में भर्ती थे। बाद में भालकी स्थित आवास पर उनका इलाज किया गया।

खेलों को राजनीति से दूर रखें : मनोज सिन्हा

जम्मू, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने शनिवार को कहा कि खेलों को राजनीति से पूरी तरह अलग रखा जाना जरूरी है। खेल प्रतिभा का विकास केवल शांतिपूर्ण और पारदर्शी माहौल में ही संभव है। यह बात उपराज्यपाल ने यहां दो दिवसीय राष्ट्रीय स्तरीय खेल सम्मेलन- सृजन का उद्घाटन करते हुए कही। सिन्हा ने कहा कि भारत को एक सशक्त खेल राष्ट्र बनाना है।

वीपीएन प्रतिबंध का उल्लंघन, महिला पर मुकदमा

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर जिले में सुरक्षा कारणों से लगाए गए वीपीएन (वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क) प्रतिबंध का उल्लंघन करने के आरोप में एक महिला के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार मीना शर्मा, पत्नी मोहन लाल, के खिलाफ मजालता पुलिस थाने में मामला दर्ज किया गया है।

जमीन की खुदाई के दौरान तीन मजदूरों की मौत

कुन्नूर (तमिलनाडु)। तमिलनाडु के नीलगिरि जिले में शनिवार को एक निर्माण स्थल पर हुए हादसे में पश्चिम बंगाल के तीन प्रवासी मजदूरों की मौत हो गई। यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया, कुन्नूर के पास एक आवासीय परिसर में निर्माण कार्य के दौरान मजदूर जमीन की खुदाई कर रहे थे। इसी दौरान अचानक रेत के ढेर खिसक गए और सहायक दीवार का एक हिस्सा ढह गया।

सटीक रणनीति, त्वरित फैसले और अत्याधुनिक हथियारों से नक्सल खात्मे की व्यूह रचना हो रही सफल

बगैर हिंसा के नक्सल खात्मे को अंजाम दे रहे सुरक्षा बल

अभियान

■ पंकज कुमार पाण्डेय

नई दिल्ली। सुरक्षा बल जीरो हिंसा के साथ नक्सल खात्मे के करीब पहुंच रहे हैं। नक्सल विरोधी इस अभियान में अत्याधुनिक हथियारों से लैस बख्तरबंद वाहनों ने अहम भूमिका निभाई है। इसके अलावा, जवानों की जान-माल की हिफाजत के लिए मुहैया कराए गए उपकरणों ने भी सुरक्षा बलों के ऑपरेशन को बिना नुकसान के आगे बढ़ाने में मदद की है।

एक आला अधिकारी ने कहा कि नक्सल के खिलाफ सुरक्षा बलों के ऑपरेशन को मिल रही सफलता में शीर्ष स्तर पर त्वरित और निर्णायक फैसलों का बड़ा योगदान है। सुरक्षाबलों ने बख्तरबंद वाहन, अत्याधुनिक हथियार, नाइट विजन उपकरण, एंटी स्पाइक जूते सहित जो भी जरूरत सरकार को बताई बिना देरी के उन्हें उपलब्ध कराए गए। अधिकारी ने कहा, गृहमंत्री अमित शाह का स्पष्ट निर्देश है कि ऑपरेशन के लिए जरूरी उपकरण और हथियार सुरक्षा बलों को तुरंत मुहैया कराए जाएं। अगर खरीद में देरी हो तो सेना से लोन पर उपलब्ध कराया जाएं। कुछ मामलों में तुरंत रक्षा मंत्रालय से बात कर सुरक्षा बलों को आवश्यक उपकरण सेना द्वारा मुहैया कराए गए।

चारों तरफ से गोलीबारी का भी असर नहीं : ऑपरेशन से जुड़ी सटीक जानकारी देने से इनकार करते हुए एक अधिकारी ने कहा कि सुरक्षाबलों की मांग पर कई तरह के बदलाव के साथ बख्तरबंद वाहन तैयार कराए गए। इसी वजह से एक बड़े ऑपरेशन के दौरान नक्सलियों द्वारा चारों तरफ से गोलीबारी का असर भी सुरक्षाबलों पर नहीं हुआ। देश का सबसे बड़ा बख्तरबंद सुरंग रोधी वाहन सीआरपीएफ के पास है, जो बारूदी सुरंगों को रौंदते हुए पूरी ताकत के साथ आगे बढ़ने में सक्षम है। सुरक्षा बल के सुझाव पर इसमें अब तक 36 तरह के छोटे-बड़े बदलाव किए जा चुके हैं। इसे खराब सड़कों और दुर्गम क्षेत्रों में आवाजाही में कोई दिक्कत नहीं होती। आईईडी ब्लास्ट का भी असर इस पर नहीं होता।

स्थानीय सुरक्षा नेटवर्क की मजबूती पर ज्यादा जोर : जम्मू कश्मीर से लेकर नक्सल इलाके तक स्थानीय खुफिया और सुरक्षा तंत्र के नेटवर्क का फायदा आतंक और नक्सल रोधी अभियान को मिल रहा है।

एक अधिकारी ने कहा, केंद्र ने रणनीतिक शिफ्ट करते हुए नक्सल और आतंक प्रभावित इलाकों में स्थानीय बलों को फ्रंट फोर्स बनाया है।

इन उपकरणों का प्रयोग कर रहे

1. **एरिया वेपन :** इसकी रेंज 300 मीटर से लेकर पांच किलोमीटर तक है।
2. छोटे हथियार और गोला-बारूद, भीड़ नियंत्रण गियर, आईईडी डिटेक्शन और प्रबंधन उपकरण, निगरानी और टोही उपकरण, इलेक्ट्रो-ऑप्टिक डिवाइस, जैमर और अत्याधुनिक संचार प्रणाली
3. बेहतर नाइट विजन समेत कई एडवांस तकनीक से लैस वाहन और एयर सिस्टम। इससे सुरक्षा बलों के लिए रात में भी जंगलों में सर्च ऑपरेशन या बचाव कार्य संभव हुआ है।
4. एयर एम्बुलेंस भी सुरक्षा बलों को उपलब्ध कराए गए हैं। एंटी स्पाइक्स शू का भी फायदा जवानों को हुआ।

डीआरजी को हथियार दिए

अभियान में शामिल जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) को पहले हथियार नहीं दिए जाते थे। गृह मंत्री अमित शाह के निर्देश पर इन्हें भी हथियार दिए गए। इन्हें फ्रंट फोर्स के तौर पर आधा दर्जन एजेंसियों के साथ अभियान में लगाया गया।

सुरक्षा शिविर की स्थापना

सरकार ने अकेले बस्तर में लगभग 320 सुरक्षा शिविर स्थापित किए हैं। प्रत्येक सुरक्षा शिविर में कर्मियों की संख्या आवश्यकता के अनुसार घटती-बढ़ती रहती है। यह 150 कर्मियों से लेकर 1,200 तक हो सकती है। इनमें सुरक्षा बल और तकनीकी कर्मचारी शामिल हैं। सभी कोर नक्सल इलाके में तैनात हैं।

सरेंडर के लिए राजी कर रहे

नक्सलियों के खिलाफ एनकाउंटर अभियान से पहले उन्हें सरेंडर के लिए राजी करने का हरसंभव प्रयास किया जाता है। अधिकारी ने उदाहरण देते हुए कहा, हिडमा के एनकाउंटर से पहले उसकी बात उसकी मां से कराई गई थी। उस समय गृह मंत्री अमित शाह छत्तीसगढ़ के दौरे पर ही थे।

आतंकवाद मामले में आरोपपत्र दाखिल

नई दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने प्रतिबंधित आतंकी समूह के प्रचार के आरोप में पांच लोगों के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया है। इनमें एक महिला भी शामिल है।

अधिकारियों ने बताया कि अहमदाबाद की विशेष एनआईए अदालत में आरोपपत्र दाखिल किए गए। आरोपियों में मोहम्मद फरदीन, कुरैशी सैफुल्ला, मोहम्मद फैक, जीशान अली और शमा परवीन शामिल हैं। जांच एजेंसी ने कहा कि इन लोगों ने प्रतिबंधित एक्यूआईएस की भारत विरोधी विचारधाराओं का प्रचार किया।

गरीबों को दो लाख रुपये देंगे : नीतीश

पटना/मोतिहारी, हिन्दुस्तान टीम। बिहार के 94 लाख चिह्नित गरीब परिवारों को जरूरत पड़ने पर रोजगार के लिए दो लाख रुपए से ज्यादा राशि की सहायता दी जाएगी। अभी इन्हें अधिकतम दो लाख रुपये तक की मदद देने का प्रावधान है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शनिवार को यह ऐलान किया। वे मोतिहारी स्थित गांधी मैदान में समृद्धि यात्रा के दौरान आयोजित जन संवाद कार्यक्रम में आम लोगों से रूबरू थे।

सीएम ने कहा कि सरकार का मुख्य उद्देश्य सभी लोगों का सम्मान और उनका जीवन यापन आसान बनाना है।

क्रैश लैंडिंग में घायल यात्री ने दम तोड़ा

भुवनेश्वर, एजेंसी। ओडिशा के राउरकेला शहर के पास 10 जनवरी को छोटे विमान की क्रैश लैंडिंग में गंभीर रूप से घायल एक यात्री की शनिवार को मुंबई एयरलिफ्ट करने के लिए एयरपोर्ट ले जाते समय मौत हो गई।

मृतक की पहचान सुशांत बिस्वाल (47) के रूप में हुई है। राज्य के नागरिक उड्डयन निदेशालय ने बयान में कहा कि दुर्घटना के बाद बिस्वाल का इलाज चल रहा था। बिस्वाल की बहन अनीता साहू, जो दुर्घटना में घायल हुई थीं, उनकी हालत स्थिर बनी हुई है।

मुठभेड़ में माओवादी नेता समेत दो लोग मार गिराए

छत्तीसगढ़

बीजापुर, एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में शनिवार को सुरक्षा बलों के साथ हुई मुठभेड़ में दो नक्सली मारे गए। इनमें एक वरिष्ठ माओवादी नेता दिलीप बेड़जा शामिल है। पुलिस अधिकारियों ने यह जानकारी दी है।

अधिकारियों के अनुसार यह मुठभेड़ जिले के उत्तर-पश्चिमी इलाके में स्थित पहाड़ी और जंगल क्षेत्र में उस समय हुई, जब सुरक्षा बलों की संयुक्त टीम नक्सल विरोधी अभियान पर निकली थी।

चार उग्रवादी गिरफ्तार : मणिपुर में सुरक्षा बलों ने जबरन वसूली की गतिविधियों में शामिल चार उग्रवादियों को गिरफ्तार किया है। साथ ही अवैध रूप से की जा रही अफीम की खेती को भी नष्ट कराया है। पुलिस ने शनिवार को इसकी जानकारी दी।

विश्वसनीयता खो रहा आयोग : कांग्रेस

नई दिल्ली, एजेंसी। वरिष्ठ कांग्रेस नेता आनंद शर्मा ने शनिवार को दावा किया कि चुनाव आयोग अपनी विश्वसनीयता और लोगों का भरोसा खो रहा है। उन्होंने कहा कि लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी द्वारा उठाए गए मुद्दों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

शर्मा ने यह भी कहा कि चुनाव निकाय को अपनी खोई हुई विश्वसनीयता वापस पाने के लिए कार्यप्रणाली में सुधार करना होगा। पूर्व केंद्रीय मंत्री की यह टिप्पणी राहुल गांधी के बयान के एक दिन बाद आई है।

एसआईआर प्रक्रिया रोकने की कोशिश हो रही : भाजपा

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। भाजपा ने शनिवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर पश्चिम बंगाल में लोकतंत्र और संविधान की धज्जियां उड़ाने का आरोप लगाया। कहा कि राज्य में टीएमसी हिंसा के जरिए एसआईआर रोकने की कोशिश कर रही है।

पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता संबित पात्रा ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि टीएमसी का मतलब तुष्टिकरण, माफिया और क्राइम हो गया है। टीएमसी नेताओं के कृत्यों से कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि पश्चिम बंगाल भारत का हिस्सा है भी या नहीं?

उन्होंने आरोप लगाया कि ममता बनर्जी मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को गैरसंवैधानिक तरीके से और हिंसा के माध्यम से रोकने की कोशिश कर रही हैं। स्थिति इतनी भयावह हो गई है कि बंगाल में बीएलओ को आत्महत्या के लिए मजबूर किया जा रहा है।

कांग्रेस विधायक का बयान अशोभनीय : मोहन यादव

- कांग्रेस विधायक बरैया ने एक साक्षात्कार में महिलाओं पर की टिप्पणी
- भाजपा ने बरैया को कांग्रेस से निकालने की मांग की

भोपाल, एजेंसी। मध्य प्रदेश में कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया की महिलाओं पर आपत्तिजनक टिप्पणी की भाजपा ने आलोचना की है। प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस विधायक की टिप्पणी अशोभनीय है। उन्होंने उम्मीद जताई कि इंदौर के दौरे पर आ रहे लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कांग्रेस विधायक के खिलाफ कार्रवाई करेंगे।

कांग्रेस विधायक बरैया ने एक साक्षात्कार के दौरा अभद्र टिप्पणी की थी। जिसका वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। भाजपा मध्य प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष उषा अग्रवाल ने कथित वीडियो को एक्स पर शेयर किया और बरैया को कांग्रेस से निकालने की मांग की। हालांकि, विवाद बढ़ता देख विधायक ने अपने बयान पर पछतावा जताते हुए माफी मांग ली है। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने यूनियन कार्बाइड परिसर का दौरा करने के बाद कहा कि राहुल गांधी इंदौर आ रहे हैं। समाज में जहर घोलने वाला बयान देकर फूल सिंह बरैया ने सामाजिक विद्वेष फैलाने का काम किया है। उन्होंने कहा कि मैं उम्मीद करूंगा कि राहुल गांधी अपने विधायक को निलंबित करें, पार्टी से बाहर करें ताकि लगे कि उनके मन में समाज के बाकी वर्गों के लिए सम्मान है।

'कटऑफ में बदलाव के पीछे राष्ट्रीय नजरिया'

नीट-पीजी

नई दिल्ली, एजेंसी। नीट-पीजी दाखिले के लिए कटऑफ में बदलाव को लेकर उठ रहे सवालों के बीच शीर्ष अधिकारियों ने सफाई दी है। उनका कहना है कि यह निर्णय 'राष्ट्रीय नजरिये' से लिया गया है और हमें समस्याओं को समग्र रूप से समझने की जरूरत है।

'नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जामिनेशंस इन मेडिकल साइंसेज' (एनबीई) ने 13 जनवरी को 2025-26 नीट-पीजी एडमिशन के लिए संशोधित क्वालिफाइंग कटऑफ के संबंध में एक नोटिफिकेशन जारी किया था। इस कदम से चिकित्सा जगत में बहस छिड़ गई है। कुछ संगठनों ने इसे विवादित मुद्दा करार दिया है। मामले में एक शीर्ष अधिकारी ने कहा कि देश में बड़ी संख्या में खाली पीजी मेडिकल सीटों की समस्या को दूर करने के लिए यह संशोधन किया गया। बताया कि यह फैसला दूसरे चरण की काउंसिलिंग के बाद लिया गया, जिसमें सरकारी और निजी मेडिकल कॉलेजों में 18,000 से अधिक सीटें खाली रह गई थीं।

नेगेटिव मार्किंग का कारण परीक्षा ढांचा : अधिकारी ने कहा कि सभी सभी नीट-पीजी उम्मीदवार प्रशिक्षित एमबीबीएस डॉक्टर हैं, जो अपनी डिग्री और इंटर्नशिप कर चुके हैं। कहा कि नीट पीजी के लिए प्रतियोगी प्रवेश परीक्षा होती है। इसमें नेगेटिव स्कोर का सबसे बड़ा कारण परीक्षा का स्ट्रक्चर है जिसमें गलत उत्तरों के लिए नेगेटिव मार्किंग होती है। कहा कि हम किसी छात्र का स्कोर नहीं बदल रहे हैं।

हथियारों का जखीरा बरामद

पठानकोट, एजेंसी। पंजाब पुलिस ने शनिवार को पठानकोट जिले में हथियारों और गोला-बारूद का बड़ा जखीरा बरामद किया है। इसमें तीन एके-47 राइफल, दो पिस्तौल और भारी मात्रा में कारतूस शामिल हैं।

बॉर्डर रेंज के पुलिस उप महानिरीक्षक संदीप गोयल ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी। इसके आधार पर नरोट जैमल सिंह क्षेत्र में तलाशी अभियान चलाया गया।

नं. 2 वायु सेना विद्यालय, पालम

नं. 02 वायु सेना विद्यालय, पालम वर्ष 2026-27 के लिए नियमित आधार पर एनटीटी शिक्षक के पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं।

अनिवार्य योग्यता

एनटीटी- सरकारी मान्यता प्राप्त संस्था से उच्च माध्यमिक के साथ नर्सरी शिक्षक प्रशिक्षण डिप्लोमा या नर्सरी/मोंटेसरी/पूर्व प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त किया हो।

आयु मानदंड - 01 जुलाई 26 तक 21 से 50 वर्ष।

आवेदकों को अपना बायोडाटा टाइप किया हुआ या हस्तलिखित आवेदन डाक अथवा मेल द्वारा 02 फरवरी 2026 तक भेजना है या शिक्षक प्रभारी, नंबर 2 वायु सेना विद्यालय रॉक व्यू क्षेत्र, दिल्ली कैंट 110010 को प्रस्तुत करना है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : 8618135746, 011-25672865, email- no.2airforceschoolpalam@gmail.com

समय प्रात 0900 बजे से दोपहर 1330 बजे तक (सोमवार-शुक्रवार)

उत्तराखण्ड पावर कारपोरेशन लि.

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, विद्युत वितरण मण्डल भदेलबाड़ा, पिथौरागढ़- 262501 Email : septh_upcl@yahoo.com

पत्रांक : 778/वि.वि.मं.(पि.)/ | दिनांक : 17.01.2026

ई-निविदा सूचना

विद्युत वितरण मण्डल, पिथौरागढ़ निम्नलिखित कार्यों हेतु ई-निविदायें आमंत्रित करता है :-

क्र0 सं0	ई-निविदा संख्या	कार्य का नाम	ऑनलाईन ई-निविदा आवेदन एवं जमा करने की अन्तिम तिथि एवं समय	ऑनलाइन/ऑफलाईन ई-निविदा भाग-1 खुलने की तिथि एवं समय
1	18/ई0डी0सी0(पि0) 2025-26	विद्युत वितरण खण्ड पिथौरागढ के अन्तर्गत टाउन अनुभाग में स्थापित 100 केवीए0, 250 केवीए0, 400 केवीए0 परिवर्तकों में कुल 90 नग फ्यूज सैट स्थापित करने हेतु सामग्री आपूर्ति का कार्य।	02.02.2026 16.00 बजे	03.02.2026 12.00 बजे
2	19/ई0डी0सी0(पि0) 2025-26	विद्युत वितरण खण्ड पिथौरागढ के उपखण्ड पिथौरागढ के अन्तर्गत 11 केवी0 देवलथल फीडर में कुल 300 नग डबल पोलों में इन्सूलेटेड कवर्ड कन्डक्टर की सहायता से री-जम्परिंग एवं 40 नग परिवर्तकों में फ्यूज सैट एवं एच0टी0/एल0टी0 टर्मिनल पर इंसूलेटेड बूट/कैप लगाने हेतु सामग्री आपूर्ति का कार्य।	02.02.2026 16.00 बजे	03.02.2026 12.00 बजे
3	20/ई0डी0सी0(पि0) 2025-26	विद्युत वितरण खण्ड पिथौरागढ के अन्तर्गत 33/11 केवी0 उपसंस्थान पिथौरागढ़ में 11 केवी0 इनकमर/आउटगोईंग पोषकों हेतु अतिरिक्त 11 के0वी0 केबिल स्थापित किये जाने का कार्य।	02.02.2026 16.00 बजे	03.02.2026 12.00 बजे

उक्त ई-निविदाओं की अन्य नियम व शर्तें वैबसाइट http://www.uktenders.gov.in पर देखी जा सकती है। ई-निविदा की ऑफलाईन तकनीकी बिड (भाग-1) कार्यालय में जमा करने की अंतिम तिथि 02/02/2026 (16.30 बजे) होगी, इसके उपरान्त कोई निविदा स्वीकार नहीं की जायेगी।

Customer Care Toll Free No. 18004190405

''राष्ट्र हित में बिजली बचायें''

''विद्युत बिलों के 24x7 ऑनलाईन भुगतान हेतु www.upcl.org पर जायें''

अधीक्षण अभियन्ता

UTTARAKHAND CIVIL AVIATION DEVELOPMENT AUTHORITY

(DEPARTMENT OF CIVIL AVIATION) (GOVERNMENT OF UTTARAKHAND)
SAHASTRADHARA HELIDROME, P.O. KULHAN, DEHRADUN- 248001, UTTARAKHAND
EMAIL: UCADADOON@GMAIL.COM; WEBSITE: WWW.UCADA.IN

Ref.: 2546/UCADA/2026 | DATE: 17/01/2026

E-TENDER NOTICE

Uttarakhand Civil Aviation Development Authority (UCADA) Dehradun invites proposals from eligible aviation agency(s) to submit their proposals/bids for the following packages.

S. No.	Name of Package	Date of Start of downloading the document	Date of Pre-Bid Meeting	Last Date of submission of bids	EMD (INR)
1.	REQUEST FOR BIDS FOR SELECTION OF HELICOPTER SHUTTLE SERVICE OPERATORS FOR MANDAKINI VALLEY TO SHRI KEDARNATH JI ROUTE Ref. No.: (2546/RFB/SHUTTLE/UCADA/2026	17/01/2026	22/01/2026	05/02/2026	45,00,000/-

Details can be obtained from the website **www.uktenders.gov.in** and/or **www.ucada.in** from **17/01/2026, 03:00 PM.** The proposal must be submitted online on the portal, **www.uktenders.gov.in** only. **Note:-1.** The corrigendum for the above packages will be uploaded on website **www.uktenders.gov.in** &/or **www.ucada.in. 2.** Email Id **procurement.ucada@gmail.com** may be contacted for any information.

CEO, UCADA

Office of District Town Planner (Enforcement), Gurugram
DEPARTMENT OF TOWN & COUNTRY PLANNING, HARYANA
SECTOR-14, HUDA COMPLEX, 3rd FLOOR, GURUGRAM.
E-mail: dtpenf5.gurugram.tcp@gmail.com

PUBLIC NOTICE FOR HEARING ON 19.01.2026

Whereas, pursuant to and in compliance with the order dated 26.11.2025 passed by the Hon'ble High Court of Punjab & Haryana in CM Application(s) filed in CWP No. 1528 of 2021 and CWP No. 2106 of 2021, it was informed through the Public Notice dated 03.12.2025 & revised Public Notice 15.12.2025 published in various newspapers on 04.12.2025 & 19.12.2025 respectively, that the list of violation(s) pertaining to the properties/plots/ buildings situated in DLF Phase I to V, Gurugram had been uploaded on the website of Department of Town & Country Planning, Haryana i.e. https://tcpharyana.gov.in.

And whereas, in terms of and in compliance with the order dated 26.11.2025 passed by the Hon'ble High Court of Punjab & Haryana, an opportunity of hearing in a representative capacity on the issue qua the 'Jurisdiction' is to be granted by the undersigned on 19.01.2026.

Accordingly, in compliance with the aforesaid judicial directions, an opportunity of hearing, in a representative capacity, only limited to the issue of the jurisdiction of the undersigned to take action in respect of any building violations, as raised before the Hon'ble High Court and/or in the respective representations submitted to the undersigned, has been scheduled. The hearing shall take place in the office of the undersigned at 3rd Floor, HSVP Complex, Sector-14, on 19.01.2026 at 10:00 A.M.

--Sd--
District Town Planner
Enforcement, Gurugram

गर्दिश में 'आवारा'

पशु प्रेमी बनाम इंसानों की सुरक्षा पर चल रही शीर्ष बहस

रेबीज से होने वाली मौत सबसे बड़ा खौफ

राज कपूर की फिल्म 'आवारा' का गीत, 'आवारा हूं, या गर्दिश में हूं, आसमान का तारा हूं' ने सड़कों की जिंदगी को एक रुमानियत दी थी। भारतीय शहरों में यह रुमानियत सड़कों पर कुत्तों को लेकर भी उमड़ी। आवारा कुत्तों को खिलाने व उनकी देखभाल करने का एक बड़ा तबका तैयार हुआ। जल्द ही यह रुमानियत खौफ में बदल गई, जब आवारा कुत्तों के काटने से लोगों की जान पर बन आई। क्या बच्चे और बड़े, सभी आवारा कुत्तों के काटने के शिकार हुए। भारत में बढ़ते रेबीज के मामले और मौत से खौफ इतना पसरा कि यह जनसंचार माध्यमों की सुर्खियां बना। कुत्तों के हमलों के खौफनाक वीडियो सोशल मीडिया पर तैरने लगे। पिछले दिनों दिल्ली और देश में आवारा कुत्तों के हमलों से घायल और मौत के मामलों पर शीर्ष अदालत ने खुद संज्ञान लिया। इस मसले पर अदालती बहस जारी है। पशु प्रेमी और इंसानी सुरक्षा आमने–सामने है। कभी पशु प्रेमियों की आंखों के तारे, और अभी गर्दिश में गए आवारा कुत्तों पर सरोकार की पड़ताल।

जनसत्ता सरोकार

भारत में कम से कम छह करोड़ आवारा कुत्ते हैं। हालांकि, साल 2019 के सरकारी आंकड़ों के अनुसार ऐसे कुत्तों की संख्या 1.53 करोड़ है। सर्वेक्षणों में अकेले दिल्ली में लगभग 10 लाख कुत्ते पाए गए। इसी से संबंधित एक और तथ्य यह है कि वैश्विक स्तर पर रेबीज से होने वाली मौत में से एक तिहाई से अधिक भारत में होती हैं।

ज्यादातर पश्चिमी देशों के विपरीत, भारतीय संस्कृति और कानून कुत्तों को मारने पर रोक लगाते हैं। इसके बजाय, कुत्तों को पकड़ा जाता है, उनका बंध्याकरण किया जाता है, उन्हें टीका लगाया जाता है और सबसे अहम यह है कि उन्हें उनके मूल क्षेत्र में वापस छोड़ दिया जाता है।

अगस्त 2025 में हालात बदल गए। कई बच्चों को आवारा कुत्तों ने नोच डाला। इसके बाद सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली और आसपास के इलाकों के सभी आवारा कुत्तों को पकड़ कर आश्रय स्थलों या पशुशालाओं में रखने का संक्षिप्त आदेश दिया और दशकों में पहली बार सड़कों को कुत्तों से मुक्त करने का वादा किया। हालांकि यह आदेश अव्यावहारिक था। लाखों कुत्तों के लिए आश्रय स्थल होना असंभव है। इसका पशु अधिकार समूहों की ओर से तीखा विरोध हुआ। दो दिन के भीतर, अदालत ने अपना फैसला पलट दिया और लंबे समय से चली आ रही बंध्याकरण नीति को बहाल कर दिया।

बाद के फैसलों ने इस विषय पर ध्यान केंद्रित किया है। नवंबर 2025 में अदालत ने देश भर के स्कूलों, अस्पतालों और सार्वजनिक परिवहन क्षेत्रों से कुत्तों को हटाने का आदेश दिया। साथ ही सार्वजनिक स्थानों पर कुत्तों को खाना खिलाने पर प्रतिबंध लगाया और उन्हें दूर रखने के लिए बाड़ लगाने को प्रोत्साहित किया।

सात जनवरी 2026 को अदालत ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे भारत के सभी 15 लाख विद्यालयों और महाविद्यालयों को कुत्तों से सुरक्षित करने के लिए बाड़ लगाएं और उन्हें मात्र आठ सप्ताह के भीतर पूरी तरह से संरक्षित करें। हालांकि, पहले के आदेश की तरह, इस आक्रामक समयसीमा में बुनियादी ढांचे से जुड़ी चुनौतियों को नजरअंदाज कर दिया गया।

जानकारों का मानना है कि इससे कुत्तों के काटने की घटनाओं या उससे होने वाले संक्रमण में उल्लेखनीय कमी आने की संभावना नहीं है। अदालत वर्तमान में संबंधित पक्षों के साथ सुनवाई कर रही है, क्योंकि वह कुत्तों को बड़े पैमाने पर हटाने और पशु कल्याण संबंधी चिंताओं के बीच संतुलन बनाने का प्रयास कर रही है।

विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा लगता है कि सरकार न तो इन कुत्तों को मार सकती है, न ही उन्हें आश्रय दे सकती है, और न ही उन पर नियंत्रण रख सकती है। उनके साथ क्या किया जाए, यह सवाल जन सुरक्षा और पशु कल्याण से जुड़ा है, लेकिन साथ ही इससे कहीं अधिक गहरा अर्थ रखता है, यह विकास के सबसे उल्लेखनीय साझेदारियों में से एक का नवीनतम अध्याय है।

कुत्ते एकमात्र ऐसे कशेरुकी जीव हैं, जिन्होंने अफ्रीका से मानव प्रवास के दौरान हर प्रकार की जलवायु और बस्ती में अपना निवास स्थान बनाया। यद्यपि इनके पालतू बनने का सटीक समय निश्चित नहीं है, फिर भी कुत्ते मनुष्यों के साथ रहने के लिए

विकसित हुए हैं। अब उष्णकटिबंधीय शहरीकरण के कारण अंतर–प्रजाति संबंधों को अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

पिछली कुछ शताब्दियों में, जैसे–जैसे कुत्ते घरों में जगह बनाते गए, मनुष्यों ने इनकी 400 से अधिक नस्लें विकसित कीं। इन्हें साथ रहने, काम करने या सुंदरता के लिए परिष्कृत किया गया। यह सह–विकास महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसका अर्थ है कि कुत्ते मानवीय संकेतों को समझते हैं और विशिष्ट लोगों और स्थानों से गहरा लगाव रखते हैं। शहरी भारत में, जहां कुत्ते बिना मालिक के होते हैं लेकिन पूरी तरह से जंगली नहीं होते। यह लगाव घर या उन्हें भोजन देने वाले व्यक्ति के प्रति क्षेत्रीय व्यवहार के रूप में प्रकट होता है।

आम तौर पर आवारा कुत्ते सड़कों पर डाले गए कूड़ों से अपना खाना निकालते हैं, लेकिन अधिक समृद्ध जिलों में, उन्हें अब जानबूझकर भोजन दिया जाता है। कुत्ते कुछ खास घरों के आसपास झुंड बनाकर रहते हैं, जहां कुछ समर्पित भोजनदाता उनकी लगभग सौ फीसद पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। इससे कुत्तों की संख्या में काफी वृद्धि होती है।

> **सात जनवरी 2026 को अदालत ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे भारत के सभी 15 लाख विद्यालयों और महाविद्यालयों को कुत्तों से सुरक्षित करने के लिए बाड़ लगाएं और उन्हें मात्र आठ सप्ताह के भीतर पूरी तरह से संरक्षित करें।**

शोधकर्ता निशांत कुमार के अनुसार यहीं पर प्राचीन सहअस्तित्व आधुनिक शहरी शैली से टकराता है। भारतीय सड़कें बहुउपयोगी स्थान हैं। उष्णकटिबंधीय जलवायु में, कचरा बीनने वाले और श्रमिक अक्सर रात में काम करते हैं। ठीक उसी समय जब कुत्ते अपने क्षेत्र को लेकर सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं, और जब उन्हें भोजन देने वाले धनी निवासी सो रहे होते हैं। कुत्तों ने अपने व्यवहार को इस तरह ढाल लिया है कि भौंकना, पीछा करना, कभी–कभी काटना उनकी आदत में शामिल है। इससे खाना खिलाने वालों को अनजाने में तो प्रोत्साहन मिलता है, लेकिन दूसरों के लिए खतरा पैदा हो जाता है। आंकड़े चौंकाने वाले हैं, हर साल कुत्तों के काटने के हजारों मामले होते हैं।

फिर भी, सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों पर कुछ प्रतिक्रियाएं अपरिहार्य थीं। जैसे जैसे शहरी विकास के कारण शहरी जीवन कैसा होना चाहिए, यह तय करने का अधिकार बदल रहा है, मूल्यों का एक संघर्ष सामने आया है। कुछ लोग जानवरों की साझा उपस्थिति को महत्त्व देते हैं, जबकि अन्य जोखिम उन्मूलन को प्राथमिकता देते हैं।

भारत के शहर शायद सहयोग के चरम पर पहुंच चुके हैं। रोजमर्रा की परेशानियों–भौंकना, पीछा करना के बावजूद लाखों लोग इन कुत्तों को खाना खिलाते हैं। फिर भी, वही कुत्ता किसी नए को काट भी सकता है। यह तर्कहीन आक्रामकता नहीं है, यह एक विशिष्ट मानव समुदाय के साथ गहरे जुड़ाव से उत्पन्न क्षेत्रीय सुरक्षा है।

पश्चिमी शहरों में सामाजिक प्राथमिकताएं अधिक एक समान होने के कारण बहुत पहले ही आवारा कुत्तों की संख्या को सीमित कर दिया गया था। भारत की विविधता का अर्थ है कि ऐसी कोई आम सहमति मौजूद नहीं है। शहरी आबादी द्वारा कुत्तों की मौजूदगी को एक समान रूप से असहनीय मानने में शायद 20 या 30 साल और लग सकते हैं।

भारत के शहरीकरण के साथ–साथ, उसे यह तय करना होगा कि वह उन प्राचीन संबंधों के लिए स्थान बनाए रखे जो शहरों के अस्तित्व से भी पहले के हैं या पूर्ण प्रबंधन के पश्चिमी मार्ग का अनुसरण करे।

अदालती घटनाक्रम

सर्वोच्च न्यायालय ने आवारा कुत्तों के प्रबंधन के संबंध में कई आदेश जारी किए हैं या टिप्पणियां की हैं। ताजा सुनवाई 13 जनवरी, 2026 को हुई। न्यायालय ने जन सुरक्षा और पशु कल्याण के बीच संतुलन बनाए रखने और मौजूदा पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) नियम, 2023 को लागू करने पर ध्यान केंद्रित किया है। एक निगाह...

जुलाई 2025 : मीडिया में आई कुत्तों के काटने की बढ़ती घटनाओं और रेबीज के मामलों का सर्वोच्च न्यायालय ने स्वयं संज्ञान लिया और इसे एक गंभीर सार्वजनिक सुरक्षा मुद्दा मानते हुए सुनवाई शुरू की।

11 अगस्त 2025 : दो न्यायाधीशों की पीठ ने शुरू में दिल्ली–एनसीआर की सड़कों से सभी आवारा कुत्तों को तत्काल और स्थायी रूप से आश्रय स्थलों में भेजने का आदेश दिया, और उनके पुनः छोड़े जाने पर स्पष्ट रूप से रोक लगा दी। यह एक ऐसा निर्देश था, जिसे पशु कल्याण संगठनों ने पसंद नहीं किया और उन्होंने विरोध व्यक्त किया।

22 अगस्त 2025 : तीन न्यायाधीशों की एक विशेष पीठ ने 11 अगस्त के आदेश में संशोधन किया। इसने फैसला सुनाया कि आवारा कुत्तों को, पशु जन्म नियंत्रण नियम, 2023 के अनुसार बंध्याकरण, कृमिनाशक और टीकाकरण के बाद उनके मूल स्थानों में वापस छोड़ दिया जाना चाहिए, सिवाय उन कुत्तों के जो आक्रामक या रेबीज से ग्रसित हों।

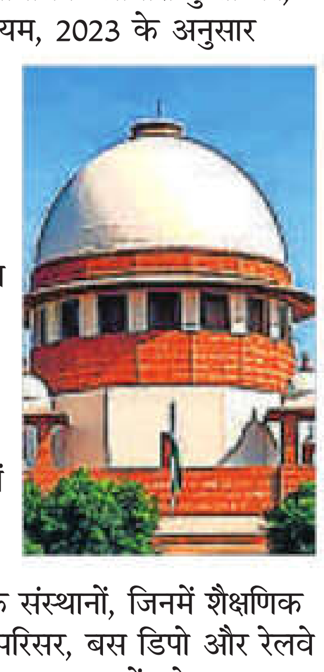

7 नवंबर 2025 : अदालत ने एक महत्त्वपूर्ण आदेश जारी करते हुए सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया कि वे भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक संस्थानों, जिनमें शैक्षणिक संस्थान, अस्पताल, खेल परिसर, बस डिपो और रेलवे स्टेशन शामिल हैं, से आवारा कुत्तों को हटाना सुनिश्चित करें। इन कुत्तों को निर्धारित आश्रय स्थलों में ले जाया जाना था, न कि उन्हें इन्हीं स्थानों पर छोड़ा जाना था।

7 जनवरी 2026 : सुनवाई के दौरान, पीठ ने अपने इस रुख को दोहराया कि सार्वजनिक संस्थानों में आवारा पशुओं की उपस्थिति खतरा पैदा करती है और नगरपालिक अधिकारियों द्वारा सात नवंबर के आदेश और एबीसी नियमों के प्रभावी कार्यान्वयन की आवश्यकता है।

13 जनवरी 2026 : अपनी हालिया सुनवाई में, सर्वोच्च न्यायालय ने संकेत दिया कि वह कुत्तों द्वारा काटने की घटनाओं में एबीसी नियमों को लागू करने में विफल रहने वाले राज्यों और सार्वजनिक स्थानों पर आवारा कुत्तों को खाना खिलाने वाले व्यक्तियों पर भारी मुआवजा लगाने पर विचार करेगा। पीठ ने सवाल उठाया कि कुत्तों को खाना खिलाने वालों को जानवरों को अपने घरों में आश्रय देकर पूरी जिम्मेदारी क्यों नहीं लेनी चाहिए। मामला अभी चल रहा है, अगली सुनवाई 20 जनवरी, 2026 को होनी है।

मंत्रालयों ने बनाई वृहद कार्ययोजना

सुप्रीम कोर्ट के आवारा कुत्तों के मामले में सख्त रुख अपनाने के बाद तीन केंद्रीय मंत्रालयों ने आवारा पशुओं पर नियंत्रण के लिए वृहद कार्रवाई योजना बनाई है। ये केंद्रीय आवास और शहरी कार्य मंत्रालय, पंचायती राज मंत्रालय और मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय हैं। इनकी कार्ययोजना में कहा गया है कि देश में साल 2019 की गणना में कुल आवारा कुत्तों की संख्या 1.53 करोड़ हैं। इनमें 70 फीसद कुत्तों का बंध्याकरण और उनका टीकाकरण एक साल के भीतर करने का लक्ष्य है।

क्या है योजना

केंद्र सरकार ने एक परामर्श सभी राज्यों को भेजा है। इसमें कुत्तों के टीकाकरण और बंध्याकरण के लक्ष्य की बात कही गई है। मंत्रालयों ने यह कदम आवारा कुत्तों के काटने और बेसहारा पशुओं की वजह से होने वाले हादसों की शिकायत के बाद उठाया है। बात अगर 2019 की पशुगणना की करें तो इसके मुताबिक देश भर में 50 लाख बेसहारा जानवर हैं।

कुछ यूरोपीय देशों में हालात बेहतर

यूरोप और अमेरिका में आवारा कुत्तों की स्थिति अलग–अलग है। यूरोप के कई देश (जैसे नीदरलैंड, जर्मनी) सख्त नियमों और बंध्याकरण/टीकाकरण कार्यक्रमों से समस्या को कम कर रहे हैं। अमेरिका में (खासकर ह्यूस्टन जैसे शहरों में) बड़ी संख्या में आवारा कुत्ते हैं, जो आश्रयों पर दबाव डाल रहे हैं और सार्वजनिक सुरक्षा की चिंता का कारण बन रहे हैं। दोनों क्षेत्रों में अवैध प्रजनन और पशुओं को उत्पाद समझने की सोच समस्या को बढ़ाती है, लेकिन समाधान के लिए शिक्षा, गोद लेने और नियंत्रण (सीएनवीआर) पर जोर दिया जा रहा है।

यूरोप में स्थिति

सफल माडल : नीदरलैंड और जर्मनी जैसे देशों ने सख्त कानून, अनिवार्य पंजीकरण और बंध्याकरण कार्यक्रमों के कारण आवारा कुत्तों की संख्या को काफी कम कर दिया है।

समस्या वाले क्षेत्र

पूर्वी यूरोप (जैसे यूक्रेन युद्ध के बाद रोमानिया) में अभी भी बड़ी संख्या में आवारा कुत्ते हैं, जहां नसबंदी के बाद उन्हें मार दिया जाता है या आश्रयों में रखा जाता है।

कई यूरोपीय देश समस्या को हल करने के लिए पशु कल्याण और समुदाय–आधारित समाधानों (जैसे कैच–न्यूटर–वैक्सीनेट–रिटर्न – सीएनवीआर) पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

अमेरिका में स्थिति

अमेरिका में, विशेषकर टेक्सास जैसे राज्यों में लाखों आवारा कुत्ते हैं। इससे आश्रय गृहों पर भारी दबाव है और रेबीज जैसी बीमारियों का खतरा है। आश्रयों की क्षमता से अधिक कुत्ते आने, लोगों की लापरवाही और आवेग में पालतू जानवर खरीदने के कारण यह समस्या बनी हुई है।

कानूनी पहलू

अमेरिका में सख्त पशु क्रूरता कानून हैं, लेकिन आवारा कुत्तों को अक्सर आश्रयों में रखा जाता है या यदि वे खतरनाक हों या बहुत अधिक हों तो मार दिया जाता है।

महज दो साल में कुत्तों के काटने के मामले डेढ़ गुना बढ़े

जनसत्ता सरोकार

वर्ष 2022 में देश में कुत्तों द्वारा काटने के 22 लाख मामले दर्ज किए गए थे। साल 2023 में यह संख्या बढ़कर 27.5 लाख हो गई। साल 2024 में स्थिति और ज्यादा गंभीर हो गई, जब देश भर में 37 लाख से अधिक मामलों की पुष्टि हुई। महज दो साल में लगभग डेढ़ गुना मामले बढ़ गए।

ताजा आंकड़ों के अनुसार साल 2024 में कुल 37,17,336 कुत्तों के काटने के मामले सामने आए। मतलब रोजाना औसतन दस हजार लोग कुत्तों के काटने के शिकार हुए। साल 2022 से साल 2023 के बीच मामलों में करीब 26.5 फीसद की वृद्धि दर्ज की गई।

पशु कल्याण बोर्ड के पास साल 2025 के पूरे साल के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन अनुमान है कि यह संख्या 45 लाख के पार जा सकती है। इसकी झलक 2025 के शुरुआती आंकड़ों से मिलती है, जब सिर्फ एक महीने में 4,29,664 मामले सामने आए।

राज्यवार आंकड़े

1–साल 2024 में महाराष्ट्र में पांच लाख लोगों को कुत्तों ने काटा।

2–तमिलनाडु में यह आंकड़ा 4.8 लाख तक पहुंच गया।

3–उत्तर प्रदेश में एक लाख 64 हजार से ज्यादा लोग कुत्तों के काटने के शिकार हुए।

4–पंजाब में यह संख्या 23 हजार रही।

5–दिल्ली नगर निगम क्षेत्र में ही पिछले वर्ष 26,334 मामले दर्ज किए गए।

6–बिहार में साल 2022 में जहां 1.41 लाख मामले थे, वहीं वर्ष 2024 में बढ़कर 2.63 लाख हो गए।

7–मध्य प्रदेश में दो साल के भीतर मामले दोगुने से ज्यादा हो गए। साल 2022 में 66,018 लोगों को कुत्तों ने काटा था। यह संख्या साल 2024 में बढ़कर 1,42,948 पर पहुंच गई।

8–झारखंड में वृद्धि की रफ्तार सबसे तेज रही। साल 2022 में 9,539 मामलों से बढ़कर साल 2024 में यह संख्या 43,874 हो गई।

मामले एवं रेबीज से मौत

वर्ष– 2022
मामले– 21,89,909
मौत– 21
वर्ष– 2023
मामले– 30,52,521
मौत– 50
वर्ष– 2024
मामले– 37,15,713

अदालती आदेश और नाराजगी

दिल्ली में पशु अधिकार कार्यकर्ता सड़कों से आवारा कुत्तों को हटाने के सुप्रीम कोर्ट के 11 अगस्त 2025 के निर्देशों से नाराज हो गए थे। इसके बाद सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्देशों को संशोधित कर लिया था। पहले के आदेश में दिल्ली के अधिकारियों को निर्देश दिया गया था कि कि वे रिहायशी इलाकों की सड़कों से सभी आवारा कुत्तों को दो महीने के भीतर विशेष आश्रय स्थलों में स्थानांतरित करें। अदालत ने कहा कि यह आदेश कुत्तों के काटने और रेबीज के मामलों में वृद्धि के मद्देनजर जारी किया गया है।

दिल्ली नगर निगमऔर पशु अधिकार कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए विभिन्न सर्वेक्षणों के आधार पर, दिल्ली में आवारा कुत्तों की अनुमानित संख्या 800,000 से 10,00000 के बीच बताई गई है। कुत्ता प्रेमी और कार्यकर्ता कहते हैं कि नगरपालिकाएं दिल्ली की सड़कों पर घूमने वाले आवारा कुत्तों की भारी संख्या को सुरक्षित रूप से हटाने और आश्रय देने के लिए तैयार नहीं हैं। निष्कासन आदेश पर आलोचकों का तर्क था कि अधिकारियों के लिए सर्वोच्च न्यायालय द्वारा परिकल्पित पैमाने पर आश्रय स्थल और संसाधन स्थापित करना तार्किक रूप से असंभव है।

इंडियन एक्सप्रेस समूह

जनसत्ता सरोकार

विमर्श

दो

जनसत्ता | 18 जनवरी, 2026

बेरोजगारी, वाकई !

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

> अच्छे वेतन, महंगाई भत्ता, वार्षिक वेतन वृद्धि, पदोन्नति, नौकरी की सुरक्षा, चिकित्सा लाभ, एचआरए, परिवहन भत्ता और अन्य भत्ते, अवकाश लाभ, अग्रिम एवं ऋण, और एकीकृत पेंशन योजना जैसी सुविधा के बावजूद, युवा लड़के-लड़कियां सरकार द्वारा स्वीकृत एवं रिक्त पदों के लिए आवेदन करने के इच्छुक नहीं हैं। इस असाधारण स्थिति से आप क्या निष्कर्ष निकालेंगे, सिवाय इसके कि बेरोजगारी नहीं है और नौकरियों के लिए कोई इच्छुक नहीं है?

अच्छी खबरों की झड़ी लगी है। खुदरा महंगाई 1.33 फीसद पर है। 2025-26 के लिए जीडीपी वृद्धि दर 7.4 फीसद आंकी गई है। मुझे लगता है कि हमें एक और खुशखबरी जोड़नी चाहिए: भारत में कहीं भी *बेरोजगारी नहीं* है, कम से कम उस तरह की बेरोजगारी तो बिल्कुल नहीं, जिसके बारे में हमें चिंता करने की जरूरत है।

नौकरियों के लिए कोई इच्छुक नहीं!

मेरे पास यह कहने के ठोस कारण हैं कि नौकरियों के लिए कोई इच्छुक नहीं है। आंकड़े बताते हैं कि सरकारी और अर्ध-सरकारी क्षेत्र में लाखों रिक्त पदों के लिए *कोई उम्मीदवार* नहीं है। अच्छे वेतन (और आठवें वेतन आयोग से इसमें सुधार होगा), महंगाई भत्ता, वार्षिक वेतन वृद्धि, पदोन्नति, नौकरी की सुरक्षा, चिकित्सा लाभ, एचआरए, परिवहन भत्ता और अन्य भत्ते, अवकाश लाभ, अग्रिम एवं ऋण, और एकीकृत पेंशन योजना जैसी सुविधाओं के बावजूद, युवा लड़के-लड़कियां सरकार द्वारा स्वीकृत एवं रिक्त पदों के लिए आवेदन करने के इच्छुक नहीं हैं। इस असाधारण स्थिति से आप क्या निष्कर्ष निकालेंगे, सिवाय इसके कि *बेरोजगारी नहीं* है और नौकरियों के लिए कोई इच्छुक नहीं है?

शिक्षा मंत्रालय के अनुसार, एक अप्रैल, 2024 तक केंद्रीय विश्वविद्यालयों में स्वीकृत और रिक्त पदों की स्थिति इस प्रकार थी:

पद	स्वीकृत	रिक्त/अपूर्ण
शिक्षण	18,940	5,060
गैर-शिक्षण	35,640	16,719

अंकगणित के हिसाब से केंद्रीय विश्वविद्यालयों में शिक्षण पदों में से 27 फीसद और गैर-शिक्षण पदों में से 47 फीसद रिक्त थे। जून 2025 तक, केवीएस में 7,765 शिक्षण पद और एनवीएस में 4,323 शिक्षण पद रिक्त थे। फिर भी, हमें यह आश्वासन मिलता है कि देश में शिक्षण क्षेत्र अच्छी स्थिति में है और फल-फूल रहा है।

आधिकारिक आंकड़ों की जुबानी

पूरे देश में इसके और भी उदाहरण हैं। केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) में कांस्टेबल के 25,487 पद रिक्त हैं। राजस्थान में एलडीसी/क्लर्क ग्रेड-दो के 10,644 पद रिक्त हैं। बिहार में 12,199 पद रिक्त हैं। उत्तर प्रदेश में कांस्टेबल के 60,244 पद रिक्त हैं। तमिलनाडु में स्टाफ नर्स के 2,255 पद खाली हैं। आमतौर पर इन पदों के लिए उम्मीदवार निम्न मध्य वर्ग से होते हैं, जिन्होंने हाल में उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरी की है या स्नातक हैं।

शिक्षा के उच्च स्तर पर देखें तो 21 एम्स में 3,485 व्यक्ति संकाय पदों पर कार्यरत हैं और 1,731 पद रिक्त हैं। अकेले ओड़ीशा के केंद्रपाड़ा जिले में ही चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टाफ में 1,087 कर्मी कार्यरत थे, जबकि 805 पद रिक्त हैं। बैंक की नौकरियों को उच्च मूल्य और प्रतिष्ठा से जोड़कर देखा जाता है। सार्वजनिक क्षेत्र के 12 बैंकों में स्थिति इस प्रकार है:

	कार्यरत	रिक्त
अधिकारी	4,30,599	17,500
लिपिक	2,43,817	12,861
उप-कर्मी	84,092	2,206

चिंता न करें, आंतरिक सुरक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बैंकिंग क्षेत्र में सब ठीक है।

प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना अक्तूबर, 2024 में शुरू की गई थी। *द हिंदू* में दो दिसंबर, 2025 को प्रकाशित एक रपट में कहा गया कि दो चरणों में कंपनियों द्वारा 1,65,000 प्रस्ताव दिए गए, जिनमें से केवल 20 फीसद ही स्वीकार किए गए; और जिन लोगों ने प्रस्ताव स्वीकार किए, उनमें से पांचवें हिस्से ने इंटर्नशिप पूरी होने से पहले ही छोड़ दी। इस तरह लगभग 1,40,000 प्रस्ताव बेकार चले गए, क्योंकि उन्हें स्वीकार करने वाला कोई नहीं था।

जो लोग यह मानते हैं कि विकासशील भारत में बेरोजगारी समस्या नहीं है, वे यहीं पढ़ना बंद कर सकते हैं।

जो लोग बेरोजगारी को समस्या मानते हैं, वे आगे पढ़ सकते हैं।

सच कहें तो, एक तरफ रिक्त पदों की मौजूदगी और दूसरी तरफ नौकरी के लिए अनिच्छुक उम्मीदवारों की यह विचित्र स्थिति केवल भाजपा सरकार की वजह से *नहीं* है। यह कई सरकारों और दशकों से चली आ रही है। हालांकि, भाजपा शासन के दौरान दो घटनाओं ने स्थिति को और भी गंभीर बना दिया है।

वर्तमान पर अतीत का साया

सबसे *पहले* नोटबंदी। यह मानव निर्मित, स्वयं-प्रेरित होकर पहुंचाई गई गंभीर चोट थी। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, यह सख्ती से की गई नोटबंदी नहीं थी, क्योंकि कोई भी करंसी नोट अमान्य या प्रचलन से बाहर नहीं किया गया था। यह एक ऐसी योजना थी, जिसमें 'पुराने नोटों के बदले नए नोट' दिए गए। प्रचलन में मुद्रा का कुल मूल्य (सीआइसी) पुराने स्तर पर बहाल हो गया, और वास्तव में यह उससे भी तेजी से बढ़ गया। चार नवंबर, 2016 को सीआइसी का मूल्य 17.97 लाख करोड़ रुपए था; दिसंबर 2025 के अंत तक, यह दोगुने से भी अधिक बढ़कर 39.24 लाख करोड़ रुपए हो गया था। सबसे बुरा परिणाम यह हुआ कि नोटबंदी के कारण हजारों छोटे और मध्यम व्यवसाय बंद हो गए और नौकरियां खत्म हो गईं – जिसे बेशक सरकार आज तक नकारती है। लेकिन, अखिल भारतीय व्यापार मंडल के अनुसार, वर्ष 2016 में 62,50,000 छोटे व्यवसाय थे और उनमें से लगभग 48 फीसद पिछले दशक में बंद हो गए हैं।

दूसरा कारण है कोविड। वर्ष 2022 के एक सर्वेक्षण में अनुमान लगाया गया कि महामारी के कारण 14 फीसद एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) स्थायी रूप से बंद हो गए। एक सरकारी रपट में बताया गया कि जुलाई 2020 से फरवरी 2025 के बीच (कोविड से प्रभावित वर्षों के बाद तक) 75,000 पंजीकृत एमएसएमई बंद हो गए। यूएनसीटीएडी ने अनुमान लगाया कि फरवरी 2022 तक भारत में 47 फीसद एमएसएमई स्थायी या अस्थायी रूप से बंद हो गए थे। इन आंकड़ों की पुष्टि नहीं की जा सकती, लेकिन ये आम धारणाओं के अनुरूप हैं। जैसा कि मैंने अपने पिछले आलेख में लिखा था, इसका मुख्य कारण यह था कि सरकार ने वित्तीय सहायता और ऋण गारंटी के वादे पूरे नहीं किए। नोटबंदी या कोविड के कारण कारोबार बंद होने से बड़े पैमाने पर नौकरियां चली गईं। क्या ये नौकरियां बहाल हुईं या फिर से सृजित हुईं? सरकार इस सवाल पर चुप्पी साधे हुए है।

'मनरेगा' को आपूर्ति-आधारित, गारंटी-रहित और सीमित निधि वाली योजना से बदलने पर ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों की स्थिति और भी खराब हो जाएगी, जिन्हें बेरोजगारी या अल्प-रोजगार (कम मजदूरी पर) का सामना करना पड़ेगा। कई ग्रामीण परिवारों, विशेषकर महिलाओं को पूरक आय का नुकसान उठाना पड़ेगा।

यह सिद्धांत कि बेरोजगारी कोई बड़ी समस्या नहीं है, एक मिथक और पाखंड है। सरकार भले ही अपनी पीठ थपथपा रही हो, लेकिन हम जानते हैं कि *बेरोजगारी* अर्थव्यवस्था पर सबसे बड़ा धब्बा है।

असल मुद्दे गायब

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

> मुख्यमंत्रियों का काम नहीं होना चाहिए नगर निगमों को चलाना, लेकिन ऐसी परंपरा बनी हुई है अपने देश में, सो हर महानगर के प्रशासन में मुख्यमंत्री हस्तक्षेप करते हैं। हमारे महानगर दुनिया के सबसे गंदे और बेहाल शहरों में गिने जाते हैं और इस बदनामी का मुख्य कारण यह है कि नगर निगमों और नगरपालिकाओं के बदले इनका प्रशासन चलाते हैं मुख्यमंत्री।

पिछले सप्ताह कोई दस वर्ष बाद बृहन्मुंबई नगर निगम के चुनाव हुए। मुंबई जैसे महानगर में एक दशक तक नगर निगम चुनावों का न होना गंभीर मामला है। इन चुनावों के लिए जब प्रचार शुरू हुआ, तो मीडिया का ध्यान केवल अटका रहा इस पर कि जीतेगा कौन और हारेगा कौन। किसकी दोस्ती किसके साथ हो रही है और इसका क्या नतीजा होगा। किसी ने राजनीति से आगे बढ़ कर प्रशासन के बारे में नहीं बात की। जबकि सबसे बड़ा मुद्दा है प्रशासन का। हमारे महानगरों में सबसे बेहाल मुंबई है और वह इसलिए कि इस महानगर के कई हिस्से हैं जिनमें प्रशासन नाम की चीज ही नहीं है।

मुंबई के तकरीबन आधे नागरिक रहते हैं ऐसी झुग्गी बस्तियों में जहां बुनियादी सुविधाएं हैं ही नहीं। न इन बस्तियों में नगर निगम से पानी मिलता है, न बिजली, न सुनियोजित तरीके से सड़कें बनती हैं और न ही नालियों की सफाई कभी होती है। नालों में कूड़ा इतना भर जाता है कि इनमें पानी दिखता तक नहीं है। कूड़े के ढेर में छोटे बच्चे शौच करते हैं, कूड़े के ढेर के पास बनते हैं इनके स्कूल। जब बरसात आती है और कचरा कच्ची बस्तियों में बह जाता है, तो इसके कारण फैलती हैं जानलेवा बीमारियां। गंदगी इतनी अधिक है कि अक्सर इन बस्तियों में पैदा होती हैं वे सारी बीमारियां जो स्वच्छता के अभाव से होती हैं। मुद्दे ये हैं असली, लेकिन इनका जिक्र तक नहीं होता है इसलिए कि जिन लोगों के हाथ में है प्रशासन, उनका मकसद है पैसा बनाना। जनता की सेवा करना नहीं। पैसा बहुत बन सकता है इसलिए कि बृहन्मुंबई नगर निगम एशिया का सबसे धनी नगर निगम है। भारत के कई राज्यों से अधिक है इसका बजट।

सो पूछना हमको यह चाहिए कि इतना पैसा होने के बावजूद मुंबई के आधे नागरिक क्यों रहते हैं ऐसी बस्तियों में जो युद्ध के बाद गाजा पट्टी के खंडहरों जैसी आजकल दिखती हैं। मेरा इन बस्तियों में आना-जाना रहा है तब से, जब मैं मुंबई में रहने आई थी कोई तीस साल पहले। दिल्ली की हूं और दिल्ली में मेरी आधी से ज्यादा जिंदगी गुजरी है, लेकिन करीब से मैंने कभी शहरी गरीबी नहीं देखी थी, जब तक मुंबई में नहीं रहने आई। दिल्ली में गरीबी है, लेकिन गरीब लोग अदृश्य हैं। उनके इलाके अलग हैं। मुंबई में ऊंची, शीशे की इमारतों से उतर कर दस कदम पैदल चलें, तो मिल जाते हैं फुटपाथ पर रहने वाले या झुग्गी बस्तियों में रहने वाले लोग, लेकिन इनकी परवाह कोई नहीं करता है।

कोविड के दौर में मुंबई के गरीबों का इतना बुरा हाल हो गया था कि लाखों लोग नियमों को तोड़ कर अपने गांवों तक पैदल चलने पर मजबूर हुए। उनकी मदद के लिए कोई अधिकारी सामने नहीं आया। उल्टा जब पकड़े जाते थे, तो पुलिसवाले इनको पीट-पीट कर वापस भेजा करते थे उन किराए की खोलियों में जिनका किराया वह बेरोजगार होने के कारण देने लायक नहीं रहे थे। उस दौर से कुछ नहीं सीखा मुंबई के शासकों ने सो आज भी अगर कोविड जैसी कोई नई समस्या पैदा होगी, तो वही हाल होगा आम लोगों का जो उस भयानक दौर में देखा हमने। शहर के शासकों ने कोविड केंद्र और अस्पताल खोलने के बहाने खूब पैसे कमाए, लेकिन परिवर्तन न होने के बराबर हुआ है आज तक।

जनता की असली सेवा तब होने लगेगी मुंबई जैसे महानगरों में, जब जनता के चुने हुए प्रतिनिधि नगर निगम में होंगे। मगर तब, जब चुना हुआ महापौर भी होगा जैसे न्यूयार्क, लंदन में होते हैं और ऐसा तब होगा, जब प्रशासनिक सुधार ऐसे किए जाएंगे कि मुख्यमंत्रियों और विधायकों को भी नगर निगमों के काम में हस्तक्षेप करने से रोका जा सके। वर्तमान स्थिति यह है कि मुंबई, दिल्ली, कोलकाता और चेन्नई जैसे शहरों में नगर निगमों के पास इतना धन होता है कि मुख्यमंत्री उन पर कब्जा करने पर तुले रहते हैं। बृहन्मुंबई नगर निगम चुनावों के लिए जब से प्रचार शुरू हुआ, आपने देखा होगा किस तरह राजनीतिक दलों के बड़े नेता प्रचार करने निकले। टिकट बांटने का काम भी उन्होंने किया।

मुख्यमंत्रियों का काम नहीं होना चाहिए नगर निगमों को चलाना, लेकिन ऐसी परंपरा बनी हुई है अपने देश में, सो हर महानगर के प्रशासन में मुख्यमंत्री हस्तक्षेप करते हैं। हमारे महानगर दुनिया के सबसे गंदे और बेहाल शहरों में गिने जाते हैं और इस बदनामी का मुख्य कारण यह है कि नगर निगमों और नगरपालिकाओं के बदले इनका प्रशासन चलाते हैं मुख्यमंत्री। विकसित देशों में ऐसा कभी नहीं होता है। यहां चुने हुए महापौर होते हैं, जो शहरों के राजा होते हैं और पूरी तरह से प्रशासन चलाने का काम उनका होता है। जब गलतियां होती हैं, तो उनकी जिम्मेदारी होती है। जब अच्छी चीजें होती हैं, तो श्रेय उनको मिलता है।

अपने देश में इतना उल्टा-सीधा है महानगरों का प्रशासन कि आश्चर्य की बात है कि किसी ने अभी तक प्रशासनिक सुधारों की कोई ठोस कोशिश नहीं की है। नतीजा यह कि चुनावों का होने या ना होने से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है, लेकिन जब तक अपने बेहाल महानगरों को कम से कम इतना बेहतर नहीं बना देते हैं हम कि वह कुछ-कुछ दुनिया के अच्छे शहरों जैसे दिखने लगेंगे, तब तक हम विकसित होने के लायक नहीं बन सकेंगे।

वर्तमान स्थिति यह है कि मुंबई में कुछ मुट्ठी भर लोग हैं जो रहते हैं उन शीशे की इमारतों में और खाना खाते हैं पांच सितारा होटलों में, लेकिन अधिकतर लोग जीते हैं उतनी ही बेहाल जिंदगी जैसे लोग रहते हैं गाजा पट्टी में। तंबुओं के नीचे जो रह रहे हैं युद्ध के कारण बेघर हुए लोग, उनका जीवन शायद मुंबई की झुग्गी बस्तियों में रहने वाले लोगों से बेहतर है।

कूटनीति से आगे

प्रसंग

ब्रह्मदीप अलूने

> कोलंबिया, मेक्सिको और मध्य अमेरिका में नशीले पदार्थों का अवैध कारोबार कानून-व्यवस्था को चुनौती देता है। इससे आम नागरिकों की सुरक्षा खतरे में रहती है। राजनीतिक अस्थिरता, अवैध प्रवासन, नशीली दवाओं की तस्करी और हिंसा सीधे अमेरिका की आंतरिक सुरक्षा को प्रभावित करती है। इसी कारण अमेरिका इस क्षेत्र को अपने लिए बड़ी चुनौती मानता है।

मेक्सिको और कैरिबियन समेत कई देशों तक फैला लैटिन अमेरिका भौगोलिक रूप से अमेरिका से जुड़ा हुआ है। इसकी स्थिरता और सुरक्षा भी अमेरिका के राष्ट्रीय हितों से जुड़ी है। यह क्षेत्र अमेरिकी कंपनियों के लिए एक बड़ा बाजार है, जो विदेशी निवेश के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। लैटिन अमेरिका के कई देशों की वैचारिक प्रतिबद्धताएं पूंजीवाद के खिलाफ रही हैं, जिसका असर राजनीतिक परिस्थितियों पर पड़ा है। यही कारण है कि ऐसे कुछ देशों से अमेरिका अपनी सुरक्षा को लेकर आशंकित रहा है। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को हिरासत में लेने की अमेरिकी कार्रवाई के पीछे पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच गहरे मतभेद हैं। अब इस संकट के और गहराने की आशंका जताई जा रही है।

किसी देश के मौजूदा राष्ट्रपति के खिलाफ प्रत्यक्ष कार्रवाई से यह संदेश गया है कि दुनिया की महाशक्तियां अब परंपरागत कूटनीतिक सीमाओं से आगे जाकर दबाव बनाने को तैयार हैं। इससे लैटिन अमेरिका समेत दुनिया के कई छोटे और मध्यम देशों में यह डर पैदा हुआ कि उनकी राजनीतिक संप्रभुता भी बाहरी शक्तियों के निर्णयों से प्रभावित हो सकती है। रूस, चीन और कुछ विकासशील देश इसे सत्ता परिवर्तन की राजनीति के रूप में देख रहे हैं, जबकि अमेरिका और उसके सहयोगी इसे लोकतंत्र या मानवाधिकारों के नाम पर उचित ठहरा रहे हैं। इससे अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में पहले से मौजूद विभाजन और गहरा हो गया है तथा अंतरराष्ट्रीय कानून और राजनयिक सुरक्षा कमजोर पड़ गई है। यह वैश्विक अस्थिरता की सबसे बड़ी वजह बन सकती है।

लैटिन अमेरिका, अमेरिका के लिए सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और वैश्विक शक्ति-संतुलन का एक अहम क्षेत्र है। अमेरिका इस समूचे क्षेत्र पर नियंत्रण रखना चाहता है। मगर वेनेजुएला, क्यूबा, निकारागुआ, कोलंबिया, ब्राजील, अर्जेंटीना, मेक्सिको, चिली और पेरू जैसे देशों ने रूस तथा चीन पर ज्यादा भरोसा दिखाया है। इससे अमेरिका असहज रहता है। दूसरी ओर, प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर होने के बाद भी लैटिन अमेरिकी देशों में गरीबी, बेरोजगारी और अपराध एक बड़ी समस्या है। ज्यादातर देशों में राजनीतिक अस्थिरता, शासन का कुप्रबंधन और सत्तावादी ताकतों की लामबंदी से लोग बेहाल हैं, जो पलायन करके अमेरिका में बसना बेहतर विकल्प मानते हैं। इस क्षेत्र की बड़ी समस्या आर्थिक असमानता भी है। समाज का एक छोटा वर्ग अत्यधिक संपन्न है, जबकि बड़ी आबादी गरीबी, बेरोजगारी और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। इस असमानता के कारण युवा सबसे ज्यादा प्रभावित हैं।

कोलंबिया, मैक्सिको और मध्य अमेरिका में नशीले पदार्थों का अवैध कारोबार कानून-व्यवस्था को चुनौती देता है। इससे आम नागरिकों की सुरक्षा खतरे में रहती है। राजनीतिक अस्थिरता, अवैध प्रवासन, नशीली दवाओं की तस्करी और हिंसा सीधे अमेरिका की आंतरिक सुरक्षा को प्रभावित करती है। इसी कारण अमेरिका इस क्षेत्र को अपने लिए बड़ी चुनौती मानता है। हालांकि, लोकतांत्रिक लैटिन अमेरिकी देशों और अमेरिका के बीच संबंध आम तौर पर अच्छे रहे हैं, लेकिन अमेरिका कुछ लैटिन अमेरिकी देशों में लोकतंत्र की कमी या मादक पदार्थों के खिलाफ पर्याप्त उपाय न करने को लेकर आलोचना करता रहता है। लैटिन अमेरिका तेल, गैस, लिथियम, तांबा, सोया और कृषि उत्पादों से समृद्ध है। अमेरिका की कई बड़ी कंपनियों ने अरबों डालर का निवेश इस क्षेत्र में किया है, जिन्हें सुरक्षित रखना उसकी प्राथमिकता है। पिछले कुछ वर्षों में चीन ने भारी निवेश, ऋण और आधारभूत संरचना परियोजनाओं के जरिए इस क्षेत्र में प्रभाव बढ़ाया है। जबकि रूस सैन्य और ऊर्जा सहयोग के माध्यम से इस क्षेत्र में अमेरिका के हितों को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता रहा है।

लैटिन अमेरिका में चीन और रूस की बढ़ती मौजूदगी को रोकना राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की विदेश नीति की एक बड़ी प्राथमिकता रही है। ट्रंप प्रशासन को आशंका है कि चीन की आर्थिक घुसपैठ और रूस की सैन्य तथा राजनीतिक सक्रियता अमेरिका के सुरक्षा, व्यापार और भू-राजनीतिक वर्चस्व को कमजोर कर सकती है। अमेरिका इस क्षेत्र को ऐतिहासिक रूप से अपने रणनीतिक प्रभाव क्षेत्र के रूप में देखता आया है, इसलिए किसी बाहरी महाशक्ति की सक्रियता उसे सीधे चुनौती देती है। चीन इस क्षेत्र में अब केवल व्यापार और निवेश तक सीमित नहीं है, बल्कि वह उपग्रह निगरानी स्टेशन, साइबर निगरानी केंद्र, बंदरगाहों और सैन्य उपयोगी बुनियादी ढांचे के जरिए अपनी उपस्थिति मजबूत कर रहा है। अमेरिका को डर है कि ये सुविधाएं भविष्य में जासूसी, नौसैनिक संचालन और मिसाइल निगरानी के लिए इस्तेमाल की जा सकती हैं। यदि चीन को क्यूबा, वेनेजुएला या निकारागुआ जैसे देशों में स्थायी रणनीतिक पहुंच मिल जाती है, तो अमेरिका अपने ही पड़ोस में एक प्रतिद्वंद्वी शक्ति से घिरा महसूस करेगा। ताइवान या एशिया प्रशांत क्षेत्र में किसी टकराव की स्थिति में चीन, लैटिन अमेरिका में अपने ठिकानों का उपयोग अमेरिका पर दबाव बनाने के लिए कर सकता है।

चीन का सहयोगी और अमेरिका का कड़ा सामरिक प्रतिद्वंद्वी रूस, वेनेजुएला तथा क्यूबा और निकारागुआ जैसे देशों के साथ सैन्य सहयोग, हथियार आपूर्ति और खुफिया साझेदारी बढ़ा रहा है, जो सीधे अमेरिकी सुरक्षा हितों को चुनौती देता है। अमेरिका ने इस बढ़ती चुनौती का जवाब आर्थिक दबाव, प्रतिबंधों और कूटनीतिक सक्रियता से देने की कोशिश की है। वेनेजुएला पर कठोर प्रतिबंध, क्यूबा पर सख्ती और क्षेत्रीय सहयोगियों पर दबाव इसी रणनीति का हिस्सा है। लैटिन अमेरिका में अमेरिका, रूस और चीन के बीच बढ़ती प्रतिद्वंद्विता आने वाले वर्षों में इस पूरे क्षेत्र की राजनीति, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा संरचना को गहराई से प्रभावित कर सकती है। यह प्रतिस्पर्धा निवेश, तकनीक, हथियार, कूटनीति और संसाधनों से आगे निकल कर युद्ध जैसी स्थिति तक जा सकती है। इसका असर आम जनता पर पड़ेगा। यदि देशों को किसी एक गुट को चुनने के लिए मजबूर किया गया, तो राजनीतिक अस्थिरता, प्रतिबंध और आर्थिक संकट गहराएंगे।

हार-हार कर भी नई रार

बाखबर

सुधीश पचौरी

> चुनाव अभियान में एक गठबंधन कहता रहा कि वो मुंबई की मराठी पहचान बचाने के लिए लड़ रहा है, तो दूसरा बोला कि मुंबई को हांगकांग से भी आगे का नगर बनाना है। इसी बीच एक गठबंधन ने आरोप लगाया कि मतदाता की अंगुली पर लगी 'स्याही' मिटाई जा सकती है।

तमिलनाडु का खेल 'फिल्मी'! बंगाल का खेल 'इल्मी'!

एक पूर्व 'थलैवा' का ! दूसरा 'नए थलैवा' का!

एक 'थलैवा' की नई फिल्म 'रिलीज'! दूसरे थलैवा की सेंसर में अटकी ...। तुरंत 'आंसू पोंछ' पार्टी का तौलिया आगे कि 'थलैवा' तुम संघर्ष करो, हमारा 'राष्ट्रीय थलैवा' तुम्हारे साथ है। फिल्म जारी हुई न हुई, लेकिन एक 'थलैवा' के समर्थन के बहाने देश को एक 'राष्ट्रीय थलैवा' उर्फ 'राष्ट्रीय नायक' मिल गया। एक खुंदकी ने कहा कि जब ये देश 'राष्ट्रीय थलैवा' के लिए एक 'मुकम्मल राष्ट्र' ही नहीं, तो 'राष्ट्रीय थलैवा' कैसे... ? और यह 'राष्ट्रीय थलैवा' थलैवा हो न हो, लेकिन जिस शान से उनका एक वीडियो जारी हुआ, वह जरूर मजेदार था।

शुरुआत एकदम धांसू थी, एकदम रजनीकांत की 'एंट्री' की याद दिलाते हुए अपना 'राष्ट्रीय थलैवा' का एक हेलिकाप्टर के घूमते पंखों और शोर के बीच मुस्कुराते हुए धीमी गति से गुजरना, उसको किसी बड़े 'सुपर स्टार' से कम नहीं दिखाता था...। निंदक फिर भी लगे रहे और कहते रहे कि यह कैसा राष्ट्रीय नायक है, जो अब तक एक के बाद कई चुनाव हार या हरा चुका है।

अरे भई, ये क्या बात हुई! आप ही के एक नेता ने लाइन दी थी कि 'हार नहीं मानूंगा रार नई ठानूंगा...' अब अपने 'राष्ट्रीय थलैवा' हार-हार कर भी अपनी 'हार' नहीं मान रहे और हर दिन नई से नई 'रार' ठाने रहते हैं, तो यह उनका लोकतांत्रिक अधिकार है न! मगर जिस तरह से मुंबई तथा अन्य शहरों के निगमों के चुनाव की खबरें चैनलों में आईं, उनसे लगा मानो पूरे महाराष्ट्र का चुनाव हो रहा हो। तर्क सिर्फ 'पैसे' का था कि 'बृहन्मुंबई नगर निगम' का बजट किसी छोटे-मोटे राज्य के बजट के बराबर है और इसीलिए सारी लड़ाई एक 'संपन्न महानगर' के 'कामकाज' पर नियंत्रण की है।

चुनाव अभियान में एक गठबंधन कहता रहा कि वो मुंबई की मराठी पहचान को बचाने के लिए लड़ रहा है, तो दूसरा कहता रहा कि हमें मुंबई को हांगकांग से भी आगे का नगर बनाना है... कि इसी बीच एक गठबंधन ने आरोप लगाया कि मतदान के दौरान मतदाता की अंगुली पर लगाई जाने वाली 'स्याही' मिटाई जा सकती है, तो चुनाव आयोग की ओर से जवाब आया कि यह संभव नहीं और जब सोलह तारीख को परिणाम आने लगे और महायुति आगे निकलने लगी, तब आयोग से खबर आई कि आगे से चुनाव में इस 'स्याही' का उपयोग नहीं होगा।

मगर, उस 'हरी फाइल' में क्या था? इस सवाल ने उस विपक्षी दल की तेज-तर्रार नेता का पीछा नहीं छोड़ा। जब मामला सुपीम कोर्ट में आया, तो पक्ष-विपक्ष की जिरह के बाद सुप्रीम कोर्ट की 'टिप्पणी' बड़ी खबर की तरह मंडराती रही। एक चैनल ने तो इसे विपक्षी दल पर एक 'करारा तमाचा' कहा, क्योंकि अदालत ने कहा कि उस दिन कोलकाता में जो कुछ हुआ, वह ठीक नहीं था। सरकारी कामकाज में हस्तक्षेप अनुचित था। बहसों में फिर भी 'विपक्षी प्रवक्ता' सरकारी कामकाज में इस 'हस्तक्षेप' को भी 'दल के हित में' बचाव करते रहे।

इस सबके बावजूद हिंदुत्व के पक्ष-विपक्षी एक-दूसरे पर गोले दागते रहे। एक गैर हिंदुत्ववादी ने फरमाया कि राम 'समाजवादी' थे, तो दूसरे बोले कि ये 'बहक' गए हैं... ऐसे ही गत सप्ताह जितनी खबर हिंदुत्व की 'स्वतःस्फूर्त ब्रिगेड' ने बनाई, उतनी 'आधिकारिक हिंदुत्ववादियों' ने नहीं बनाई। इसी तरह एक स्वामीजी ने फरमा दिया कि 'संघ' न होता, तो हिंदू न बचते...।

इसी बीच जैसे ही एक प्रवक्ता ने कहा कि मुंबई का मेयर कोई हिजाब वाली भी बन सकती है, वैसे ही चुनाव सांप्रदायिक रंग ले उठा। एक कहिन कि मुंबई का महापौर 'मराठी' होगा, तो दूसरे ने कहा, फिर मुंबई का मेयर 'मराठी-हिंदू' होगा...। इस बीच दो वार्ताएं याद करने लायक दिखीं। एक थी एंकर द्वारा 'हिंदुत्ववादी चिंतक' के साथ 'हिंदुत्व' में आते अक्षर 'त्व' पर बातचीत और दूसरी थी 'एआइ ब्लू मशीन' से की गई बातचीत। 'हिंदुत्व' पर एक बहस कोलकाता से शुरू हुई जहां 'सेकुलर ब्रिगेड' ने 'हिंदुत्व' को अपने तरीके से 'नीचे' किया, तो जवाब में 'हिंदुत्ववादियों' ने 'हिंदुत्व' के पक्ष को 'ऊपर' किया। तर्क वही रहे, जवाब भी वही रहे, फर्क रहा तो यह कि बहस एक वैचारिक स्तर पर बनी रही...रोज की 'तू-तू मैं-मैं' नहीं बदली...और 'एआइ' की बहस में इस 'मशीन' ने भी माना कि वह मनुष्य की तरह 'संवेदना' नहीं रखती। उसे 'दुख दर्द' नहीं होता...वह वही करती है, जो उसे 'सिखा' दिया जाता है। इस बहस में एंकर जीतता हुआ दिखा और 'एआइ मशीन' हारती दिखी।

फिर एक दिन 'आप' के एक सांसद ने 'दस मिनट में सामान पहुंचाने वाले कर्मियों' का चोला पहन कर उनसे हमदर्दी दिखाई और उनकी 'मांगों' को सबके सामने रखा। जब अगले दिन सरकार ने घर सामान पहुंचाने वाले कर्मियों के कल्याण के लिए, कंपनियों द्वारा 'दस मिनट' में 'सामान पहुंचाने' की गारंटी' हटाने की बात कही, तो 'आप नेता' ने इसके लिए सरकार का तुरंत 'धन्यवाद' कर श्रेय ले लिया। गत शुक्रवार चुनाव परिणामों ने साफ कर दिया कि 'नरम ठाकरे' के साथ 'गरम ठाकरे' के आने का नुकसान हुआ। सभी विश्लेषक कहे कि 'गरम ठाकरे' की लाइन जनता ने नहीं सुनी। दंड 'नरम ठाकरे' को झेलना पड़ा...। सच! 'ये है मुंबई मेरी जान'!

तमाचा

शीला श्रीवास्तव

कहानी

किशोरी लाल अपनी तमाम कोशिश के बाद अपनी बेटी सीमा के लिए एक क्लर्क तलाश कर पाए। उनके लिए तो वही कलेक्टर से कम नहीं था। बड़ी मुश्किल से शादी का सौदा पांच लाख में पटा था। किशोरी लाल ने इसके लिए गांव का अपना पुश्तैनी घर गिरवी रख दिया था ताकि अपने रिश्तेदारों के सामने हाथ न फैलाना पड़े। वे हर कीमत पर अपनी तीसरी व आखिरी बेटी की शादी अच्छे घर में करना चाहते थे। वे उसे दोनों बड़ी बेटियों की तरह जैसे-तैसे नहीं ब्याहना चाहते थे।

किशोरी लाल को अच्छी तरह याद है, उस दिन सीमा कितना विरोध कर रही थी, जब उसकी बड़ी बहन नीमा की शादी दो बच्चों के विधुर बाप से होने जा रही थी।

'नहीं होगी मेरी बहन की शादी उस दो बच्चे के बाप से, जाते ही बच्चों के लालन-पालन में जुट जाए, क्या यही इसकी जिंदगी है?'

'तुम्हारे कहने से क्या होता है, मैं जहां चाहूंगा, वहीं होगी इसकी शादी। दहेज देने के लिए पैसे कहां है हमारे पास?' किशोरी लाल गुस्से में आकर बोले।

'जब आपको हम बेटियों को कुंए में ही धकेलना था, तो जन्म लेते ही गला क्यों नहीं घोंट दिया?' सीमा सिसक उठी।

सीमा की मां, जो अब तक बिल्कुल चुप थी, बीच में बोल पड़ी, 'हां-हां, नहीं होगी नीमा की शादी उससे।'

'ठीक है तो मैं ही मर जाऊंगा, मेरे मर जाने के बाद तुम सब चैन से रहना।' किशोरी लाल लगभग रोते हुए बोले।

'आप ऐसे क्यों बोल रहे हैं जी! आखिर इसकी जिंदगी का सवाल है।' सीमा की मां अपने पति को समझाने के ख्याल से बोली।

'जाने दो सीमा, करने दो इन्हें मेरी शादी। शायद मेरी तकदीर ही ऐसी होगी।' नीमा ने पिताजी की हालत देखते हुए कहा।

'तकदीर कुछ नहीं होती। दीदी, लाचार-बेबस ही तकदीर को मानते हैं।' सीमा गुस्से में बोली।

'जाने दो, तुम्हें इससे क्या, मुझे रहना है उसके साथ।' नीमा झुंझला उठी, लेकिन अपनी आंखों में उमड़े आंसुओं को वह छुपा नहीं पाई।

'तुम महान हो दीदी'। सीमा ने थरथराते होंठों से कहा। उसके चेहरे पर नीमा के प्रति अगाध प्रेम झलक रहा था।

सीमा अच्छे घर में ब्याहने के सपने को त्याग चुकी थी। वह अच्छी तरह जानती थी कि अच्छे खाते-पीते घर के लड़के की कीमत पांच-छह लाख से कम नहीं होगी। पिताजी की आय इतनी भी नहीं थी कि पांच व्यक्तियों का परिवार भी सुचारू रूप से चल सके। महीने के अंत होते-होते लेनदारों की भीड़ घर पर जमा हो जाती, कभी मकान का किराया बाकी रहता तो कभी राशन

आज सीमा के लिए रिश्ता आया। रिश्ता अच्छे घराने से था। सीमा की मां उसे बार-बार समझा रही थी, 'देखो बेटी, लड़का बहुत अच्छा है। नौकरी करता है, घर-द्वार ठीक है।'

का। ऐसे में पांच-छह लाख का इंतजाम करना पिताजी के लिए कठिन ही नहीं, नामुमकिन भी था।

आज सीमा के लिए रिश्ता आया। रिश्ता अच्छे घराने से था। सीमा की मां उसे बार-बार समझा रही थी, 'देखो बेटी, लड़का बहुत अच्छा है। नौकरी करता है, घर-द्वार ठीक है। मेरी बात मानो तो जिद छोड़ दो इससे अच्छा लड़का फिर नहीं मिलने वाला।'

'नहीं, मुझे ऐसे लड़के से शादी नहीं करनी'।

'आखिर तुम्हें कैसा लड़का चाहिए?' सीमा की मां चिढ़ कर बोली।

'जैसा मेरी बहनों को मिला है, मैं आप लोगों को बर्बाद कर आबाद नहीं होना चाहती।'

'क्या?' सीमा की मां के चेहरे पर आश्चर्य और पीड़ा के मिले-जुले भाव उभर आए।

'लड़की को लेकर आओ सीमा की मां'। किशोरी लाल ने आवाज लगाई। 'अभी आई' कहकर वह सीमा को लेकर उस कमरे में पहुंची, जहां लड़के वाले सीमा का इंतजार कर रहे थे।

'नमस्ते करो बेटी'। सीमा की मां ने सीमा से कहा, तो वह क्रोध भरी निगाहों से अपनी मां को घूरने लगी। उसकी मां उसकी निगाहों को अनदेखा कर कहने लगी। 'आप लोगों को मेरी बेटी में कोई अवगुण नहीं मिलेगा भाई साहब'।

सीमा की पिताजी सीमा को इस नजर से देखते रहे, मानो कह रहे हों, नमस्ते करो बेटी, इज्जत का सवाल है। सीमा ने उन लोगों को नमस्ते किया और वह एक खाली कुर्सी पर बैठ गई। सामने बैठे नवयुवक को उसकी यह हरकत अच्छी नहीं लगी। शायद उसी की शादी सीमा से होने वाली थी। वह अपने जीवन में नकचढ़ी लड़की नहीं चाहता था, इसलिए बोल पड़ा, 'आपको थोड़ी भी तमीज नहीं है, किसी से पूछे बिना कुर्सी पर बैठ गईं'।

'आप कौन हैं मिस्टर?' सीमा ने गुस्से में आकर पूछा।

'इन्हीं लड़के से तुम्हारे रिश्ते की बात चल रही है बेटी'। किशोरी लाल ने स्थिति की नाजुकता को समझ कर बात संभालते हुए कहा।

'ओ अच्छा, लेकिन आपसे मेरी शादी भला कैसे हो सकती है?'

युवक समझ नहीं पा रहा था कि यह हो क्या रहा है। उसकी उम्मीदों से परे था कि जिस लड़की को ब्याह के लिए देखने आया है वह ऐसा व्यवहार करे। उसने झल्ला कर कहा, 'हां-हां, मुझे भी नहीं करनी तुमसे शादी, ऐसी बदमिजाज व घमंडी लड़की से भला कौन शादी करना चाहेगा?' युवक भी अपने गुस्से पर काबू नहीं रख सका।

युवक की झल्लाहट से सीमा को होश आया। उसने थोड़ा रुक कर कहा, 'माफ कीजिएगा, न तो मैं बदमिजाज हूं और न ही घमंडी। दरअसल मैं ही आपके लायक नहीं हूं'। सीमा अब कुछ नम्र हो चुकी थी।

'मुझे तो ऐसे लड़के की तलाश है जिसकी मैं लाठी बन सकूं'।

'मैं समझा नहीं'। युवक ने हैरत से पूछा।

'आप नहीं समझेंगे, मेरी दोनों बहनों की शादियां भी ऐसे घरों में ही हुई हैं जहां दहेज नहीं देना पड़ा। और, अब मैं भी ऐसे ही किसी लड़के से शादी करना चाहती हूं जो दहेज न लेता हो और साहब, बिना दहेज के तो वही शादी करेगा जो शारीरिक-मानसिक तौर बीमार हो या जिसकी पत्नी मर गई हो, जिसे बच्चों को संभालने के लिए एक आया की जरूरत हो। जिसकी जिंदगी में मैं दूसरी बीवी के रूप में होऊंगी। अगर ऐसा कोई आदमी आप लोगों की नजर में हो, तो अवश्य बताइए। मैं आप लोगों का अहसान मानूंगी।'

कमरे में उपस्थित सभी लोग उसकी बात सुन कर हतप्रभ रह गए। उन लोगों को ऐसा लग रहा था, मानो एक लड़की ने अकेले ही सबके गालों पर तमाचा जड़ दिया हो।

समय सूचक

दरभंगा राज परिवार की अंतिम महारानी

जनसत्ता सरोकार

आजादी के बाद का भारत। 1962 के भारत-चीन युद्ध का समय था। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने देश के लोगों से सहयोग करने की अपील की। महारानी कामुसंदरी देवी की अगुआई में दरभंगा के राज परिवार ने भारतीय सेना को 600 किलो सोना दान दिया। कभी अपने राजसी शान की धमक रखने वाले दरभंगा राज परिवार की अंतिम महारानी कामुसंदरी देवी का 12 जनवरी को निधन हुआ तो समकालीन भारतीय इतिहास का एक सोया हुआ सा अध्याय जाग गया। आम लोगों को पता चला कि जिनके पास अंतिम महारानी का रुतबा था, जो ब्रितानी समय में भारत के सबसे अमीर जमींदार परिवारों में से थीं, वे अपना जीवन कितनी सादगी से जी रही थीं। कहा जाता है कि ब्रितानी हुकूमत में भारत के इस पूर्वी प्रदेश में दरभंगा राज परिवार की तूती बोलती थी। वहां पर अंग्रेजों के समांतर इनका ही राज था। कामसुंदरी देवी का जन्म 22 अक्तूबर 1932 को बिहार के मधुबनी जिले के मंगरौनी गांव में एक साधारण परिवार में हुआ। आठ वर्ष की आयु में उनका विवाह दरभंगा के अंतिम महाराज कामेश्वर सिंह से हुआ। कामसुंदरी देवी से विवाह के पहले कामेश्व सिंह की दो पत्नियों का निधन हो चुका था। 1962 में महाराजा कामेश्वर सिंह के निधन के बाद कामसुंदरी देवी ने कल्याणी फाउंडेशन की स्थापना की जिसके जरिए जनहित के कई सामाजिक कार्य किए। इस राजपरिवार ने कई शिक्षा संस्थानों के साथ उद्योगों की स्थापना में भी अहम भूमिका निभाई थी। कामेश्वर सिंह संविधान सभा के सदस्य भी थे। उन्होंने अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व राज्यसभा में भी किया। कामसुंदरी देवी बाद के समय में कामेश्वर सिंह के आदर्शों पर ही चलीं कि किसी भी व्यवस्था में संपत्ति संग्रह आम जनता के जरिए ही होता है। दरभंगा राज घराने की विरासत को भी उन्होंने संरक्षित किया।

कामसुंदरी देवी

फुटबाल का खेल

दिनेश विजयवर्गीय

बाल कथा

'सर, फुटबाल में खिलाड़ी जावेद रहेगा।' कक्षा के कुछ छात्रों ने कहा। 'नहीं, नहीं सर, जावेद से कहीं अच्छा अशोक रहेगा।' कक्षा में अशोक के कुछ साथियों ने कहा। बढ़ते हुए शोर को देख अध्यापक जी ने मेज को जोर से थपथपाया। एक पल तो कक्षा के वातावरण में चुप्पी छा गई। लेकिन कुछ ही देर में फिर से शोर होने लगा। आखिर अध्यापक जी ने फैसला किया, 'ठीक है, दोनों को आज शाम को कक्षा आठवीं से जो फुटबाल का मैच खेला जाएगा उसमें खिलाया जाएगा। दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा। दोनों में से जिसका खेल अच्छा होगा, उसे ही जिला स्तरीय फुटबाल प्रतियोगिता के लिए चुना जाएगा।'

विद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिता चल रही थी। जावेद फुटबाल के खेल में रुचि रखता था। उसे अच्छा खेलना भी आता था। यह बात उसकी कक्षा के कई छात्र जानते थे, इसलिए ज्यादातर विद्यार्थी उसी का समर्थन कर रहे थे।

दूसरी ओर अशोक कक्षा का मानीटर था। उसका व्यवहार ऐसा था कि वह सब पर हावी होना चाहता था। वह इसमें बहुत हद तक सफल भी हो जाता था। उसके भी कुछ साथी इसलिए इसका समर्थन कर रहे थे। शाम को निश्चित समय पर रेफरी महोदय ने खेल शुरू करने के लिए सीटी बजाई।

दोनों टीमें फुटबाल के मैदान में उतरने लगी। अशोक ने सफेद रंग की टी-शर्ट पहन रखी थी। उसके एक साथी महेश ने उसे मैदान में उतरते समय कान में कुछ कहा, जिसे सुन अशोक हौले-हौले मुस्कुरा दिया। दूसरी ओर, जावेद नीले रंग की टी-शर्ट पहन मैदान में उतरा। सीटी बजने के साथ ही दोनों टीमों का खेल प्रारंभ हो गया। हाफ टाइम के आते-आते जावेद ने अपने विरुद्ध खेल रही टीम पर गोल कर दिया। उसकी कक्षा के ज्यादातर छात्रों ने उसकी प्रशंसा में तालियां बजा कर उसके खेल को प्रोत्साहित किया।

इधर, अशोक ने अभी तक कोई विशेष खेल नहीं दिखाया था। जब जावेद ने गोल किया तो, वह उससे और भी ईर्ष्या करने लगा। अशोक यह अच्छे से जानता था कि वह खेल में जावेद के सामने टिक नहीं पाएगा। लेकिन, उसे तो अगले हफ्ते होने वाली जिला खेल प्रतियोगिता में खेलने का लालच जो था।

पूरा प्रयास करने के बाद भी जब अशोक से अच्छा खेलना मुश्किल हो रहा था, तो उसके मन में महेश की कही गई बात प्रबल रूप से दबाव डालने लगी। जावेद व अशोक एक ओर थे। जावेद तेजी से फुटबाल के साथ आगे विरुद्ध टीम की ओर बढ़ रहा था। उसकी तरह ही अशोक भी आगे बढ़ रहा था। दूसरी टीम का खिलाड़ी जावेद से बाल लेने के लिए भिड़ा ही था कि अशोक ने तेजी से आगे बढ़ते हुए जावेद को धक्का देकर गिरा दिया। दर्शकों को ठीक से पता नहीं लग सका कि आखिर जावेद गिरा कैसे? जावेद भी पूरी तरह समझ नहीं पाया कि वह कैसे गिर गया? उसके घुटने में चोट आई थी। वह आगे नहीं खेल सका। जावेद के समर्थक निराश हो गए।

अब अशोक और महेश खुश थे कि उनकी योजना सफल हो गई। अब शेष बाकी रहे समय अशोक ही खेला। खेल में जावेद की टीम ही उस एकमात्र गोल से विजय हुई थी जो उसने हाफ टाइम से पहले किया था। सब उसके खेल की प्रशंसा कर रहे थे। अशोक और महेश इसलिए खुश थे कि चलो अब जावेद के जख्मी हो जाने से वह खेल नहीं पाएगा। अब अशोक को ही प्रतियोगिता में स्थान मिलने की पूरी संभावना थी।

अशोक जब घर पहुंचा तो उसकी प्रसन्नता और भी बढ़ गई थी। वह ऊपर अपने कमरे में सीढ़ियां चढ़ता हुआ खेल के बारे में सोच रहा था। तभी अचानक पैर फिसल जाने से वह सीढ़ियों के नीचे लुढ़क गया। उसके बाएं हाथ में चोट आई थी। वह रात भर दर्द से बेचैन रहा। दर्दनिवारक दवा से भी उसे राहत नहीं मिल रही थी। अब हर बार के दर्द की टीस के साथ

दोनों टीमें फुटबाल के मैदान में उतरने लगी। अशोक ने सफेद रंग की टी-शर्ट पहन रखी थी। उसके एक साथी महेश ने उसे मैदान में उतरते समय कान में कुछ कहा, जिसे सुन अशोक हौले-हौले मुस्कुरा दिया। दूसरी ओर, जावेद नीले रंग की टी-शर्ट पहन मैदान में उतरा। सीटी बजने के साथ ही खेल प्रारंभ हो गया।

ही उसे खेल के मैदान में जावेद के साथ की गई ईर्ष्या जनित घटना पर दुख होने लगा। वह सोचने लगा, क्या वह भी मेरी तरह ही दर्द से बेचैन नहीं होगा? क्या मैंने उसे धक्का देकर उसका खेल प्रतियोगिता में श्रेष्ठ छात्र बनने का हक नहीं छीना? उसकी आंखों में एक अच्छे खिलाड़ी के साथ किए गए छल कपट वाले किए व्यवहार पर पश्चाताप के आंसू भर आए। वह पूरी रात दर्द और अपराधबोध की भावना के साथ करवटें बदलता रहा।

दूसरे दिन जब अशोक स्कूल गया तो उसने जावेद से उसके दुख-दर्द के बारे में पूछा। जावेद कहने लगा, 'पता नहीं उस दिन कैसे गिर गया? कुछ पता नहीं चला। मैं तो बाल के साथ खेलते हुए अच्छे से आगे बढ़ रहा था।'

तभी अशोक ने आंखों में आंसू भर कर दुख प्रकट करते हुए कहा 'जावेद तुम मुझे माफ करना। तुम उस दिन मेरी वजह से गिरे थे। मैंने ही तुम्हें थोड़ा धकेल दिया था, ताकि खेल प्रतियोगिता में भाग ले सकूं।' अशोक ने सब कुछ सच-सच बता दिया।

जावेद ने उसकी सच्चाई पर बस इतना कहा, 'तुमने अपने गलत व्यवहार को स्वीकार लिया, यही सबसे अच्छी बात है। ईर्ष्या का भाव हमारा सुख चैन छीनकर हमें गलत राह की ओर भटकाता है।' इतना कह जावेद ने अशोक को गले लगा लिया। कुछ दिनों बाद जावेद और अशोक की जोड़ी विद्यालय में सबको अच्छी लगने लगी।

पाठक की पीड़ा

जनसत्ता सरोकार

हरिद्वार में रहने वाली राम्या को नई दिल्ली में लगने वाले विश्व पुस्तक मेले का बेसब्री से इंतजार था। साल भर पहले से उसने उन किताबों की सूची बनाई हुई थी, जो उसे मेले से लेनी थी। किताबें तो वो आनलाइन भी मंगवा सकती थी, लेकिन मेले में जाने का एक फायदा यह भी होता कि वह उन किताबों को भी उलट-पुलट कर देख सकती थी, जिनके बारे में नहीं जानती थी। राम्या की बड़ी बहन दिल्ली में रहती है, जो खुद भी पढ़ने की शौकीन है। पुस्तक मेला शुरू होते ही राम्या बड़ी बहन के यहां आ गई और दोनों पहुंच गई पुस्तक मेले में।

राम्या ने एक खास रचनाकार की किताब को भी अपनी सूची में रखा था। सोचा था कि पहले मेले में किताब को उलट-पुलट कर देखेगी, तभी वही रचनाकार उसे संबंधित प्रकाशन की स्टाल पर मिल गई। राम्या और रचनाकार की फेसबुक पर दोस्ती थी। राम्या ने नमस्ते करने के लिए अपने हाथ सक्रिय किए ही थे कि रचनाकार ने राम्या का हाथ पकड़ लिया और कहा कि वह उनकी पुस्तक खरीद कर, उसकी तारीफ करते हुए रील बनाए और सोशल मीडिया पर डाल दे। राम्या उनकी बात

मार्गदर्शन

सुनते ही चौंक गई। जिस रचनाकार को वह गंभीर समझती थी, जिसकी किताब लेने का वह पहले ही सोच चुकी थी, उनका ऐसा व्यवहार?

राम्या सोशल मीडिया पर उन्हीं पुस्तकों के बारे में लिखती है, जो उसे वाकई पसंद आती हों। जिसे पढ़ कर राम्या को लगे कि इसे और लोगों को भी पढ़ना चाहिए, वह सिर्फ उसके बारे में ही लिखती है। पर, इस बार राम्या थोड़ी संकोच में पड़ गई। वह इतनी वरिष्ठ रचनाकार को न नहीं कह पाई। स्टाल पर किताब का मूल्य चुकाने के बाद रचनाकार राम्या को मेले के सेल्फी प्वाइंट पर ले गई, और राम्या की उसकी किताब की तारीफ करते हुए वीडियो बनाए। राम्या को कोफ्त हो रही थी कि जो वक्त उसे, किताबों को ढूंढने में देना था, उसे वह झूठी तारीफ के वीडियो बना कर बर्बाद कर रही है।

इन दिनों यह समस्या राम्या ही नहीं, कई लोगों की है। हर किसी की किताबों की अपनी पसंद होती है। जब गंभीर दिखने वाले साहित्यकार भी अपनी किताब की जबरन तारीफ करवाएं तो यह साहित्य के लिए सोचने का समय है। जबरन तारीफ से चंद प्रतियां बिक भी जाएंगी तो उससे किसका भला होगा? साहित्यकार का या प्रकाशक का? साहित्यकार की पहचान तो तब होती है, जब कोई पाठक उसकी किताब पढ़े, और रचना से प्रभावित हो जाए।

इन दिनों कई पाठकों की शिकायत रही है कि उन्होंने सोशल मीडिया पर अति प्रचार के बाद फलां-फलां किताब खरीद ली, जिसमें पढ़ने लायक कुछ भी नहीं था। यहां तक कि किताबों का प्रचार भी उन साहित्यकारों ने किया था, जिनकी खुद की किताबों में पढ़ने और समझने के लिए बहुत कुछ होता है। ऐसे में पाठक गुमराह क्यों न हो जाएं? लेकिन यह भी सच है कि इस तरह से गुमराह कर के साहित्य की दुनिया में ज्यादा दिनों तक नहीं टिका जा सकता है।

बिलि इलियट : मुक्ति की अभिव्यक्ति

जनसत्ता सरोकार

बिलि इलियट रायल बैले स्कूल में आडिशन दे रहा है। बिली और उसके पिता कमरे से निकल रहे हैं। निर्णायकमंडल के एक जज पूछते हैं-नृत्य करते समय आपको कैसा लगता है? बिली कुछ रुक कर कहता है-पता नहीं।

बिली का यह संक्षिप्त सा जवाब सुन कर जज निराश हो जाते हैं। उन्हें उस बच्चे में जो संभावना की रोशनी दिखी थी, बुझती सी लगती है। तभी बिली अपना वाक्य पूरा करता है-पता नहीं...। ये अच्छा लगता है। यह सुरक्षित जैसा है। लेकिन, एक बार शुरू होने के बाद मैं सब कुछ भूल जाता हूं। मैं गायब हो जाता हूं। मैं अपने पूरे शरीर में बदलाव महसूस करता हूं। मैं बस वहां हूं...मेरे पूरे शरीर में आग है। मैं उड़ रहा हूं। पक्षी की तरह...बिजली की तरह।

ये दृश्य 2000 में आई ब्रितानी फिल्म 'बिली इलियट' के हैं। इस फिल्म में 1984-85 के ब्रितानी खनिकों के हड़ताल के संघर्ष की कहानी है। बिली इलियट इंग्लैंड के एक खनिक परिवार का ग्यारह साल का लड़का है। वह बैले नर्तक बनने का सपना देखता है। एक खनिक परिवार का बच्चा होने के नाते बैले बिली के लिए विलासिता है। बिली के परिवार के साथ उसका आस-पास का समाज उसके इस सपने के विरोध में खड़ा है। जहां बिली के पिता और भाई उसे बैले से दूर रखना चाहते हैं, वहीं उसकी लगन देखते हुए उसकी शिक्षिका उसे बैले नृत्य के लिए प्रेरित करती रहती है।

अमर किरदार

बिलि इलियट का यह बाल किरदार सिनेमा में वह अभिव्यक्ति है जहां कला, वर्गीय विभाजन से मुक्ति की तरफ ले जाती हुई दिखती है। निर्देशक स्टीफन डाल्ड्री अभिव्यक्ति बनाम वर्ग संघर्ष को नए सिरे से परिभाषित करते हैं।

बिली इलियट का यह बाल किरदार सिनेमा में वह अभिव्यक्ति है, जहां कला वर्गीय विभाजन से मुक्ति की तरफ ले जाती हुई दिखती है।

निर्देशक स्टीफन डाल्ड्री इस फिल्म के जरिए अभिव्यक्ति बनाम वर्ग संघर्ष को नए सिरे से परिभाषित करते हैं। उद्धृत दृश्य के अंत में जब बिलि इलियट अपने पिता के साथ कमरे से बाहर जा रहा होता है, तब एक जज कहते हैं, श्रीमान इलियट, हड़ताल के लिए शुभकामनाएं।

स्टीवन डाल्ड्री अपने साक्षात्कारों में इस दृश्य की व्याख्या आज के राजनीतिक व आर्थिक सच के रूप में करते हैं। औद्योगिक क्रांति का फायदा एक बड़े वर्ग ने उठाया और धनाढ्य हुआ। लेकिन, जो मजदूर वर्ग था, उसके संघर्षों से किनारा कर लिया गया। यह उच्च वर्ग अक्सर इन संघर्षों के साथ उदारता दिखाता है, लेकिन वह किसी भी परिवर्तनकारी परिणाम के खिलाफ होता है।

बिली इलियट का किरदार आज भी उन लोगों के लिए सबक है, जो विभिन्न वर्गों से आए बच्चों को प्रतिभा के समान तराजू पर तौलने की पैरोकारी करते हैं। एक बच्चे की प्रतिभा इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह खदान मजदूर की संतान है, या खदान प्रबंधक के परिवार से ताल्लुक रखता है। नृत्य के मंच पर बिली का किरदार इस खाई को दिखाते हुए इसे पाटने की पैरोकारी करता है।

इस फिल्म के जरिए बाल कलाकार जेमी बेल को दुनिया भर में प्रशंसा मिली। फिल्म को बाफ्टा सहित कई पुरस्कार मिले हैं।